साहित्य
अलेक्सांद्र पूश्किन
प्रतिनिधि कहानियाँ
रूसी से हिंदी अनुवाद
ए. चारुमति रामदास

अस्तर पर छपे मूर्तिकला के प्रतिरूप में राजा शुद्धोदन के दरबार का एक दृश्य, जिसमें तीन भविष्यवक्ता भगवान बुद्ध की माँ–रानी माया के स्वप्न की व्याख्या कर रहे हैं, इसे नीचे बैठा लिपिक लिपिबद्ध कर रहा है। भारत में लेखन-कला का सम्भवतः सबसे प्राचीन और चित्रलिखित अभिलेख।

नागार्जुन कोण्डा, दूसरी सदी ई.

सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली

अलेक्सान्द्र पूश्किन

प्रतिनिधि कहानियाँ

मूल रूसी से हिन्दी अनुवाद

ए. चारुमति रामदास

साहित्य अकादेमी

Alexander Puskin : Pratinidhi Kahaniyan : Hindi translation of Alexander S. Puskin's selected stories in Russian by A. Charumati Ramdas. Sahitya Akademi, New Delhi (2019) ₹200/-

अलेक्सांद्र पूश्किन (1799-1837) : लेखक
ए. चारुमति रामदास (1945) : अनुवादक

विधा : कहानी
साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 2002
पुनर्मुद्रण : 2019

ISBN 978-81-260-1348-7

मूल्य : दो सौ रुपये

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय : रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001
secretary@sahitya-akademi.gov.in |011-23386626/27/28
विक्रय अनुभाग :'स्वाति', मंदिर मार्ग, नई दिल्ली 110 001
sales@sahitya-akademi.gov.in|011-23745297, 23364204
कोलकाता : 4, देवेंद्रलाल ख़ान रोड, कोलकाता 700 025
rs.rok@sahitya-akademi.gov.in |033-24191683/ 24191706
चेन्नइ : मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग्स (द्वितीय तल), 443(304), अन्नासालइ, तेनामपेट, चेन्नई 600 018
chennaioffice@sahitya-akademi.gov.in |044-24311741
मुंबई : 172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुंबई 400 014
rs.rom@sahitya-akademi.gov.in |022-24135744/24131948
बेंगळूरु : सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी. आर. आंबेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
rs.rob@sahitya-akademi.gov.in |080-22245152, 22130870

मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, लोनी, ग़ाज़ियाबाद-201 102

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

अनुक्रम

प्रस्तावना

नूतन और पुरातन का संघर्ष सदा से चला आ रहा है। हर युग में पुरातन को नूतन के लिए स्थान ख़ाली करना ही पड़ता हो, चाहे वह स्थान परिवार में हो या समाज में, राजनीति में हो या अर्थव्यवस्था में, विज्ञान के क्षेत्र में हो या साहित्य एवं संस्कृति के क्षेत्र में। विडम्बना यह है कि प्राचीन इस प्रक्रिया को बड़े बेमन से, कुछ-कुछ कड़वाहट की, कुछ शत्रुता की भावना से निभाता है और नूतन के मन में सम्मान का स्थान पाने में असफल रहता है। इसी नये-पुराने के संघर्ष के फलस्वरूप नवीन आविष्कारों का, नवीन विधाओं का जन्म होता है, अन्यथा शायद सब कुछ ठहरा-सा रहता। जीवन एवं संस्कृति के प्रवाह को बनाये रखने में इस संघर्ष की नितान्त आवश्यकता है।

विश्व-साहित्य में भी इस संघर्ष के परिणामस्वरूप यदि विचारधाराएँ परिवर्तित न हुई होतीं तो रूढ़िवाद, छायावाद, वास्तववाद, इत्यादि कभी न पनप पाते। हर नये 'वाद' को विदा लेते हुए 'वाद' के मुक़ाबले में अपनी महानता सिद्ध करनी ही पड़ती है, तभी वह साहित्य के क्षेत्र में अपनी जड़ें जमा पाता है।

रूसी साहित्य और पूश्किन का भी कुछ ऐसा ही सम्बन्ध है। उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में, जब पूश्किन सृजन का आरम्भ कर रहे थे रूढ़िवाद क्लासिसिज़्म पीछे हट चुका था और छायावाद (रोमांटिज़्म) अपने उत्कर्ष पर था। पूश्किन की आरम्भिक रचनाएँ छायावादी थीं, और उन्होंने ही छायावाद से छिटककर वास्तववाद का आरम्भ किया। पूश्किन को अनेक महान उपलब्धियों का श्रेय जाता है। वे राष्ट्रकवि थे, वे आधुनिक रूसी भाषा के प्रणेता थे, वे छायावादी होने के बावजूद यथार्थवाद के प्रवर्तक थे, वे प्रथम वास्तववादी पद्यात्मक उपन्यास के रचयिता थे, उन्होंने साहित्य में प्रथम बार निम्न श्रेणी के सरकारी कर्मचारी को अपनी रचना का नायक बनाया वग़ैरह-वग़ैरह।

अड़तीस वर्ष की अल्पायु में इस व्यक्ति ने क्या-कुछ नहीं कर दिखाया! साहित्य की ऐसी कौन-सी प्रचलित विधा थी, जिसे उन्होंने न छुआ हो : उपन्यास, नाटक, लघु उपन्यास, कहानियाँ, कविताएँ, व्यंग्यात्मक चुटकुले, मुक्तक, रुलाने और हँसानेवाले, सहानुभूति दिखाते, व्यंग्य कसते...आलोचनात्मक लेख, रूसी साहित्य की दशा पर निर्मम प्रहार करते आलेख, पत्रिकाओं का आरम्भ एवं उनका सम्पादन...क्या था, जो

उन्होंने नहीं किया। जीवन की डोर इतनी छोटी थी, अतः कार्य करने की गति को तीव्रतम करना ही था।

तो, इतने रहस्यमय, लुभावने आवरण से ढँके पूश्किन आख़िर थे कौन? कैसे वे इतना कुछ रच पाए, क्या उन्होंने जो लिखा वह वैसा ही है, जैसा वे स्वयं लिखना चाहते थे...क्या मन का क्रोध, मन की पीड़ा, छटपटाहट व्यक्त हुई उनके लेखन में, क्या ज़माने ने उन्हें वही समझा, जो वे थे, या फिर उनकी रचनाओं को भी पर्त-दर-पर्त खोलना होगा, उन्हें ठीक से समझने के लिए?

एक रूसी कुलीन घराने में जन्मे अलेक्सान्द्र सेर्गेयेविच पूश्किन के कुल का इतिहास भी कुछ कम मनोरंजक नहीं है। कवि को अपने वंश पर बहुत अभिमान था। हालाँकि सन् 1799 में, जब उनका जन्म हुआ, किसी ज़माने में समृद्ध पूश्किन वंश निर्धन हो चुका था। अनेक रचनाओं में पूश्किन अपने पुरखों की प्रशंसा करते दिखाई देते हैं। मातृभूमि के इतिहास से जुड़े थे पूश्किन के परदादा एवं परनाना। अलेक्सान्द्र सेर्गेयेविच पूश्किन लिखते हैं, "मेरे पूर्वज राचा नेव्स्की की सेवा में रह चुके हैं।" राचा पूश्किन वंश के पूर्वज थे, जो कीएव के राजकुमार व्सेवोलोद II ओल्गोविच के समय रूस आये थे। उनकी चौथी पीढ़ी में भी एक अन्य राचा हुए थे। जिन्होंने सन् 1240 में अलेक्सान्द्र नेव्स्की की फ़ौज में रहते हुए स्वीडन के विरुद्ध युद्ध में अनेक पराक्रम किये थे।

पूश्किन के परनाना थे इब्राहीम गनिबाल, पीटर महान के दास, जो अबिसीनिया के राजकुमार के पुत्र थे, जिन्हें तुर्क बन्दी बनाकर कान्स्तान्तिनोपोल ले गये थे (रूसी राजदूत ने इस बालक को ख़रीद लिया और उसे पीटर I के पास भेज दिया। पीटर I ने उसका बाप्तिज्मा करके उसे अपना धर्मपुत्र बना लिया, उसे उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए विदेश भेजा। पीटर प्रथम उसे बहुत चाहते थे। इब्राहीम सेना में जनरल के पद तक पहुँचे और रूस में उनके पराक्रमों को गर्व से याद किया जाता था। पोल्तावा के युद्ध में भी उन्होंने अपने शौर्य का प्रदर्शन किया था।

अलेक्सान्द्र सेर्गेयेविच पूश्किन के पिता सेर्गेई ल्वोविच अपने समय के हिसाब से काफ़ी शिक्षित व्यक्ति थे। उनके निजी पुस्तकालय में रूसी एवं फ्रांसीसी पुस्तकों की भरमार थी। पूश्किन के मन में बचपन से ही इन पुस्तकों को पढ़ने की जिज्ञासा थी, वे चोरी-छिपे इन्हें पढ़ा करते। उनके चाचा वासीली ल्वोविच अपने समय के कवि थे, जो करामजीनी विचारधारा में लिखा करते थे। पूश्किन की माँ नताल्या गनिबाल अपने समय की अनुपम सुन्दरी थी।

पूश्किन का रूप गनिबाल परिवार पर गया था, माँ को यह बात अच्छी न लगती थी, अतः कभी-कभार उनका गनिबाली गुस्सा बालक पर उतरता। बचपन में ही इस बालक को यह अनुभव होने लगा था कि वह अप्रिय है, वह एकान्तप्रिय होता गया, मन-ही-मन घुटते हुए ठण्डी आहें भरा करता, ख़ामोश रहकर लोगों का एवं घटनाओं

का निरीक्षण करना जैसे उसकी आदत बन गयी। उसे क्या मालूम था कि वह तो बत्तखों के झुण्ड में पल रहा राजहंस है!

चाचा वासीली ल्वोविच की इच्छा एवं प्रयत्नों से अलेक्सान्द्र पूश्किन को पढ़ने के लिए 'त्सार्स्कोये सेलो' भेजा गया। उच्च पदस्थ राजनयिकों के प्रयत्नों से यह विद्यालय उसी वर्ष आरम्भ किया गया था और इसका उद्देश्य था ऊँचे सरकारी पदों के लिए अफ़सरों को तैयार करना।

'त्सार्स्कोये सेलो' का कालखंड (1811-1817) पूश्किन को बहुत कुछ सिखा गया। जो कुछ भी उन्होंने लिखा, उसकी नींव यहीं पर रखी गयी थी। 'त्सार्स्कोये सेलो' में उन्होंने प्रेम करना सीखा, चौकीदार, रसोइये कैसी बेईमानी करते हैं यह देखा, राजपरिवार के सदस्यों का निरीक्षण किया, दिसम्बर क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आये, नेपोलियन के युद्ध के दौरान रूस की मनःस्थिति को जाना। विशेष बात यह थी कि व्यक्तियों का निरीक्षण करते समय वे उनकी हास्यास्पद, विशेषताओं, उनकी खामियों को भाँप जाते, और फिर उन पर पैने व्यंगात्मक मुक्तक लिख डालते। 'त्सार्स्कोये सेलो' के अधिकारी गण, उनके शिक्षक, कर्मचारी, उनके अपने सहपाठी, राजपरिवार के सदस्य, कोई भी तो बच न पाया था उनके व्यंग-बाणों से...अतः लोग उनसे डरते, कतराते, धीरे-धीरे उन्हें नापसन्द करने लगे। यही सब जब पूश्किन की रचनाओं में गम्भीर रूप से व्यक्त होने लगा तो त्सार तक का कोपभाजन उन्हें बनना पड़ा।

पूश्किन प्रेम में सराबोर थे। चाहे वह किसी नारी के प्रति प्रेम हो या प्रकृति के प्रति, कमज़ोर वर्ग के लिए सहानुभूति हो या फिर देश के प्रति प्रेम हो। अतः उनकी रचनाएँ भी इन्हीं विषयों पर लिखी गयी हैं। पूश्किन की कविताएँ प्रेम से एवं रूस के प्रति चिन्ता और प्यार से सराबोर हैं। कम-से-कम शब्दों में नितान्त आवश्यक बात लिख डालना उनकी शैली की विशेषता है। व्यर्थ का वर्णन नहीं, बेकार का आडम्बर नहीं, भाषा सीधी-सादी, जिसे आम आदमी भी समझ सके—

"मेरे लिए हैं एक समान, क्या लेखक क्या घुड़सवार,
क्या तिरस्कार, क्या पुरस्कार,
जाऊँगा न सीना ताने बनने मैं कप्तान
और न रेंगूँगा पाने को एक अफ़सर का मान।"

दिशा निर्धारित हो चुकी थी, रेंगना, चापलूसी करना उन्हें मंजूर न था, अतः वे, प्रमुख धारा से कटते गये, स्वयं को अकेला महसूस करते रहे—

"मालिक ने हैं दिये तुम्हें
सुनहरे दिन, सुनहरी रातें
तुम पर हैं टिकीं
साँवली सलोनियों की आँखें।

खेलो, गाओ, मेरे दोस्तो!
गँवा दो यह मस्ती की रात,
तुम्हारी इस ख़ुशी पर मैं
मुस्कुराऊँगा, आँसुओं के साथ।"

डिसेम्बर वादियों के सम्पर्क में आने पर उन्होंने उन्हें प्रेरित करनेवाली अनेक कविताएँ रचीं। पूश्किन की रचनाओं ने डिसेम्बर क्रान्तिकारियों को काफ़ी उत्साहित किया था। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं : *एव्गेनी अनेगिन* (उपन्यास), *बोरिस गदुनोव* (नाटक) *रूस्लान और लुद्मिला, बाख्चिसराय का फ़व्वारा, पोल्तावा, मेद्नी व्साद्निक* ढेरों लघु कविताएँ, लोककथाओं पर आधारित कविताएँ, जैसे 'क़िस्सा मछुआरे और मछली का', 'रूसाल्का', 'कफ़्काज का क़ैदी', 'त्सिगानी' इत्यादि।

पूश्किन ने शिक्षा समाप्त करने के पश्चात् कुछ वर्षों तक शासकीय कामकाज किया, मगर सच्चाई को कविताओं के माध्यम से कह देने की आदत उन्हें बड़ी महँगी पड़ी। उन्हें दूर-दराज़ के क्षेत्रों में निर्वासित किया जाता रहा। उन पर कड़ी नज़र रखी जाने लगी। जब पूश्किन ने शाही सम्मानों को ठुकरा दिया तो त्सार का कोपभाजन उन्हें बनना ही था। एक गहरे षड्यन्त्र के अन्तर्गत उनकी पत्नी के दान्तेस से सम्बन्धों को उछाला गया, उन्हें द्वन्द्व युद्ध के लिए उकसाया गया, मजबूर किया गया। इसी द्वन्द्व युद्ध में सन् 1837 में उनकी मृत्यु हो गयी।

सिर्फ़ अड़तीस साल के छोटे-से जीवन में पूश्किन ने काव्य की किस विधा को अछूता छोड़ा है! आरम्भ पद्यात्मक रचनाओं से हुआ, मगर पूश्किन सन् 1826 के आते-आते गद्यात्मक रचनाएँ लिखने लगे, साहित्यिक पत्रिकाओं से जुड़ गये। उनकी अपनी साहित्यिक पत्रिका 'सव्रेमेन्निक' सन् 1836 में आरम्भ हुई, जिसका अविरत प्रकाशन आज तक हो रहा है।

सर्वप्रथम अधूरी गद्यात्मक रचना थी 'दास पीटर महान का' (सन् 1826) तत्पश्चात लिखी गईं, 'सफ़र अर्ज़रूम का' (सन् 1829), 'इवान पेत्रोविच', 'बेल्किन की कहानियाँ' (सन् 1833), 'दुब्रोव्स्की' (सन् 1832-33), 'कप्तान की बेटी' एवं 'हुकुम की बेगम' (सन् 1833) में। इन सभी रचनाओं को पूश्किन की यथार्थवादी कृतियों का बेहतरीन उदाहरण माना जाता है। मगर पूश्किन केवल वास्तविकता का सहज चित्रण ही नहीं करते थे, अपने स्वभाव के अनुसार वे उस पर पैने व्यंग्य कसते थे। उनके शब्दों का, वाक्यों का आयाम इतना विस्तृत था कि उनका कुछ भी अर्थ बड़ी आसानी से निकाला जा सकता था। आज यदि पूश्किन के व्यक्तित्व, उनकी मानसिकता एवं उनके परिवेश को दृष्टिगत रखते हुए उन्हें पढ़ा जाए, तो ऐसा प्रतीत होता है कि जो कुछ प्रत्यक्ष रूप से उनकी पंक्तियाँ कह रही हैं, वही उनका अन्तर्भाव नहीं है। अतः उनकी रचनाओं की किन्हीं भी पंक्तियों को लेकर उन्हें छायावादी या यथार्थवादी या व्यंग्यकार भी माना जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि बड़े ध्यान

से 'डाक चौकी का मुंशी' पढ़ी जाए तो सभी—'सम्सोन वीरिन, दून्या एवं मिन्स्की' दोषी प्रतीत होते हैं, सभी के साथ सहानुभूति होती है, सभी निर्दोष और सच्चे प्रतीत होते हैं। फिर सम्सोन वीरिन अकेला ही दया का पात्र नहीं है, पूश्किन उसका मज़ाक़ उड़ाने में नहीं चूकते, शराब का पहला गिलास पीते ही बूढ़े मुंशी की उदासी काफ़ूर हो गयी, दूसरा गिलास पीते ही वह बतियाने लगा, "मुझे पहचान गया, या फिर उसने ढोंग किया कि वह मुझे पहचानता है।" मिन्स्की के दिये पैसों को पैरों तले कुचलने के बाद उन्हें वापस उठाने के लिए जाते हुए सम्सोन वीरिन को दिखाकर पूश्किन ने मानव स्वभाव का बेहतरीन चित्रण किया है।

रूसी साहित्य की तत्कालीन दशा पर तो पूश्किन व्यंग्य करने से नहीं चूकते, यदि 'रूस के सपूत' की पोलिना शिकायत करती है कि "हमें अक्सर धिक्कारा जाता है कि हम रूसी रचनाएँ नहीं पढ़तीं, मगर कोई हमें बताये कि क्या कुछेक अनुवादों को छोड़कर रूसी में कुछ लिखा भी जाता है?", तो 'हुकम की बेगम' की काउण्टेस अपने पोते से कुछ किताबें लाने के लिए कहती है, और जब पोता पूछता है, कि क्या वह रूसी उपन्यास पढ़ना चाहेंगी, तो बूढ़ी काउण्टेस पूछती है, "क्या रूसी उपन्यास है?" पूश्किन किसी बात पर व्यंग्य कसने का मौक़ा नहीं चूकते। उनकी नायिकाएँ हमेशा फ्रांसीसी उपन्यास ही पढ़ती हैं, वह किसी उपन्यास की नायिका ही प्रतीत होती है, अर्थात ऐसी नारी जो सिर्फ़ उपन्यासों में ही रहने लायक़ है, यथार्थ से जिसका कोई वास्ता नहीं!

वैभवशाली एवं गौरवशाली (!) अतीत को सँभाले रखने के रूसी सामन्तों के प्रयत्नों के बारे में जब पूश्किन कहते हैं, "गावरीला अफानास्येविच झेर्व्स्की प्राचीन सामन्तों के कुल से थे, बहुत बड़ी जागीर के मालिक, आतिथ्यप्रिय, शिकार के शौकीन...। संक्षेप में वह पक्के रूसी सामन्त थे, जर्मनों को बर्दाश्त न कर सकते थे और पारिवारिक जीवन में प्रिय अतीत के रीति-रिवाज़ सँभाले हुए थे।" फ्रांसीसी शिक्षा प्राप्त कोर्साकोव का वे ख़ूब मज़ाक़ उड़ाते। मगर जर्मनों से, हर जर्मन चीज़ से घृणा करने की वृत्ति दिल के भीतर छिपाये रखते थे, क्योंकि पीटर I को तो जर्मनों से बहुत प्यार था। सम्राट से खुल्लम-खुल्ला विद्रोह न करने में ही बुद्धिमानी है, यह समझते हुए उन्होंने अपनी बेटी का ब्याह इब्राहीम से करने का सम्राट का प्रस्ताव मान लिया। पूश्किन दिखाना चाहते हैं कि महान सम्राट के आगे किसी की कुछ नहीं चलती थी। पीटर महान रूस को प्रगति पथ पर ले जा रहे थे, मगर फ्रांस में पला-बढ़ा कोर्सोकोव पीटर्सबुर्ग आकर पूछता है, "इस जंगली पीटर्सबुर्ग में ऊब के मारे तुम अब तक मर कैसे नहीं गये?" पेरिस में भी ऑर्लियन्स के डयूक ने इब्राहीम से यही कहा था, "फ्रांस में लम्बे समय तक रहने के कारण तुम्हें अध जंगली रूस की आबोहवा और जीवन चर्या की आदत नहीं।"

मगर इब्राहीम न माना। पूश्किन इब्राहीम के चरित्र की महानता दिखाना चाहते

हैं। परन्तु इतने अनेक पात्रों के बीच भी पीटर महान का चेहरा झाँक-झाँक जाता है। बुद्धिमान, पराक्रमी, दुस्साहसी, उद्यमी, सरल, सहृदय पीटर I को पूश्किन पार्श्व में रखते हैं, मगर इस तरह कि वह सभी पर छाये रहें। मगर सभी नवीनताओं के पीछे पीटर I ही हैं, यह दिखानेवाले पूश्किन 'ताँबे का घुड़सवार' में अपने नायक से मुट्ठी तानकर पीटर I के सामने यह कहलवाते हैं "तुझे तो..."। प्रगति की नींव किसी के विनाश पर रखी है, चाहे वह विनाश पुरानी मान्यताओं का हो, प्राचीन संस्कृति का हो या फिर असंख्य बेबस निर्धनों के जीवन का।

ऐतिहासिक दृष्टि से सत्य का अत्यन्त प्रभावशाली वर्णन करते हैं, पूश्किन। उनकी रचनाएँ राजवर्ग तक सीमित नहीं हैं, वे समाज के सभी वर्गों में गहरे पैठ गयी हैं। जहाँ पूश्किन पीटर I की बहादुरी के गीत गाते नहीं थकते, वहीं किर्झाली को भी कम नहीं आँकते। सीधे-सादे, अनपढ़, फुर्तीले किर्झाली का क़िस्सा मन को बरबस ही प्रसन्नता दे जाता है।

पूश्किन ने ऐतिहासिक घटनाओं पर भी अनेक रचनाएँ लिखी हैं। *पीटर महान का इतिहास* और *पुगाचोव का इतिहास* प्रमुख उपन्यास हैं। 'सफ़र अर्ज़रूम का' 1829 में उनके कफ़्काज पार के प्रवास का वर्णन है। मगर सफ़रनामा उकताहट भरा नहीं है। यात्रा के स्थान पर पूश्किन उस स्थान के भौगोलिक प्राकृतिक एवं सामाजिक वर्णन पर अधिक ध्यान देते हैं। मगर व्यंग्य करने से पूश्किन यहाँ भी नहीं चूके। 'सफ़र अर्जरूम का' की प्रस्तावना में पूश्किन अपना पल्ला इस आरोप से झाड़ते नज़र आते हैं कि इस अभियान में उन्हें व्यंग्य के लिए विषय मिला है। काल्मीक खाने के बारे में वे कहते हैं, "शायद किसी और रसोई में इससे ज़्यादा बुरा भोजन नहीं मिलेगा।" लोगों की एक-दूसरे से बातचीत को प्रकट करने का अन्दाज़ देखिए, "एरिवान से आते हुए पादरी से मैं मिला, 'एरिवान की क्या ख़बर है?' मैंने उससे पूछा। 'एरिवान में प्लेग है', उसने जवाब दिया। 'और अखाल्त्सिक के क्या हाल हैं?' 'अखाल्त्सिक में प्लेग है।' मैंने उसे जवाब दिया। इन सुखद समाचारों का आदान-प्रदान करने के पश्चात हम जुदा हुए।"

प्लेग के समाचार को सुखद समाचार कहनेवाले पूश्किन के हृदय की थाह पाना कठिन है! पर्शिया के कवि फ़जल ख़ान से मुलाक़ात का दृश्य इस तरह वर्णित है, "मेरी इच्छा के अनुसार मेरा फज़ल ख़ान से परिचय करवाया गया। मैंने दुभाषिये की सहायता से बड़े-बड़े शब्दों में पूरबी ढंग से स्वागत करना शुरू किया, मगर मुझे इतनी शरम आयी, जब फज़ल ख़ान ने मेरे इस अभिवादन का जवाब सीधे-सादे, बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से दिया।...लज्जापूर्वक मैंने इस महान मज़ाहिया अन्दाज़ को छोड़कर साधारण यूरोपीय वाक्यों पर उतरने में ही भलाई समझी। यह सबक़ है हमारी रूसी उपहासात्मकता के लिए। आगे से कभी भी किसी आदमी का उसकी भेड़ की ख़ाल की टोपी से मूल्यांकन न करूँगा।" व्यंग्य और उपहास की सहज प्रवृत्ति को भी वह रूसी आदत

बताते हैं...यह व्यक्ति मानों तत्कालीन युवा सामन्ती रूसी समाज का ही प्रतिनिधि था।

जहाँ *पुगाचोव का इतिहास* सत्य घटनाओं पर आधारित है, उसमें सरकारी दस्तावेज़ों का भरपूर सहारा लिया गया है, वहीं पुगाचोव के इस विद्रोह के रूस पर प्रभाव को दर्शाता है सशक्त लघु उपन्यास *कप्तान की बेटी*। *कप्तान की बेटी* में किसानों के विद्रोह का बड़ा प्रभावशाली वर्णन है। एक ही क़िले का, बेलागोर्स्काया के क़िले का, वर्णन काफ़ी है पूश्किन के लिए, यह दिखाने के लिए कि पुगाचोव के नेतृत्व में हुए इस विद्रोह में बाश्कीरी, तातारी, चुवासी, युराल के, वोल्गा तट के किसान शामिल थे, अर्थात पूरा ग़ैर-रूसी, ग़ैर-सामन्ती जनता थी, पुगाचोव के साथ। पुगाचोव का पूश्किन कहीं भी विरोध करते नहीं दिखाई देते, हाँ, सम्राट की विशाल सेना के सामने उसके न टिक पाने की आशंका उनके मन में झाँक जाती है।

कप्तान की बेटी का नायक हालाँकि त्सार की सेना में सेवारत है, मगर पुगाचोव के विद्रोह को वह अनुचित भी नहीं मानता। बल्कि यह कहकर कि "सारी अशिक्षित जनता पुगाचोव के साथ थी" उन्होंने विद्रोह के मूल कारण की ओर इंगित कर दिया था। रूसी समाज के किसानों के अनेक स्तरों का वर्णन पूश्किन बख़ूबी करते हैं, इनमें कृषिदास सावेलिच है और विद्रोही किसान पुगाचोव भी। साथ ही, सैनिक अधिकारियों के अनेक रूपों का भी वर्णन है, एक ओर अपने क्षेत्र की रक्षा करते-करते प्राणों की आहुति देनेवाले कप्तान मिरोनोव है, विश्वासघाती श्वाब्रिन है, अति सतर्क ओरेनबुर्ग का कप्तान है, ज़िन्दादिल ज़ूरिन है, विगत के शौर्य और पराक्रम की मिसाल हैं—ग्रीनेव के वृद्ध पिता और सन्देहों में डूबा मगर सम्राट के प्रति समर्पित नायक युवा ग्रीनेव।

पुगाचोव को दोषी न माननेवाले पूश्किन उसको भी एक-दो व्यंग्यात्मक झोंके दे ही देते हैं। चापलूसों से घिरा पुगाचोव, उसके भोज का वर्णन, उसके 'महल' का वर्णन, उसकी संजीदा बातें पुगाचोव के व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को प्रकट करती हैं। इतना क्रूर, निर्दयी, हत्यारा होने पर भी उसका किसानी स्वभाव मरा नहीं है, संकट के समय उसको संरक्षण देनेवाले अपने उपकारकर्ता ग्रीनेव को वह देखते ही पहचान गया और अपने साथियों के विरोध के बावजूद वह युवा ग्रीनेव को दो बार प्राणदान देता है, मृत्यु के कुछ पल पूर्व भी भीड़ में ग्रीनेव को पहचानकर उसके शीश ने धराशायी होने से पूर्व ग्रीनेव का अभिवादन किया था।

कप्तान की बेटी न केवल युद्ध और योद्धाओं का वर्णन करती है, इसके स्त्री पात्रों का चित्रण भी देखते ही बनता है। हर पात्र को उपहास का छींटा देनेवाले पूश्किन ने कहीं भी मारिया इवानोव्ना की छवि का मज़ाक़ नहीं उड़ाया है। महिलाओं के जिस पहलू को वे पसन्द करते थे, उसका उदाहरण है *कप्तान की बेटी* की मारिया इवानोव्ना, साम्राज्ञी एकातेरिना, 'रूस के सपूत' की पोलिना, 'बर्फ़ीली आँधी' की

मारिया गावरीलोव्ना तथा 'एव्गेनी अनेगिन' की तात्याना। बुद्धिमान, गम्भीर, सन्तुलित, प्रिय से विश्वासघात न करनेवाली, यह थी उनके सपनों की नारी। ये रूसी नारियाँ 'दास पीटर महान का' की काउण्टेस डी. के विपरीत थीं। इब्राहीम कहता है, "चाहे वह मुझसे प्यार न करे, मगर मुझसे विश्वासघात न करे", यही थी स्वयं पूश्किन की भी अदम्य इच्छा! मगर यहाँ भी विरोधात्मक उपहास के आवरण में लिपटा है उनका अपना व्यक्तित्व! पूश्किन, जो स्वयं अनेक विवाहित, अविवाहित युवतियों से घनिष्ठ सम्बन्ध बनाये हुए थे, उनसे समर्पित प्रेम की माँग करते थे। तात्पर्य यह कि उनकी प्रियतमाएँ अपने पतियों को धोखा दे रही थीं, जबकि उनकी अपनी पत्नी, उस समाज में, जहाँ ये नियम कभी के टूट चुके थे, उनसे विश्वासघात न करे, यह भी वे चाहते थे। ऐसे परस्पर विरोधी लक्षण उनके चरित्र में मौजूद थे।

हुकुम की बेगम भी एक सत्य घटना पर आधारित है। "नेपोलियन की छवि एवं मेफ़िस्टोफेल के दिलवाले हेर्मन से ही आगे चलकर दोस्तोयेव्स्की के रास्कोल्निकोव की और गोगोल के अनेक पात्रों की उत्पत्ति हुई है।" दोस्तोयेव्स्की कहते हैं, "हम बौने हैं पूश्किन के सामने, हममें ऐसा कोई बुद्धिमान है ही नहीं!...कितनी सुन्दर कितनी प्रभावशाली है उसकी कल्पना! कुछ ही दिनों पूर्व उसकी *हुकम की बेगम* पढ़ी। यह है फन्तासी!" (दोस्तोयेव्स्की एफ.एम., *'वस्पमिनानिया ओ सव्रेमेन्निकोव'*)।

पूश्किन साहित्यकारों और आलोचकों को तो ज़रा भी नहीं बख़्शते। कभी वे पूछते हैं, "क्या रूसी में उपन्यास होते हैं?" तो 'सफ़र अर्जरूम का' के अन्त में वे कहते हैं, "व्लादीकाफ़्काज में पूश्शिन के घर में मेज़ पर कुछ रूसी पत्रिकाएँ पड़ी थीं। पहला ही लेख, जिस पर मेरी नज़र पड़ी, मेरी एक रचना का विश्लेषण था। उसमें मुझे और मेरी कविता को खुलकर गालियाँ दी गयी थीं। मैं उसे ज़ोर से पढ़ने लगा...यह विश्लेषण हमारे आलोचकों की क्लिष्टताओं से सुसज्जित था। यह एक बातचीत थी एक पादरी, सफ़ेद डबलरोटी पकानेवाली औरत और प्रूफ़ रीडर के बीच।" यह एक ही पंक्ति पर्याप्त है, आलोचकों की सही स्थिति दिखाने के लिए।

पूश्किन के बारे में लेव तोलस्तोय अपने मित्र गोलोख्वास्तोव से कहते हैं, "क्या आपने बहुत पहले पूश्किन की गद्यात्मक रचनाएँ दुबारा पढ़ी हैं? मुझ पर मेहरबानी करो, पहले बेल्किन की कहानियाँ पढ़ डालो। हर लेखक को उनका अध्ययन करते रहना चाहिए। कुछ ही दिन पहले मैंने उन्हें पढ़ा और उस सुखद अनुभव का वर्णन करने में मैं असमर्थ हूँ, जो इस पठन ने मुझे दिया।" (लेव टॉलस्टॉय, *ओ लितेरातूरे*)

इस संग्रह में इन्हीं कुछ लाजवाब रचनाओं को सम्मिलित करके, पूश्किन की रचनात्मकता के अन्य अनेक पहलुओं पर प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है।

—ए. चारुमति रामदास

दास पीटर महान का

1

मैं हूँ पेरिस में :
शुरू किया मैंने जीना,
न कि सिर्फ़ साँस लेना

उन नौजवानों में, जिन्हें पीटर महान ने नवगठित राज्य के लिए आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए विदेशों में भेजा था, उनका धर्मपुत्र, दास इब्राहीम भी था। वह पेरिस की सैनिक अकादमी में प्रशिक्षण ग्रहण करते हुए, तोपख़ाने का कप्तान नियुक्त होकर, स्पेन के साथ हुए युद्ध में अनुपम शौर्य का प्रदर्शन कर, गम्भीर रूप से घायल पेरिस लौट रहा था। अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद सम्राट अपने प्रिय दास की खोज-ख़बर लेना न भूलते थे एवं उसके आचरण तथा प्रगति के बारे में उन्हें हमेशा प्रशंसात्मक टिप्पणियाँ ही प्राप्त होती थीं। पीटर उससे बहुत प्रसन्न थे एवं अनेक बार उसे रूस वापस बुला चुके थे, मगर इब्राहीम को कोई जल्दी न थी। वह अनेक प्रकार के बहाने बनाता, कभी ज़ख़्मी होंने का, कभी अपनी शिक्षा में निपुणता प्राप्त करने का, तो कभी पैसे न होने का, और पीटर उसकी प्रार्थना को दयालुभाव से स्वीकार कर लेते तथा उसे अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए कहते, शिक्षा के प्रति उसकी ज़िद और लगन के लिए धन्यवाद देते, स्वयं फ़िजूलख़र्च न होते हुए भी उसके लिए सरकारी ख़र्च में कटौती न करते, पैसों के साथ-साथ पितृवत सलाहें एवं चेतावनी भरे आदेश भी भेजते।

ऐतिहासिक दस्तावेज़ों के अनुसार तत्कालीन फ्रांसीसियों की उन्मुक्त स्वच्छन्दता, पागलपन एवं शानो-शौकत का कोई जवाब न था। ल्युद्विक चौदहवें के शासन के अन्तिम वर्षों का, जो अपनी कट्टर धर्मपरायणता, दिखावे एवं सलीके के लिए प्रसिद्ध थे, कोई प्रभाव न बचा था। ऑर्लियन्स के ड्यूक[1] में, जिनमें अनेक बेहतरीन गुणों के साथ-साथ अनेक बुराइयाँ भी थीं, दुर्भाग्यवश दम्भ एवं पाखंड का लेशमात्र भी न था।

1. ऑर्लियन्स के ड्यूक : ल्युद्विक XV के अल्पायु होने के कारण फ्रांस के रीजेण्ट थे।

पैले रयाल[1] में होनेवाले आमोद-प्रमोद पेरिस में किसी से छिपे नहीं थे; यह उदाहरण संक्रामक था। इसी समय लॉ[2] का अवतरण हुआ; धन के लोभ के साथ ऐशो-आराम एवं बेपरवाही की प्यास भी बढ़ी; जागीरें लुप्त हो गयीं; नैतिकता का ह्रास हो गया; फ्रांसीसी मुस्कुराते और गिनती करते, और सरकार का व्यंग्यकारों के हल्के-फुल्के नाटकों के बीच विघटन होने लगा।

इस दौरान समाज काफ़ी दिलचस्प हो चला था। शिक्षा एवं मनोरंजन की माँग ने सभी वर्गों को एक-दूसरे के निकट ला दिया था। सम्पन्नता, सहृदयता, प्रतिष्ठा, योग्यता, परम विचित्रता, सभी कुछ, जो कुतूहल जगा सकता या प्रसन्नता का वादा करता, समान अनुग्रह का पात्र था। साहित्य, विज्ञान एवं दर्शन ख़ामोश अध्ययन कक्ष से निकलकर उच्च वर्ग के बीच आ गये फ़ैशन को सन्तुष्ट करने के लिए, उसकी राय से चलने के लिए। महिलाओं का बोलबाला था, मगर अब वे प्रेम प्रशंसा की माँग न करती थीं। बाह्य शिष्टाचार का स्थान परम आदर ने ले लिया था।

आधुनिक अफीना[3] के अल्कीवियाद[4] रिशेल्ये के ड्यूक[5] की छिछोरी हरकतें, जो इतिहास का अंग बन चुकी हैं, तत्कालीन सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालती हैं :

सुख के दिन, मंडित स्वैराचार से,
टुनटुना बजाता अपना, पागलपन
फ्रांस में विचरता दबे पाँव से,
नश्वर प्राणी धर्म कर्म से दूर भगाता,
लाज करे बस केवल पश्चात्ताप से।

इब्राहीम के अवतरण ने, उसके व्यक्तित्व, शिक्षा एवं स्वाभाविक बुद्धिमत्ता ने पेरिस में सभी का ध्यान आकर्षित कर लिया। सभी महिलाएँ त्सार के नीग्रो को अपने आवास में निमन्त्रित करना चाहतीं और उन्होंने उसे घेर ही लिया; रीजेंट ने अनेक बार अपनी आमोद-प्रमोद की पार्टियों में उसे आमन्त्रित किया; वह अरूएता की जवानी और शोल्ये के वृद्धत्व एवं मॉण्टेस्क्यू तथा फोन्तेनेल के वार्तालापों की गरिमा से मंडित

---

1. पैले रयाल : राजमहल।
2. लॉ : जॉन लॉ, जिसने फ्रांस में काग़ज़ के नोटों का प्रचलन किया एवं भारतवर्ष में आरम्भ की गयी कम्पनी के कृत्रिम रूप से महँगे शेयर्स जारी किये। सन् 1720 में लॉ के वित्तीय कार्यकलाप ठप हो गये, जिसके परिणामस्वरूप अनेक शेयर धारकों का दिवाला निकल गया तथा काग़ज़ी नोटों का मूल्य एकदम गिर गया।
3. आधुनिक अफीना—यहाँ पेरिस से तात्पर्य है।
4. अल्कीवियाद—अफीना के सेनापति (5 शताब्दी ई.पू.) जो बेहतरीन योग्यताओं के स्वामी होने के साथ-साथ अनैतिक एवं स्वैर व्यवहार के लिए कुख्यात थे।
5. रिशेल्ये के ड्यूक : लुइ फ्रांसुआ अमान द्यू प्लेसी (1696-1788) फ्रांस के मार्शल, जो अपने छिछोरेपन के लिए प्रसिद्ध थे।

भोजों में शामिल हुआ; किसी भी बॉल नृत्य को, किसी भी त्यौहार को, किसी भी प्रीमियर को उसने नहीं छोड़ा और आमोद-प्रमोद के उस तूफ़ान में अपनी उम्र और स्वभावगत जोश से उसने स्वयं को झोंक दिया।

मगर केवल इस व्यभिचार के, इन ख़ूबसूरत दिलचस्पियों के स्थान पर पीटर्सबुर्ग के राजप्रासाद की सादगी को अपनाने के ही विचार से इब्राहीम भयभीत नहीं था। कुछ अन्य मज़बूत ज़ंजीरें उसे पेरिस से जकड़े हुए थीं। अफ्रीकी युवक प्यार कर रहा था।

काउंटेस डी. ढलती जवानी में भी अपनी सुन्दरता के लिए चर्चित थी। सत्रह वर्ष की उम्र में, मॉनेस्ट्री से शिक्षा पूर्ण करके निकलते ही, उसका ब्याह उस आदमी से कर दिया गया, जिससे वह प्यार न कर पाई और जिसने आगे चलकर कभी भी इस बारे में प्रयत्न नहीं किया। अफ़वाहें थीं कि उसके कई प्रेमी थे, मगर भद्र समाज की आचार संहिता के अनुसार उसे आदरणीय स्थान प्राप्त था, क्योंकि उसकी किसी भी हास्यास्पद अथवा प्रलोभक कारनामे के लिए निन्दा नहीं की गयी थी। उसका आवास अत्याधुनिक था। उसके यहाँ पेरिस का बेहतरीन समाज एकत्रित होता था। इब्राहीम को उसके सामने प्रस्तुत किया युवा मेर्विल ने, जो पूरी शिद्दत से यह जतलाने का प्रयत्न करता कि वही उसका अन्तिम प्रेमी है।

काउंटेस ने इब्राहीम का बड़ी शिष्टतापूर्वक, मगर बिना विशेष ध्यान दिये स्वागत किया; जिससे उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। आमतौर से इस युवा नीग्रो को अचरज भरी निगाहों से देखा जाता, उसे घेरकर उस पर अभिवादनों एवं प्रश्नों की बौछार की जाती, और यह उत्सुकता, सहृदयता के अवगुंठन में छिपी होने पर भी, उसके आत्मसम्मान को आहत कर जाती। औरतों का मिठास भरा व्यवहार, जो हमारी कोशिशों का लगभग एकमात्र उद्देश्य होता है, उसके हृदय को न केवल अप्रसन्न करता, अपितु उसे पीड़ा एवं घृणा से भर देता। वह महसूस करता कि वह उनके लिए किसी बिरली ही जाति का जानवर है, एक ऐसा विशिष्ट, विचित्र, संयोगवश पृथ्वी पर अवतरित हुआ प्राणी है, जिसकी उनके साथ कोई समानता नहीं है। उसे उन लोगों से ईर्ष्या भी होती, जिन पर कोई ध्यान न दिया जाता, और उनकी क्षुद्रता को वह उनका सौभाग्य समझ बैठता।

यह ख़याल कि प्रकृति ने उसे प्रेम का प्रतिसाद पाने के लिए नहीं गढ़ा, उसे आत्मनिर्भरता एवं स्वाभिमान के झूठे दावे से दूर रखता, जिससे महिलाओं से मुख़ातिब होने का उसका अन्दाज़ बड़ा दिलकश हो गया था। उसकी बातचीत सीधी-सादी एवं रोबदार होती; वह भा गया काउंटेस डी. को, जो सदाबहार चुटकुलों एवं फ्रांसीसी हाज़िरजवाबी से ऊब चुकी थी। इब्राहीम अक्सर उसके यहाँ आता रहता। धीरे-धीरे उसे नौजवान नीग्रो के रूप की आदत हो गयी, बल्कि अपने मेहमान कक्ष में पाउडर लगे विगों के बीच चमकते, इस काले घुँघराले बालोंवाले सिर में उसे आकर्षण प्रतीत होने लगा। (इब्राहीम के सिर में चोट लगी थी अतः विग के स्थान पर वह सिर पर

पट्टी बाँधे रखता।) उसकी उम्र सत्ताईस वर्ष की थी, वह ऊँचा और हृष्ट-पुष्ट था और अनेकों सुन्दरियाँ उसे न केवल उत्सुकता की अपितु प्रशंसापूर्ण नज़रों से देखा करतीं, मगर पूर्वाग्रह ग्रस्त इब्राहीम या तो किसी भी बात पर ग़ौर न करता या उसे इसमें केवल छिछोरापन नज़र आता। जब उसकी निगाहें काउंटेस की नज़रों से मिलीं तो अविश्वास की धुन्ध छटने लगी। उसकी आँखों में ऐसी प्यारी सहृदयता थी, उसका व्यवहार उसके साथ इतना निष्कपट था, इतना सहज कि उसमें छिछोरेपन एवं व्यंग्य की छाया होने का सन्देह करना भी असम्भव था।

प्यार ने उसकी बुद्धि में नहीं झाँका, मगर काउंटेस को हर रोज़ देखना उसकी अनिवार्यता बन गयी। वह हर जगह उससे मिलने का मौक़ा ढूँढ़ा करता, और हर बार उस मुलाक़ात को ईश्वर की अप्रत्याशित कृपा समझता। काउंटेस ने, उससे पहले, उसकी भावनाओं को ताड़ लिया। कुछ भी कहिए, मगर चापलूसी की अपेक्षा आशा एवं कामनारहित प्रेम स्त्री हृदय को कहीं गहरे छू जाता है। इब्राहीम की उपस्थिति में काउंटेस उसकी हर हरकत पर नज़र रखती, उसकी सभी बातों को तन्मयतापूर्वक सुनती, उसकी अनुपस्थिति में ख़यालों में खो जाती और अपनी चिर-परिचित उदासीनता में डूब जाती...मेर्विल ने ही पहले-पहल इस पारस्परिक झुकाव को भाँप लिया और इब्राहीम को बधाई दे दी। प्रेम की आग को कोई और चीज़ इतना नहीं भड़काती जितना ग़ैरों का प्रशंसात्मक प्रोत्साहन। प्रेम अन्धा होता है और स्वयं पर भी विश्वास न करते हुए शीघ्रता से किसी भी सहारे से लिपट जाता है। मेर्विल के शब्दों ने इब्राहीम को मानों जगा दिया। अपनी प्रिय महिला का स्वामित्व पाने की सम्भावना अब उसे कोरी कल्पना प्रतीत न हुई; आशा ने उसकी आत्मा को चकाचौंध कर दिया; वह बेतहाशा प्यार करने लगा। उसके प्रेमोन्माद से घबराई हुई काउंटेस ने व्यर्थ ही दोस्ती की नसीहतें एवं विवेक सम्बन्धी उपदेश देकर उसका विरोध करने की कोशिश की, मगर वह स्वयं ही कमज़ोर पड़ गयी।

असावधानी से दिखाई गयी मेहरबानियाँ शीघ्रतापूर्वक बढ़ती गयीं। और आख़िरकार अपने ही द्वारा प्रेरित प्रेमोन्माद से आकर्षित होकर, उसके प्रभाव से निढाल, उसने स्वयं को उन्मादित इब्राहीम को सौंप दिया।

सतर्क समाज की पैनी दृष्टि से कुछ भी छिपा नहीं रहता। काउंटेस के नये सम्वन्ध के बारे में जल्दी ही सब जान गये। कुछ महिलाओं को उसके चुनाव पर विस्मय हुआ और कइयों को यह स्वाभाविक प्रतीत हुआ। कुछ लोग हँसे, कुछ औरों ने इसमें उसकी अक्षम्य असावधानी देखी। अनुराग से उत्पन्न आनन्द के पहले दौर में इब्राहीम और काउंटेस ने कुछ भी महसूस नहीं किया, मगर शीघ्र ही पुरुषों के द्विअर्थी मज़ाक़ और औरतों की पैनी फ़ब्तियाँ उन तक पहुँचने लगीं। इब्राहीम का गरिमापूर्ण एवं संयमित व्यवहार उसको इन आक्रमणों से अब तक बचाता रहा, वह बड़े धैर्य से उन्हें सहन करता रहा और समझ नहीं पाया कि क्या प्रतिक्रिया दिखाए।

समाज से आदर पाने की अभ्यस्त काउंटेस स्वयं को उपहास एवं अफ़वाहों का शिकार होते देख शान्त न रह पायी। कभी वह आँसू लिये इब्राहीम से शिकायत करती, कभी उसे कड़वाहट से बुरा-भला कहती, कभी उसकी सहायता न करने की चिरौरी करती, जिससे कि व्यर्थ उठे तूफ़ान से वह पूरी तरह तबाह न हो जाए।

नयी परिस्थिति ने उसकी स्थिति को और भी जटिल बना दिया। असावधानीपूर्वक किये गये प्रेम का परिणाम प्रकट हो चुका था। सान्त्वना, परामर्श, सुझाव, सभी समाप्त हो चुके थे, नकार दिये गये थे। काउंटेस अपनी अवश्यम्भावी मृत्यु को देख रही थी और बड़ी बदहवासी से उसका इन्तज़ार कर रही थी।

जैसे ही काउंटेस की स्थिति का पता चला, नये जोश से अटकलें लगायी जाने लगीं। संवेदनशील स्त्रियाँ भय से कराह उठीं; पुरुष शर्त लगाने लगे कि काउंटेस किसे जन्म देगी : गोरे या काले बालक को। उसके पति पर, जो पूरे पेरिस में अकेला ही ऐसा व्यक्ति था, जो न कुछ जानता था, न किसी बात पर शक करता था, व्यंगात्मक मुक्तकों की बौछार होने लगी।

मनहूस घड़ी निकट आ रही थी। काउंटेस की हालत बड़ी नाज़ुक थी। इब्राहीम प्रतिदिन उसके पास आता। वह देख रहा था कि कैसे उसकी आन्तरिक एवं शारीरिक ऊर्जा धीरे-धीरे लुप्त हो रही है। उसके आँसू, उसका डर हर पल प्रकट होते। आख़िरकार उसे पहले दर्द का अहसास हुआ। शीघ्र ही सारे प्रबन्ध किये गये। काउंट को किसी बहाने से दूर भेजा गया। डॉक्टर आया। इससे दो दिन पूर्व एक निर्धन स्त्री को अपने नवजात शिशु को पराये हाथों में सौंपने पर राज़ी किया गया; इसके लिए एक विश्वसनीय व्यक्ति को भेजा गया। इब्राहीम उस शयनकक्ष के निकट ही के कमरे में उपस्थित था, जहाँ अभागी काउंटेस लेटी थी। साँस लेने से भी डरते हुए वह उसकी ज़ोर-ज़ोर की कराहें, सेविका की फुसफुसाहट और डॉक्टर के निर्देश सुन रहा था। वह बड़ी देर तक तड़पती रही। उसकी हर कराह इब्राहीम के दिल को चीर जाती; ख़ामोशी का हर लमहा उसे भय से सराबोर कर देता...अचानक उसने शिशु की कमज़ोर चीख़ सुनी और अपने जोश को नियन्त्रण में रखने में असमर्थ वह काउंटेस के कमरे में घुस गया, एक साँवला शिशु काउंटेस के पैरों के बीच बिस्तर पर पड़ा था। इब्राहीम उसके निकट आया। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था। काँपते हाथों से उसने पुत्र को आशीर्वाद दिया। काउंटेस क्षीणतापूर्वक मुस्कुरायी और उसने अपना निर्बल हाथ उसकी ओर बढ़ाया...मगर डॉक्टर ने, रोगी के लिए अत्यधिक मानसिक आवेग की स्थिति उत्पन्न होने के डर से, इब्राहीम को उसके बिस्तर से दूर खींच लिया। नवजात शिशु को बन्द डलिया में रखा गया और गुप्त सीढ़ियों से घर से बाहर ले जाया गया। दूसरे बालक को लाया गया और उसका पालना प्रसूता के शयनकक्ष में रख दिया गया।

इब्राहीम कुछ आश्वस्त होकर चला गया। काउंट का इन्तज़ार किया गया। वह

देर से वापस लौटा, पत्नी की सुखद प्रसूती के बारे में जानकर बड़ा प्रसन्न हुआ। इस प्रकार जनता, जो किसी लफड़े का इन्तज़ार कर रही थी, धोखा खा गयी और केवल तानों पर ही सन्तोष करने को बाध्य हो गयी।

सब कुछ पुराने ढर्रे पर चलने लगा। मगर इब्राहीम को यह महसूस होता कि उसका भाग्य बदलनेवाला है, उसके सम्बन्धों के बारे में देर-सबेर काउंट डी. को पता चलेगा। उस हालत में, चाहे कुछ भी हो काउंटेस की मृत्यु अवश्यम्भावी होती। वह बड़ी शिद्दत से प्यार कर रहा था और उसी तरह प्यार पा भी रहा था; मगर काउंटेस मनचली और छिछोरी थी। वह पहली बार प्यार नहीं कर रही थी। उसके हृदय के कोमल भावों का स्थान तिरस्कार एवं घृणा ले सकते थे। इब्राहीम ठंडेपन के इस क्षण की कल्पना कर रहा था; अब तक उसे प्रतिद्वन्द्विता के दर्शन तो नहीं हुए थे मगर उसका त्रासद पूर्वाभास हो चला था; उसने सोचा कि जुदाई का ग़म कुछ कम पीड़ादायक होगा, और उसने इस दुर्भाग्यपूर्ण सम्बन्ध को समाप्त करने का, पेरिस छोड़ने और रूस जाने का निश्चय कर लिया, जहाँ उसे कब से बुला रहे थे—पीटर और उसकी कृतज्ञतापूर्ण बोझिल भावना।

2

दिन और महीने गुज़रते रहे और प्रेमासक्त इब्राहीम स्वयं द्वारा फुसलाई गयी महिला को छोड़ने का निर्णय न ले सका। काउंटेस का उसके साथ सम्बन्ध धीरे-धीरे अधिकाधिक प्रगाढ़ होता चला गया। उनका पुत्र एक दूर-दराज़ के इलाके में पल रहा था। समाज की अफ़वाहें धीरे-धीरे शान्त होने लगीं और प्रेमी ख़ामोशी से बीते हुए तूफ़ान को याद करते, भविष्य के बारे में सोचने की कोशिश न करते हुए, इस सुकून का आनन्द उठाने लगे।

एक बार इब्राहीम ऑर्लियन्स के ड्यूक के द्वार के पास ही खड़ा था। ड्यूक ने, उसके नज़दीक से गुज़रते हुए, उसके हाथ में एक पत्र थमाकर उसे फ़ुर्सत की घड़ी में पढ़ने की आज्ञा दी। यह पत्र पीटर प्रथम का था। सम्राट ने उसकी अनुपस्थिति के वास्तविक कारण को भाँपते हुए ड्यूक को लिखा कि उसका इब्राहीम को किसी भी तरह के बन्धन में रखने का कोई इरादा नहीं है, वह रूस में वापस लौटने या न लौटने का निर्णय उसी की इच्छा पर छोड़ता है, मगर किसी भी हालत में वह अपने भूतपूर्व पाल्य को नहीं छोड़ेगा। यह पत्र इब्राहीम के दिल की गहराइयों को छू गया। उसी क्षण से उसके भाग्य का निर्णय हो गया। दूसरे दिन उसने ड्यूक को शीघ्र ही रूस जाने के अपने इरादे से अवगत कराया।

"सोचो कि आप क्या करने जा रहे हैं!" ड्यूक ने उससे कहा, "रूस आपकी

पितृभूमि[1] नहीं है; मैं नहीं सोचता कि आप कभी अपनी उष्ण मातृभूमि को दुबारा देख पाएँगे; मगर फ्रांस में आपकी लम्बी मौजूदगी ने आपको अधजंगली रूस की जलवायु और जीवन शैली के लिए भी अजनबी बना दिया है। जन्म से तो आप पीटर की प्रजा नहीं थे। मुझ पर विश्वास कीजिए : उसकी इस उदारतापूर्वक दी गयी आज्ञा का लाभ उठाइए। फ्रांस में रुक जाइए, जिसके लिए आप अपना ख़ून बहा चुके हैं, और यक़ीन कीजिए, यहाँ भी आपकी सेवाएँ एवं योग्यताएँ समुचित पुरस्कार से वंचित नहीं रहेंगी।"

इब्राहीम ने ड्यूक को हार्दिक धन्यवाद दिया, मगर अपने इरादे पर अटल रहा।

"मुझे अफ़सोस है," ड्यूक ने उससे कहा, "मगर आप सही हैं।" उसने उसे सेवामुक्ति का आश्वासन दिया और रूस के सम्राट को विस्तृत पत्र लिखा।

इब्राहीम ने शीघ्र ही यात्रा की तैयारी कर ली। प्रस्थान की पूर्व सन्ध्या उसने आदत के मुताबिक़ काउंटेस डी. के यहाँ गुज़ारी। उसे कुछ भी मालूम न था, इब्राहीम की हिम्मत ही नहीं हुई उससे खुलकर कहने की। काउंटेस शान्त एवं प्रसन्न थी। उसने कई बार उसे अपने निकट बुलाया और उसकी चिन्तनशीलता का मज़ाक़ उड़ाया। भोजन के बाद सभी चले गये। मेहमान खाने में बचे काउंटेस, उसके पति और इब्राहीम। अभागा उसके साथ एकान्त के कुछ क्षणों के लिए दुनिया की हर चीज़ लुटा देता; मगर काउंट डी. अँगीठी के पास इतने आराम से बैठे नज़र आये कि उनके कमरे से बाहर निकलने की आशा करना व्यर्थ प्रतीत हुआ। तीनों ख़ामोश थे। 'गुडनाइट', आख़िरकार काउंटेस ने कहा। इब्राहीम का दिल मानों बैठ गया और अचानक वह जुदाई के ख़ौफ़ को महसूस करने लगा। वह निश्चल खड़ा रहा। 'गुडनाइट, महाशय' काउंटेस ने दुहराया। वह फिर भी नहीं हिला...अन्त में उसकी आँखें नम हो गयीं, सिर घूमने लगा, वह जैसे-तैसे कमरे से बाहर निकल पाया। घर आकर लगभग पागलपन की हालत में उसने यह ख़त लिखा :

"प्यारी लियोनारा, मैं जा रहा हूँ, तुम्हें हमेशा के लिए छोड़कर। तुम्हें लिख इसलिए रहा हूँ कि तुम्हारे सामने कोई सफाई पेश करना मेरी सामर्थ्य से बाहर है।

"मेरा सुख स्थायी न रह पाया। स्वभाव एवं भाग्य की प्रतिकूलता के बावजूद मैं उसका आनन्द उठाता रहा। तुम्हें मुझसे घृणा हो जाएगी, आकर्षण लुप्त हो ही जाएगा, यह ख़याल हमेशा मेरा पीछा करता रहा, उन क्षणों में भी, जब मैं सब कुछ भूल जाया करता, जब तुम्हारे पैरों के पास बैठकर तुम्हारे उत्कट, निःस्वार्थ प्रेम, तुम्हारी असीम कोमलता और प्यार को महसूस करता...छिछोरा समाज वास्तविकता में बड़ी बेरहमी से उस चीज़ के पीछे पड़ जाता है, जिसे सैद्धान्तिक रूप से मान्यता प्रदान करता है : उसका बेरूखा उपहास कभी-न-कभी तुम्हें पराजित कर देता, तुम्हारी

1. जन्मभूमि के लिए मातृभूमि के साथ-साथ पितृभूमि शब्द का उपयोग भी रूस में किया जाता है।

आवेगपूर्ण आत्मा को शान्त कर देता और अन्त में तुम्हें अपने उन्माद पर लज्जा होने लगती...तब मेरा क्या होता? नहीं! उस भयानक क्षण के आने से पूर्व बेहतर है मर जाना, बेहतर है तुम्हें छोड़ देना...

"तुम्हारा सुख-चैन मेरे लिए सबसे ज़्यादा क़ीमती है : जब तक समाज की नज़रें हम पर तनी हुई होंगी, तुम उसका आनन्द न उठा पातीं।

"याद करो वह सब, जो तुमने सहा है, आत्मसम्मान का अपमान, भय की सभी पीड़ाएँ; याद करो हमारे पुत्र के जन्म की भयानक गाथा। सोचो : क्या मैं दुबारा तुम्हें उन्हीं परेशानियों और ख़तरों के हवाले कर दूँ? इतनी सुन्दर, कोमल रचना का भाग्य अभागे नीग्रो के भाग्य से जोड़ने का कष्ट क्यों किया जाए, जिसे मानव कहलाने का अधिकार भी मुश्किल से मिलता है?

"माफ़ करना, लिओनोरा, माफ़ करना मेरे प्यारे, मेरे इकलौते दोस्त! तुम्हें छोड़ते हुए मैं अपने जीवन की प्रथम एवं अन्तिम खुशियों को अलविदा कह रहा हूँ। मेरी न तो कोई पितृभूमि है, न ही है कोई निकट सम्बन्धी। जा रहा हूँ उदास रूस को, जहाँ मेरा निपट एकान्त ही मेरा सुख होगा। कठोर परिश्रम, जिसके लिए मैं अब से समर्पित हूँ, यदि मेरा दमन न कर दे, तो कम-से-कम सुख और उन्माद के दिनों की पीड़ादायक स्मृतियों से तो मेरा ध्यान हटाएँगे...क्षमा करना, लिओनोरा—इस ख़त से यूँ दूर हो रहा हूँ, जैसे तुम्हारे आलिंगन से; माफ़ करना, खुश रहो, और कभी-कभी अभागे नीग्रो को, अपने सच्चे इब्राहीम को याद कर लिया करो।"

उसी रात वह रूस के लिए चल पड़ा। यात्रा उसे इतनी भयावह न प्रतीत हुई, जितनी उसने कल्पना की थी। उसकी कल्पना वास्तविकता पर हावी हो रही थी, जैसे-जैसे वह पेरिस से दूर होता गया, वैसे-वैसे बड़ी ज़िन्दादिली से उन वस्तुओं की निकटता महसूस करता गया, जिन्हें वह बरसों पहले छोड़ गया था।

संवेदनशून्य अवस्था में वह रूस की सीमा पर पहुँचा। शिशिर का आगमन हो चुका था। मगर गाड़ीवान, बेतरतीब रास्तों पर ध्यान न देते हुए, उसे हवा की रफ़्तार से ले जा रहे थे और अपनी यात्रा की सत्रहवीं सुबह को वह क्रास्नोये सेलो पहुँचा, जहाँ से तत्कालीन राजमार्ग गुज़रता था।

पीटर्सबुर्ग तक अट्ठाईस वेर्स्त[1] मील रह गये थे। जब तक घोड़े जोते जा रहे थे, इब्राहीम कोचवान की झोंपड़ी में गया। एक कोने में ऊँचे क़दवाला एक आदमी हरा कफ्तान[2] पहने, मुँह में चीनी मिट्टी का पाइप दबाये मेज़ पर कोहनियाँ टिकाये हैम्बर्ग के समाचार पत्र पढ़ रहा था। किसी के अन्दर आने की आहट से उसने सिर उठाया। "ब्वा! इब्राहीम?" बेंच से उठते हुए वह चिल्लाया, "बहुत अच्छे, धर्मपुत्र!"

---

1. वेर्स्त—दूरी की इकाई 1.06 कि.मी.
2. कफ्तान—लम्बे पल्लोंवाला पुरुषों का अँगरखा

इब्राहीम पीटर को पहचानकर, ख़ुशी के मारे उसकी ओर लपकने ही वाला था, मगर आदरपूर्वक ठिठक गया। सम्राट निकट आये, उसका आलिंगन कर उसके माथे को चूमा।

"मुझे तुम्हारे आगमन की पूर्व सूचना दी गयी थी" पीटर ने कहा, "और मैं तुम्हारा स्वागत करने चला आया। कल से तुम्हारा इन्तज़ार कर रहा हूँ।" इब्राहीम को कृतज्ञता प्रकट करने के लिए शब्द ही न मिले।

"अपनी गाड़ी को हमारे पीछे आने की आज्ञा दो", सम्राट ने आगे कहा, "और तुम मेरे साथ बैठो, मेरे निवास पर चलेंगे?"

सम्राट की गाड़ी तैयार कर दी गयी। वे इब्राहीम के साथ बैठे और चल पड़े। डेढ़ घण्टे बाद वे पीटर्सबुर्ग पहुँचे। इब्राहीम उत्सुकता से नवजात राजधानी को देख रहा था, जो दलदल में से उभरी थी निरंकुशता की सनक के फलस्वरूप। जहाँ-तहाँ बिखरे अनावृत बाँध, तटबन्ध रहित नहरें, लकड़ी के पुल प्रकृति के असहयोग के ऊपर मानवीय इच्छा की विजय की कहानी कह रहे थे। घर शीघ्रता से निर्मित किये गये प्रतीत हो रहे थे। पूरे शहर में कोई भी चीज़ शानदार नहीं थी सिवाय नीवा के, जो अभी तक ग्रेनाइट की चौखट से सुसज्जित नहीं हुई थी, मगर व्यापारिक एवं सामरिक जहाज़ों से आच्छादित अवश्य हो गयी थी। सम्राट की गाड़ी तथाकथित त्सार उद्यान के निकट रुकी। ड्योढ़ी पर पीटर का स्वागत किया लगभग पैंतीसवर्षीया महिला ने जो सुन्दर थी और पेरिस के आधुनिकतम फ़ैशन के वस्त्र पहने थी।

पीटर ने उसके अधरों का चुम्बन लिया और इब्राहीम का हाथ पकड़कर बोला, "पहचाना तुमने, कातेंका, मेरे धर्मपुत्र को, कृपया इससे पहले की ही भाँति प्रेम करना एवं इसका ध्यान रखना।" एकातेरिना ने उस पर अपनी काली, भेदक आँखें टिकाईं और स्नेहपूर्वक उसकी ओर अपना हाथ बढ़ाया। दो नवयौवनाएँ, ऊँची, सुदृढ़, गुलाब जैसी ताज़ा-तरीन जो उसके पीछे खड़ी थीं, आदरपूर्वक पीटर के निकट आयीं।

"लीजा," वह उनमें से एक से बोला, "तुझे वह नन्हा नीग्रो याद है, जो तेरे लिए ओरेनबाऊम में मेरे सेब चुराया करता था? यह रहा वो, पेश करता हूँ।"

महान राजकुमारी हँस पड़ी और लाल हो गयी। वे भोजन गृह में गये। सम्राट के इन्तज़ार में मेज़ सजाई गयी थी। पीटर इब्राहीम को आमन्त्रित करते हुए पूरे परिवार के साथ भोजन करने बैठा। भोजन करते हुए सम्राट उससे अनेक विषयों पर बातें करता रहा, स्पेन के युद्ध के बारे में, फ्रांस के आन्तरिक मामलों के बारे में, ड्यूक के बारे में उससे पूछा, जिसे वह बहुत चाहता था, हालाँकि उसकी अनेक खामियाँ भी निकाला करता। इब्राहीम की निरीक्षण शक्ति बड़ी पैनी एवं सटीक थी। पीटर उसके उत्तरों से बहुत प्रसन्न हुआ : इब्राहीम के बचपन के क़िस्से, याद कर करके, वह इतनी सहृदयता एवं प्रसन्नता से सुना रहा था कि इस प्यारे एवं आतिथ्यप्रिय गृह स्वामी को

देखकर कोई भी उसके पल्तावा के 'हीरो' एवं रूस के शक्तिशाली एवं भयानक पुनर्निर्माता होने की कल्पना न कर सकता था।

भोजन के पश्चात् रूसी प्रथा के अनुसार सम्राट विश्राम करने चले गये। इब्राहीम सम्राज्ञी एवं महान राजकुमारियों के साथ रह गया। वह उनकी उत्सुकता को शान्त करने का प्रयत्न कर रहा था, पेरिस के जीवन का चित्र खींचते, वहाँ के त्यौहार और अनूठे फ़ैशन का वर्णन करता रहा। इसी बीच कुछ विशिष्ट व्यक्ति, जो सम्राट के काफ़ी निकट थे, महल में एकत्रित हो गये। इब्राहीम ने पहचान लिया महान राजकुमार मेन्शिकोव को, जो एकातेरिना से बातें करते हुए, इब्राहीम को बड़े घमंड से देख रहा था; सम्राट के गम्भीर सलाहकार राजकुमार याकाव दोल्गारुकी को; जनता के मध्य रूसी फाऊस्ट के रूप में विख्यात वैज्ञानिक ब्रूस को, अपने पूर्व सखा युवा रागूजिन्स्की को एवं अन्य अनेक व्यक्तियों को, जो सम्राट के पास अपने-अपने निवेदनों एवं उसके आदेशों के लिए आये थे।

सम्राट लगभग दो घण्टे बाद बाहर आये। "देखते हैं," उन्होंने इब्राहीम से कहा, "तुम अपने पुराने कर्तव्य को तो नहीं भूले। तख्ती लेकर मेरे साथ आओ।" वह खरादी में आया और द्वार बन्द करके शासकीय कामकाज निपटाने लगा। वह बारी-बारी से ब्रूस, राजकुमार दोल्गारुकी, पुलिस जनरल देवियेर के साथ चर्चा करता रहा तथा इब्राहीम को कुछ आज्ञाएँ एवं निर्णय लिखवाता रहा। इब्राहीम उसके तेज़ एवं स्पष्ट दिमाग़, उसकी एकाग्रता एवं परिस्थिति को समझने की शक्ति तथा उसके कार्यों की विविधता का कायल हुए बिना न रह सका। काम समाप्त होने के पश्चात् पीटर ने जेबी डायरी निकाली यह देखने के लिए कि आज के लिए निर्धारित सभी कार्य पूरे हो गये हैं अथवा नहीं। फिर, खरादी से निकलते हुए इब्राहीम से कहा, "काफ़ी देर हो चुकी है; तुम, मैं समझता हूँ, थक गये हो, रात यहीं गुज़ार लो, जैसा पहले गुज़ारा करते थे। कल मैं तुम्हें उठा दूँगा।"

अकेले रह जाने पर, इब्राहीम को अपने आप पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह पीटर्सबुर्ग में था, उसने दुबारा उस महान व्यक्ति को देखा, जिसके सान्निध्य में, उसकी महत्ता जाने बग़ैर, उसने अपना बचपन गुज़ारा था। लगभग पश्चात्ताप की भावना से ही उसने मन-ही-मन स्वीकार किया कि इस पूरे दिन, जुदाई के बाद पहली बार, काउंटेस डी. उसके विचारों का एकमात्र केन्द्र नहीं रही थी। उसने देखा कि जीवन का यह नया रूप, जो उसका इन्तज़ार कर रहा था, कार्यकलाप एवं निरन्तर व्यस्तता उसकी आत्मा को, जो आवेगों, निठल्लेपन एवं रहस्यमय निराशा के कारण थककर चूर हो गयी है, जीवित कर सकेंगे। इस महान व्यक्ति का सहयोगी होने एवं उसके साथ मिलकर महान जनता के भविष्य के लिए कार्य करने के विचार ने उसके भीतर पहली बार महत्त्वाकांक्षा को जाग्रत किया। इसी उधेड़बुन में वह अपने लिए तैयार

किये गये बिस्तर पर जा लेटा, और तब परिचित सपने उसे ले चले दूरस्थ पेरिस की ओर, प्रियतमा के आलिंगन में।

3

दूसरे दिन अपने वादे के मुताबिक़ पीटर ने इब्राहीम को उठाया और प्रेअब्राझेन्स्की रेजिमेंट के, जिसका कप्तान वह स्वयं था, बमबारी दस्ते के लेफ़्टिनेंट कप्तान नियुक्त किये जाने की बधाई दी। दरबारियों ने इब्राहीम को घेर लिया। हर कोई अपने-अपने तरीक़े से नये कृपापात्र के प्रति स्नेह प्रदर्शित करने का प्रयत्न कर रहा था। घमंडी राजकुमार मेन्शिकोव ने मित्रतापूर्वक उससे हाथ मिलाया। शेरेमेत्येव ने पेरिस के अपने परिचितों के बारे में पूछा और गोलोविन ने उसे भोजन के लिए बुला लिया। इस अन्तिम उदाहरण का अनुकरण दूसरों ने भी किया, जिसके फलस्वरूप इब्राहीम को लगभग पूरे महीने के लिए निमन्त्रण प्राप्त हो गये।

इब्राहीम एक-से, मगर कामकाज से भरपूर दिन गुज़ारता था, जिसके फलस्वरूप ऊबता नहीं था। दिन-प्रतिदिन सम्राट के प्रति अधिकाधिक स्नेह का अनुभव करता हुआ वह उसकी महान आत्मा को सबसे अच्छी तरह समझ रहा था। किसी महान व्यक्ति के विचारों को समझना बड़ी दिलचस्प कला है। इब्राहीम पीटर को देखा करता सिनेट में, बुतुर्लिन और दोल्गारुकी के साथ बहस करते, न्यायपालिका की महत्त्वपूर्ण समस्याओं का समाधान ढूँढ़ते हुए, जहाज़ निर्माण संस्था में रूस के नौ सेना बेड़े की महानता पर ज़ोर देते हुए फिओफान, गावरीला बुझिन्स्की और कोपियेविच के साथ फ़ुर्सत के क्षणों में विदेशी प्रकाशनों के अनुवाद देखते हुए या किसी व्यापारी की फ़ैक्ट्री, कारीगर के कारख़ाने या वैज्ञानिक के अध्ययन कक्ष में जाते हुए। रूस इब्राहीम को एक भीमकाय कारख़ाना प्रतीत हो रहा था, जिसमें सिर्फ़ मशीनें चलती हैं, जहाँ हर कामगार निर्धारित नियमों का पालन करते हुए अपने काम में मग्न है। उसने स्वयं को भी अपनी मशीन पर कार्य करने के लिए बाध्य समझा और पेरिस के जीवन की रंगीनियों के अभाव का कम-से-कम अफ़सोस करने का प्रयत्न करने लगा। मगर एक और चीज़, प्यारी यादों को, स्वयं से दूर करना उसके लिए बहुत कठिन था, अक्सर वह काउंटेस डी. के बारे में सोचा करता, उसकी स्वाभाविक अप्रसन्नता की, उसके आँसुओं और उदासी की वह कल्पना करता...मगर कभी-कभी एक भयानक विचार उसके दिल को सहमा देता; कुलीन समाज की अन्यमनस्कता, नये सम्बन्ध, कोई और भाग्यशाली, वह काँप गया; ईर्ष्या उसके अफ़्रीकी ख़ून में उफान लाने लगी और गरम-गरम आँसू उसके स्याह चेहरे पर बहने को मचल उठे।

एक बार वह अपने अध्ययन कक्ष में कामकाज सम्बन्धी काग़ज़ात लिये बैठा

था कि अचानक फ्रांसीसी भाषा में ज़ोरदार अभिवादन सुनाई दिया; इब्राहीम फुर्ती से पलटा और नौजवान कोर्साकोव ने, जिसे वह पेरिस के उच्च समाज की अन्धड़ में छोड़ आया था, ख़ुशी से चिल्लाते हुए उसको अपनी बाँहों में भर लिया।

"मैं बस अभी-अभी पहुँचा हूँ," कोर्साकोव ने कहा, "और सीधा तेरे पास भागा। पेरिस के हमारे सभी परिचित तुझे नमस्ते कहते हैं, तुम्हारी ग़ैरहाज़िरी का अफ़सोस मनाते हैं; काउंटेस डी. ने तुम्हें बुलाने का हुक्म दिया है, और यह रहा उसका ख़त।" अपनी आँखों पर भरोसा करने की हिम्मत न करते हुए इब्राहीम ने थरथराते हाथों से उसे पकड़ा और लिफ़ाफ़े के ऊपर के जाने-पहचाने अक्षरों को देखने लगा।

"मैं बहुत खुश हूँ," कोर्साकोव कहता रहा, "कि इस जंगली पीटर्सबुर्ग में उकताहट के मारे तुम अब तक मरे नहीं हो। यहाँ करते क्या हैं, क्या व्यवसाय है? तुम्हारा दर्ज़ी कौन है? क्या यहाँ कम-से-कम ऑपेरा भी है?" इब्राहीम ने अनमनेपन से जवाब दिया कि इस समय सम्राट शायद गोदी में काम कर रहे हैं। कोर्साकोव मुस्कुराया।

"देख रहा हूँ," वह बोला, "कि इस समय तुम्हें मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं है, किसी और समय जी भर के बातें करेंगे, अभी मैं सम्राट की सेवा में प्रस्तुत होने जा रहा हूँ।" इतना कहते-कहते वह एक पैर पर खड़े-खड़े घूम गया और कमरे से बाहर भाग गया।

अकेला रह जाने पर इब्राहीम ने जल्दी से ख़त खोला। काउंटेस ने बनावटीपन एवं अविश्वसनीयता का उलाहना देते हुए उससे प्यार भरी शिकायत की थी। "तुम कहते हो," उसने लिखा था, "कि तुम्हारे लिए मेरा सुकून दुनिया की हर चीज़ से बढ़कर है : इब्राहीम! अगर यह सच होता तो क्या तुम मुझे उस स्थिति में छोड़ सकते थे, जिसमें तुम्हारे प्रस्थान की मनहूस ख़बर ने मुझे ला पटका था? तुम डरते थे कि कहीं मैं तुम्हें रोक न लूँ; यक़ीन करो कि मेरे प्यार के बावजूद, तुम्हारी भलाई के लिए, उस कार्य के लिए, जिसे तुम अपना कर्तव्य समझते हो, मैं उसे क़ुर्बान कर देती।" काउंटेस ने प्यार का चरम विश्वास दिलाते हुए और दुबारा मिलने की कोई उम्मीद न होने की स्थिति में उसे कभी-कभार पत्र लिखने की कसमें देते हुए पत्र समाप्त किया था।

इब्राहीम उन अनमोल पंक्तियों को उत्तेजना से चूमते हुए, पत्र को बीस बार पढ़ गया। वह काउंटेस के बारे में कुछ सुनने की बेसब्री से सन्तप्त जहाज़ निर्माण संस्था की ओर चलने की तैयारी करने लगा, इस आशा से कि शायद कोर्साकोव को अभी भी वहाँ पकड़ सके, मगर दरवाज़ा खुला, और कोर्साकोव खुद ही दुबारा प्रकट हुआ; वह सम्राट के सम्मुख प्रस्तुत हो चुका था और आदत के मुताबिक़ स्वयं पर बेहद ख़ुश था।

"सिर्फ़ हमारे बीच," उसने इब्राहीम से कहा, "सम्राट बड़ा विचित्र व्यक्ति है; सोचो मैंने उसे गाढ़े की जैकेट पहने देखा, नये जहाज़ के मस्तूल पर, जहाँ मुझे चढ़ना पड़ा अपने प्रमाण पत्रों के साथ। मैं रस्सी की सीढ़ी पर खड़ा था और वहाँ पर्याप्त स्थान नहीं था कि मैं सलीके से अभिवादन कर सकता, मैं पूरी तरह गड़बड़ा गया, जो अब तक मेरे साथ कभी नहीं हुआ था। मगर, सम्राट ने, मेरे काग़ज़ात पढ़कर सिर से पैर तक मुझे देखा, और शायद मेरी शानदार वेशभूषा के सलीके से विस्मित हो गया; कम-से-कम वह मुस्कुराया और मुझे आज सभा में आने का निमन्त्रण दे दिया। मगर पीटर्सबुर्ग में मैं बिलकुल अजनबी हूँ, छह साल की अनुपस्थिति में मैं यहाँ के रिवाज़ पूरी तरह भूल गया हूँ, कृपया मेरे पथ-प्रदर्शक बनो, मेरे साथ आओ और मेरा परिचय करवाओ।" इब्राहीम मान गया और फ़ौरन बातचीत को अपने मतलब की ओर मोड़ने लगा।

"तो, काउंटेस डी. कैसी है?"

"काउंटेस? ज़ाहिर है, पहले तो तुम्हारे जाने से उसे बहुत दुःख हुआ; मगर, ज़ाहिर है, फिर धीरे-धीरे वह शान्त हो गयी और अपने लिए नया प्रेमी ढूँढ़ लिया; मालूम है किसको? लम्बा सामन्त आर; ये तुम अपनी अफ़्रीकी आँखें क्यों फाड़ रहे हो? या यह सब तुम्हें अजीब लग रहा है, क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अधिक समय तक शोक मनाना मानव स्वभाव के प्रतिकूल है, विशेषकर नारी स्वभाव के; इस बारे में अच्छी तरह सोचो, और मैं जा रहा हूँ, सफ़र की थकान उतारूँगा, मेरे पास आना न भूलना।"

इब्राहीम के मन में कौन से ख़याल आये? ईर्ष्या? वहशीपन? निराशा? नहीं, बल्कि गहरी दमघोंट उदासी। उसने मन-ही-मन दुहराया, "मुझे इसका पूर्वानुमान था, यह तो होना ही था।" फिर काउंटेस के पत्र को खोला, उसे दुबारा पढ़ा, सिर लटकाया और ज़ोर से रो पड़ा। वह बड़ी देर तक रोता रहा। आँसुओं ने उसके जी को कुछ हल्का किया। घड़ी पर नज़र डालते ही उसने देखा कि जाने का समय हो गया था। इब्राहीम न जाने की छूट पाकर प्रसन्न ही होता, मगर सभा बड़ी ज़रूरी समझी जाती थी और सम्राट इसमें अपने निकट व्यक्तियों की उपस्थिति की माँग कठोरता से करते थे। उसने कपड़े पहने और कोर्साकोव को लेने के लिए चल पड़ा।

कोर्साकोव गाऊन में बैठा फ्रांसीसी किताब पढ़ रहा था। "इतनी जल्दी," उसने इब्राहीम को देखकर कहा।

"ग़ौर फ़रमाइए," उसने जवाब दिया, "साढ़े पाँच बज चुके हैं, हमें देर हो रही है, जल्दी से कपड़े बदलो, निकल पड़ेंगे।"

कोर्साकोव हड़बड़ा गया, वह पूरी ताक़त से घण्टियाँ बजाने लगा; सेवक दौड़ते हुए आये; वह शीघ्रतापूर्वक तैयार होने लगा। फ्रांसीसी सेवक ने उसे लाल एड़ियोंवाले

जूते, नीली मखमली पतलून, गुलाबी, सितारों जड़ी, कफ्तान[1] दी, सामनेवाले कमरे में शीघ्रता से उसके विग पर पाउडर लगाकर उसे पेश किया गया। कोर्साकोव ने अपना गंजा सिर उसमें घुसाया, तलवार और दस्ताने माँगे, दस बार आईने के सामने घूमा और इब्राहीम से बोला कि वह तैयार है। सेवकों ने उन्हें भालू की ख़ाल के कोट दिये और वे शीतप्रासाद के लिए निकल पड़े।

कोर्साकोव ने इब्राहीम पर प्रश्नों की बौछार कर दी : पीटर्सबुर्ग में सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी कौन है? सर्वश्रेष्ठ नर्तक होने का सम्मान किसे प्राप्त है? आजकल कौन से नृत्य का चलन है? इब्राहीम बड़े अनमनेपन से उसकी उत्सुकता को शान्त किये जा रहा था। इसी बीच वे महल पहुँच गये। सामने मैदान में पहले से ही अनेक लम्बी-लम्बी स्लेज गाड़ियाँ, पुरानी भारी-भरकम गाड़ियाँ और सुनहरे रथ खड़े थे। प्रवेश-द्वार के निकट जमघट था वर्दी पहने मुच्छड़ कोचवान; चमकीले वस्त्र पहने, परोंवाले शिरस्त्राण एवं गदाएँ लिए गाड़ियों के साथ-साथ दौड़नेवाले सेवकों, अश्वारोही सेना के सैनिक छोकरे, अपने-अपने स्वामियों के कोट तथा दस्ताने पकड़े सेवकों का : यानी कि वह पूरा तामझाम, जो तत्कालीन सामन्तों के लिए आवश्यक था। इब्राहीम को देखते ही वहाँ फुसफुसाहट होने लगी, “दास, दास, सम्राट का दास।” वह शीघ्रतापूर्वक कोर्साकोव को नौकर-चाकरों के इस भड़कीले समूह से निकाल ले गया। महल के द्वारपाल ने उनके लिए द्वार खोला और वे हॉल में आये। कोर्साकोव मानों बुत बन गया...तम्बाकू के धुएँ के बादलों के बीच टिमटिमाती, चर्बी से बनी मोमबत्तियों के प्रकाश से आलोकित विशाल कमरे में अभिजात्य कुल के भद्र पुरुष कन्धे पर नीले फीते लगाये, राजदूत, विदेशी व्यापारी, हरी वर्दी पहने सेना के अफ़सर, कुर्ते तथा धारीदार पतलूनें पहने जहाज़ों के कारीगर धार्मिक संगीत की निरन्तर ध्वनि में आगे-पीछे झूल रहे थे। महिलाएँ दीवारों के निकट बैठी थी; युवतियाँ भड़कीली सज-धज में दमक उठती थीं। उनके वस्त्रों में सोना एवं चाँदी झिलमिला रहे थे, उनकी पोषाक के निचले, फूले-फूले भाग से पतली कमर नाजुक डाल की तरह ऊपर जाती प्रतीत हो रही थी; कानों में, बालों की लटों में, गले में हीरे जगमगा रहे थे। वे प्रसन्नता से दाएँ-बाएँ घूम रही थीं, नृत्य के आरम्भ होने की और साथियों की प्रतीक्षा में। अधेड़ उम्र की भद्र महिलाएँ चतुरता से पहनावे के आधुनिक रूप का खदेड़े जा रहे पुरातन के साथ मेल कर रही थीं : सम्राज्ञी नतालिया किरीलोव्ना चेपेत्स[2] के स्थान पर सेबल[3]

---

1. कफ्तान : प्राचीन रूस में पुरुषों के पहनने का लम्बे पल्लेवाला ढीला-ढाला ऊपरी वस्त्र, जो सामने से खुला होता है।
2. चेपेत्स—स्त्रियों की सिर पर पहनने की ऊनी टोपी, जो बालों को ढाँकते हुए ठोढ़ी के नीचे गाँठ के रूप में बाँधी जाती थी।
3. सेबल—आर्कटिक में पाया जानेवाला रोएदार प्राणी, जिसकी ख़ाल से टोपियाँ आदि बनाई जाती हैं।

की टोपी पहने थी और रोब्रोन्द तथा मेण्टिल[1] सराफान और रूईदार वास्कट की याद दिला रहे थे। ऐसा प्रतीत होता था मानों वे प्रसन्नता से नहीं, बल्कि विस्मय से इन नवायोजित युवावर्ग के समारोहों में उपस्थित हुई थीं और बड़े अफ़सोस के साथ कनखियों से जर्मन नौसैनिक अधिकारियों एवं व्यापारियों की पत्नियों तथा बेटियों को देख रही थीं, जो धारियोंवाले सूती स्कर्ट और लाल ब्लाउज़ पहने अपनी टोली में हँसते और बातें करते हुए अपने-अपने मोजे बुन रही थीं, मानो वे अपने ही घर में हों।

कोर्साकोव स्वयं को सँभाल नहीं पा रहा था। नये मेहमानों को देखते ही सेवक प्लेट में बियर एवं गिलास लेकर उनके निकट गया।

"यह क्या बेहूदगी है?" दबी आवाज़ में कोर्साकोव ने इब्राहीम से पूछा। इब्राहीम मुस्कुराए बग़ैर न रह सका। साम्राज्ञी एवं महान राजकुमारियाँ सौन्दर्य एवं वस्त्राभूषणों से दैदीप्यमान, मेहमानों से मिलनसारिता से बातें करते हुए उनके बीच से गुज़र रही थीं। सम्राट दूसरे कमरे में थे। उन्हें दिखाई देने की इच्छा से कोर्साकोव लगातार घूमती भीड़ में से बड़ी मुश्किल से मार्ग बनाता हुआ वहाँ पहुँचा। वहाँ अधिकांश विदेशी बैठे थे, बड़ी शान से मिट्टी के पाइपों के कश लगाते और मिट्टी के गिलासों को ख़ाली करते। मेज़ों पर बियर तथा वाइन की बोतलें, तम्बाकू भरी चमड़े की थैलियाँ, रम के गिलास और शतरंजें बिछी थीं। इन्हीं में से एक मेज़ पर चौड़े कन्धोंवाले अँग्रेज़ व्यापारी के साथ पीटर ड्राफ़्ट खेल रहा था। वे बड़ी लगन से एक-दूसरे को तम्बाकू के धुएँ की सलामी दे रहे थे, और सम्राट अपने प्रतिद्वन्द्वी की अकस्मात् चाल से इतना परेशान हो गया था कि अपने चारों ओर मँडराते कोर्साकोव को भी देख न पाया। इसी समय एक मोटे महाशय, मोटे गुलदस्ते के साथ प्रविष्ट हुए, ज़ोर से घोषणा करते हुए बोले कि नृत्य आरम्भ हो चुका है और फौरन निकल गये, उसका अनुसरण अनेक अतिथियों ने किया, जिनमें कोर्साकोव भी था।

अप्रत्याशित दृश्य ने उसे चौंका दिया। एक उदास संगीत की आवाज़ सुनते ही नृत्य हॉल की पूरी लम्बाई में महिलाएँ और पुरुष दो पंक्तियों में एक-दूसरे के सामने खड़े हो गये, पुरुष नीचे की ओर झुके, महिलाएँ उससे भी अधिक नीचे झुककर बैठतीं, पहले सीधे अपने सामने, फिर घूमतीं दाएँ, फिर बाएँ, फिर दुबारा सामने, दुबारा दाएँ...इसी तरह नृत्य करती रहीं। इस तरह के समय बिताने के विचित्र तरीक़े को देखकर कोर्साकोव की आँखें चौड़ी हो गयीं और वह अपने होंठ काटने लगा। यह नीचे बैठना और झुकना लगभग आधे घण्टे तक चलता रहा; अन्त में यह सिलसिला समाप्त हुआ और गुलदस्तेवाले मोटे महाशय ने घोषणा की कि औपचारिक नृत्य समाप्त हुए और उसने संगीतकारों को मेनुएत[2] बजाने की आज्ञा दी। कोर्साकोव बड़ा

---

1. रोब्रोन्द तथा मेण्टिल—ढीले-ढाले झालरदार, सिर के ऊपर से पहननेवाले वस्त्र, जो कमर तक लम्बे होते हैं।
2. मेनुएत—प्राचीन फ्रांसीसी नृत्य एवं इसके साथ बजाया जानेवाला संगीत।

प्रसन्न हुआ और उसने महफ़िल पर छा जाने का इरादा किया। नौजवान अतिथियों में से एक उसे विशेष रूप से पसन्द आ गयी थी। उसकी उम्र क़रीब सोलह साल थी, वह क़ीमती, मगर सुरुचिपूर्ण वेशभूषा में थी, और एक अधेड़ पुरुष के निकट बैठी थी, जो देखने से गर्वीला और कठोर प्रतीत होता था। कोर्साकोव उड़ता हुआ उसके पास गया और प्रार्थना करने लगा कि उसके साथ नृत्य कर वह उसे अनुगृहीत करे। युवा सुन्दरी ने परेशानी से उसकी ओर देखा और शायद वह समझ न पायी कि क्या जवाब दे। उसके निकट बैठे हुए पुरुष ने और भी अधिक नाक-भौंह चढ़ा ली।

कोर्साकोव उसके निर्णय की प्रतीक्षा कर रहा था, मगर गुलदस्तेवाले महाशय उसके पास आये, उसे हॉल के बीचों-बीच ले गये और बड़ी शान से बोले, "मालिक मेरे, तूने गुनाह किया है : पहला यह कि इस नौजवान साहिबा के पास गया; बग़ैर तीन बार सलाम किये और दूसरा, उसे तूने ख़ुद ही चुन लिया, जबकि मेनुएत में यह हक़ महिलाओं को हासिल है न कि पुरुषों को, इसलिए तुझे कड़ी सज़ा मिलेगी; मतलब यह बड़ा मग पीना पड़ेगा।"

कोर्साकोव का आश्चर्य बढ़ता जा रहा था। एक ही मिनट में मेहमानों ने उसे घेर लिया और शोर मचाते हुए तुरन्त नियम का पालन करने की माँग करने लगे। पीटर ठहाके और चीख़ें सुनकर दूसरे कमरे से बाहर निकल आया, क्योंकि दंड देने के ऐसे मौक़ों पर वह ख़ुशी-ख़ुशी स्वयं हाज़िर रहना चाहता था। उसके सामने भीड़ दो भागों में विभाजित हो गयी और वह उस झुंड में पहुँचा, जहाँ एक सज़ायाफ़्ता नौजवान और उसके सामने सभा का मार्शल एक विशाल माल्वाजिया[1] से भरा जग लिए खड़ा था। वह यूँ ही मुजरिम को नियम का पालन करने के लिए मना रहा था।

"आहा," पीटर ने कोर्साकोव को देखकर कहा, "फँस गये भाई, कृपा करो मिस्यो, बिना नखरे किये पी जाओ।" कोई रास्ता ही न था। बेचारे छैला बाबू ने एक ही साँस में गटगट करके जार खाली कर दिया और मार्शल को लौटा दिया।

"सुनो, कोर्साकोव," पीटर ने उससे कहा, "पतलून तो तुम्हारी मख़मल की है, जैसी मेरी भी नहीं है, मगर मैं तुमसे काफ़ी अमीर हूँ। ये फ़िज़ूलख़र्ची है; देखो, कहीं मैं तुमसे झगड़ा न कर बैठूँ।"

यह डाँट सुनकर कोर्साकोव उस झुंड में से बाहर निकलने की कोशिश करने लगा, मगर सम्राट और वहाँ उपस्थित प्रसन्न लोगों को विस्मित करते हुए चकरा गया और गिरते-गिरते बचा। इस दृश्य ने मुख्य घटना की एकाग्रता एवं मनोरंजकता पर कोई प्रभाव न डाला, उल्टे उसे और सजीव बना दिया। पुरुष थिरकने लगे और अभिवादन करने लगे, महिलाएँ प्रयत्नपूर्वक, एड़ियों की खटखट करने और नीचे बैठने लगीं। कोर्साकोव इस सामूहिक हर्षोल्लास में भाग न ले सका। उसके द्वारा चुनी गयी

---

1. माल्वाजिया—एक तरह की शराब।

युवती ने अपने पिता गावरीला अफानास्येविच के आदेशानुसार, इब्राहीम के निकट जाकर नीली आँखें झुकाते हुए अपना हाथ उसके हाथों में दे दिया। इब्राहीम ने उसके साथ मेनुएत नृत्य किया और उसे अपने स्थान तक ले गया; फिर, कोर्साकोव को ढूँढ़कर उसे हॉल से बाहर ले गया, गाड़ी में बिठाया और घर ले गया।

रास्ते भर कोर्साकोव उनींदी आवाज़ में बड़बड़ाता रहा, "ओफ़ ये नृत्य सभा!. ..घिनौना जाम शराव का!"...मगर शीघ्र ही गहरी नींद सो गया, उसे पता भी न चला कि वह कैसे घर पहुँचा, कैसे उसके वस्त्र बदले गये, उसे बिस्तर पर लिटाया गया; और दूसरे दिन वह जागा सिर दर्द लिए और एड़ियों की खटखटाने की, नीचे वैठने की, तम्बाकू के धुएँ की, बड़े गुलदस्तेवाले महाशय की और ज़बरदस्त शराव के मग की धुँधली यादें लिये।

4

अव मुझे अपने सहृदय पाठकों का परिचय गावरीला अफानास्येविच झेर्व्स्की से करवाना चाहिए। वह प्राचीन सामन्त कुल से था, विशाल जायदाद का मालिक, और आतिथ्य प्रिय था, बाज़ों का शिकार करता था, उसके पास अनेक नौकर-चाकर थे। संक्षेप में वह पक्का रूसी ज़मींदार था और उसके अपने शब्दों में जर्मन आचार-विचार बिलकुल बर्दाश्त नहीं करता था और अपने घर में वह अपने प्रिय प्राचीन रीति-रिवाज़ों को सँभाले हुए था।

उसकी पुत्री सत्रह वर्ष की थी। बचपन में ही वह माँ को खो चुकी थी। उसका लालन-पालन प्राचीन रीति-रिवाज़ों के अनुसार हुआ था, मतलब वह मौसियों से, दाइयों से, सहेलियों से और नौकरानियों से घिरी रहती, सुनहरे धागों से कढ़ाई किया करती और पढ़ना-लिखना न जानती थी; उसके पिता, सभी विदेशी चीज़ों से घृणा करने के बावजूद, वेटी की अपने घर में रहनेवाले स्वीडिश अफ़सर से जर्मन नृत्य सीखने की इच्छा का विरोध न कर सके। यह सेवानिवृत्त डांस मास्टर क़रीब पचास वर्ष का था, उसके बाएँ पैर में युद्ध के समय, नार्वा के निकट गोली लगी थी और इसलिए वह मेनुएत और कुरान्त के काबिल नहीं रहा था, मगर दाहिने पैर से बड़ी आश्चर्यजनक निपुणता और सहजता से कठिनतम पदन्यास कर लेता था। शिष्या ने उसकी कोशिशों को कामयाव किया। नतालिया गावरीलोव्ना सभाओं में वेहतरीन नृत्यांगना मानी जाती थी, यही कुछ हद तक कारण भी था कोर्साकोव की हरक़त का, जो दूसरे दिन गावरीला अफानास्येविच से माफ़ी माँगने चला आया, मगर नौजवान छैला की सजधज स्वाभिमानी सामन्त को पसन्द नहीं आयी। उसने व्यंग्यपूर्वक फ़ौरन उसका नाम फ्रांसीसी बन्दर रख दिया था।

त्यौहार का दिन था। गावरीला अफानास्येविच को कई रिश्तेदारों एवं स्नेहियों का इन्तज़ार था। पुराने विशाल कक्ष में लम्बी मेज़ सजाई गयी। मेहमान अपनी-अपनी पत्नियों एवं बेटियों के साथ आने लगे, जिन्हें आख़िरकार, सम्राट की आज्ञा एवं स्वयं द्वारा प्रस्तुत उदाहरण के फलस्वरूप बन्द घरों के एकान्तवास से मुक्ति प्राप्त हुई थी। नतालिया गावरीलोव्ना प्रत्येक मेहमान के सम्मुख सोने के छोटे-छोटे जामों से सजी चाँदी की तश्तरी ला रही थी। हरेक व्यक्ति अपना-अपना जाम पी रहा था और अफ़सोस कर रहा था कि प्राचीन काल में ऐसे अवसरों पर दिये जानेवाले चुम्बन का चलन अब नहीं रहा था। सभी मेज़ की ओर आये। मेज़बान की बग़ल में प्रथम स्थान पर बैठे उसके श्वसुर राजकुमार बोरिस अलेक्सेयेविच लीकोव, सत्तर वर्षीय बोयार[1] और अन्य अतिथि अपने-अपने कुलों की वरीयता के अनुसार बैठे, पुराने ख़ुशहाल दिनों की याद ताज़ा करते हुए, जब कुल एवं पद के अनुसार अग्रताक्रम निश्चित किया जाता था, पुरुष मेज़ की एक ओर, महिलाएँ दूसरी ओर; अन्त में सभी अपने-अपने निश्चित स्थानों पर बैठे, गृहस्वामी के परिवार की महिलाएँ उत्सवों के अवसर पर पहनी जानेवाली पारम्परिक पोशाक शुशून[2] और किच्का[3] में; तीस वर्षीय अनुशासन प्रिय, झुर्रियोंवाली बौनी और नीला पुराना कोट पहने स्वीडिश गुलाम। अनेक खाद्य पदार्थों से सजी मेज़ के चारों ओर अनेक सेवक व्यस्त थे, जिनमें कड़ी नज़रवाला, बड़े पेटवाला, रोबदार खानसामा अलग से नज़र आ रहा था। भोज के पहले कुछ मिनट केवल हमारी प्राचीन रसोई के पदार्थों की ओर ध्यान देने के लिए थे, केवल तश्तरियों और चम्मचों की खनखनाहट ही मौन को तोड़ रही थी। आख़िरकार, यह देखते हुए कि मेहमानों को ख़ुशगवार बातचीत में लगाने के समय आ गया है, मेज़बान मुड़ा और पूछने लगा, "और एकिमोव्ना कहाँ है? उसे यहाँ बुलाया जाए।"

कुछ सेवक दौड़े विभिन्न दिशाओं में, मगर तभी वृद्ध महिला, पाउडर और लाली थोपे, फूलों और सलमा सितारों से सजी, खुले गले और खुले सीने की बेल-बूटेदार पोशाक पहने, नाचती और गाती हुई प्रकट हुई। उसके आगमन से प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी।

"नमस्ते, एकिमोव्ना," राजकुमार लीकोव ने कहा, "कैसी कट रही है?"

"जब तक चल रही है, अच्छी है यार! गाते और नाचते, मंगेतरों का इन्तज़ार करते।"

"तू कहाँ थी पगली?" गृहस्वामी ने पूछा।

---

1. बोयार—प्राचीन एवं मध्ययुगीन रूस में शासक वर्ग से सम्बन्धित अत्यन्त धनी ज़मींदार।
2. शुशून—प्राचीन काल में महिलाओं द्वारा पहनी जानेवाली सराफान से मिलती-जुलती पोशाक।
3. किच्का—विवाहित स्त्रियों के सिर पर पहनी जानेवाली विशेष प्रकार की टोपी।

"सिंगार कर रही थी यार, प्यारे मेहमानों के लिए, ख़ुदा के त्यौहार के लिए, ज़ार की सीख के मुताबिक़, मालिक के हुक्म के मुताबिक़, जर्मन ढंग से सारी दुनिया को हँसाने के लिए।"

इन शब्दों को सुनते ही ज़ोरदार ठहाका लगा और पगली मालिक की कुर्सी के पास अपनी जगह खड़ी हो गयी।

"मगर पगली तो बोल रही है झूठ, और बना रही है सच को झूठ।" गृहस्वामी की बड़ी बहन तात्याना अफानास्येव्ना बोली, जिसकी वह बड़ी इज़्ज़त करता था, "सचमुच, आजकल का बनाव-सिंगार दुनिया को हँसाने के लिए ही है। जब आपने भी, जनाब अपनी-अपनी दाढ़ियाँ कटवाकर छोटे-छोटे कफ्तान पहन लिए, तो औरतों के चीथड़ों के बारे में क्या कहा जाए, मगर सचमुच सराफान के बारे में, लड़कियों के फीतों के बारे में और सिर पर बाँधे जानेवाले रूमाल के बारे में अफ़सोस होता है। आजकल की हसीनाओं की ओर देखिए, तो हँसी आती है और दुःख होता है बालों को फेंट-फेंटकर, कंघी करके फुलाती हैं लिहाफ़ की तरह, फ्रांसीसी सफ़ेद आटा उन पर पोतती हैं, छिड़कती हैं, पेट इतना खिंचा हुआ कि बस फट ही जाएगा। अन्तर्वस्त्र तारों की तगड़ी पर कसे हुए : गाड़ी में बैठती हैं गठरी बनकर, दरवाज़ों से अन्दर आती हैं, मुड़ते हुए, झुकते हुए। न खड़ी हो सकती हैं, न बैठ सकती हैं, साँस लेना भी मुश्किल-परेशानी की मारियाँ, हैं मेरी प्यारियाँ।

"ओह, माँ मेरी, तात्याना अफानास्येव्ना," यार्ज़ान के भूतपूर्व सैनिक प्रान्ताध्यक्ष किरीला पेत्रोविच ते. ने कहा, जिसके पास तीन हज़ार गुलाम और युवा पत्नी थी, और दोनों को ही वह सँभाल न पाया था, "मेरे हिसाब से तो बीवी चाहे जो पहने—कुताफेइ या बोल्दीखान; सिर्फ़ हर महीने अपने लिए नयी पोशाक न बनवाये, और पुरानी को, जो नयी ही हो, फेंक न दे। एक ज़माना था जब पोती को दहेज में मिलता था दादी का सराफान, और आजकल की पोशाक देखो तो, आज मालकिन के तन पर है, तो कल दासी के बदन पर। क्या किया जाए? सत्यानाश हो रहा है रूसी अभिजात वर्ग का। बदक़िस्मती है और क्या?" इतना कहकर गहरी साँस लेते हुए उसने अपनी मारिया इलिनीच्ना की ओर देखा, जिसे, शायद, पुरातन की प्रशंसा और नवीनतम प्रथाओं की निन्दा ज़रा भी न भायी थी। अन्य सुन्दरियाँ भी उसकी अप्रसन्नता में शामिल हो गयीं मगर ख़ामोश रहीं, क्योंकि तब विनयशीलता लड़की का अनिवार्य गुण समझा जाता था।

"मगर दोषी कौन है?" गावरीला अफानास्येविच ने गोभी के खट्टे शोरबे के बाऊल में चम्मच हिलाते हुए पूछ लिया, "हम ख़ुद ही तो नहीं? युवा महिलाएँ बेवक़ूफ़ी करती हैं, और हम उन्हें मनमानी करने देते हैं।"

"पर हम करें भी क्या, जब हमारे बस में ही कुछ नहीं है?"

किरीला पेत्रोविच ने प्रतिवाद करते हुए कहा, "बीवी को अटारी में बन्द करके

कोई ख़ुश ही होता, मगर यहाँ तो उसे बैण्ड बाजे के साथ सभा में बुलाया जाता है; पति चाहे चाबुक और पत्नी बनाव-सिंगार। ओह, ये सभाएँ! हमारे पापों के लिए भगवान हमें यह सज़ा दे रहा है।"

मारिया इलिनीच्ना मानों काँटों पर बैठी थी, उसकी ज़बान यूँ भी बिलबिला रही थी, आख़िरकार उससे और बर्दाश्त नहीं हुआ और पति की ओर मुख़ातिब होकर उसने कड़वी मुस्कुराहट से पूछ ही लिया कि उसे सभाओं में कौन-सी बेवक़ूफी नज़र आती है?

"बेवक़ूफी उनमें यह है," उत्तेजित पति ने जवाब दिया, "कि जब से ये शुरू हुई है, शौहरों की अपनी बीवियों से पटती नहीं है। बीवियाँ फ़रिश्तों का यह कथन भूल गयी हैं : बीवी शौहर से डर के रहे; घर-गृहस्थी की नहीं, हाँ नयी-नयी पोशाकों की ज़रूर फिकर करती हैं; शौहर को ख़ुश करने के बदले अफ़सरों-मनचलों की नज़र में चढ़ने की बात सोचा करती हैं। महोदया, क्या बोयार की पत्नी या बेटी को जर्मनों-तम्बाखू बेचनेवालों के साथ या उनके कारिन्दों के साथ एक ही स्थान पर डोलना शोभा देता है? कभी सुना है कि देर रात तक नाचते रहे और नौजवानों के साथ बतियाते रहे? रिश्तेदार होते तो कोई बात भी थी, ये तो अजनबी हैं, अपरिचित हैं।"

"कुछ बोलो तो खाने को दौड़े," नाक-भौं चढ़ाते हुए गावरीला अफानास्येविच ने कहा, "मानता हूँ कि सभाएँ मुझे रास नहीं आतीं; जिसे भी देखो, शराबी से ही टकराओगे, या फिर तुम्हें ही इतना पिला देंगे कि हँसी का पात्र बन जाओ। यह भी देखते रहो कि कोई रोमिओ तुम्हारी बेटी के साथ शरारत न कर बैठे। इसी, मसलन, स्वर्गीय एवग्राफ सेर्गेयेविच कोर्साकोव के बेटे ने पिछली सभा में नताशा के साथ ऐसी गड़बड़ की कि मैं लाल-पीला हो गया। दूसरे दिन, देखता हूँ, कि सीधे मेरे घर के आँगन में गाड़ी आ रही है; मैं सोचने लगा, यह किसे भगवान ला रहा है, कहीं राजकुमार अलेक्सान्द्र दानिलोविच तो नहीं? मगर यह बात नहीं थी : यह था इवान एवग्राफोविच! प्रवेश-द्वार के पास गाड़ी रोककर, पैदल ड्योढ़ी तक नहीं आ सकता था, कहाँ! उड़ता हुआ आया! थिरकता रहा, बड़बड़ाता रहा।...पगली एकीमोव्ना उसकी ऐसी बढ़िया नक़ल करती है; हाँ, दिखा पगली विदेशी बन्दर को।"

पगली एकीमोव्ना ने एक डोंगे का ढक्कन उठाया, बग़ल में दबाया, जैसे वह हैट हो, और लगी तिरछी होने, बूट बजा-बजाकर थिरकने और चारों ओर झुकने, यह कहते-कहते, "मिस्यो, मौमजेल...सभा...माफ़ी" देर तक गूँजते सामूहिक ठहाके मेहमानों की प्रसन्नता प्रकट कर रहे थे।

"न कम, न ज़्यादा, कोर्साकोव," वृद्ध राजकुमार लीकोव ने हँसते-हँसते निकल आये आँसुओं को पोंछते हुए कहा, जब धीरे-धीरे सब शान्त हो गये, "और छिपाने में हर्ज़ ही क्या है? वह अकेला ही तो नहीं, जो जर्मन माँद से पवित्र रूस लौटा है,

विदूषक बनकर। हमारे बच्चे वहाँ सीखते क्या हैं? थिरकना, भगवान जाने किस भाषा में बकवास करना, बड़ों का सम्मान न करना और पराई औरतों की ख़ुशामद करना। उन सभी नवयुवकों में, जो विदेशों में पढ़े हैं (भगवान, माफ़ करना) सम्राट का गुलाम ही इन्सान के समान प्रतीत होता है।"

"बेशक," गावरीला अफानास्येविच ने टिप्पणी की, "वह गम्भीर, समझदार और सलीका पसन्द आदमी है, छिछोरेपन का नामोनिशान नहीं...अब यह और कौन अन्दर आया प्रवेश-द्वार से आँगन में? कहीं फिर से विदेशी बन्दर तो नहीं? तुम उबासियाँ क्यों ले रहे हो, जानवरो?" वह सेवकों से मुख़ातिब होकर कहता रहा, "भागो, मना करो उसे, आगे भी कभी..."

"बूढ़ी दाढ़ी, कहीं तुझे सरसाम तो नहीं हो गया?" एकीमोव्ना ने उसकी बात काटते हुए कहा, "या फिर तू अन्धा है, स्लेज तो सम्राट की है, सम्राट आये हैं।"

गावरीला अफानास्येविच तुरन्त मेज़ से उठ पड़ा; सभी खिड़कियों की ओर दौड़े; और सचमुच में उन्होंने देखा सम्राट को, जो ड्योढ़ी चढ़ रहा था, अपने ख़ास सैनिक के कन्धे पर झुकते हुए। भगदड़ मच गयी। मेज़बान पीटर का स्वागत करने भागा; नौकर बेवक़ूफ़ों की तरह इधर-उधर दौड़े, मेहमान घबरा गये, कुछ तो सोचने लगे कि किसी तरह जल्दी से घर चले जाएँ। अचानक हॉल में पीटर की ज़ोरदार आवाज़ गूँजी, सब कुछ शान्त हो गया और सम्राट गृहस्वामी के साथ अन्दर आये, जो कोशिशों के बावजूद ख़ुशी से झेंपे जा रहा था।

"नमस्ते, महानुभावों," पीटर ने प्रसन्नतापूर्वक कहा, सभी ने झुककर अभिवादन किया। सम्राट की चालाक नज़रें भीड़ में गृहस्वामी की युवा बेटी को खोज रही थीं; उन्होंने उसे बुलाया। नतालिया गावरीलोव्ना काफ़ी निर्भीकता से निकट आयी, मगर न केवल कानों तक, बल्कि कन्धे तक वह लाल हो गयी।

"तुम प्रतिक्षण अधिकाधिक सुन्दर हो रही हो।" सम्राट ने उससे कहा, और अपनी आदत के मुताबिक़ उसके सिर को चूमा; फिर मेहमानों से मुख़ातिब होकर बोला, "तो? मैंने आप लोगों को परेशान किया। आप खाना खा रहे थे; कृपया फिर से बैठ जाइए, और मुझे, गावरीला अफानास्येविच, सौंफ की वोद्का दो।"

गृहस्वामी मोटे कारिन्दे की ओर दौड़ा, उसके हाथ से तश्तरी छीन ली, स्वयं सोने का जाम भरा और झुककर अभिवादन करते हुए सम्राट को पेश किया। पीटर ने जाम ख़त्म करके, क्रेंडेल[1] मुँह में डाली और दुबारा मेहमानों को भोजन जारी रखने की दावत दी। सभी अपनी पहलेवाली जगहों पर बैठ गये सिवाय बौनी के और सामन्त के घर की महिलाओं के, जो सम्राट के साथ मेज़ पर बैठने का साहस न कर

1. क्रेंडेल—अँग्रेज़ी बी के आकार की डबल रोटी।

सकीं। पीटर गृहस्वामी की बग़ल में बैठा और उसने अपने लिए बन्द गोभी का शोरदा माँगा। सम्राट के निर्जी शस्त्रधारी सेवक ने उसे हाथीदाँत की मूठवाली लकड़ी की चम्मच, हरी हड्डियों की मूठवाले छुरी और काँटे दिये, क्योंकि पीटर कभी भी किसी और का सामान इस्तेमाल न करता था। भोज, जो सिर्फ़ एक मिनट पूर्व प्रसन्नता एवं बातचीत के शोरोगुल से सजीव था, अब ख़ामोशी और विवशता से चल रहा था। गृहस्वामी आदर एवं प्रसन्नता के मारे कुछ भी नहीं खा रहा था, मेहमान भी शिष्टाचार के मारे मरे जा रहे थे और बड़े आदरभाव से सम्राट की स्वीडिश गुलाम से जर्मन में हो रही बातचीत सुन रहे थे, जो सन् 1701 के युद्ध के बारे में थी। पगली एकीनोव्ना भी जिससे सम्राट कई बार प्रश्न कर रहे थे, एक बेरूखेपन और विनय के साथ उत्तर दे रही थी, जो (मैं आपको बता दूँ) ज़रा भी उसके स्वाभाविक पागलपन को सिद्ध नहीं कर रहा था। आख़िरकार भोज समाप्त हो गया। सम्राट उठे, उनके साथ ही सभी मेहमान भी उठ गए।

"गावरीला अफानास्येविच!" उन्होंने गृहस्वामी से कहा, "मुझे तुमसे एकान्त में बात करनी है।" और उसका हाथ पकड़कर उसे मेहमानख़ाने में ले गये तथा अपने पीछे द्वार बन्द कर दिया। मेहमान भोजन कक्ष में ही रहे, फुसफुसाकर इस अप्रत्याशित आगमन के बारे में अन्दाज़ लगाते रहे, और अविनयशील प्रतीत होने के डर से गृहस्वामी को उसके स्वागत सत्कार के लिए धन्यवाद दिये बग़ैर शीघ्र ही एक के बाद एक निकलते गये। उसके श्वसुर, पुत्री और बहन ख़ामोशी से उन्हें विदा करते रहे और भोजन कक्ष में सम्राट के निकलने की प्रतीक्षा करते हुए अकेले रह गये।

5

आधे घण्टे बाद द्वार खुला और पीटर बाहर आया। रोबदार ढंग से सिर झुकाते हुए उसने राजकुमार लीकोव, तात्याना अफानास्येव्ना और नताशा के तीन-तीन बार किए अभिवादनों का उत्तर दिया और सीधा बाहरी कक्ष में चला गया। गृहस्वामी ने उसे उसका भेड़ की ख़ाल का लाल कोट दिया, स्लेज तक उसके साथ आया और ड्योढ़ी में फिर से इस सम्मान के लिए धन्यवाद दिया। पीटर चला गया।

भोजन कक्ष में लौटने पर गावरीला अफानास्येविच बहुत चिन्तित दिखाई दिया। उसने गुस्से से सेवकों को मेज़ साफ़ करने की आज्ञा दी, नताशा को उसके कमरे में भेजा और बहन और श्वसुर से यह कहकर कि उसे उनके साथ बात करनी है, उन्हें अपने शयनकक्ष में ले गया, जहाँ वह अक्सर दोपहर को भोजनोपरान्त विश्राम किया करता था। बूढ़ा राजकुमार शाहबलूत के पलंग पर लेट गया। तात्याना अफानास्येव्ना पैरों के नीचे छोटी-सी चौकी सरकाकर पुरानी मखमल जड़ी कुर्सी पर बैठ गयी;

गावरीला अफानास्येविच ने सारे दरवाज़े बन्द कर दिये, राजकुमार लीकोव के पैरों के पास पलँग पर बैठ गया और दबी ज़बान में कहने लगा :

"सम्राट मेरे पास यूँ ही नहीं आए थे, बूझो तो उन्होंने मेरे साथ किस बारे में बात की होगी?"

"हमें कैसे मालूम भाई।" तात्याना अफानास्येव्ना ने कहा।

"कहीं सम्राट ने तुम्हें किसी सेना का नेतृत्व करने को तो नहीं कहा?" श्वसुर बोला, "कब से यह प्रत्याशित था। या फिर दूतावास में आने का प्रस्ताव रखा है? तो क्या हुआ पराये राज्यों में न केवल अफ़सरों को, बल्कि महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों को भी भेजा जाता है।"

"नहीं," दामाद ने नाक-भौंह चढ़ाते हुए जवाब दिया, "मैं पुराने ढंग का आदमी हूँ, आजकल हमारी सेवाओं की ज़रूरत नहीं, हालाँकि, हो सकता है, दकियानूसी रूसी दरबारी आजकल के नौसिखियों, केक बेचनेवालों[1] और मुसलमानों से कहीं बढ़कर हों, मगर यह ख़ास बात है।"

"तो फिर किस बारे में, इतनी देर तक वह तुमसे बातें करते रहे भाई? कहीं तुम पर कोई मुसीबत तो नहीं आनेवाली? हे भगवान रक्षा करो और दया करो!" तात्याना अफानास्येव्ना ने कहा।

"मुसीबत कहो, तो मुसीबत नहीं, मगर मानता हूँ कि मैं सोचने पर मजबूर हो गया।"

"क्या बात है, भाई? किस बारे में है?"

"बात नताशा के बारे में है, सम्राट उसके लिए शादी का पैगाम लाये थे।"

"ख़ुदा ख़ैर करे," तात्याना अफानास्येव्ना ने सलीब को निशान बनाते हुए कहा, "लड़की सयानी हो गयी, और जैसा पैग़ाम लानेवाला, वैसा ही दूल्हा, भगवान ख़ुश रखे, ख़ूब इज़्ज़त दे। किसके लिए सम्राट उसका हाथ माँगने आये थे?"

"हुम्," गावरीला अफानास्येविच टर्राया, "किसके लिए? वही तो...वही तो... किसके लिए।"

"आख़िर किसके लिए?" दुहराया राजकुमार लीकोव ने, जो अब तक ऊँघने लगा था।

"बूझिए।" गावरीला अफानास्येविच ने कहा।

"भाई साहब," बूढ़ी ने जवाब दिया, "हम कैसे बूझें? महल में मंगेतरों की कोई कमी है : हर कोई तुम्हारी नताशा को पाकर ख़ुश होगा। कहीं दोल्गोरुकी तो नहीं?"

"नहीं, दोल्गोरुकी नहीं।"

"भगवान बचाये, बहुत घमंडी है। शेइन, त्रोएकूरोव।"

---

1. यहाँ व्यंग्य कसा गया है ए.डी. मेन्शिकोव पर, जो बचपन में केक, पेस्ट्रियाँ बेचा करता था।

"नहीं, ये भी नहीं, वो भी नहीं?"

"हाँ, मुझे भी वे अच्छे नहीं लगते : छिछोरे हैं, जर्मन तौर-तरीक़ों के कुछ ज़्यादा ही शौकीन हैं। तो फिर मीलोस्लाव्स्की?"

"नहीं, वह भी नहीं।"

"ख़ुदा ख़ैर करे : अमीर तो है, मगर बेवक़ूफ़ है। फिर कौन? एलेत्स्की? ल्वोव? नहीं? कहीं रागूजिन्स्की तो नहीं? तुम्हारी मर्ज़ी, मेरा तो दिमाग़ काम नहीं कर रहा। आख़िर किसके लिए, सम्राट नताशा को माँगने आये थे?"

"ग़ुलाम इब्राहीम के लिए।"

बुढ़िया आहें भरने और हाथ नचाने लगी। राजकुमार लीकोव ने तकिये से सिर उठाकर विस्मय से दोहराया, "ग़ुलाम इब्राहीम के लिए।"

"भाई साहब," बुढ़िया आँसुओं से तर आवाज़ में बोली, "अपने जाये बच्चे को न मार, नताशेन्का को काले शैतान के चंगुल में न दे।"

"मगर कैसे, इनकार करूँ सम्राट को, जो इसके बदले में हम पर और हमारे पूरे ख़ानदान पर कृपा दृष्टि रखने का वादा कर रहे हैं?" गावरीला अफानास्येविच ने प्रतिवाद किया।

"कैसे?" बूढ़ा राजकुमार चहका, जिसकी आँखों से नींद उड़ चुकी थी, "नताशा को, मेरी पोती को, ख़रीदे हुए ग़ुलाम को सौंप दें!"

"वह सामान्य कुल का नहीं है।" गावरीला अफानास्येविच ने कहा, "वह हब्शियों के सुलतान का बेटा है। मुसलमानों ने उसे बन्दी बनाकर त्सारेग्राद में बेच दिया, और हमारे दूत ने उसे क़ैद से छुड़ाकर सम्राट को भेंट कर दिया। हब्शी का बड़ा भाई काफ़ी धन-दौलत लेकर रूस आया था और..."

"जनाब, गावरीला अफानास्येविच," बुढ़िया बीच ही में टोकते हुए बोली, "हम सुन चुके हैं कहानियाँ बोवा राजकुमार और एरुस्लान लाजारेविच के बारे में। बेहतर होगा, अगर तुम हमें यह बताओ, कि सम्राट के पैग़ाम का तुमने क्या जवाब दिया।"

मैंने कहा, "कि उसका हम पर अधिकार है, और उसकी हर आज्ञा को शिरोधार्य करना हम ग़ुलामों का फ़र्ज़ है।"

इसी समय दरवाज़े के पीछे शोर सुनाई दिया। गावरीला अफानास्येविच उसे खोलने के लिए गया, मगर कुछ प्रतिरोध महसूस करके उसने उसे ज़ोर से धक्का दिया, दरवाज़ा खुल गया, और उन्होंने देखा नताशा को जो बेहोश होकर ख़ून से लथपथ फ़र्श पर चित पड़ी थी।

जब सम्राट उसके पिता के साथ कमरे में बन्द हो गये थे तो उसका दिल बैठ गया। एक पूर्वाभास फुसफुसाकर उससे कह रहा था कि बात उसी के बारे में है, और जब गावरीला अफानास्येविच ने उसे यह कहकर भेज दिया कि उसकी बुआ और नाना से बात करनी है, तो वह अपनी स्त्रीसुलभ उत्सुकता पर काबू न रख पायी, बिना

आहट किये अन्दर के कमरों से होते हुए वह शयनकक्ष के दरवाज़े पर चुपके से खड़ी हो गयी और उस पूरी डरावनी कहानी का एक-एक शब्द सुनती रही; पिता के अन्तिम शब्दों को सुनते ही बेचारी लड़की बेहोश हो गयी और गिरते-गिरते उस लोहे के सन्दूक़ से टकराकर सिर फोड़ बैठी, जिसमें उसका दहेज रखा हुआ था।

सभी लोग भागे-भागे आये; नताशा को उठाया गया, उसके कमरे में ले जाकर पलँग पर लिटाया गया। कुछ देर बाद उसे होश आया, उसने आँखें खोलीं, मगर न तो वह पिता को पहचान पायी, न ही बुआ को। उसे तेज़ बुख़ार हो गया, सरसाम की हालत में वह सम्राट के दास के बारे में, शादी के बारे में बड़बड़ाती रही, और अचानक दयनीय मगर कर्णभेदी आवाज़ में चीख़ उठी, "वालेरिआन, प्यारे वालेरिआन, मेरी ज़िन्दगी! मुझे बचाओ; वो आ रहे हैं, वो आ गये!"...तात्याना अफानास्येव्ना ने परेशानी से भाई की ओर देखा, जिसका चेहरा विवर्ण हो गया था, और जो होंठ काटते हुए चुपचाप कमरे से बाहर निकल गया। वह बूढ़े राजकुमार के पास लौटा, जो सीढ़ियाँ न चढ़ सकने के कारण नीचे ही रह गया था।

"कैसी है नताशा?" उसने पूछा?

"बदतर," गुस्साये हुए पिता ने जवाब दिया, "उससे भी बुरी है, जितना मैंने सोचा था; बेहोशी में वह वालेरिआन का नाम ही बड़बड़ा रही है।"

"यह वालेरिआन कौन है?" उत्तेजित वृद्ध ने पूछा, "कहीं वही अनाथ, फ़ौजी का बेटा तो नहीं, जो तुम्हारे घर में पल रहा था?"

"वही है।" गावरीला अफानास्येविच ने जवाब दिया, "मेरे दुर्भाग्य से उसके पिता ने विद्रोह के समय मेरे जीवन की रक्षा की और शैतान ने मुझे इस घृणित भेड़िये के पिल्ले को घर में लाने की दुर्बुद्धि दी। जब दो साल पहले उसकी प्रार्थना पर उसे सेना में भर्ती किया गया, तो नताशा उससे जुदा होते समय जार-जार रो रही थी और वह बुत बना खड़ा था। मुझे यह सन्देहास्पद प्रतीत हुआ और मैंने इस बारे में बहन को बताया। मगर तब से नताशा ने उसे कभी याद नहीं किया और उसका भी कोई पता ठिकाना न मिला। मैंने सोचा कि वह उसे भूल गयी है; मगर ज़ाहिर है कि नहीं भूली। बस, फ़ैसला हो गया : उसकी शादी ग़ुलाम से होगी।"

राजकुमार लीकोव ने विरोध नहीं किया; यह व्यर्थ था। वह घर चला गया; तात्याना अफानास्येव्ना नताशा के पलंग के पास रुक गयी; गावरीला अफानास्येविच, डॉक्टर के लिए सेवक को भेजकर, अपने कमरे में बन्द हो गया और उसके घर में छा गया ग़मगीन सन्नाटा।

विवाह के इस अप्रत्याशित प्रस्ताव ने इब्राहीम को भी उतना ही आश्चर्यचकित कर दिया, जितना गावरीला अफानास्येविच को। यह हुआ इस तरह : पीटर इब्राहीम के साथ काम करते हुए उससे बोला :

"मैं देख रहा हूँ भाई कि तुम उदास और निराश रहते हो; साफ़-साफ़ बताओ;

तुम्हें किस चीज़ की कमी है?" इब्राहीम ने सम्राट को विश्वास दिलाया कि वह अपनी ज़िन्दगी से ख़ुश है और किसी बेहतरी की इच्छा नहीं करता।

"अच्छा," सम्राट ने कहा, "अगर तुम बेवजह उकता रहे हो, तो मैं जानता हूँ, कि तुम्हें कैसे प्रसन्न किया जाए।"

काम समाप्त होने पर पीटर ने इब्राहीम से पूछा, "क्या तुम्हें वह लड़की पसन्द है, जिसके साथ तुमने पिछली सभा में नृत्य किया था?"

"सम्राट वह बड़ी प्यारी है, और ऐसा लगता है कि बड़ी सरल और भली है।"

"तो मैं तुम्हारा उससे घनिष्ठ परिचय करवाऊँगा। तुम उससे शादी करना चाहते हो?"

"मैं, सम्राट...?"

"सुनो, इब्राहीम तुम हो एक निपट अकेले इन्सान, बिना किसी कुल और खानदान के; मुझे छोड़कर अन्य सभी के लिए अजनबी। अगर मैं आज मर जाऊँ, तो कल तुम्हारा क्या होगा, मेरे ग़रीब बच्चे? समय रहते तुम्हें कहीं स्थिर होना है; नये सम्वन्धों में सहारा तलाश करना है, रूसी सामन्तों के साथ रिश्ते बनाने हैं।"

"सम्राट, महामहिम, मैं आपकी कृपाओं और संरक्षण को पाकर स्वयं को भाग्यशाली समझता हूँ। भगवान न करे कि मुझे अपने सम्राट और अपने उपकारकर्ता के बाद जीना पड़े, अन्य किसी चीज़ की कामना नहीं करता, मगर यदि मैं शादी करने का विचार भी करूँ तो क्या वह युवा लड़की और उसके रिश्तेदार राज़ी हो जाएँगे? मेरा रूप..."

"तुम्हारा रूप! क्या वकवास है! क्या तुम सबसे बेहतरीन नहीं हो? युवा लड़की को माता-पिता की इच्छा का पालन करना चाहिए, और देखते हैं क्या कहेगा बूढ़ा गावरीला झेर्व्स्की, जब तुम्हारा पैगाम लेकर मैं खुद जाऊँगा?" इतना कहकर सम्राट ने स्लेज़ तैयार करने का हुक्म दिया और गहन विचारों में डूबे इब्राहीम को अकेला छोड़ दिया?

"शादी!" अफ्रीकी ने सोचा, "क्यों नहीं? अपना जीवन अकेले बिताना और मानव जीवन की सर्वोत्तम खुशियों और पवित्रतम कर्तव्यों से अनभिज्ञ रहना ही मेरे भाग्य में सिर्फ़ इसलिए ही तो नहीं बदा है, क्योंकि मेरा जन्म पन्द्रहवें अक्षांश पर हुआ है? प्रिय पात्र होने की उम्मीद मुझे करनी ही नहीं चाहिए; बच्चों जैसी ज़िद है ये! कहीं प्यार पर भी विश्वास किया जा सकता है? क्या औरत के मनचले दिल में उसका अस्तित्व है? इन प्यारे छलावों से मुँह मोड़कर मैंने दिल बहलाने के दूसरे साधन ढूँढ़ लिए हैं, कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण। सम्राट ठीक कहते हैं, मुझे अपने भविष्य को सुरक्षित करना है। युवा झेर्व्स्काया से विवाह मेरा गर्वीले रूसी सामन्तों से सम्बन्ध स्थापित कर देगा, और मैं अपनी इस नयी पितृभूमि में पराया न रह जाऊँगा। पत्नी से मैं प्यार

की माँग न करूँगा, उसकी वफ़ादारी ही मेरे लिए काफ़ी होगी, और उसकी मित्रता जीतूँगा चिरन्तन प्रेम, विश्वास और कोमलता के बल पर।"

इब्राहीम ने अपने स्वभावानुसार काम में दिल लगाना चाहा, मगर उसकी कल्पना उसे कहीं दूर ले गयी थी। उसने काग़ज़ात रख दिये और नीवा के तट पर टहलने निकल गया। अचानक उसने पीटर की आवाज़ सुनी उसने मुड़कर देखा तो पाया कि सम्राट, स्लेज़ छोड़कर, उसके पीछे-पीछे प्रसन्न मुद्रा में आ रहे हैं।

"भई, सब हो गया।" पीटर ने उसका हाथ थामते हुए कहा, "मैंने तुम्हारा व्याह पक्का कर दिया। कल अपने श्वसुर के यहाँ जाओ, मगर देखो, उसकी सामन्ती गरिमा का सम्मान करना; स्लेज़ दरवाज़े के ही रोकना; आँगन पैदल ही पार करना; उसके साथ उसकी योग्यताओं, सेवाओं, उसके सुप्रसिद्ध वंश के बारे में बातें करो और वह तुम्हारे इश्क़ में पागल हो जाएगा। और अब," वह डंडा हिलाते हुए आगे बोला, "मुझे झूठे दानीलिच के पास ले चलो, जिससे मुझे उसकी नयी शरारतों के बारे में मिलना है।"

इब्राहीम, पीटर को उसका पिता समान ध्यान रखने के लिए हार्दिक धन्यवाद देकर उसे राजकुमार मेन्शिकोव के विशाल महल तक छोड़कर वापस घर लौट आया।

6

काँच के पूजाघर के सम्मुख जिसमें सोना तथा चाँदी जड़ी ईसामसीह की पारिवारिक मूर्तियाँ जगमगा रही थीं, एक लैम्प ख़ामोशी से जल रहा था। उसकी थरथराती रोशनी परदे लगे हुए पलंग एवं लेबल लगी रेत की घड़ी से सजी मेज़ को हल्के से आलोकित कर रही थी। अँगीठी के पास नौकरानी स्वचालित चर्ख़े पर बैठी थी, जिसका हल्का-सा शोर ही कमरे के सन्नाटे को भंग कर रहा था।

"यहाँ कोई है?" एक कमज़ोर आवाज़ ने पुकारा। नौकरानी फ़ौरन उठ खड़ी हुई, पलंग के पास आयी और उसने ख़ामोशी से परदे को उठाया, "क्या जल्दी ही सबेरा होनेवाला है?" नतालिया ने पूछा।

"दोपहर हो गई है।" नौकरानी ने जवाब दिया।

"आह, मेरे भगवान, इतना अँधेरा क्यों है?"

"खिड़कियाँ बन्द हैं जनाब!"

"मुझे जल्दी से कपड़े पहनाओ।"

"नहीं, मेम साब डॉक्टर ने मना किया है।"

"क्या मैं बीमार हूँ? बहुत दिनों से?"

"दो हफ़्ते हो चुके।"

"सच? और मुझे यूँ लगा जैसे मैं कल ही सोई थी।"

नताशा ख़ामोश हो गयी; उसने बिखरे हुए विचारों को समेटने की कोशिश की। उसके साथ कुछ हुआ तो था, मगर आख़िर क्या हुआ था? याद न कर पायी। नौकरानी उसके सामने ही हुक्म का इन्तज़ार करते हुए खड़ी रही। इसी समय नीचे कुछ दबा-दबा-सा शोर सुनाई दिया।

"क्या हुआ?" बीमार ने पूछा।

"साहब लोगों ने खाना खा लिया।" नौकरानी ने जवाब दिया, "मेज़ से उठ रहे हैं। अब तात्याना अफानास्येव्ना यहाँ आएँगी।"

नताशा, ऐसा लगा कि, ख़ुश हो गयी, उसने अपना क्षीण हाथ हिलाया। नौकरानी ने परदा खींच दिया और फिर से चर्ख़े पर बैठ गयी।

कुछ क्षण बाद दरवाज़े के पीछे से काली रिबनवाली सफ़ेद चौड़ी टोपी दिखाई दी और धीमी आवाज़ में पूछा गया।

"कैसी है नताशा?"

"नमस्ते बुआ," बीमार ने हौले से कहा और तात्याना अफानास्येव्ना फ़ौरन उसके पास आयी।

"मेम साब को होश आ गया।" नौकरानी ने सावधानी से कुर्सी खिसकाते हुए कहा।

वृद्धा ने आँसुओं के साथ भतीजी का विवर्ण, क्षीण मुख चूमा और उसके निकट बैठ गयी। उसके पीछे-पीछे जर्मन डॉक्टर काला चोगा और वैज्ञानिकों जैसा विग पहने आया, उसने नताशा की नब्ज़ देखी और पहले लैटिन में, फिर रूसी में घोषणा की कि ख़तरा टल गया है। उसने काग़ज़ और क़लम-दावात माँगी, नयी दवाएँ लिखीं और चला गया। वृद्धा उठी और दुबारा नतालिया को चूमकर गावरीला अफानास्येविच को यह शुभ समाचार सुनाने नीचे चली गयी।

मेहमानख़ाने में लम्बा कोट पहने, तलवार लटकाये, हाथों में टोपी लिये सम्राट का दास सम्मानपूर्वक गावरीला अफानास्येविच से बातें कर रहा था। कोर्साकोव, परोंवाले दीवान पर पसरकर, बेरूखी से उनकी बातें सुन रहा था और शिकारी कुत्ते को छेड़ रहा था, इस काम से उकताकर वह आईने के पास गया, जहाँ निठल्लेपन में अक्सर पनाह ढूँढ़ा करता था, उसमें उसने देखा तात्याना अफानास्येव्ना को, जो दरवाज़े के पीछे से भाई को बेमालूम-से इशारे कर रही थी।

"आपको बुला रहे हैं, गावरीला अफानास्येविच," कोर्साकोव ने इब्राहीम की बात को बीच में ही तोड़ते हुए उसकी ओर मुड़कर कहा। गावरीला अफानास्येविच फ़ौरन बहन के पास गया और अपने पीछे दरवाज़ा उढ़काता गया।

"तुम्हारी सहनशक्ति पर अचरज होता है।" कोर्साकोव ने इब्राहीम से कहा, "घंटे भर से तुम बड़बड़ सुन रहे हो, लीकोव और झेर्व्स्की ख़ानदानों का इतिहास सुन

रहे हो और साथ ही अपनी नैतिक टिप्पणियाँ भी जोड़ते जा रहे हो! तुम्हारी जगह मैं होता तो थूकता इस बुड्ढे झूठे और उसके पूरे खानदान पर, नतालिया गावरीलोव्ना समेत, जो बहाने बना रही है, बीमारी का ढोंग कर रही है, तबीयत ख़राब होने का दिखावा कर रही है। सच-सच बताओ, क्या तुम्हें इस ढोंगी लड़की से प्यार हो गया है? सुनो, इब्राहीम कम-से-कम एक बार मेरी सलाह मानो; मैं उससे कहीं ज़्यादा अक़्लमन्द हूँ, जितना दिखाई देता हूँ। ये ख़ुशनुमा ख़याल दिल से निकाल दो। शादी मत करो। मुझे लगता है कि तुम्हारी मंगेतर के दिल में तुम्हारे लिए कोई ख़ास भावना नहीं है। दुनिया में क्या-क्या नहीं होता? मिसाल के तौर पर : मैं, बेशक, बेवक़ूफ़ नहीं हूँ, मगर मुझे कई बार उन पतियों को धोखा देना पड़ा है, जो भगवान जानता है, मुझसे किसी बात में कम नहीं थे। तुम ख़ुद भी...याद है हमारे पेरिस के स्नेही काउंट डी. की? औरत की वफ़ादारी पर भरोसा नहीं करना चाहिए; वह ख़ुशनसीब है, जो इस ओर से उदासीन रहता है। मगर तुम!...तुम्हारे जोशीले, ख़्वाब देखनेवाले, शक्की स्वभाव, चपटी नाक, मोटे-मोटे होंठ, इन ऊन जैसे घुँघराले बालों के होते हुए शादी का ख़तरा उठाना क्या ठीक होगा?..."

"दोस्ताना सलाह के लिए शुक्रिया।" इब्राहीम ने बेमन से उसकी बात काटते हुए कहा, "मगर तुम्हें वह कहावत तो मालूम ही है : दूसरों के फटे में पैर अड़ाना ठीक नहीं..."

"देखो इब्राहीम," कोर्साकोव ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "कहीं तुम्हें बाद में इस कहावत को सचमुच ही सिद्ध करने की नौबत न आ जाए।"

मगर दूसरे कमरे में चल रही बातचीत तेज़ हो गयी।

"तुम उसे मार डालोगे," वृद्धा ने कहा, "वह उसकी सूरत भी बर्दाश्त नहीं कर सकती।"

"मगर तुम ख़ुद ही फ़ैसला करो।" ज़िद्दी भाई ने प्रतिवाद किया, "दो हफ़्तों से वह मंगेतर के रूप में आ रहा है, और अभी तक उसने दुल्हन को देखा तक नहीं। आख़िरकार वह सोच लेगा कि इसकी बीमारी सिर्फ़ एक बहाना है, हम सिर्फ़ किसी-न-किसी तरह से समय बिता रहे हैं, ताकि किसी तरह उससे दूर हो जाएँ। और, सम्राट क्या कहेंगे? वह पहले ही तीन बार नतालिया के स्वास्थ्य के बारे में पुछवा चुके हैं। तुम्हारी मर्ज़ी, मगर मैं उनसे झगड़ा करना नहीं चाहता।"

"हे भगवान," तात्याना अफानास्येव्ना ने कहा, "उस ग़रीब का क्या होगा? कम-से-कम मुझे उसे इस मुलाक़ात के लिए तैयार करने का मौक़ा तो दो।" गावरीला अफानास्येविच मान गया और मेहमानख़ाने में लौट आया।

"ख़ुदा का शुक्र है!" उसने इब्राहीम से कहा, "ख़तरा टल चुका है। नतालिया की तबीयत बेहतर है, अगर प्यारे मेहमान इवान एवग्राफोविच को यहाँ अकेला छोड़ना बदतमीज़ी न होती, तो मैं तुम्हें अपनी मंगेतर को दिखाने ऊपर ले चलता।"

कोर्साकोव ने गावरीला अफानास्येविच को बधाई दी, परेशान न होने को कहा और यक़ीन दिलाया कि उसका जाना ज़रूरी है और मेज़बान को छोड़ने आने का मौक़ा दिये बग़ैर वह बाहरी हाल की ओर भागा।

इसी बीच तात्याना अफानास्येव्ना मरीज़ को ख़ौफ़नाक मेहमान के आगमन के लिए तैयार करने के लिये भागी। कमरे में आकर, गहरी साँस लेकर वह पलंग के पास बैठी, नताशा का हाथ अपने हाथों में लिया, मगर वह एक लफ़्ज़ भी न कह पायी थी कि दरवाज़ा खुल गया। नताशा ने पूछा : कौन आया है। वृद्धा मानों बर्फ़ बन गयी और गूँगी हो गयी। गावरीला अफानास्येविच ने परदा हटाया, ठंडेपन से बीमार की ओर देखा और पूछा कि वह कैसी है? बीमार बच्ची ने उसकी ओर देखकर मुस्कुराना चाहा, मगर मुस्कुरा न सकी। पिता की गम्भीर नज़र उसे चौंका गयी और परेशानी उस पर हावी हो गयी। इसी समय यूँ प्रतीत हुआ कि उसके सिरहाने कोई खड़ा है। उसने कोशिश करके सिर ऊपर उठाया और अचानक सम्राट के दास को पहचान लिया। अब उसे सब कुछ याद आ गया, भविष्य की भयानकता अपने रौद्र रूप में उसके सामने खड़ी हो गयी। मगर थके-हारे मन ने कोई परेशानी का लक्षण नहीं दिखाया। नताशा ने फिर से तकिये पर सिर रख दिया और आँखें बन्द कर लीं... उसका दिल असामान्य रूप से धड़क रहा था। तात्याना अफानास्येव्ना ने भाई को इशारे से बताया कि मरीज़ सोना चाहती है और सब ख़ामोशी से कमरे से बाहर निकल गये, सिवा नौकरानी के जो फिर से चर्ख़े पर बैठ गयी थी।

अभागी सुन्दरी ने आँखें खोलीं और अपने पलंग के पास किसी को न देखकर नौकरानी को बुलाया और उसे बौनी के पास भेजा। मगर तभी गोल-मटोल, बूढ़ी बौनी गेंद के समान लुढ़कती हुई उसके बिस्तर के निकट आयी। लास्तोच्का (बौनी को इसी नाम से पुकारा जाता था) अपने नन्हे-नन्हे पैरों से पूरी ताक़त से गावरीला अफानास्येविच और इब्राहीम के पीछे-पीछे सीढ़ियों से ऊपर आई और स्त्रीसुलभ उत्सुकता से दरवाज़े के पीछे छिप गयी। नताशा ने उसे देखकर नौकरानी को बाहर भेज दिया। और बौनी पलँग के निकट पड़ी बेंच पर बैठ गयी।

इस छोटे से शरीर ने कभी भी दिल के भेदों को अपने भीतर इतना न समेटा था। वह हर चीज़ में नाक घुसेड़ती, हर चीज़ जानती, हर चीज़ की फिकर करती। चपल और चालाक बुद्धि के कारण वह अपने मालिकों का प्यार पाया करती और पूरे घर की नफ़रत भी जिस पर वह मनमाने तरीक़े से राज किया करती। गावरीला अफानास्येविच उसकी शिकायतें, फ़रियादें और छोटी-छोटी प्रार्थनाएँ सुना करते; तात्याना अफानास्येव्ना हर घड़ी उसके विचार सुना करती और उसकी नसीहतों के मुताबिक़ चलती; और नताशा को तो उससे बेपनाह लगाव था, वह उसे अपना हर ख़याल, सोलह बरस के दिल की हर धड़कन सुनाया करती।

"जानती हो लास्तोच्का?" उसने कहा, "पिताजी मेरा ब्याह गुलाम से करनेवाले हैं।"

बौनी ने गहरी साँस ली, और उसके झुर्रियोंवाले चेहरे की झुर्रियाँ और गहरी हो गयीं।

"क्या कोई उम्मीद नहीं है।" नताशा कहती रही, "क्या पिता को मुझ पर दया न आएगी?"

बौनी ने अपने सिर का रूमाल झटका।

"मेरे लिए क्या नाना और बुआ भी कुछ न करेंगे?"

"नहीं मालकिन, तुम्हारी बीमारी के दौरान गुलाम ने सब पर जादू कर दिया है। मालिक उसके पीछे पागल हैं, राजकुमार सिर्फ़ उसी का नाम लिया करते हैं, और तात्याना अफानास्येव्ना कहती है : अफ़सोस कि वह हब्शी है, मगर उससे अच्छे दूल्हे की कामना करना भी पाप है।"

"हे भगवान, हे भगवान!" ग़रीब बेचारी नताशा कराही।

"दुःखी न हो हमारी सुन्दरी," बौनी ने उसका क्षीण हाथ चूमते हुए कहा, "अगर तुम्हारे नसीब में हब्शी से ब्याह करना लिखा है, तो तुम अपनी मर्ज़ी की मालिक ही होगी। आजकल वो बात नहीं है, जो पहले हुआ करती थी, खाबिन्द बीवियों को ताले में बन्द नहीं करते, हब्शी सुना है, अमीर है, आपका घर ख़ुशहाल होगा, हँसते-गाते ज़िन्दगी बिताओगी..."

"बेचारा वालेरिआन!" नताशा ने कहा, मगर इतने धीरे से कि बौनी सिर्फ़ अन्दाज़ लगा सकी, और इन शब्दों को सुन न सकी।

"यही तो...यही...तो है, मालकिन," उसने आवाज़ नीची करते हुए भेदभरे अन्दाज़ में कहा, "अगर तुम फ़ौजी के यतीम छोकरे के बारे में कुछ कम सोचतीं, तो सरसाम की हालत में उसके बारे में न बड़बड़ातीं और मालिक को गुस्सा न आया होता।

"क्या?" भयभीत नताशा ने कहा, "मैं वालेरिआन के बारे में बड़बड़ाई, पिताजी ने सुन लिया, पिताजी नाराज़ हैं!"

"यही तो बदनसीबी है।" बौनी ने जवाब दिया, "अब अगर तुम उनसे विनती करती हो कि तुम्हारा ब्याह हब्शी से न करें, तो वह सोचेंगे कि वालेरिआन ही इसकी वजह है। कुछ भी नहीं किया जा सकता : पिता की ख़्वाहिश के आगे सिर झुकाओ, और जो होगा सो होकर रहेगा।"

नताशा ने एक भी शब्द से प्रतिरोध नहीं किया। इस विचार ने, कि उसके दिल का भेद उसके पिता को मालूम हो गया है, उस पर गहरा असर किया। सिर्फ़ एक ही उम्मीद वची थी : इस घृणित विवाह के सम्पन्न होने से पहले जान दे दी जाए। इस

विचार से उसे कुछ ढाढ़स बँधा। कमज़ोर और दुःखी हृदय से उसने अपने भाग्य के आगे सिर झुका दिया।

7

गावरीला अफानास्येविच के घर में ड्योढ़ी से बायीं ओर एक तंग, एक खिड़कीवाला कमरा था। उसमें एक साधारण-सी खटिया थी, मोटे सूती कम्बल से ढँकी हुई, और खटिया के सामने थी सरो की लकड़ी की छोटी-सी मेज़, जिस पर चर्बीवाली मोमबत्ती जल रही थी और खुली हुई संगीत रचनाएँ पड़ी थीं। दीवार पर पुराना नीला फ़ौजी कोट और उसकी हमउम्र तिकोनी टोपी टँगे थे, उसके ऊपर तीन कीलों से ठोंकी गयी थी एक रंगीन तस्वीर, जिसमें कार्ल बारहवें को घोड़े पर सवार दिखाया गया था।

इस शान्त आवास से बाँसुरी की आवाज़ आ रही थी। बन्दी नृत्य शिक्षक, इस कमरे का इकलौता निवासी, नुकीला टोप और चीनी चोगा पहने, जाड़े की शाम की उकताहट को मिटा रहा था पुरानी स्वीडिश फ़ौजी धुनें बजाते हुए, जो उसे अपनी जवानी के खुशनुमा दिनों की याद दिला रही थी। पूरे दो घंटे इस रियाज़ को समर्पित करके स्वीड ने अपनी बाँसुरी ठीक-ठाक की, उसे पेटी में बन्द किया और कपड़े बदलने लगा।

इसी समय उसके दरवाज़े का पट खुला और एक ख़ूबसूरत ऊँचा नौजवान, फ़ौजी कोट पहने अन्दर आया।

आश्चर्यचकित स्वीड घबराकर उठ गया।

"तुमने मुझे नहीं पहचाना गुस्ताव अदामीच।" युवा अतिथि ने भाव विह्वल होकर कहा, "तुम्हें उस बच्चे की याद नहीं है, जिसे तुमने स्वीडिश वर्णमाला सिखाई, जिसके साथ इसी कमरे में तुमने क़रीब-क़रीब आग ही लगा दी थी, छोटी-सी तोप से गोला बरसाकर।"

गुस्ताव अदामीच ने ग़ौर से देखा...

"ऐ–ऐ–ऐ," आख़िरकार वह उसे गले से लगाते हुए चीख़ा, "खुस लहो, तू ही है ये। बैठ, मेला प्याला सैतान, बातें कलेंगे।"

गोर्युखिनो गाँव की कहानी

अगर भगवान मेरे लिए पाठक भेज दें, तो, शायद उन्हें यह जानने की उत्सुकता होगी कि आख़िर मैंने गोर्युखिनो गाँव का इतिहास लिखने का फ़ैसला क्यों किया। इसके लिए मुझे विस्तारपूर्वक कुछ तथ्यों को बताना होगा।

मेरा जन्म भले और ईमानदार माता-पिता के यहाँ गोर्युखिनो गाँव में सन् 1801 के अप्रैल माह की पहली तारीख़ को हुआ और आरम्भिक शिक्षा मुझे अपने पादरी से प्राप्त हुई। इन्हीं आदरणीय महोदय का आभारी हूँ मैं पढ़ने-लिखने तथा आम तौर से साहित्य के अध्ययन में उत्पन्न हुई रुचि के लिए। मेरी प्रगति हालाँकि धीमी मगर उत्साहवर्धक थी, क्योंकि दस वर्ष की उम्र में मैं वह सब जान गया था, जो आज तक मेरी जन्मजात कमज़ोर याददाश्त में बचा है, जिस पर उतनी ही कमज़ोर सेहत के कारण बेकार ज़ोर देने की मुझे इजाज़त नहीं थी।

साहित्यकार की उपाधि मुझे हमेशा अत्यधिक ईर्ष्याजनक प्रतीत होती थी। मेरे माता-पिता, जो इज़्ज़तदार मगर सीधे-सादे व्यक्ति थे और जिनका पुराने तौर-तरीक़े से लालन-पालन किया गया था, कभी कुछ भी नहीं पढ़ते थे और पूरे घर में सिर्फ़ मेरे लिए ख़रीदी गयी वर्णमाला, कैलेंडरों और नवीनतम पाठ्यपुस्तक[1] को छोड़कर दूसरी कोई किताब नहीं थी। पाठ्यपुस्तक को पढ़ना काफ़ी समय तक मेरा प्रिय अभ्यास रहा। मुझे वह मुँहज़बानी याद थी, मगर फिर भी हर बार मुझे उसमें नयी अनचीन्ही सुन्दरता दिखाई देती। जनरल प्लेम्यान्निकोव के बाद, जिसके यहाँ पिता जी एडजुटैंट रह चुके थे, मुझे कुर्गानोव ही सबसे महान प्रतीत होता था। मैं उसके बारे में सबसे पूछा करता, मगर अफ़सोस, कोई भी मेरी उत्सुकता को शान्त न कर सका, कोई भी व्यक्तिगत रूप से उसे नहीं जानता था, मेरे सभी प्रश्नों के जवाब में मुझे बस इतना-सा जवाब मिलता कि कुर्गानोव ने नवीनतम पाठ्यपुस्तक की रचना की है, जो मुझे पहले ही अच्छी तरह मालूम था। अनजानेपन की पर्तों में वह लिपटा रहा, जैसे कोई प्राचीन अर्द्धदेव हो, कभी-कभी तो मुझे उसके अस्तित्व पर भी सन्देह होने लगता। उसका नाम मुझे काल्पनिक प्रतीत होता और उसके बारे में प्रचलित लोककथाएँ निरे मिथक,

1. नवीनतम पाठ्यपुस्तक; निकोलाय गावरीलोविच कुर्गानोव द्वारा सन् 1769 में प्रकाशित पुस्तक जिसके अनेक संस्करण निकले।

जो किसी नये निबूर[1] का इन्तज़ार कर रहे थे। मगर फिर भी, वह बुरी तरह मेरे दिलो-दिमाग़ पर छाया रहा, मैं इस रहस्यमय व्यक्ति को कोई रूप देने की कोशिश करता और अन्त में मैंने निश्चय किया कि उसे ज़ेम्स्त्वो[2] के प्रमुख कोर्युच्किन जैसा, छोटा-सा, बूढ़ा, लाल नाक और चमकीली आँखोंवाला होना चाहिए।

सन् 1812 में मुझे मॉस्को के कार्ल इवानोविच मेयेर के बोर्डिंग स्कूल में दाख़िल किया गया, जहाँ मैं तीन महीनों से ज़्यादा न रह सका, क्योंकि हमें दुश्मन के आक्रमण से पूर्व ही वापस भेज दिया गया था, मैं गाँव वापस लौट आया। बीसियों ज़बानों की किट-किट के कारण मुझे दुबारा मॉस्को लाने का विचार किया गया, यह देखने के लिए कि कार्ल इवानोविच अपने पुराने घर में वापस लौट आया है या नहीं, या ऐसा न होने की स्थिति में मुझे किसी दूसरे स्कूल में भेजने के लिए, मगर मैंने माँ को मना लिया कि मुझे गाँव में ही रहने दिया जाए, क्योंकि मेरा स्वास्थ्य मुझे सुबह-सुबह सात बजे उठने की, जैसा कि हर बोर्डिंग स्कूल में करना पड़ता है, इजाज़त नहीं देता था। इस तरह मैं सोलह साल का हो गया, अपनी आरम्भिक शिक्षा पर ही ठहरा हुआ, और अपने साथियों के साथ बेसबॉल खेलता रहा, जिसमें मैं अपने बोर्डिंग स्कूल में काफ़ी निपुण हो चुका था।

इसी समय मैं पैदल दस्ते में कैडेट ऑफ़िसर बन गया, जहाँ मैं पिछले वर्ष 18XX तक रहा। फ़ौज में मेरे वास्तव्य के दौरान काफ़ी कम सुखद अनुभव रहे, सिवाय इसके कि मैं अफ़सर बन गया और उस समय जब मेरी जेब में सिर्फ़ एक रूबल छह कोपेक शेष थे, मैंने जुए में 245 रूबल जीत लिये। मेरे प्रिय माता-पिता की मृत्यु ने मुझे फ़ौज से निवृत्त होकर अपने गाँव लौटने पर मजबूर कर दिया।

मेरे जीवन का यह दौर मेरे लिए इतना महत्त्वपूर्ण है, कि मुझे उसके बारे में, अपने सहृदय पाठक से उसकी एकाग्रता का दुरुपयोग करने के लिए माफ़ी माँगते हुए विस्तार से बताना होगा।

शिशिर का उदास, बादलों से ढँका दिन था। डाक चौकी पहुँचकर, जहाँ से मुझे गोर्युखिनो के लिए मुड़ना था, मैंने किराये की घोड़ागाड़ी ली और गाँव के रास्ते पर चल पड़ा। हालाँकि स्वभाव से मैं शान्त हूँ, मगर उन स्थानों को देखने की बेसब्री, जहाँ मैंने अपनी ज़िन्दगी के बेहतरीन साल बिताये थे, मुझ पर इस क़दर हावी हो गयी कि मैं हर घड़ी कोचवान के पीछे पड़ता रहा, कभी उसे वोद्का के लिए पैसे देने का वादा करता, कभी घूँसे जमाने की धमकी देता, और क्योंकि बटुआ खोलने की अपेक्षा उसकी पीठ को धक्का देना मेरे लिए ज़्यादा आसान था, इसलिए, मानता हूँ, कि मैंने

---

1. निबूर (1776-1831) जर्मन इतिहासकार, जिसने अपने रोमन इतिहास में प्राचीन रोम की अनेक लोककथाओं का आलोचनात्मक विश्लेपण किया था।
2. जेम्स्त्वो—स्थानीय ग्रामीण शासन।

तीन बार उसे मारा भी, जो अब तक मैंने कभी किया नहीं था, क्योंकि कोचवानों की बिरादरी से, न जाने क्यों, मुझे ख़ास तौर से प्यार है। कोचवान अपनी त्रोयका भगाता रहा, मगर मुझे लग रहा था कि वह, गाड़ीवानों की आदत के मुताबिक़, घोड़ों को पुचकारते हुए, चाबुक लहराते हुए भी लगाम खींचे जा रहा था। आख़िरकार गोर्युखिनो का वन दिखाई दिया, और दस मिनट बाद मैं ज़मींदार के आँगन में दाख़िल हुआ। मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा, मैंने चारों ओर अवर्णनीय बेचैनी से नज़र दौड़ाई। आठ साल से मैंने गोर्युखिनो को देखा नहीं था। बर्च के पेड़, जो मेरे सामने बाड़ के पास लगाये गये थे, अब ऊँची टहनियोंवाले पेड़ बन गये थे। आँगन, जो कभी तीन करीने से बनाई गयी क्यारियों से सुशोभित था, जिनके बीच से बालू से ढँका हुआ चौड़ा रास्ता गुज़रता था, अब जंगली चरागाह में तब्दील हो गया था, जिस पर भूरी गाय चर रही थी। मेरी गाड़ी सामनेवाले फाटक के पास रुकी। मेरा आदमी फाटक खोलने के लिए जाने ही वाला था, मगर उन पर कीलें ठोंक दी गयी थीं, हालाँकि खिड़कियाँ खुली थीं और घर में लोगों के होने का अहसास हो रहा था। नौकरों की झोंपड़ी से एक औरत ने बाहर आकर पूछा कि मुझे किससे मिलना है। यह जानकर कि मालिक आये हैं, वह दुबारा झोंपड़ी में भागी और जल्द ही नौकर-चाकरों ने मुझे घेर लिया। जाने-अनजाने चेहरों को देखते हुए, उन सबका मित्रतापूर्वक आलिंगन करते हुए मैं दिल की गहराइयों तक विह्वल हो उठा : मेरे साथी बच्चे अब मर्द बन गये थे, और फ़र्श पर बैठकर हुक्म सुननेवाली, छोटे-मोटे काम भाग-भागकर करनेवाली लड़कियाँ शादीशुदा औरतें हो गयी थीं। मर्द रो रहे थे। औरतों से मैं बेझिझक कह रहा था, "कितनी बुढ़ा गयी हो तुम?" और मुझे भाव-विवश स्वर में जवाब मिलता, "मालिक, आप तो जैसे पगला गये हैं!" मुझे पिछवाड़ेवाले फाटक की ओर लाया गया, मेरी आया बाहर आयी और उसने रोते-कलपते हुए पीड़ित ओडिसी की भाँति मुझे गले से लगा लिया। नौकर हम्माम गरम करने के लिए भागे। रसोइया, जिसने निठल्लेपन के कारण आजकल दाढ़ी बढ़ा रखी थी, पूछने लगा कि दोपहर के लिए खाना बनेगा या एकदम रात का खाना, क्योंकि साँझ का झुटपुटा होने लगा था। फ़ौरन मेरे लिए कमरों की सफ़ाई कर दी गई, जिनमें मेरी आया स्वर्गीय माताजी की नौकरानियों के साथ रह रही थी, और मैं पिता के शान्त घर में आया और उसी कमरे में सोया जहाँ तेईस साल पहले मेरा जन्म हुआ था।

क़रीब तीन सप्ताह हर तरह की भागदौड़ में बीत गये, मैं गाँव के प्रमुखों से, प्रतिनिधियों से और हर सम्भव सरकारी अधिकारी से मिला। आख़िर में मुझे विरासत मिली और मुझे पिता की जागीर में प्रवेश दिया गया, मैंने चैन की साँस ली, मगर जल्दी ही निठल्लेपन की उकताहट मुझे सताने लगी। अभी मैं अपने सहृदय एवं सम्माननीय पड़ोसी XX से परिचित नहीं हुआ था। घर गृहस्थी के काम मेरे लिए एकदम नये थे। मेरी आया की, जिसे मैंने घर की प्रबन्धिका बना दिया था, बातचीत

सिर्फ़ पन्द्रह घरेलू चुटकुलों तक सीमित थी, जो मेरे लिए काफ़ी दिलचस्प थे, मगर जिन्हें वह हमेशा एक ही अन्दाज़ में सुनाया करती, और इस तरह वह मेरे लिए, नवीनतम पाठ्यपुस्तक बन गयी थी, जिसमें, मुझे मालूम था कि किस पृष्ठ पर कौन-सी पंक्ति है। असली पाठ्यपुस्तक मुझे तहख़ाने में, हर तरह की रद्दी के बीच बड़ी दयनीय हालत में मिली। मैं उसे रोशनी में लाया और उसे पढ़ने लगा, मगर अब मेरे लिए कुर्गानोव अपना पहला आकर्षण खो चुका था, मैंने उसे एक बार और पढ़ा तथा फिर कभी नहीं खोला।

इसी अवस्था में मेरे दिमाग़ में यह ख़याल आया, कि मैं ख़ुद ही कुछ लिखने की कोशिश क्यों न करूँ? मेरे सहृदय पाठक जानते ही हैं, कि मेरी परवरिश सस्ते में हुई थी और मुझे स्वयं को, सोलह साल तक नौकर छोकरों के साथ खेलते हुए, और फिर एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त में, एक फ़्लैट से दूसरे फ्लैट में जाते हुए, यहूदियों के साथ, व्यापारियों के साथ समय बिताते हुए, पुरानी बिलियर्ड की मेज़ों पर खेलते हुए और गन्दगी तथा कीचड़ में मार्च करते हुए वह हासिल करने का मौक़ा नहीं मिला, जो एक बार मेरे हाथ से फिसल गया था।

साथ ही रचनाकार बनना मुझे इतना बुद्धिमानी भरा, हम अनपढ़ लोगों के लिए इतना अप्राप्य लगा कि क़लम पकड़ने के ख़याल से ही मुझे डर लगने लगा। क्या मैं कभी लेखकों की श्रेणी में जाने का साहस कर सकता था, जब उनमें से एक से मिलने की अदम्य इच्छा भी कभी पूरी नहीं हो सकी थी। मगर इससे मुझे उस घटना की याद आ रही है, जो अपने राष्ट्रीय साहित्य के प्रति मेरी तीव्र रुचि के प्रमाणस्वरूप मैं सुनाना चाहता हूँ।

सन् 1820 में जब मैं कैडेट ऑफ़िसर ही था, मुझे सरकारी काम से पीटर्सबुर्ग आना पड़ा। मैं वहाँ एक हफ़्ते रहा और वहाँ मेरा कोई भी परिचित न होते हुए भी, मैंने बड़े आनन्द से समय बिताया : हर दिन मैं चुपचाप थियेटर जाता, चौथी मंज़िल की गैलरी में बैठता। सभी कलाकारों को उनके नाम से जानता और XX से बेतहाशा प्यार करने लगा, जिसने एक इतवार को "लोगों के प्रति घृणा एवं पश्चात्ताप"[1] नामक नाटक में एमालिया का रोल बड़ी ख़ूबसूरती से निभाया था। सुबह, प्रमुख स्टाफ़ हेडक्वार्टर्स से लौटते हुए, मैं अक्सर एक कन्फ़ेक्शनरी की नीची-सी दुकान में जाकर चॉकलेट पीते हुए साहित्यिक पत्रिकाएँ पढ़ा करता। एक बार मैं 'शुभचिन्तक' के आलोचनात्मक लेख में खोया हुआ था, हरे ओवरकोट में कोई मेरे निकट आया और मेरी किताब के नीचे से 'हैम्बुर्ग टाइम्स' हौले से खींचने लगा। मैं इतना मगन था कि मैंने आँख उठाकर भी नहीं देखा। अपरिचित ने बीफ़स्टेक्स मँगवायी और मेरे सामने बैठ गया, मैं उसकी ओर ध्यान दिये बग़ैर पढ़ता ही रहा, इसी दौरान उसने नाश्ता कर

1. जर्मन लेखक अ. कोत्सेवू का नाटक।

लिया, छोकरे को बदतमीजी के लिए डाँटा, आधी बोतल शराब की पी ली और निकल गया। दो नौजवान भी वहीं नाश्ता कर रहे थे।

"जानते हो, यह कौन था?" एक ने दूसरे से कहा, "यह बी.[1] है, लेखक।"

"लेखक!" मैं अचानक चीख़ा, और पत्रिका अधूरी छोड़कर चॉकलेट की प्याली आधी छोड़कर, पैसे देने काउंटर की ओर लपका और चिल्लर का इन्तज़ार किये बग़ैर सड़क पर भागा। चारों ओर देखने पर मुझे दूर से हरा ओवरकोट दिखाई दिया और मैं नेव्स्की प्रॉस्पेक्ट पर उसका पीछा करने लगा, सिर्फ़ बग़ैर दौड़े। कुछ क़दम चलने पर, अचानक मैंने महसूस किया कि कोई मुझे रोक रहा है, देखता क्या हूँ, कि गारद का अफ़सर चेतावनी दे रहा है, कि मुझे उसे फ़ुटपाथ से धक्का नहीं देना चाहिए था, बल्कि ठहरकर उसे जाने देना चाहिए था। उसकी डाँट के बाद मैं अधिक सावधान हो गया; दुर्भाग्य से हर घड़ी मुझे कोई-न-कोई अफ़सर मिल जाता, हर घड़ी मुझे रुकना पड़ता और लेखक मुझसे दूर होता जाता। आज तक अपना फ़ौजी ओवरकोट मुझे इतना भारी न लगा था, आज तक कन्धों के फीतों से मुझे इतनी ईर्ष्या न हुई थी, आख़िर अनीच्किन पुल के पास मैंने हरे ओवरकोट को पकड़ ही लिया।

"माफ़ कीजिए," मैंने माथे तक हाथ ले जाते हुए कहा, "आप बी. महाशय ही हैं न, जिसके सुन्दर लेखों को 'शिक्षा का प्रतिद्वन्द्वी' में पढ़ने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था?"

"जी नहीं," उसने मुझे जवाब दिया, "मैं लेखक नहीं, बल्कि जासूस हूँ, मगर XX को अच्छी तरह जानता हूँ, अभी पन्द्रह मिनट पहले ही पुलिस पुल पर उससे मिला था।" इस तरह रूसी साहित्य के प्रति मेरे सम्मान के लिए मुझे चुकानी पड़ी, तीस कोपेक की चिल्लर, फ़ौजी चेतावनी एवं सम्भावित गिरफ़्तारी, सब बेकार हो गया।

विवेक-बुद्धि की सभी चेतावनियों को नज़रअन्दाज़ करते हुए लेखक बनने का धृष्ट ख़याल हर मिनट मेरे दिमाग़ में झाँक-झाँक जाता। आख़िर प्रकृति के सम्मोहन का विरोध करने में असमर्थ, मैंने अपने लिए एक मोटी कॉपी बनाई इस निश्चय के साथ कि उसे कुछ-न-कुछ लिखकर भर दूँगा। कविता के सभी प्रकारों (क्योंकि ख़ामोश मिज़ाज गद्य के बारे में अभी तक मैंने सोचा न था) का मैंने चुनाव किया, उनका मूल्यांकन किया, और मैंने पक्का इरादा कर लिया महाकाव्य रचने का, जिसे मैंने अपने देश के इतिहास से ढूँढ़ निकाला था। काफ़ी देर तक मैं नायक का चुनाव करता रहा। मैंने र्‍यूरिक को चुना, मैं काम में लग गया।

हमारे अफ़सरों के बीच एक-दूसरे की कॉपियों से 'ख़तरनाक पड़ोसी', 'मॉस्को बुल्वार की आलोचना', 'प्रेस्नेन्स्की झील पर' आदि कविताओं की नक़ल करते-करते कविता की मुझे थोड़ी बहुत आदत पड़ गयी थी। इसके बावजूद मेरी कविता बड़ी

1. बी.—यहाँ वी. एफ़. बुल्गारिन से तात्पर्य है।

धीमी गति से आगे वढ़ रही थी, और मैंने तीसरे पद्य पर ही उसे फेंक दिया। मैंने सोचा कि महाकाव्य मेरे बस की बात नहीं है, अतः मैंने 'र्यूरिक' नामक शोकान्तिका का आरम्भ किया। शोकान्तिका भी न चली। मैंने उसे वीरकाव्य में बदलने का प्रयास किया, मगर वीरकाव्य भी मुझे रास न आया। आख़िर प्रेरणा ने मेरे ज्ञानचक्षु प्रकाशित कर दिये और मैंने र्यूरिक की तस्वीर के ऊपर दो पंक्तियाँ लिख डालीं।

ऐसा नहीं था कि मेरी ये दो पंक्तियाँ बिलकुल भी ध्यान देने योग्य न थीं, ख़ास तौर से किसी युवा कवि की पहली रचना के रूप में, मगर इसके बावजूद मैंने सोचा कि मैं जन्मतः कवि नहीं हूँ, और अपने पहले प्रयास पर ही मैंने सन्तोष कर लिया। मगर मेरे रचनात्मक प्रयासों ने मुझे साहित्यिक कार्यकलापों से इतना बाँध लिया कि मैं उस कॉपी और स्याही से जुदा न हो सका। मैंने अब गद्य पर उतरना चाहा। पहले ही प्रयास के लिए, मैंने आवश्यक पूर्वाध्ययन, जैसे रूपरेखा बनाना, अलग-अलग भागों में उसे विभाजित करना आदि, नहीं करना चाहा और निश्चय किया कि अलग-अलग विचारों को लिखूँगा, बिना किसी तरतीब के, बिना किसी आपसी सम्बन्ध के, उस रूप में, जिसमें वे मेरे दिमाग़ में आएँगे। दुर्भाग्य से दिमाग़ में ख़याल ही नहीं आये, और पूरे दो दिनों तक मैं बस यही बात सोचता रहा :

तर्क संगत नियमों का पालन न करते हुए तथा लालसाओं के पीछे भागते हुए, मनुष्य अक्सर भटक जाता है और अन्त में उसे पछताना पड़ता है। यह ख़याल सही तो था, मगर नया न था। ख़यालों को परे हटाकर मैंने लघु उपन्यास लिखना आरम्भ किया, मगर, आदत न होने के कारण सोची हुई घटना को मूर्तरूप न दे सकने के कारण, मैंने अनेक व्यक्तियों के मुँह से सुने हुए चुटकुलों पर ग़ौर किया और वास्तविकता को कहानी की सजीवता से और कभी-कभी अपनी कल्पना के रंगों से सजाने का प्रयत्न करने लगा। इन लघु उपन्यासों की रचना करते-करते, धीरे-धीरे मैंने अपनी शैली बना ली और मैं सही, प्रिय और स्वतन्त्र रूप से विचारों को प्रकट करना सीख गया। मगर शीघ्र ही मेरा ख़ज़ाना ख़त्म हो गया और मैं अपनी साहित्यिक गतिविधियों के लिए विषय ढूँढ़ने लगा।

छोटे-छोटे एवं सन्देहास्पद चुटकुलों के बजाय वास्तविक एवं महान घटनाओं का वर्णन करने की कल्पना कब से मुझे उत्तेजित कर रही थी। जनता और शताब्दियों का न्यायाधीश, निरीक्षणकर्त्ता एवं भविष्यवक्ता होना, मेरी नज़र में किसी लेखक की सर्वोत्तम उपलब्धि है। मगर अपनी दयनीय शिक्षा के बल पर मैं ऐसा कौन-सा इतिहास लिख सकता था, जिसके बारे में मुझे उच्च शिक्षाप्राप्त, सहृदय विद्वान चेतावनी न देते? इतिहास की कौन-सी विधा है, जो उनसे छूट गयी है? क्या मैं विश्व का इतिहास लिखूँ, मगर क्या कैथोलिक पादरी मिलोत[1] की अमर कृति मौजूद नहीं है? अपनी

---

1. मिलोत की अमर कृति—फ्रांसीसी इतिहास की पाठ्य पुस्तक (1769), जो रूसी में सन् 1819-1820 में अनूदित हुई।

मातृभूमि का इतिहास लिखूँ? आख़िर, तातिश्चेव, बोल्तिन एवं गोलिकोव[1] के बाद मैं भला क्या कह सकता हूँ? और क्या ऐतिहासिक अभिलेखों को छानकर प्राचीन भाषा के अर्थ के ख़ज़ाने तक पहुँचना मेरे बस की बात है, जबकि मैं स्लाविक भाषा के अंक ही भली-भाँति न सीख पाया? मैंने एक छोटे-से आकार के इतिहास के बारे में सोचा, जैसे कि हमारे प्रान्तीय शहर के इतिहास के बारे में, मगर यहाँ भी इतनी मुसीबतें थीं, जिन्हें मैं पार नहीं कर सकता था। शहर की यात्रा करना, गवर्नर से और अभिलेखागार के प्रबन्धक से मुलाक़ातें करना, अभिलेखागार एवं मॉनेस्ट्री के संग्रहालय में जाने की अनुमति माँगना, वग़ैरह-वग़ैरह। हमारे ज़िले के शहर का इतिहास लिखना मेरे लिए आसान होता, मगर उसमें न तो किसी दार्शनिक को और न ही किसी इतिहासविद् को दिलचस्पी हो सकती थी तथा लच्छेदार भाषा के प्रयोग के लिए भी उसमें पर्याप्त सामग्री न मिलती। XX को सन् 17XX में शहर का दर्ज़ा दिया गया था, और एक ही महत्त्वपूर्ण घटना, जिसका वर्णन उसके अभिलेखों में मिलता है, वह है भयानक अग्निकांड, जो दस वर्ष पहले हुआ था, और जिसने बाज़ार तथा सरकारी दफ़्तरों को भस्म कर दिया था।

मगर अकस्मात् हुई एक घटना ने मेरे सभी सन्देहों का समाधान कर दिया। अटारी पर कपड़े सुखा रही नौकरानी को एक पुरानी डलिया मिली, लकड़ी की छीलन, कूड़ा-करकट और किताबों से भरी हुई। पूरे घर को मेरे पढ़ने के शौक़ के बारे में मालूम था। मेरी हरकारन उसी क्षण, जब मैं अपनी कॉपी के सामने, मुँह से क़लम चबाता हुआ बैठा था और ग्रामीण उपदेशों के अनुभव के बारे में सोच रहा था, बड़े उत्साह और ख़ुशी से "किताबें! किताबें!" चिल्लाते हुए टोकरी को मेरे कमरे में खींचकर लायी, "किताबें!" मैंने भी उत्साहपूर्वक दोहराया और टोकरी की ओर लपका। सचमुच मैं मैंने हरे, नीले काग़ज़ों में लिपटी किताबों का एक ढेर देखा, जो पुराने कैलेंडरों का संचय था। इस आविष्कार ने मेरे जोश को ठंडा कर दिया, मगर फिर भी मैं इस आकस्मिक प्राप्ति से ख़ुश था, फिर भी ये थीं तो किताबें, और मैंने धोबन को दिल खोलकर चाँदी का आधा रूबल इनाम में दिया। अकेला रह जाने पर मैं अपने कैलेंडरों को देखने लगा, और उन्होंने जल्दी ही मेरा ध्यान आकृष्ट कर लिया। ये कैलेंडर सन् 1744 से 1799 तक, यानी ठीक 55 वर्षों की अटूट शृंखला बना रहे थे। नीले काग़ज़ के पन्ने, जिनसे कैलेंडर बनाये जाते थे, प्राचीन लिखावट से भरे थे। इन पंक्तियों पर नज़र डालते हुए मैंने बड़े अचरज से देखा कि उनमें केवल मौसम तथा घरेलू हिसाब-किताब के बारे में टिप्पणियाँ ही नहीं थीं, मगर गोर्युखिनो गाँव से सम्बन्धित कुछ संक्षिप्त ऐतिहासिक सूचनाएँ भी थीं। फ़ौरन मैं इन बहुमूल्य संस्मरणों की छानबीन करने लगा और शीघ्र ही समझ गया कि वे मेरी जन्मभूमि का पिछली

---

1. तातिश्चेव, वोल्तिन एवं गोलिकोव—रूसी इतिहासकार।

अर्धशताब्दी का, सिलसिलेवार इतिहास प्रदर्शित कर रहे हैं। इसके अलावा उनमें आर्थिक, सांख्यिकीय, मौसम सम्बन्धी तथा अन्य वैज्ञानिक निरीक्षणों का कभी न समाप्त होनेवाला ख़ज़ाना था। तब से इन अभिलेखों के अध्ययन में मैं पूरी तरह डूब गया, क्योंकि उनमें से मुझे एक सुन्दर, मनोरंजक और शिक्षावर्धक रचना का निर्माण करने की सम्भावना प्रतीत हो रही थी। इन अनमोल संस्मरणों से भली-भाँति परिचित होने के पश्चात् मैं गोर्युखिनो गाँव के बारे में नये ऐतिहासिक स्रोतों को ढूँढ़ने लगा। और जल्दी ही उनकी विपुलता ने मुझे चौंका दिया। पूरे छह महीने इस आरम्भिक तैयारी को समर्पित करने के पश्चात् मैं अपने कब से मनचाहे काम में जुट गया और ईश्वर की सहायता से सन् 1827 के नवम्बर मास की तीन तारीख़ को इसे पूर्ण किया।

आज, मेरे जैसे एक इतिहासकार की भाँति, जिसका नाम मुझे याद नहीं है, अपना कठिन कार्य समाप्त करने के बाद क़लम रखकर उदासी से अपने उद्यान में जाकर उसी कार्य के बारे में सोचता हूँ, जो मैंने पूरा कर लिया है। मुझे यूँ भी प्रतीत हो रहा है, कि गोर्युखिनो का इतिहास लिखने के बाद अब दुनिया को मेरी ज़रूरत नहीं रह गयी है, कि मेरा कर्तव्य पूरा हो गया है और अब चिरनिद्रा में लीन होने का समय आ गया है।

× × ×

यहाँ मैं उन स्रोतों की फ़ेहरिस्त दे रहा हूँ, जिनकी सहायता मैंने गोर्युखिनो का इतिहास लिखने के लिए ली थी :

1. पुराने कैलेंडरों का संग्रह, चौवन भागों में। पहले बीस भागों में प्राचीन लिपि में, अक्षरों के ऊपर आड़ी रेखा खींचते हुए लिखा गया था। यह दस्तावेज़ मेरे परदादा अन्द्रेइ स्तेपानोविच बेल्किन द्वारा लिखा गया था। शैली की स्पष्टता एवं संक्षिप्तता के कारण वह अलग ही दिखाई देता है। उदाहरण के लिए 4 मई—बर्फ़। त्रिश्का बदतमीज़ी के लिए पीटा गया। 6, भूरी गाय ख़त्म। सेन्का पियक्कड़पन के लिए पीटा गया। 8, मौसम साफ़ है। 9, बारिश और बर्फ़। त्रिश्का पर उतरा मौसम का गुस्सा। 11, मौसम साफ़। ताज़ा बर्फ़। तीन हिरणों को खदेड़ा, और इसी तरह की बग़ैर सोची-समझी टिप्पणियाँ...शेष पैंतीस भाग विभिन्न हस्ताक्षरों में लिखे गये हैं, अधिकांश व्यापारी लिपि में, अक्षरों के ऊपर लकीरों सहित और कहीं-कहीं बिना लकीरों के, अक्सर विस्तारपूर्वक, बेतरतीब और शुद्धलेखन के नियमों का ध्यान दिये बग़ैर। कहीं-कहीं औरत के हस्ताक्षर भी दिखाई देते हैं। इस खंड में मेरे दादा इवान अन्द्रेयेविच बेल्किन और मेरी दादी, यानी उनकी पत्नी एवप्राक्सिया अलेक्सेयेव्ना की टिप्पणियाँ और कारिन्दे गार्बोवित्स्की के ब्योरे हैं।

2. गोर्युखिनो के पादरी का अभिलेख। यह दिलचस्प पांडुलिपि मुझे मेरे पादरी

के पास से प्राप्त हुई, जिसका विवाह अभिलेख के रचयिता की बेटी के साथ हुआ था। आरम्भिक पन्ने फाड़कर निकाल दिये गये थे और पादरी के बेटों ने उनका उपयोग 'पतंग' बनाने के लिए कर लिया था। उनमें से एक 'पतंग' मेरे आँगन के बीचोंबीच आकर गिरी। मैंने उसे उठाया और बच्चों को वापस देने ही वाला था कि मैंने देखा कि उस पर पूरी तरह से कुछ लिखा गया है। पहली ही पंक्ति से मैंने ताड़ लिया कि पतंग अभिलेख से बनाई गई है, और, सौभाग्यवश शेष पन्नों को बचाने में मैं सफल हो गया। यह अभिलेख, जो मुझे पाव सेर जौ के बदले में प्राप्त हुआ था, विचारों की गहराई और लच्छेदार भाषा के कारण विशिष्ट प्रतीत होता है।

3. मौखिक लोककथाएँ। समाचारों को मैंने उतना महत्त्व नहीं दिया। मगर, मैं विशेष रूप से आभारी हूँ अवदेइ—मुखिया की माँ, गार्बोवित्स्की की भूतपूर्व (सुना है) प्रेमिका अग्राफेना त्रिफ़ोनोवा का।

4. जनगणना सम्बन्धी क़िस्से, बही खाते, किसानों के स्वभाव एवं उनकी हालत से सम्बन्धित भूतपूर्व प्रमुखों की टिप्पणियों सहित।

अपनी राजधानी गोर्यूखिनो के नाम से जाने जानेवाले देश का भूमंडल पर क्षेत्रफल 240 देस्यातिना[1] है। जनसंख्या 63 प्राणियों के आसपास है। उत्तरी सीमा मिलती है देरिउखो और पुर्कुखोवो गाँवों से, जिसके निवासी निर्धन, दुर्बल एवं अविकसित हैं, मगर इनके घमंडी मालिक हिरणों के शिकार को समर्पित हैं। दक्षिण की ओर सिव्का नदी इसे कराचेव के गेहूँ के आज़ाद उत्पादकों से, अशान्त एवं अपने क्रूर स्वभाव के अपने पड़ोसियों से पृथक् करती है। पश्चिम की ओर हैं जखारिनो के लहलहाते खेत, जो विद्वान एवं शिक्षित ज़मींदारों की देख-रेख में ख़ूब फलते-फूलते हैं। पूर्व में यह छूता है जंगली, जनसंख्या रहित भागों को, पार न की जा सकनेवाली दलदल को, जहाँ सिर्फ़ क्रेनबेरियाँ उगती हैं, सिर्फ़ मेंढक ही टर्राते हैं और जहाँ लोकोक्तियों के अनुसार सिर्फ़ किसी शैतान का वास ही हो सकता है।

नोट : यह दलदल 'शैतानी दलदल' ही कहलाती है। कहते हैं कि एक अर्धविक्षिप्त चरवाहन इस एकान्त स्थल से कुछ दूर सुअर सँभाला करती थी। वह गर्भवती हो गयी और किसी भी तरह से इस घटना को सन्तोषजनक रूप से समझा न सकी। लोगों ने दलदल के शैतान पर ही इसका दोष मढ़ा, मगर यह क़िस्सा इतिहासकार के ध्यान देने योग्य नहीं है और निबूर के बाद तो उस पर विश्वास करना अक्षम्य होता।

× × ×

1. देस्यातिना—क्षेत्रफल मापने की रूसी इकाई, एक देस्यातिन 1,09 हेक्टेयर के बराबर है।

प्राचीन समय से गोर्युखिनो अपनी उपजाऊ भूमि और अच्छी जलवायु के लिए प्रसिद्ध है। राई, जौ, जई और कोदू कुटू इसके उपजाऊ खेतों में उगते हैं। बर्च वृक्षों का झुरमुट और फर के पेड़ों का जंगल यहाँ के निवासियों को लकड़ी और हवा द्वारा गिराई गयी टहनियाँ देते हैं घरों का निर्माण करने के लिए और उन्हें गर्म रखने के लिए। अख़रोटों, क्रेनबेरियों, लाल बिल्बेरियों, की कोई कमी नहीं। कुकुरमुत्ते तो इतने ज़्यादा उगते हैं, दही में तले हुए कुकुरमुत्ते बड़ा स्वादिष्ट मगर स्वास्थ्य के लिए हानिकारक व्यंजन हैं। तालाब भरा है लाल परोंवाली मछलियों से, और सिव्का नदी में बड़ी, चकत्तोंवाली, लम्बी नुकीली मछलियाँ पायी जाती हैं।

× × ×

गोर्युखिनोवासी आम तौर से मध्यम ऊँचाई के, हट्टे-कट्टे हैं, उनकी आँखें कंजी, बाल भूरे या लाल हैं। महिलाओं की नाक ख़ास तरह की है, कुछ ऊपर को उठी हुई, गालों की हड्डियाँ उभरी हुई, बदन भरा-पूरा। टिप्पणी : तन्दुरुस्त औरत यह कथन जनगणना के काग़ज़ातों में ग्राम प्रमुखों द्वारा लिखी गयी टिप्पणियों में अक्सर दिखाई देता है। आदमी भले स्वभाव के, मेहनत पसन्द (ख़ासकर अपने खेत में), बहादुर और लड़ाकू हैं; उनमें से अनेक अकेले ही भालू से भिड़ जाते हैं और आसपास के प्रान्तों में घूँसे मार योद्धा के रूप में प्रसिद्ध हैं, लगभग सभी पीने का आनन्द उठाने के शौक़ीन हैं। औरतें घरेलू कामकाज के अलावा मर्दों का उनके कामों में हाथ बँटाती हैं, बहादुरी में भी उनसे कम नहीं हैं, इक्का-दुक्का औरतें ही ग्राम प्रमुख से डरती हैं। वे एक शक्तिशाली सामाजिक सुरक्षा बल बनाती हैं, जो निरन्तर ज़मींदार के आँगन में तैनात रहता है, और वे भालेदार के नाम से जानी जाती हैं। भालेदार का मुख्य कर्तव्य है, जितनी बार हो सके पत्थर से लोहे की तख़्ती पर प्रहार करना और इससे बुरी नीयत को डराना। जितनी वे सुन्दर हैं, उतनी ही बुद्धिमान भी हैं, धृष्टता का जवाब गम्भीरतापूर्वक एवं प्रभावशाली ढंग से देती हैं।

गोर्युखिनोवासी प्राचीन समय से पेड़ों की छालों से बनी टोकरियों और उनसे बने जूतों का व्यापार करते हैं। इसमें सीव्का नदी बड़ी सहायक है, जिस पर बजरों में सवार होकर वसन्त के मौसम में वे रवाना होते हैं, प्राचीन स्कैंडिनेवियों की तरह...साल के अन्य दिनों में पैदल चलकर जाते हैं, पतलूनों को घुटनों तक मोड़कर।

गोर्युखिनो की भाषा स्लाव भाषा से ही उत्पन्न हुई है, मगर उससे उतनी ही भिन्न है, जितनी रूसी। उसमें संक्षिप्त रूपों की भरमार है, कुछ-कुछ अक्षर तो पूरी तरह समाप्त कर दिये गये हैं, या किन्हीं अन्य अक्षरों द्वारा प्रतिस्थापित कर दिये गये हैं। मगर रूसी के लिए गोर्युखिनो को समझना आसान है और गोर्युखिनोवासी रूसी को अच्छी तरह समझ सकता है।

मर्दों की शादियाँ अक्सर तेरहवें साल में हो जाती थीं बीस साल की औरतों के साथ। पहले चार-पाँच साल तक बीवियाँ अपने शौहरों को पीटा करती थीं। इसके बाद शौहर अपनी बीवियों को पीटने लगते, इस तरह दोनों ही लिंगों का हुकूमत करने का अपना-अपना समय होता और सन्तुलन बना रहता।

दफ़न विधि निम्नलिखित प्रकार से होती थी। मृतक को मौतवाले दिन ही क़ब्रिस्तान में ले जाया जाता, जिससे मृतक झोंपड़े में व्यर्थ ही जगह न घेरे। इससे होता यह था कि रिश्तेदारों को अभूतपूर्व प्रसन्नता प्रदान करते हुए मृतक ठीक उसी समय कभी-कभी छींक देता या जम्हाई ले लेता, जब उसे ताबूत में गाँव के बाहर ले जाया जा रहा होता। बीवियाँ शौहरों की मौत पर रोतीं, विलाप करतीं और कहतीं, "मेरी ज़िन्दगी के उजाले! मुझे किसके भरोसे छोड़े जा रहे हो? तुम्हें कैसे भूलूँ?" क़ब्रिस्तान से लौटकर मृतक की स्मृति में दावत होती और रिश्तेदार एवं दोस्त उसके प्रति स्नेह और लगाव के अनुसार दो-तीन दिनों तक या पूरे एक सप्ताह तक भी नशे में धुत पड़े रहते। ये प्राचीन रीति-रिवाज़ आज भी प्रचलित हैं।

गोर्युखिनोवासियों की पोषाक थी पतलून के ऊपर एक क़मीज़, जो उनके स्लाव मूल की निशानी थी। सर्दियों में वे भेड़ की ख़ाल का कोट पहना करते, मगर यह वास्तविक ज़रूरत के बदले सिर्फ़ दिखावे के लिए किया जाता, क्योंकि कोट वे एक कन्धे पर डाले रहते, जिससे जब शारीरिक मेहनत का कोई कार्य आ पड़े तो उसे फ़ौरन उतारकर फेंक सकें।

विज्ञान, कला एवं साहित्य गोर्युखिनो में प्राचीन समय से ही काफ़ी विकसित अवस्था में थे। पादरी और गिरजे के प्रार्थना वाचक के अलावा यहाँ साक्षर लोग भी होते थे। अभिलेखों में ज़ेम्स्त्वो के तेरेन्ती का वर्णन है, जो लगभग सन् 1767 में जीवित था, और जो न केवल बाएँ अपितु दाहिने हाथ से भी लिख सकता था। यह असाधारण व्यक्ति पूरे इलाक़े में हर तरह के ख़त, दरख़्वास्त, ग़ैरफ़ौजी पहचान पत्र वग़ैरह लिखने के लिए मशहूर था। अपने हुनर, सेवा-भाव और कई-एक प्रसिद्ध घटनाओं में भाग लेने के और तमाम तकलीफ़ें उठाने के बाद वह बुढ़ापे में ठीक उसी समय मर गया, जब वह बाएँ पैर से लिखना सीख ही रहा था, क्योंकि उसके दोनों हाथों की लिखावट काफ़ी प्रसिद्ध हो चुकी थी। गोर्युखिनो के इतिहास में भी, जैसा कि पाठक देखेंगे, उसने काफ़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

पढ़े-लिखे गोर्युखिनोवासियों को संगीत का बहुत शौक़ था, बालालइका[1] और वालींका[2] की ध्वनि संवेदनशील हृदय को आनन्द प्रदान करते हुए आज भी

---

1. बालालइका–तारोंवाला संगीत उपकरण।
2. वालींका–संगीत यन्त्र बेगपाइपर।

उनके घरों से, विशेषकर दो मुँहवाले उक़ाब से सुसज्जित सरकारी टाऊन हाल से, सुनाई देती है।

प्राचीन गोर्युखिनो में कभी कविता भी पूरे निखार पर थी। आज तक उनकी अगली पीढ़ियाँ आर्खिप लीसी की कविताओं को भूली नहीं हैं।

नज़ाकत में वे विर्गिली से पीछे नहीं हैं, कल्पना सौन्दर्य में तो वे सुमारोकोव[1] से बढ़-चढ़कर हैं। हालाँकि आलंकारिक शैली में वे हमारी नवीनतम रचनाओं से थोड़ा पीछे हैं, मगर कल्पनात्मकता एवं पैनेपन में उनसे कम नहीं हैं।

उदाहरण के तौर पर यह व्यंग्यात्मक रचना प्रस्तुत है :

ज़मींदार के आँगन में,
मुखिया अंतोन आता है,
क़मीज़ के भीतर तख़्तियाँ छिपाये,
ज़मींदार को देता है।
देखता है ज़मींदार
समझ नहीं कुछ पाता
आह, तूने, मुखिया अंतोन
ज़मींदार को लूट लिया,
गाँव को निर्धन बनाकर
कविता को भेंट किया।

इस तरह अपने पाठक को गोर्युखिनो की भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक स्थिति से, उसके निवासियों के रीति-रिवाज़ों से, जीवन-पद्धति से अवगत कराते हुए, अब मैं मुख्य कथा की ओर आता हूँ।

परीकथाओं के दिन

मुखिया त्रिफ़ोन

गोर्युखिनो में शासन का प्रकार कई बार बदलता रहा। वह पूरी तरह से प्रजा द्वारा चुने गये मुखियाओं, ज़मींदारों द्वारा नामांकित कारिन्दों और अन्त में सीधे ज़मींदारों के हाथ के नीचे ही रहा। शासन के इन विभिन्न प्रकारों के फ़ायदे और नुक़सान के बारे में मैं अपने इस कथानक में वर्णन करूँगा।

गोर्युखिनो की स्थापना एवं उसकी आरम्भिक प्रजा अनभिज्ञता के अँधेरे में डूबी है। अस्पष्ट लोककथाओं के अनुसार कभी गोर्युखिनो एक भरा-पूरा और लम्बा-चौड़ा

---

1. सुमारोकोव—सुमारोकोव अलेक्सान्द्र पेत्रोविच (1717-1777) कवि एवं नाटककार।

गाँव था, यहाँ के सभी निवासी खाते-पीते थे, कर साल में एक बार इकट्ठा किया जाता और अनेक गाड़ियों में भरकर न जाने किसको भेजा जाता। उस समय हर चीज़ सस्ती ख़रीदी जाती और महँगी बेची जाती। कारिन्दों का नामोनिशान न था, ग्राम प्रमुख किसी का भी अपमान न करते थे, ग्रामवासी काम कम किया करते और हँसते-गाते दिन बिताते, जबकि चरवाहे जूते पहनकर अपने झुंड चराने जाते। हमें इस लुभावनी तस्वीर से सम्मोहित नहीं हो जाना चाहिए। सुनहरे युग का ख़याल सभी जातियों में होता है और वह सिर्फ़ इतना ही सिद्ध करता है कि लोग कभी भी वर्तमान से सन्तुष्ट नहीं होते और अपने अनुभव के आधार पर भविष्य पर कम विश्वास रखते हुए उन लौटकर न आनेवाले दिनों को अपनी कल्पना के सभी रंगों से सजाते हैं।

यह रहा प्रमाण :

गोर्युखिनो गाँव प्राचीन काल से सुप्रसिद्ध बेल्किन वंश की सम्पत्ति थी। मगर मेरे पूर्वज, अन्य अनेक जागीरों के स्वामी होते हुए, इस सुदूर प्रान्त पर कोई ध्यान न दे पाते। गोर्युखिनो काफ़ी कम भेंट भेजा करता और ग्राम सभा द्वारा चुने गये मुखियों द्वारा शासित था।

मगर समय के साथ-साथ बेल्किन वंश की जागीरें टुकड़ों में बँट गयीं और निर्धन हो गयीं। अमीर दादा के ग़रीब पोते अपनी ऐशो-आराम की ज़िन्दगी से मुख न मोड़ सके और दस गुना छोटी हो गयी जागीर से पहले जितने करों की ही माँग करने लगे। एक के बाद एक धमकी भरे ख़त आने लगे। मुखिया उसे ग्राम सभा में पढ़ता, चुने हुए प्रतिनिधि लच्छेदार बातें करते, जनता परेशान होती और मालिक दुगुने कर के बदले शरारती मिन्नतें और ख़ामोश शिकायतें पाते, जो धब्बेदार काग़ज़ पर लिखी होतीं, और ताँबे के सिक्के से मुहरबन्द की जातीं।

गोर्युखिनो के ऊपर काला बादल मँडराने लगा, मगर किसी ने भी इस बारे में विचार न किया। अन्तिम मुखिया त्रिफ़ोन के, जिसे लोगों ने चुना था, शासन के अन्तिम वर्ष में, ठीक मन्दिर के उत्सववाले दिन, जब प्रजा मनोरंजन भवन को (सीधे-सादे शब्दों में कहें तो, शराबख़ाने को) घेरे हुए थी या फिर, एक-दूसरे का आलिंगन करते हुए और ज़ोर-ज़ोर से आर्खिप लीसी के गीत गाते हुए सड़क पर मटर गश्ती कर रही थी, गाँव में चादर से ढँकी एक गाड़ी आयी, जिसमें दो बेहद कमज़ोर और अधमरे से घोड़े जुते थे; कोचवान के स्थान पर मरियल-सा यहूदी बैठा था और गाड़ी में से एक टोपीवाले सिर ने बाहर की ओर झाँका, ऐसा लगा, कि उत्सुकता से ख़ुशी मनाती प्रजा पर नज़र डाली। जनता ने गाड़ी का स्वागत ठहाकों और फूहड़ मज़ाक़ों से किया। (नोट : अपनी पोशाक के किनारों को नली की तरह मोड़कर, दिवाने गाड़ीवाले यहूदी को छेड़ने लगे और ठहाके मारते हुए चीख़ने लगे, "यहूदी, यहूदी, खा ले सुअर का कान!..." गोर्युखिनो के पादरी का अभिलेख)।

मगर उन्हें इतना आश्चर्य हुआ जब गाड़ी गाँव के बीच में ठहर गयी और जब

आगन्तुक ने उसमें से बाहर कूदकर आदेशात्मक स्वर में मुखिया त्रिफ़ोन को पेश करने की माँग की। यह बड़ा आदमी मनोरंजन भवन में मिला, जहाँ से दो प्रतिनिधि उसे सम्मानपूर्वक हाथों का सहारा देकर लाये। अजनबी ने धमकाती नज़रों से देखकर उसे एक पत्र दिया और उसे फ़ौरन पढ़ने का हुक्म दिया। गोर्युखिनो के मुखियाओं को स्वयं कभी भी कुछ भी पढ़ने की आदत नहीं थी। मुखिया अनपढ़ था। ज़ेम्स्त्वो के अवदेइ को बुलवाया गया। वह पास ही में मिला, चौराहे पर बागड़ के निकट सोया हुआ, उसे अपरिचित के पास लाया गया। मगर ज़बर्दस्ती के इस बुलावे के कारण या अकस्मात् भय के कारण या फिर दुःख के पूर्वाभास के कारण उसे स्पष्ट अक्षरों में लिखे गये ख़त के अक्षर धुँधले प्रतीत होने लगे और वह उन्हें पहचानने की हालत में नहीं रहा। अजनबी ने भयानक गालियाँ देते हुए मुखिया त्रिफ़ोन और ज़ेम्स्त्वो के अवदेइ को सोने के लिए भेज दिया, ख़त पढ़ने का कार्यक्रम दूसरे दिन तक टाल दिया और सरकारी झोंपड़ी में चला गया, जहाँ यहूदी उसके पीछे-पीछे उसका सूटकेस ले आया।

गोर्युखिनोवासियों ने बेजुबान अचरज से इस असाधारण घटना को देखा, मगर शीघ्र ही गाड़ी, यहूदी और अजनबी को भुला दिया। दिन शोरगुल और प्रसन्नता में बीत गया और गोर्युखिनो सो गया, इस पूर्वज्ञान के बग़ैर, कि कैसा दुर्भाग्य उसका इन्तज़ार कर रहा है।

सूर्योदय के साथ ही ग्रामवासियों की नींद खुल गयी खिड़कियों पर की गई खट-खट से और ग्राम सभा में आने की घोषणा सुनकर। ग्रामवासी एक-एक करके सरकारी झोंपड़ी के आँगन में जमा होने लगे, जहाँ ग्राम सभाएँ हुआ करती थीं। उनकी आँखें धुँधलायी हुईं और लाल थीं, चेहरे सूजे हुए थे, वे जम्हाइयाँ लेते और खुजाते हुए टोपीवाले, पुराना नीला कोट पहने आदमी की ओर देख रहे थे, जो बड़ी अकड़ से सरकारी झोंपड़ी की ड्योढ़ी पर खड़ा था और वे उसके पहले कभी देखे हुए नाक-नक़्श याद करने की कोशिश कर रहे थे। मुखिया त्रिफ़ोन और ज़ेम्स्त्वो का अवदेई उसके निकट खड़े थे, बग़ैर टोपी के, मुख पर लाचारी एवं गहन शोक के भाव लिये?

"सब हैं यहाँ?" अजनबी ने पूछा।

"सभी आदमी आ गये?" मुखिया ने दुहराया।

"सभी आ—द—मी" नागरिकों ने जवाब दिया।

तब मुखिया ने ऐलान किया कि मालिक के पास से चिट्ठी आयी है और उसने ज़ेम्स्त्वो वाले को पढ़ने का हुक्म दिया, जिससे सभी लोग सुन सकें। अवदेइ आगे आया और उसने ज़ोर से निम्नलिखित ख़त पढ़ा।

(नोट : इस धमकी भरे ख़त की मैंने मुखिया त्रिफ़ोन के पास से नक़ल की, वह उसके पास झोले में गोर्युखिनो पर उसके स्वामित्व की अन्य यादगारों के साथ सुरक्षित रखा था। मैं स्वयं इस मनोरंजक ख़त को न ढूँढ़ सका।)

त्रिफ़ोन इवानोव!

इस ख़त को लानेवाला मेरा विश्वस्त XX , मेरी मातृभूमि गोर्युखिनो गाँव में उसका शासन सँभालने के लिए आ रहा है। उसके वहाँ पहुँचते ही फ़ौरन सभी किसानों को इकट्ठा करके मेरा आदेश सुनाया जाए, मतलब यह कि : मेरे भरोसेमन्द XX द्वारा उन्हें दिए गए आदेशों का वैसे ही पालन किया जाए, जैसे कि वे मेरे आदेश हों। और सब कुछ, जो वह माँगता है, उसे बग़ैर किसी हीले-हवाले के दे दिया जाए, वर्ना XX को उनसे हर सम्भव कड़ाई से पेश आने का हक़ होगा। इस बात के लिए मुझे उनकी बेशर्म हुक्म उदूली ने मजबूर किया है, और त्रिफ़ोन, तेरी उनसे बेईमानी भरी साँठ-गाँठ ने।

हस्ताक्षर

एन. एन.

तब XX ने, X अक्षर की तरह पाँव फैलाकर और ϕ अक्षर की तरह कमर पर हाथ रखकर यह छोटा-सा मगर प्रभावशाली भाषण दिया : "देखो, मुझसे ज़्यादा होशियारी न करना; तुम लोग, मैं जानता हूँ, बिगड़े हुए लोग हो, मगर मैं तुम्हारे दिमाग़ से बेवक़ूफ़ी कल के नशे से भी जल्दी उतार दूँगा"। नशा किसी भी दिमाग़ में नहीं बचा था। गोर्युखिनोवासियों पर मानों बिजली गिरी, उन्होंने अपनी नाक लटका ली, और ख़ौफ़ से अपने-अपने घर चले गये।

कारिन्दे XX का शासन

XX ने हुकूमत की बागडोर सँभाल ली और अपनी राजनीतिक व्यवस्था को पूरा करने में जुट गया, उसका विशेष रूप से वर्णन करना होगा।

उसका मुख्य आधार निम्नलिखित मान्यता थी। किसान जितना अमीर होगा, उतना ही वह बिगड़ा हुआ होगा और जितना ग़रीब होगा, उतना शान्त होगा। इसके परिणामस्वरूप XX ने अपने प्रान्त की शान्ति की ओर ध्यान देने की कोशिश की, मानों वही किसान की प्रमुख हितैषी हो। उसने किसानों की जानकारी माँगी, उन्हें 'अमीर' और 'ग़रीब' में बाँटा।

(1) न चुकाये गए करों को सम्पन्न किसानों पर लगा दिया गया और उनसे हर सम्भव कठोरता से वसूला गया।

(2) ग़रीब और आलसी मनचलों को तुरन्त जुताई के काम में लगा दिया गया, और अगर उसके हिसाब से उनका श्रम पर्याप्त न प्रतीत हुआ तो, उसने उन्हें दूसरे किसानों को भाड़े पर दे दिया, जिसके लिए ये लोग उसे स्वेच्छा से बख़्शीश देते, और बेगार में दिये गये किसानों को आज़ादी ख़रीदने का पूरा हक़ था, इसके लिए उन्हें न

चुकाये गये कर के अतिरिक्त दुगुना वार्षिक कर देना पड़ता। हर तरह की सामाजिक ज़िम्मेदारी सम्पन्न किसानों पर पड़ती। भाड़े पर देना लालची कारिन्दे का पसन्दीदा काम था, क्योंकि सभी अमीर किसान एक के बाद एक आज़ाद होने की कोशिश करते, जब तक कि आख़िरकार किसी निकम्मे या आवारा की बारी न आ जाती।[1] ग्राम सभाओं का ख़ात्मा कर दिया गया। कर वह थोड़ा-थोड़ा करके पूरे साल वसूलता रहा। इसके अलावा वह आकस्मिक, बेबात के पैसे भी उगाहता। किसान, शायद, पहले की अपेक्षा थोड़ा-सा अधिक पैसा देते, मगर वे किसी भी तरह काम न कर सकते। पर्याप्त धन न जमा कर सकते। इन तीन सालों में गोर्युखिनो पूरी तरह निर्धन हो गया।

गोर्युखिनो निराशा में डूब गया, बाज़ार सूना हो गया, आर्खिप लीसी के गीत ख़ामोश हो गये। छोकरे चारों दिशाओं में निकल पड़े। आधे किसान जुताई में लगे थे, बाक़ी आधे बेगारी में, और मन्दिर के उत्सववाला दिन, अभिलेख तैयार करनेवाले के शब्दों में, खुशी और धूमधामवाला दिन न रहा, बल्कि दुःख और अपमान की सालगिरह के रूप में याद रहा।

---

1. बदमाश कारिन्दे ने अन्तोन तिमोफेयेव को ज़ंजीरों से जकड़ दिया और बूढ़े तिमोफेई ने एक सौ रूबल देकर बेटे को ख़रीद लिया; और कारिन्दे ने पेत्रूश्का एरेमेयेव को बेड़ियाँ पहनायीं, उसे भी उसके पिता ने 68 रूबल में ख़रीदा; और दुष्ट ने लेखा तारासोव को क़ैद करना चाहा, तो वह जंगल में भाग गया; और कारिन्दे ने इसके बारे में बड़ा हो-हल्ला मचाया, और बे वांका शराबी को शहर ले गये और उसे बेगार में दे दिया (गोर्युखिनो के किसानों की शिकायत)।

किर्झाली

किर्झाली जन्म से बुल्गारियन था। तुर्की भाषा में किर्झाली का अर्थ होता है योद्धा, अतीव साहसी। उसका वास्तविक नाम मैं नहीं जानता।

अपने डाकों से किर्झाली ने पूरे मल्दाविया में आतंक फैला रखा था। उसके बारे में थोड़ी-सी कल्पना देने के लिए उसकी एक विजय का ज़िक्र करूँगा। एक वार रात को उसने अल्बानिया के मिखाइलाकी के साथ मिलकर बल्गारिया के एक गाँव पर हमला बोल दिया। उन्होंने दोनों सिरों से उसमें आग लगा दी और एक के वाद एक झोंपड़े में गये। किर्झाली मार डालता और मिखाइलाकी माल बटोरता। दोनों चिल्ला रहे थे, "किर्झाली! किर्झाली!" पूरा गाँव इधर-उधर भागने लगा। जव अलेक्सान्द्र इप्सिलांती[1] ने खुल्लमखुल्ला बग़ावत का ऐलान कर दिया और सैन्य जुटाना प्रारम्भ कर दिया, तो किर्झाली उसके पास अपने कुछ पुराने साथियों को लेकर पहुँचा। एतेरी[2] का वास्तविक उद्देश्य तो वे ठीक से नहीं जानते थे, मगर उनके लिए युद्ध एक मौक़ा था तुर्की से बदला लेते हुए मालामाल होने का और शायद मल्दावियों से भी, और यह उन्हें साफ़ नज़र आ रहा था।

अलेक्सान्द्र इप्सिलांती स्वयं तो बहुत बहादुर था, मगर उस भूमिका के लिए जो उसने इतने जोश और इतनी असावधानी से ग्रहण कर ली थी अत्यावश्यक गुण उसमें नहीं थे। उसे उन लोगों से सामंजस्य बनाये रखना नहीं आता था, जिनका नेतृत्व वह कर रहा था। उनके दिलों में उसके लिए न तो आदर था, न ही विश्वास। दुर्भाग्यपूर्ण पराजय के पश्चात् जिसमें अनेक ग्रीक युवक मारे गये, मोर्दाकी ने उसे अपना पद छोड़ने की सलाह दी और स्वयं उसका स्थान ग्रहण कर लिया। इप्सिलांती घोड़ा दौड़ाता हुआ ऑस्ट्रिया की सीमाओं की ओर गया और वहाँ से उसने लोगों को अवज्ञाकारी, कायर और नालायक़ कहते हुए गालियाँ दीं। इन कायरों और नालायक़ों का एक बड़ा अंश सेकू के मठों की दीवारों में या प्रूत के किनारों पर स्वयं से दस गुना अधिक शक्तिशाली शत्रु का वदहवासी से मुक़ाबला करते हुए शहीद हो गया।

---

1. अलेक्सान्द्र इप्सिलांती—ग्रीक के स्वाधीनता युद्ध का एक नेता।
2. एतेरी—ग्रीस का एक भूमिगत गुट, जिसका उद्देश्य तुर्की दासता के ख़िलाफ़ संघर्ष करना था।

किर्झाली जॉर्ज कन्ताकुजिन[1] के दस्ते में था, जिसके बारे में वही सब कुछ दोहराया जा सकता है, जो इप्सिलांती के बारे में कहा गया है। स्कुल्याना के युद्ध से एक दिन पूर्व कन्ताकुजिन ने रूसी कप्तान से हमारी कारंटीन में आने की आज्ञा माँगी। फ़ौजी दस्ता वग़ैर नेतृत्व के रह गया, मगर किर्झाली, साफ्योनोस, कन्तागोनी इत्यादि को किसी सरदार की आवश्यकता ही नहीं थी।

शायद स्कुल्याना के युद्ध की मर्मस्पर्शी हक़ीक़त का वर्णन किसी ने भी नहीं किया है। कल्पना कीजिए युद्ध की कला से अनभिज्ञ, पचास हज़ार तुर्की घुड़सवारों को देखते ही पीछे हटनेवाले सात सौ अर्नाऊत, अल्बानियाई, ग्रीक, वुल्गारियाई और अन्य अनेकों की। यह दस्ता प्रूत के किनारों पर सिमट गया और उसने अपने सामने रख लीं यास्सा के राजा के आँगन में मिली दो तोपें, जिनसे सालगिरह के अवसर पर आयोजित भोजों के दौरान गोले दाग़े जाते थे। तुर्क तो हथगोले फेंक कर ख़ुश ही होते, मगर रूसी अधिकारियों की इज़ाजत के बग़ैर ऐसा कर नहीं सकते थे : हथगोला निश्चित ही हमारे किनारे पर गिरता। कारंटीन के कप्तान (अब स्वर्गवासी) चालीस वर्षों से फ़ौज में थे, उन्होंने कभी भी गोलियों की ऐसी आवाज़ न सुनी थी, मगर भगवान ने वह भी सुनवा दी। कई गोलियाँ तो सनसनाती हुई उसके कानों के निकट से गुज़र गयीं। वूढ़ा वहुत गुस्सा हो गया और उसने इसके लिए ओखोत्सकोये की पैदल टुकड़ी के मेयर को, जो उस समय कारंटीन में था, ख़ूब ग़ालियाँ दीं। मेजर, क्या करे यह न जानते हुए नदी की ओर आया, जिसके पीछे तुर्क दस्तों का नायक सीना ताने घोड़े पर चला जा रहा था, और उसने उँगली उठाकर उसे धमकी दी। यह देखते ही नायकों ने घोड़ों को एड़ लगाई और भाग खड़े हुए, उनके पीछे-पीछे पूरी तुर्क टुकड़ी भी भागी। जिस मेजर ने उँगली से धमकाया था, उसका नाम था खोर्चेव्स्की। मालूम नहीं, उसका क्या हुआ।

दूसरे दिन, मगर, तुर्कों ने क्रान्तिकारियों पर हमला कर ही दिया। हथगोलों और तोपगोलों का उपयोग कर सकने में असमर्थ उन्होंने, अपनी आदत के विपरीत, हथियारों का प्रयोग करने का निश्चय किया। भयानक मारकाट मच गयी। खंजरों से मारा गया। तुर्कों के पास भाले देखे गये जो अव तक उनके पास नहीं थे; ये भाले रूसी थे, पुराने कज़ाक योद्धा, जो तुर्की भाग गये थे उनके साथ खेत रहे। हमारे सम्राट की इजाज़त से क्रान्तिकारी प्रूत पार करके हमारे कारंटीन में छिप गये। वे नदी पार करने लगे। तुर्की किनारे पर कान्तागोनी और सफ्यानोस रह गये। किर्झाली, जो पहले दिन ज़ख़्मी हो गया था, कारंटीन में लेटा था। साफ्यानोस मारा गया। कान्तागोन, जो वहुत मोटा था, पेट में भाले की चोट से घायल हो गया। उसने एक हाथ से तलवार उठाई,

---

1. जॉर्ज कन्ताकुजिन—राजकुमार, ग्रीक वग़ावत के एक प्रसिद्ध योद्धा, पूश्किन के परिचित, किशिनेववासी।

दूसरे से दुश्मन का भाला पकड़ लिया और उसे अपने शरीर के भीतर गहरे घुसा लिया और तलवार से अपने हत्यारे को मारकर उसके ही साथ धराशायी हो गया।

सब ख़त्म हो गया। तुर्कों की विजय हुई। मल्दाविया की सफ़ाई कर दी गयी। क़रीब छह सौ अल्बानियाई बेसराबिया लाये गये, यह न जानते हुए भी कि स्वयं को क्या खिलायें, वे रूस के प्रति कृतज्ञ ही बने रहे, जिसने उन्हें शरण दी थी। वे निठल्ली, मगर लक्ष्यहीन ज़िन्दगी बिता रहे थे। उन्हें अधतुर्की बेसराबिया के कॉफीख़ानों में, हुक़्क़े की नलियाँ गुड़गुड़ाते, छोटे-छोटे प्यालों से कॉफ़ी पीते देखा जा सकता था। उनके रंगबिरंगे कसीदा किये हुए जैकेट और नुकीले लाल जूते बदरंग हो चले थे, मगर फुन्देदार टोपी वैसी ही, तिरछी, कान को ढाँकती हुए पहनी जा रही थी, और चौड़े कमरबन्द से खंजर और पिस्तौलें वैसे ही झाँका करतीं। किसी को भी उनसे शिकायत नहीं थी। कोई सोच भी नहीं सकता था कि ये शान्तिप्रिय ग़रीब, मल्दाविया के नामी डकैत थे, ख़ौफ़नाक किर्झाली के साथी थे और वह भी इन्हीं के बीच मौजूद था।

यास्सा में राज कर रहे पाशा[1] के कानों में इसकी भनक पड़ी और उसने शान्तिपूर्ण ढंग से बातचीत के ज़रिये रूसी अधिकारियों से माँग की कि डाकुओं को उसे सौंप दिया जाए।

पुलिस ने खोजबीन आरम्भ कर दी। पता चला कि किर्झाली सचमुच में किशिन्येव में है। उसे भगोड़े मठाधीश के घर में शाम को पकड़ा गया, जब वह अँधेरे में अपने सात साथियों के साथ भोजन कर रहा था।

किर्झाली पर पहरा बिठा दिया गया। उसने कुछ भी नहीं छिपाया और स्वीकार किया कि वह किर्झाली है। "मगर—जब से मैं प्रूत के इस पार आया हूँ, मैंने किसी के बाल को भी नहीं छुआ है, किसी बंजारे तक का अपमान नहीं किया हैं। तुर्कों के लिए, मल्दावियों के लिए, वलाशों के लिए मैं बेशक़ डाकू हूँ, मगर रूसियों के लिए मैं मेहमान हूँ। जब साफ़ानोस, अपने पूरे हथगोले समाप्त करके हमारे पास कारंटीन में ज़ख़्मियों से बटन, कीलें, ज़ंजीरें और खंजरों की मूठें लेने आया—अन्तिम बारूद भरने के लिए, तो मैंने उसे बीस बेश्लिक दिये और मैं कफल्लक हो गया। ख़ुदा देख रहा है कि मैं, किर्झाली, हमेशा खैरात बाँटता रहा! तो अब रूसी मुझे मेरे दुश्मनों को क्यों सौंप रहे हैं?" इसके बाद किर्झाली ख़ामोश हो गया और अपनी तक़दीर के फ़ैसले का इन्तज़ार करने लगा।

उसे कुछ ही देर इन्तज़ार करना पड़ा। शासकों ने, जो डाकुओं को रूमानी नज़रिये से देखने पर मजबूर नहीं थे और इस माँग को उचित मान रहे थे, किर्झाली को यास्सा भेजने का हुक्म दे दिया।

भले दिल और दिमाग़वाले एक आदमी ने, जो उस समय युवा, साधारण-सा अफ़सर

---

1. पाशा—प्राचीन तुर्की एवं मिस्र में जनरलों और बड़े अफ़सरों को पाशा की उपाधि दी जाती थी।

था और अब महत्त्वपूर्ण पद पर है, उसके प्रस्थान का बड़ा सजीव वर्णन किया है।

जेलख़ाने के दरवाज़े पर डाकगाड़ी कारूत्सा खड़ी थी...शायद आप न जानते हों कि कारूत्सा कैसी होती है। यह एक कम ऊँचाईवाली, चटाई से ढँकी गाड़ी होती है, जिसमें अक्सर छह या आठ टट्टू जोते जाते थे। भेड़ की ख़ाल की टोपी पहने मूँछोंवाला मल्दावियन उनमें से एक टट्टू पर बैठकर हर मिनट चिल्लाता और चाबुक़ लहराता, और उसके टट्टू तेज़ गति से बेतहाशा भागते। अगर उनमें से कोई एक पिछड़ने लगता, तो वह उसके भाग्य की परवाह किये बग़ैर, फूहड़ और नंगी गालियाँ देते हुए उसे गाड़ी से अलग करके रास्ते पर छोड़ देता। उसे विश्वास था कि वापसी में वह उसे स्तेपी की हरी-हरी घास पर आराम से चरते हुए वहीं पाएगा। अक्सर ऐसा होता कि एक स्टेशन से आठ टट्टुओं वाली गाड़ी पर सवार मुसाफ़िर दूसरे तक दो पर ही पहुँचता। यह हालत थी पन्द्रह साल पहले। अब रूसीकृत बेसराबिया में रूसी गाड़ी और रूसी-साज़ का इस्तेमाल किया जाता है।

ऐसी एक कारूत्सा खड़ी थी कारागार के द्वार पर 1821 के सितम्बर के अन्तिम दिनों में। जूते खटखटाते निठल्ले यहूदी, अपनी ख़ूबसूरत मगर फटी-पुरानी वेशभूषा में अल्बानियाई, काली आँखोंवाले बच्चों को हाथों में थामे सुदृढ़ मल्दावियाई, कारूत्सा के चारों ओर खड़े हो गये। आदमी चुप्पी साधे थे, औरतें तैश में आकर किसी बात की प्रतीक्षा में थीं।

द्वार खुले और कुछ पुलिस अफ़सर बाहर आये; उनके पीछे ज़ंजीरों से जकड़े किर्झाली को लिए दो सिपाही निकले।

वह तीस वर्ष का प्रतीत हो रहा था। साँवले चेहरे पर सीधे और गम्भीर नाक नक़्श थे। वह था ऊँचे क़द का, चौड़े कन्धोंवाला और उसमें असाधारण शारीरिक शक्ति दिखाई दे रही थी। रंगबिरंगी टेढ़ी पगड़ी उसके सिर को ढाँके थी, चौड़ा पट्टा पतली कमर को जकड़े था; नीले रंग के मोटे कपड़े का दोलिमान (चोगा), घुटनों से ऊपर लटकती कुर्ते की प्लेटें और ख़ूबसूरत जूते उसकी वेशभूषा का अंग थे। वह शान्त एवं स्वाभिमानी दिखाई दे रहा था।

कर्मचारियों में से एक, धारियोंवाला लम्बा कोट पहने लाल मुँहवाले बूढ़े ने, जिस पर तीन बटन लटक रहे थे, चाँदी की ऐनक को उस गाँठ पर दबाया, जो कभी उसकी नाक थी और काग़ज़ खोलकर मल्दावियन भाषा में अनुनासिक सुर में पढ़ना आरम्भ किया। वह बार-बार घमंड से ज़ंजीरों में जकड़े किर्झाली की ओर देख रहा था, जिससे, ज़ाहिर था कि यह आदेश मुख़ातिब था। किर्झाली ध्यान से उसे सुन रहा था। कर्मचारी ने पढ़ना समाप्त किया, काग़ज़ को तह कर दिया, भयानक आवाज़ में लोगों पर चिल्लाया, उन्हें रास्ता छोड़ने का आदेश दिया और कारूत्सा को ले जाने का हुक्म दिया। तब किर्झाली ने उससे मुख़ातिब होकर मल्दावियन भाषा में कुछ शब्द कहे; उसकी आवाज़ काँप रही थी, चेहरे के भाव बदल गये; वह रो पड़ा और अपनी ज़ंजीरों

को झनझनाते हुए पुलिस कर्मचारी के पैरों पर गिर पड़ा। पुलिस कर्मचारी घबराकर उछला; सिपाहियों ने किर्झाली को उठाना चाहा, मगर वह स्वयं ही उठा, अपनी ज़ंजीरों को उठाया, कारूत्सा की ओर बढ़ा और चिल्लाया, "गायदा।"[1] सन्तरी उसकी बग़ल में बैठा, मल्दावियन ने चाबुक़ लहराया और कारूत्सा चल पड़ी।

"किर्झाली ने आपसे क्या कहा?" युवा अफ़सर ने पुलिस कर्मचारी से पूछा।

"उसने (देखिए...) मुझसे विनती की," पुलिसवाले ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "कि मैं उसकी बीवी और बच्चे का ख़याल रखूँ, जो किलिया से कुछ दूर एक बल्गारियन गाँव में रहते हैं, वह डरता है कि उसके कारण उन्हें नुक़सान न उठाना पड़े। जनता पागल है।"

युवा अफ़सर की कहानी ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। मुझे बेचारे किर्झाली पर दया आयी। काफ़ी समय तक उसकी क़िस्मत के बारे में पता न चला।

कुछ वर्षों बाद मैं उस युवा अफ़सर से मिला। हम अतीत के बारे में बातें करने लगे।

"और आपका दोस्त किर्झाली?" मैंने पूछा, "क्या आप जानते हैं कि उसके साथ क्या हुआ?"

"कैसे नहीं मालूम!" उसने जवाब दिया और मुझे यह कहानी सुनाई :

"किर्झाली को, यास्सा लाकर, पाशा के सामने पेश किया गया, जिसने उसे मृत्यु दंड दिया। इस सज़ा को किसी त्यौहार तक के लिए टाल दिया गया। फ़िलहाल उसे कारागार में बन्द कर दिया गया।"

बन्दी पर पहरा देते थे सात तुर्क (सीधे-सादे लोग और दिल से वैसे ही डाकू थे, जैसा किर्झाली था), वे उसकी बड़ी इज़्ज़त करते और लालायित होकर, जैसा कि अक्सर पूरब में होता है, उसकी विचित्र कहानियाँ सुना करते।

क़ैदी और प्रहरियों के बीच निकट सम्बन्ध बन गये। एक बार किर्झाली ने उनसे कहा, "भाइयो! मेरा वक़्त नज़दीक है। अपने नसीब से कोई नहीं भाग सकता। जल्द ही मैं आपसे जुदा हो जाऊँगा। मैं यादगार के तौर पर आपके लिए कुछ छोड़ जाना चाहता हूँ।"

तुर्कों के कान खड़े हो गये।

"भाइयो," किर्झाली कहता रहा, "तीन साल पहले, जब मैं मरहूम मिखाइलाकी के साथ डाके डाला करता था, हमने यास्सा के नज़दीक स्तेपी में गाल्बिनो[2] से भरी हंडिया गाड़ दी थी। ज़ाहिर है कि न मैं, न वो इसे पा सकेंगे। ऐसा ही हो : उसे आप ले लें और आपस में बाँट लें।"

---

1. गायदा—तुर्कों के विरुद्ध बग़ावत करनेवाले क्रान्तिकारियों द्वारा प्रयुक्त सम्बोधन। ऐसे क्रान्तिकारियों को 'गायदुक' कहा जाता था।
2. गाल्बिनो—यहाँ स्वर्ण मुद्राओं से तात्पर्य है।

तुर्क तो मानों पागल हो गये। वे बहस करने लगे कि सही जगह ढूँढ़ेंगे कैसे? सोचते रहे, सोचते रहे और यह फ़ैसला किया कि ख़ुद किर्झाली उन्हें वहाँ ले जाए।

रात हुई। तुर्कों ने क़ैदी के पैरों से बेड़ियाँ हटाईं, उसके हाथ रस्सी से बाँधे और उसके साथ शहर से बाहर स्तेपी की ओर चल पड़े।

किर्झाली उन्हें ले चला, एक ही दिशा में, एक टीले से दूसरे टीले की ओर। वे बड़ी देर तक चलते रहे। आख़िरकार किर्झाली एक चौड़े पत्थर के पास रुक गया, दक्षिण की ओर बीस क़दम नापे और पैरों से ठकठकाते हुए बोला, "यहाँ।"

तुर्की दो भागों में बँट गये। चार ने अपने-अपने खंजर निकाले और खोदना शुरू किया। तीन पहरा देते रहे। किर्झाली पत्थर पर बैठ गया और उनके काम को देखता रहा।

"क्या? कितनी देर है?" उसने पूछा, "पहुँचे कि नहीं?"

"अभी नहीं," तुर्क बोले और इतने जोश से काम करते रहे कि उनके शरीर से पसीने की धाराएँ बह निकलीं।

किर्झाली बेचैन होने लगा।

"कैसे लोग हैं," वह बोला, "ज़मीन भी ठीक से खोदना नहीं आता। मैं होता तो दो मिनट में यह काम कर देता। बच्चो! मेरे हाथ खोल दो और मुझे खंजर दो।"

तुर्क सोच में पड़ गये और आपस में सलाह-मशविरा करने लगे।

"और क्या? (उन्होंने निर्णय किया) उसके हाथ खोल देते हैं, उसे खंजर दे देते हैं। क्या होगा? वह अकेला है, हम हैं सात।" और तुर्कों ने उसके हाथ खोलकर उसे खंजर दे दिया।

अब किर्झाली था आज़ाद और हथियारबन्द। वह कुछ तो महसूस कर ही रहा होगा।...उसने फ़ुर्ती से खोदना आरम्भ किया, सन्तरी उसकी मदद करने लगे... अचानक उसने उनमें से एक को खंजर घोंप दिया और उसके सीने में खंजर की मूठ छोड़कर उसके कमरबन्द में से दो पिस्तौल खींच लिए।

बाक़ी के छहों, किर्झाली को दो-दो पिस्तौलों से लैस देखकर भाग खड़े हुए।

आजकल किर्झाली यास्सा के निकट ही डाके डालता है। हाल ही में उसने सम्राट को पाँच हज़ार लेव[1] भेजने की माँग करते हुए लिखा, और धमकी दी कि पैसा न पाने की सूरत में वह यास्सा को जलाकर राख कर देगा और सीधे सम्राट के पास पहुँच जाएगा। उसे पाँच हज़ार लेव भेज दिये गये।

कैसे हो किर्झाली?

---

1. लेव—स्थानीय मुद्रा।

इजिप्शियन नाइट्स

1

चार्स्की पीटर्सबुर्ग के मूल निवासियों में से एक था। अभी उसकी उम्र तीस साल की नहीं हुई थी, उसकी शादी नहीं हुई थी, नौकरी का बोझ उस पर नहीं था। उसके स्वर्गवासी चाचा ने, जो खुशहाल दिनों में उपगवर्नर रह चुके थे, उसके लिए अच्छी ख़ासी जायदाद छोड़ी थी। उसकी ज़िन्दगी खुशगवार हो सकती थी, मगर दुर्भाग्यवश वह कविताएँ लिखा करता और प्रकाशित किया करता था। पत्रिकाओं में उसे कवि कहा जाता और नौकर-चाकर उसे रचनाकार कहा करते।

उन सभी सुविधाओं के बावजूद, जो कवियों को प्राप्त हैं (मानना पड़ेगा : सिर्फ़ सम्बन्धकारक के स्थान पर कर्मकारक का प्रयोग एवं इसी प्रकार की अन्य तथाकथित काव्यात्मक स्वतन्त्रताओं के अलावा, रूसी कवियों के पास हमें कोई विशेष सुविधाएँ नज़र नहीं आतीं)—चाहे कुछ भी हो जाए, सभी सम्भाव्य सुविधाओं के बावजूद ये लोग कई बड़ी-बड़ी हानियों एवं अप्रियताओं के शिकार हो जाते हैं। एक कवि के लिए सर्वाधिक कटु, सर्वाधिक असहनीय है उसकी उपाधि एवं उसका उपनाम, जिससे वह चिपका दिया जाता है और जो उससे कभी अलग नहीं होता। जनता उसे अपना ही माल समझती है; जिसकी राय में उसका जन्म उसके लाभ एवं प्रसन्नता के लिए ही हुआ है। वह अपने गाँव से वापस लौटता है तो पहला मुलाक़ाती उससे पूछता है, "क्या आप हमारे लिए कोई नयी चीज़ लाए हैं?" अपने बेतरतीब मामलों के बारे में वह चिन्तित हो या अपने प्रिय व्यक्ति की बीमारी को लेकर परेशान : फ़ौरन एक कमीनी मुस्कुराहट के साथ ज़हरीला उद्गार प्रकट होता है, "शायद, कुछ रच रहे हैं!" वह प्यार करता है?—उसकी सुन्दरी अंग्रेज़ी दुकान में अपने लिए एल्बम ख़रीदती है और तुरन्त एक शोकगीत की उम्मीद कर बैठती है। वह अपरिचित व्यक्ति के पास आता है, किसी ज़रूरी काम के बारे में बातें करता है, वह फ़ौरन अपने बेटे को पुकारता है और उसे फलाँ-फलाँ की कविता सुनाने के लिए मजबूर करता है; और बच्चा कवि का उसी की बिगाड़ी हुई कविताओं से स्वागत करता है। ये तो हुए उसकी कारीगरी के फल! नुक़सान क्या है? चार्स्की मानता है कि अभिवादनों, आकांक्षाओं

(अपेक्षाओं) एल्बमों और बच्चों से वह इतना तंग आ चुका है कि हर पल बदतमीज़ी करने से बचने के लिए उसे स्वयं पर क़ाबू रखना पड़ता है।

चार्स्की ने अपने असहनीय उपनाम को फेंक देने की हर सम्भव कोशिश की। वह अपने साहित्यकार बन्धुओं से भागता फिरता और उनके बदले समाज के गण्यमान्य व्यक्तियों की, एकदम बेवक़ूफ़ों की भी, संगत पसन्द करता। उसकी बातचीत एकदम निचले दर्जे की होती और साहित्य से कभी भी सम्बन्धित न होती।

उसकी आधुनिकतम फ़ैशन की वेशभूषा में शामिल होती थी उस मॉस्कोवासी की विनम्रता एवं आत्मविश्वास, जो पहली बार पीटर्सबुर्ग आया हो।

किसी महिला के शयनकक्ष की भाँति साफ़-सुथरे उसके अध्ययनकक्ष में कोई भी चीज़ ऐसी न थी जो एक लेखक की याद दिलाती; मेज़ों के ऊपर और मेज़ों के नीचे किताबें बिखरी नहीं हुआ करतीं; सोफ़े पर स्याही का छिड़काव नहीं हुआ था; उस बेतरतीबी का अभाव था, जो काव्य की उपस्थिति एवं झाड़ू तथा ब्रश की अनुपस्थिति का आभास कराती। यदि उच्च समाज के किसी दोस्त ने उसे हाथों में क़लम पकड़े देख लिया तो चार्स्की झुँझला उठता। विश्वास करना कठिन है कि एक प्रतिभासम्पन्न एवं सहृदय व्यक्ति किस हद तक जा सकता है। कभी वह घोड़ों का शौक़ीन होने का दिखावा करता या मँजे हुए खिलाड़ी होने का या फिर खाने-पीने का शौक़ीन होने का; हालाँकि पहाड़ी घोड़े (टट्टू) और अरबी घोड़ों में भेद न कर पाता, उसे कभी ट्रम्प कार्ड याद नहीं रहता, और राज़ की बात यह थी कि फ्रांसीसी व्यंजनों के सभी सम्भव आविष्कारों के बदले भुने हुए आलू पसन्द करता था। जीवन भी बड़ी बेतरतीबी से बिताता; सभी बॉल नृत्यों में घुस जाता, राजनयिकों के सभी भोजों में खाना खाता और आमन्त्रितों के लिए आयोजित सभी पार्टियों में आइसक्रीम की भाँति अनिवार्य रूप से उपस्थित रहता।

मगर फिर भी वह कवि था और उसका भावनावेग दबाया नहीं जा सकता था : जब उस पर वह 'भूत' सवार होता (प्रेरणा को वह इस नाम से पुकारा करता) तो चार्स्की अपने अध्ययनकक्ष में बन्द हो जाता और सुबह से देर रात तक लिखता रहता। अपने सच्चे मित्रों के सामने वह स्वीकार करता कि तभी वह वास्तविक सुख का अनुभव करता। बाक़ी समय में वह घूमता रहता, विनयशीलता दिखाते हुए और ढोंग करते हुए और हर क्षण प्यारा-सा सवाल सुनते हुए : क्या आपने कोई नयी रचना लिखी है।

एक दिन सुबह चार्स्की को अपने दिल में उस सम्पूर्ण आनन्द की अनुभूति का अहसास हुआ, जब ख़याल आपके सामने मूर्त रूप ग्रहण करने लगते हैं और आप इन तस्वीरों को साकार बनाने के लिए सजीव, आकस्मिक शब्दों को ढूँढ़ लेते हैं, जब कविता हौले से आपकी क़लम के नीचे बिछ जाती है और सुडौल साकार विचारों का स्वागत करने मुखर काफ़िये दौड़े चले आते हैं। चार्स्की इस मीठी विस्मृति में डूबा हुआ

था...और समाज, सामाजिक राय और उसकी अपनी सनक उसके लिए अस्तित्वहीन हो गये थे। वह कविता लिख रहा था।

अचानक उसके अध्ययनकक्ष का दरवाज़ा चरमराया और एक अनजान सिर दिखाई दिया। चार्स्की काँप गया थरथराया और उसने बुरा मुँह बनाया।

"कौन है?" उसने क्षोभ से पूछा, मन-ही-मन अपने नौकरों को गालियाँ देते हुए, जो कभी भी सामने के कमरे में उपस्थित नहीं रहते थे।

अजनबी अन्दर आया।

वह था ऊँचे क़द का—दुबला-पतला और प्रतीत हो रहा था क़रीब तीस साल का। उसके साँवले चेहरे के नाक नक़्श भावदर्शी थे : काले बालों की लटों से ढँका हुआ निस्तेज ऊँचा माथा, काली चमकीली आँखें, गरुड़ जैसी नाक और पिचके हुए, साँवले-पीले गालों को घेरती हुई घनी दाढ़ी, उसके विदेशी होने का संकेत दे रहे थे। उसने काला फ्रॉक कोट पहना हुआ था, जिसका सिलाई पर रंग उड़ चुका था, पतलून गर्मियों वाली (हालाँकि बाहर पतझड़ का मौसम था); पीली पड़ चुकी क़मीज़ के ऊपर काले रंग की बदरंग-सी टाई पर नक़ली हीरा चमक रहा था; खुरदुरी टोपी, लगता था अच्छे-बुरे मौसम देख चुकी है। यदि इस व्यक्ति से जंगल में मुलाक़ात होती तो आप उसे डाकू समझ बैठते, समाज में उससे मिलते तो राजनीतिक षड्यन्त्रकारी समझते; और मेहमानख़ाने में—तरह-तरह की ताक़त बढ़ानेवाली दवाइयों और संखिया वेचनेवाला नीमहकीम समझ बैठते।

"क्या चाहते हैं आप?" चार्स्की ने उससे फ्रांसीसी में पूछा।

"सिन्योर," विदेशी ने काफ़ी नीचे झुक-झुककर अभिवादन करते हुए कहा, "महाशय कृपया मुझे माफ़ करें, अगर..."

चार्स्की ने उससे बैठने के लिए नहीं कहा और स्वयं भी खड़ा हो गया, बातचीत इतालवी भाषा में ज़ारी रही।

"मैं नेपल्स का कलाकार हूँ।" अजनबी ने कहा, "परिस्थितियों ने मुझे पितृभूमि छोड़ने पर मजबूर कर दिया; मैं रूस चला आया अपनी प्रतिभा पर उम्मीदें लगाये।"

चार्स्की ने सोचा कि नेपल्सवासी वॉयलिन के कुछ कॉन्सर्ट्स का प्रदर्शन करना चाहता है और घर-घर जाकर टिकटें बेच रहा है। उसने उसके हाथ में अपने पच्चीस रुबल्स थमाकर उससे जल्दी ही पीछा छुड़ाने का इरादा भी कर लिया, मगर अपरिचित ने आगे कहा :

"मुझे उम्मीद है, महाशय कि आप अपने हमपेशा लोगों की ओर दोस्ताना मदद का हाथ बढ़ाएँगे ओर मुझे उन परिवारों से परिचित करवाएँगे, जहाँ आपकी पहुँच है।"

चार्स्की के अभिमान का इससे अधिक गहरा अपमान नहीं किया जा सकता था। उसने फ़ौरन उस आदमी की ओर देखा, जो उसे अपना हमपेशा कह रहा था।

"माफ़ कीजिए आप कौन हैं और आप मुझे समझ क्या रहे हैं?" बड़ी कठिनाई से उसने अपनी नाराज़गी को रोकते हुए कहा।

नेपल्सवासी ने उसकी अप्रसन्नता को भाँप लिया।

"महाशय," उसने हकलाते हुए कहा...मैंने सोचा...मैंने समझा...आप...महानुभाव, ...क्षमा करें...

"क्या चाहिए आपको?" चार्स्की ने रूखेपन से फिर पूछा।

"मैंने आपकी अद्‌भुत प्रतिभा के बारे में बहुत कुछ सुना है; मुझे विश्वास है कि यहाँ के बड़े लोग आप जैसे प्रख्यात कवि को यथासम्भव संरक्षण देने में गर्व का अनुभव करेंगे" इतालवी ने जवाब दिया, "और इसीलिए मैं आपके पास आने की हिम्मत कर सका..."

"आप ग़लती कर रहे हैं महाशय," चार्स्की ने उसे बीच ही में टोकते हुए कहा, "हमारे यहाँ कवियों की उपाधियाँ नहीं होतीं। हमारे कवियों को उच्चवर्ग का आश्रय प्राप्त नहीं होता; हमारे कवि स्वयं ही 'उच्च कुल' के होते हैं और अगर हमारे संरक्षक (भाड़ में जाएँ!) यह नहीं जानते तो यह उन्हीं के लिए बुरा है। हमारे यहाँ ऐसे भगोड़े एबट्स[1] नहीं हैं, जिन्हें संगीतकार लिब्रेटो[2] की रचना के लिए रास्ते से उठाकर लाएँ। हमारे यहाँ कवि मदद की याचना करने के लिए पैदल घर-घर नहीं घूमते। हाँ, आपको, शायद, मज़ाक़ में किसी ने कह दिया होगा कि मैं एक महान कवि हूँ। यह सच है कि मैंने कभी कुछ बुरे लतीफ़े लिखे हैं, मगर ईश्वर की कृपा से, कवियों से न तो मेरा कोई लेना-देना है और न होगा।"

बेचारा इतालवी झेंप गया। वह अपने चारों ओर देखने लगा। तस्वीरों, संगमरमर के बुतों, ताँबे की मूर्तियों, क़ीमती खिलौनों ने जो गोथिक शैली के आलों में रखे थे उसे चौंका दिया। वह समझ गया कि उसके सामने खड़े, सुनहरे तारों से कढ़ी रेशमी फुन्देदार टोपी, सुनहरा चीनी चोगा, तुर्की कमरबन्द पहने इस सजीले नौजवान के और उस ग़रीब, लड़खड़ाते, बदरंग टाई और जीर्ण-शीर्ण फ्रॉक कोट पहने कलाकार के बीच कोई भी साम्य नहीं है। उसने क्षमायाचना में कुछ असम्बद्ध शब्द कहे, झुककर अभिवादन किया और बाहर जाने लगा। उसकी दयनीय आकृति ने चार्स्की के मन को छू लिया, जिसका दिल, अपनी छोटी-मोटी चारित्रिक विशेषताओं के बावजूद बड़ा भला और उदार था। उसे अपने चिड़चिड़े आत्माभिमान पर बड़ी शर्म आयी।

"कहाँ जा रहे हैं?" उसने इतालवी से कहा, "रुकिए...मैं इस अनावश्यक उपाधि को दूर हटाकर आपके सामने स्वीकार करना चाहता था, कि मैं कवि नहीं हूँ। चलिए अब आपके काम के बारे में बात करते हैं। मैं आपकी हरसम्भव सहायता करने के लिए तैयार हूँ। आप संगीतज्ञ हैं?"

---

1. एबट्स—मठाध्यक्ष।
2. लिब्रेटो—किसी ऑपेरा, नाटक आदि का सारांश।

"नहीं, महाशय!" इतालवी ने जवाब दिया, "मैं एक ग़रीब आशुकवि हूँ।"

"आशुकवि!" चार्स्की अपने आचरण की समस्त कठोरता को महसूस करते हुए चिल्लाया, "आपने पहले क्यों नहीं बताया कि आप आशुकवि हैं?" और चार्स्की ने वास्तविक पश्चात्ताप की भावना से उससे हाथ मिलाया।

उसके मैत्रीपूर्ण व्यवहार से इतालवी का हौसला बढ़ा। उसने बड़ी सादगी से अपने इरादों के बारे में बताना आरम्भ किया। उसकी वेशभूषा धोखा नहीं दे रही थी; उसे पैसों की ज़रूरत थी; वह अपनी घरेलू परिस्थिति को सुधारने की आशा से रूस आया था।

"मुझे उम्मीद है," उसने ग़रीब कलाकार से कहा, "कि आपको सफलता मिलेगी; यहाँ के समाज ने अभी तक कभी किसी आशुकवि को सुना नहीं है। उनकी उत्सुकता जाग उठेगी; हाँ, हमारे यहाँ इतालवी भाषा का प्रयोग नहीं होता है, आपको लोग समझ न पाएँगे; मगर इससे घबराने की बात नहीं; ख़ास बात यह है कि आप फ़ैशनेबुल हों।"

"मगर यदि आपके यहाँ कोई भी इतालवी भाषा नहीं समझता, तो मुझे सुनने के लिए कौन आएगा?"

"आएँगे, डरिये मत : कुछ उत्सुकतावश, कुछ सिर्फ़ यूँ ही शाम बिताने के लिए, कुछ यह दिखाने के लिए कि इतालवी समझते हैं; मैं फिर दुहराता हूँ, यह ज़रूरी है कि आप फ़ैशन में हो; और आप फ़ैशन में होंगे, यह रहा मेरा हाथ।"

चार्स्की ने बड़े प्यार से आशुकवि का पता लेकर उसे विदा किया और उसी शाम को वह उसके काम पर निकल पड़ा।

2

मैं हूँ राजा, मैं गुलाम हूँ, मैं कीड़ा हूँ, ईश्वर हूँ मैं।

—देर्झाविन

दूसरे दिन चार्स्की ने एक सराय के अँधेरे, गन्दे गलियारे में पैंतीसवें नम्बर का कमरा ढूँढ़ निकाला। रुककर उसने दरवाज़ा खटखटाया। कलवाले इतालवी ने उसे खोला।

"कामयाबी!" चार्स्की ने उससे कहा, "आपका जादू सिर चढ़कर बोल रहा है। राजकुमारी XX आपको अपना हाल देंगी; कल शाम को पार्टी में मैंने आधे पीटर्सबुर्ग को आपके बारे में बता दिया; टिकट और इश्तिहार छापिए। आपको यक़ीन दिलाता हूँ कि अगर आप पूरी तरह न भी जीते तो पैसों की बारिश तो होगी ही..."

"यही तो ख़ास बात है!" अपनी ख़ुशी को दक्षिणवासियों के सजीव हाव-भावों से व्यक्त करते हुए इतालवी चिल्लाया।

"मैं जानता था कि आप मेरी मदद करेंगे। शैतान ले जाए! आप भी वैसे ही कवि हैं, जैसा कि मैं और चाहे कुछ भी कहिए, कवि होते हैं बड़े बेहतरीन! अपनी कृतज्ञता आपके सामने कैसे प्रकट करूँ? ठहरिए...आप आशु-कविता सुनना चाहेंगे?"

"आशु-कविता!...क्या आप श्रोताओं के बग़ैर, साज़-संगीत के बग़ैर और तालियों की गड़गड़ाहट के बग़ैर काम चला सकते हैं?"

"बकवास, बकवास! मुझे आपसे बेहतरीन श्रोता कहाँ मिलेगा? आप कवि हैं, आप मुझे उनसे बेहतर समझेंगे और आपकी ख़ामोश प्रेरणा मेरे लिए तालियों के तूफ़ान से ज़्यादा क़ीमती है...कहीं बैठ जाइए और मुझे कोई विषय दीजिए।"

चार्स्की सूटकेस पर बैठ गया (कमरे में रखी दो कुर्सियों में से एक टूटी थी और दूसरी कपड़ों और काग़ज़ों से लदी थी)। आशु कवि ने मेज़ पर से गिटार उठाया—और अपनी हड़ीली उँगलियों से उसके तारों को ठीक करते हुए चार्स्की के सम्मुख खड़ा हो गया, उसकी आज्ञा की प्रतीक्षा करते हुए।

"तो ये है विषय आपके लिए," चार्स्की ने उससे कहा, "कवि खुद विषयवस्तु चुनता है अपने गीतों के लिए; भीड़ को उसकी प्रेरणा पर अधिकार जताने का कोई अधिकार नहीं है।"

इतालवी की आँखें चमक उठीं, उसने कुछ मुखड़े बजाये, गर्व से सिर ऊपर उठाया और जोशभरी पंक्तियाँ, उसकी क्षणिक भावनाओं की प्रतीक, उसके होंठों से फूटने लगीं...ये रहीं वे पंक्तियाँ, जो चार्स्की की स्मृति में बैठे शब्दों के आधार पर हमारे मित्र ने बड़े स्वैर ढंग से सुनाई थीं :

"कवि जा रहा : खुली हैं पलकें
मगर न देखे कहीं किसी को;
वस्त्रों का एक कोना पकड़े
खींच रहा है उसे पथिक...।
"निरुद्देश्य क्यों, कहो, घूमते?
ऊँचाई पर अभी गये हो;
नज़र वादियाँ नीचे लाते,
नीचे गिरने तत्पर क्यों तुम?
सुन्दर सृष्टि दिखे धुँधलाई
व्यर्थ अगन से विह्वल तुम;
तुच्छ वस्तु से होते हर पल
उत्तेजित, आकर्षित तुम।
आसमान को लक्ष्य बनाना
है असली कवि का कर्तव्य;

अन्तःप्रेरित गीत रचो तुम
चुन मेधावी विषय उदात्त।"
—हवा घूमती खाई में क्यों
पर्ण उठाती, धूल उड़ाती;
निश्चल जल में नौका को क्यों
आस है उसकी साँसों की?
क्यों पर्वत, बुर्ज़ों को छूकर
उड़ता है विकराल गरुड़
वृद्ध ठूँठ के पास? पूछो उससे,
क्यों करती है प्यार दास को
युवा सुंदरी देज़्देमोना?
चाँद को भाये धुँधली रात क्यों?
हवा, गरुड़ और युवा हृदय को
क्योंकि न भाये कोई नियम।
कवि वैसा ही एक्विलोव है,
जैसा चाहे, वैसा पहने
गरुड़ के जैसा उड़ता जाए;
पूछे बिना किसी से भी
युवा देज़्देमोना की भाँति
चुनता अपने दिल का साथी।

इतालवी चुप हो गया...चार्स्की ख़ामोश रहा, आश्चर्यचकित और भाव-विभोर।

"तो फिर?" आशुकवि ने पूछा। चार्स्की ने उसका हाथ पकड़कर बड़े जोश से भींच लिया।

"क्या?" आशुकवि ने पूछा, "कैसा है?"

"अद्भुत" कवि ने उत्तर दिया, "वाह! पराया विचार आपके कानों तक पहुँचा नहीं कि आपका अपना हो गया, मानों आप उसे साथ लिए घूम रहे थे, उसे सहला रहे थे, उसे लगातार पाल-पोस रहे थे। और, क्या आपको कोई मेहनत, कोई संज्ञाशून्यता, कोई परेशानी, जो इस प्रेरणा से पूर्व अवश्यम्भावी है, अनुभव नहीं होती? अद्भुत, अद्भुत!"

आशुकवि ने जवाब दिया : "किसी भी कला को समझाना असम्भव है। संगमरमर के एक टुकड़े में मूर्तिकार छिपे हुए जुपिटर को कैसे देख लेता है और फिर उसके आवरण को छेनी और हथौड़े से हटाकर कैसे उसे सबके सामने लाता है? कवि के दिमाग़ से कल्पना क्यों समान चरणों से नपे-तुले चार क़ाफ़ियों से सजकर बाहर आती है? तो, कोई भी, सिवाय स्वयं आशु कवि के, प्रभावों की तेज़ी को, स्वयं की

प्रेरणा और पराये विचार के मध्य इस बन्धन को नहीं समझा सकता, मैं व्यर्थ ही इसे समझाना चाहता हूँ। ख़ैर मेरी पहली शाम के बारे में सोचना होगा। आप क्या कहते हैं? टिकटों का मूल्य कितना रखना चाहिए, ताकि लोगों को भारी न पड़े और मैं भी नुक़सान न उठाऊँ? कहते हैं कि मैडम कतालानी[1] ने 25 रूबल लिए थे? अच्छी क़ीमत..."

कवित्व की ऊँचाई से अचानक व्यापारी की दुकान पर उतर आना चार्स्की को पसन्द न आया; मगर वह जीवन की ज़रूरतों को बहुत अच्छी तरह समझता था, अतः इतालवी के साथ व्यापारिक हेर-फेर की उधेड़बुन में पड़ गया। इस मामले में इतालवी इतना लालची प्रतीत हुआ, पूँजी के प्रति खुले दिल से उसने इतना प्यार दिखाया कि चार्स्की को तिरस्कृत प्रतीत होने लगा और उसने फ़ौरन उसे वहीं रोक दिया, ताकि बेहतरीन आशु कविता से उत्पन्न प्रभाव से जन्मी उल्लास की भावना को पूरी तरह न खो बैठे।

चिन्तित इतालवी इस परिवर्तन को न देख पाया और उसने उसे गलियारे से तथा सीढ़ियों से झुककर अभिवादन करते और चिरकृतज्ञता का विश्वास दिलाते हुए विदा किया।

3

टिकिट दर 10 रूबल्स, आरम्भ 7 बजे —**इश्तिहार**

राजकुमारी XX का हाल आशुकवि के हवाले कर दिया गया था। एक स्टेज बनाया गया; कुर्सियों को बारह पंक्तियों में रखा गया; निश्चित दिन, शाम के सात बजे से हाल को रौशन किया गया, दरवाज़े के निकट मेज़ पर टिकट बेचने और लेने के लिए मुड़ेतुड़े पंखों वाली भूरी टोपी और सभी उँगलियों में अँगूठियाँ पहने लम्बी नाकवाली एक बुढ़िया बैठी थी। प्रवेश-द्वार पर सन्तरी खड़े थे। लोग आने लगे। सर्वप्रथम आया चार्स्की। इस आयोजन की सफलता में वह सक्रिय रूप से भाग ले रहा था और वह आशुकवि से मिलना चाहता था यह पूछने के लिए कि सब-कुछ ठीक-ठाक है या नहीं। उसने पार्श्व में बने कमरे में इतालवी को पाया जो बेसब्री से घड़ी देख रहा था। वह इतालवी नाटकों वाली वेशभूषा में था; सिर से पाँव तक काली पोशाक; उसकी कमीज़ की झालरदार कॉलर खुली हुई थी, नंगी गर्दन अपने विचित्र गोरेपन के कारण घनी काली दाढ़ी से हटकर प्रतीत हो रही थी, खुले बालों की लटें उसके माथे और भँवों को

---

1. कतालानी—कतालानी अंजेलिका (1780-1847) प्रसिद्ध इतालवी ऑपेरा गायिका, जो सन् 1820 में पीटर्सबुर्ग आयी थी।

ढाँक रही थी। चार्स्की को यह सब ज़रा भी अच्छा नहीं लगा, जिसे कवि को परदेसी विदूषक की पोशाक में देखना अप्रिय प्रतीत हो रहा था। संक्षिप्त-सी बातचीत के बाद वह हाल में लौट आया, जो अधिकाधिक भरता जा रहा था।

शीघ्र ही कुर्सियों की सभी क़तारें चमक-दमकवाली महिलाओं से भर गयीं; पुरुष स्टेज के निकट, दीवारों से लगकर और अन्तिम कुर्सियों के पीछे खड़े थे। संगीतकार अपने-अपने ताम-झाम के साथ स्टेज के दोनों छोरों पर जम गये। बीचोंबीच मेज़ पर चीनी मिट्टी का फूलदान रखा था। दर्शकों की संख्या काफ़ी थी। सभी बेसब्री से आरम्भ का इन्तज़ार कर रहे थे; आख़िरकार साढ़े सात बजे संगीतकारों में हलचल हुई, उन्होंने अपने-अपने साज़ तैयार करके 'तांक्रेद[1] की प्रस्तावना' बजाई। सब-कुछ शान्त और स्थिर हो गया, प्रस्तावना के अन्तिम सुर गूँजे...और आशुकवि चारों ओर से उठे तालियों के बहरा कर देनेवाले शोर के बीच झुककर अभिवादन करता हुआ स्टेज के किनारे तक आ गया।

चार्स्की बड़ी बेचैनी से प्रथम क्षण में पड़नेवाले प्रभाव की राह देख रहा था, मगर उसने देखा कि वह साज़-सज्जा जो उसे बेहूदा प्रतीत हुई थी, दर्शकों पर वैसा ही प्रभाव नहीं डाल रही थी। अनेक जगमगाते लैम्पों तथा मोमबत्तियों से आलोकित निस्तेज चेहरे को स्टेज पर देखकर स्वयं चार्स्की को भी उसमें कोई हास्यास्पद बात प्रतीत नहीं हुई। तालियों की गड़गड़ाहट शान्त हुई, आवाज़ें ख़ामोश हो गयीं...इतालवी ने अशुद्ध फ्रांसीसी भाषा में दर्शकों से अनुरोध किया कि वे विशेष काग़ज़ों पर उसे कुछ विषय लिखकर दें। इस अप्रत्याशित निमन्त्रण से सभी ने एक-दूसरे की ओर चुपचाप देखा और किसी ने भी कोई जवाब नहीं दिया। कुछ देर इन्तज़ार करने के बाद इतालवी ने बड़े नम्र और शान्त लहजे में अपनी प्रार्थना दुहराई। चार्स्की स्टेज के ठीक नीचे खड़ा था; वह परेशान होने लगा; उसने महसूस किया कि उसके बिना काम नहीं चलेगा और उसे अपना विषय लिखकर देना होगा। सचमुच में, कुछ महिलाओं के सिर उसकी ओर मुड़े और उसे पहले दबी ज़बान में और फिर ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगे। उसका नाम सुनकर आशुकवि ने आँखों से उसे ढूँढ़ा और उसे अपने पैरों के निकट ही पाकर दोस्ताना मुस्कुराहट के साथ काग़ज़ का एक टुकड़ा और पेन्सिल थमा दी। इस प्रहसन में अभिनय करना चार्स्की को बड़ा अप्रिय लगा, मगर कोई चारा न था। उसने इतालवी के हाथों से पेन्सिल और काग़ज़ ले ली, उस पर कुछ शब्द लिखे; इतालवी हाथों में मेज़ पर रखा फूलदान उठाकर स्टेज से नीचे आया और उसे चार्स्की के सामने लाया, जिसमें उसने अपना काग़ज़ डाल दिया। उसके उदाहरण का प्रभाव पड़ा, दो संवाददाताओं, साहित्यकारों ने, एक-एक विषय लिखकर देना अपना कर्तव्य समझा, नेपल्स के दूतावास के सचिव ने और हाल ही में यात्रा से लौटे नौजवान ने

1. तांक्रेद–इतालवी संगीतकार जोकिनों रोस्सिनी का ऑपेरा।

फ्लोरेंस के बारे में प्रलाप करते हुए अपने काग़ज़ों को मोड़कर डाल दिया; आख़िर में एक बदसूरत लड़की ने अपनी माँ की आज्ञा से, आँखों में आँसू भरकर इतालवी में कुछ पंक्तियाँ लिखीं और कानों तक लाल होते हुए उन्हें आशुकवि को दे दिया, जब कि अन्य महिलाएँ चुपचाप, मुश्किल से दिखाई देनेवाली मुस्कुराहट से उसे देख रही थीं। स्टेज पर वापस आकर आशुकवि ने बर्तन को मेज़ पर रख दिया और एक के बाद एक उसमें से काग़ज़ निकालते हुए उन्हें ज़ोर से पढ़ने लगा :

चेंची का परिवार।
पोम्पेई का आख़िरी दिन।
क्लिओपेट्रा और उसके प्रेमी।[1]
अँधेरे से दृष्टिगोचर होती बहार।[2]
तास्सो की विजय।[3]

"आदरणीय दर्शक क्या हुक्म देते हैं?" शान्त इतालवी ने पूछा, "क्या स्वयं आप इनमें से कोई एक विषय चुनकर मुझे बताएँगे या फिर लॉटरी निकाली जाए?..."

"लॉटरी!" भीड़ में से एक आवाज़ आयी।

"लॉटरी, लॉटरी।" दर्शकों ने दुहराया।

आशुकवि दुबारा नीचे आया हाथों में बर्तन लिए और पूछने लगा, "कौन विषय निकालेगा?" आशुकवि ने कुर्सी की पहली क़तार की ओर विनती भरी नज़र से देखा। वहाँ बैठी सजी-धजी महिलाओं में से एक भी टस-से-मस न हुई। आशु कवि, जिसे उत्तरी उदासीनता की आदत नहीं थी, शायद, दुःखी हो गया...अचानक उसे एक कोने

---

1. आशुकवि को सुझाये गये सभी विषय—क्लिओपेट्रा को छोड़कर तत्कालीन लोकप्रिय साहित्यिक एवं चित्रकला की कृतियों से सम्बन्धित थे (शैली की शोकांतिका चेंची, 1819; इतालवी लेखक सिल्विओं पेलिका की पुस्तक *मेरे अँधेरे*, 1832; *ब्रूलोव का चित्र* पोम्पेई का अन्तिम दिन जो अगस्त 1834 में पीटर्सबुर्ग में प्रदर्शित किया गया था। चेंची का परिवार—सन् 1798 में मौत के घाट उतारे गये प्रसिद्ध रोमवासी फ्रांचेस्को चेंची से तात्पर्य है। इस अपराध में उसके पुत्र एवं उनकी सौतेली माँ शामिल थे, जिन्होंने जाँच के दौरान सब-कुछ स्वीकार कर लिया। हालाँकि जाँच के दौरान यह स्पष्ट किया गया कि इस कार्य के लिए उन्हें चेंची की क्रूरता एवं दुराचारिता ने बाध्य किया था, मगर फ़ादर क्लेमेण्ट आठवें की आज्ञानुसार उनका वध कर दिया गया।
2. अँधेरे से दृष्टिगोचर होती बहार—सिल्विओं पेलिको की पुस्तक में एक प्रसंग है, जहाँ यह वर्णन किया गया है कि कैसे उसका मित्र मारोंचेली जेल में कविताएँ लिखता है, जिनमें बहार के जेल की कोठरी के अन्दर न आने की शिकायत की गयी है।
3. तास्सो की विजय—महान रोम के कवि तास्सो के दुर्भाग्य की कथा, जो कापितोलिआ में विजय का सेहरा पहनाये जाने के कुछ ही दिन पूर्व मर गया था। इस विजय मुकुट की वह जीवन भर प्रतीक्षा करता रहा।

में छोटा, सफ़ेद दस्तानेवाला ऊपर उठा हुआ हाथ नज़र आया, वह बड़ी ज़िन्दादिली से मुड़ा और दूसरी पंक्ति में बैठी युवा सुन्दरी के निकट गया। वह बिना किसी हिचकिचाहट के खड़ी हो गयी और उसने यथासम्भव सादगी से बर्तन में अपना आभिजात्य हाथ डालकर मोड़ा गया काग़ज़ का एक टुकड़ा निकाल लिया।

"कृपया खोलकर पढ़िए", आशु कवि ने उससे कहा। सुन्दरी ने काग़ज़ को खोला और ज़ोर से पढ़ा :

"क्लिओपेट्रा और उसके प्रेमी।"

ये शब्द धीमी आवाज़ में कहे गये थे, मगर हाल में इतनी ख़ामोशी थी कि सभी ने उन्हें सुन लिया। आशु कवि ने सुन्दरी महिला को झुककर सलाम किया, गहरी धन्यवाद की भावना से और वापस स्टेज पर लौट आया।

"सज्जनो!" उसने दर्शकों से मुख़ातिब होते हुए कहा, "लॉटरी ने क्लियोपेट्रा और प्रेमियों का विषय चुना है मेरी आशु कविता के लिए। इस विषय को लिखनेवाले व्यक्ति से मैं निवेदन करता हूँ कि अपना इरादा मुझे बतायें; किन प्रेमियों की बात यहाँ हो रही है; क्योंकि महान् साम्राज्ञी के अनेक..."

यह सुनकर पुरुष ठहाका मारकर हँस पड़े। आशुकवि कुछ झेंप गया।

"मैं जानना चाहूँगा?" उसने आगे कहा, "कि किस ऐतिहासिक विशेषता की ओर इशारा किया है इस विषय को चुननेवाले व्यक्ति ने...मैं बड़ा शुक्रगुज़ार होऊँगा अगर वो मुझे समझा सकें।"

किसी ने भी जवाब देने की जल्दी नहीं की। कुछ महिलाओं ने बदसूरत लड़की की ओर नज़रें घुमाईं, जिसने अपनी माँ के आदेश पर यह विषय लिखा था। बेचारी लड़की ने इन बेरहम नज़रों को देखा और वह इतनी परेशान हो गयी कि उसकी पलकों पर आँसू तैर गये...चार्स्की यह बर्दाश्त न कर सका और आशु कवि को सम्बोधित करते हुए इतालवी भाषा में बोला :

"यह विषय मैंने सुझाया था। मेरा इशारा विक्टर अवरेली के विवरण की ओर है, जिसमें वह लिखता है, मानों क्लिओपेट्रा अपने प्रेम की क़ीमत मृत्युदण्ड के रूप में चुकाती थी और ऐसे भी प्रेमी थे, जिन्हें ऐसी शर्त से न डराया जा सकता था और न इससे डिगाया ही जा सकता था...मगर मैं सोचता हूँ कि विषय कुछ कठिन...क्या आप कोई दूसरा विषय चुनना चाहेंगे?..."

मगर आशु कवि को ईश्वर की निकटता का आभास हो चला था। उसने संगीतकारों को इशारा किया...। उसका चेहरा बहुत निस्तेज हो गया, वह मानों सरसाम की हालत में झूमने लगा, आँखें विचित्र तेज से चमकने लगीं, उसने हाथों से अपने काले बाल हटाये, रूमाल से ऊँचा माथा पोंछा जिस पर पसीना छलछला रहा था ...और अचानक आगे बढ़ा, सीने पर सलीब का निशान बनाते हुए हाथों को रखा ...संगीत थम गया...आशु कविता आरम्भ हो गयी—

जगमग करता राजमहल,
गूँज उठे सुर गायकों के,
बंसी और वीणा के संग।
साम्राज्ञी ने मीठे सुर से,
स्निग्ध नज़र से,
समारोह को किया सजीव
और सिंहासन तक खिंच आये दिल।
तभी थामकर स्वर्ण चषक वह
पड़ी सोच में,
सुन्दर पलकें
अपना सुन्दर शीश झुकाये...

भव्योत्सव तब लगा ऊँघने
शब्द हीन थे सब मेहमान।
गान थम गया,
तब उसने फिर शीश उठाया,
साफ़-साफ़ शब्दों में पूछा :
—मेरे प्यार में पाते हो सुख?
चाहो तो लो इसे ख़रीद...
करो भरोसा मुझ पर तुम :
समान होंगे हम और तुम
कौन बढ़ेगा आगे
इस भयानक व्यापार में
बेचूँगी मैं अपना प्यार;
कौन ख़रीदेगा बोलो तुममें से
जीवन देकर मेरी रात?
मौन हुई वह,
दिल धड़के सबकी चाहत से;
भय ने किया पर संज्ञाहीन...
धृष्ट, कठोर परेशां मुख पर
छलका अप्रसन्नता का भाव;
दृष्टि फिरी सन्देह भरी
दीवानों पर अपने सभी।

तभी भीड़ से निकला एक
उसके पीछे निकले दो;

क़दम भरे विश्वास से;
नज़रें थीं निर्मल कोमल
खड़ी हुई उनके स्वागत में,
हुआ तभी पक्का सौदा;
गयी ख़रीदी रातें तीन
गोद मौत की उन्हें पुकारे।

पाकर आशीष पुजारी से
अभिशप्त कलश से निकले वे;
सम्मुख निश्चल मेहमानों के
आये एक एक करके।
पहला फ्लावी, निडर योद्धा,
रोम सैन्य में वृद्ध हुआ,
सहन न कर पाता पत्नी का
तिरस्कारमय वह व्यवहार।
आवाहन स्वीकार किया
आमोद-प्रमोद का यूँ उसने,
जैसा करता युद्ध काल में
बलिदान का निमन्त्रण स्वीकार।

उसके पीछे पीछे आया
होनहार क्रीतोन युवा,
एपिकूर कुंजों में जन्मा
गाता गीत, प्रशंसा करता
खरीत, किप्रीद और आमूर की...
दिल, आँखों को लगे सुदर्शन,
वसन्त का जैसे मन्द प्रकाश
अंतिम प्रेमी आगे आया
नाम न उसने अपना बताया।
मसें फूटतीं नाजुक उसकी
गालों पे बिखरी श्यामलता।

आँखों में उन्माद चमकता
मारें हिलोरें युवा हृदय में...
अनुराग की लहरें पहली बार...
उदास नज़रें ठहर गयीं तब
गर्वीली रानी की उस पर

—शपथ लेती हूँ...—हे आनन्द की देवी,
करूँगी सेवा तन से, मन से,
मत्त कामना की शय्या पर
आऊँगी दासी बनकर।
करो भरोसा, महान किप्रीदा
और तुम पृथ्वी के सम्राटो,
भयानक आइदा के देवताओ,
क़सम—भोर की पहली किरण तक
प्यास बुझाऊँगी स्वामी की
प्यार से, मिठास से,
चुम्बनों के सभी रहस्यों से
और अनुपम आनन्द से।
मगर ज्योंही फूटेगी
उषा की पहली लाली,
वादा है—गंडासे से होंगे,
शीश भाग्यशालियों के
धराशायी।

सफ़र अर्ज़रूम का
(सन् 1829 के अभियान के दौरान)

प्रस्तावना

कुछ दिनों पूर्व मेरे हाथों में पिछले वर्ष सन् 1842 में पेरिस से प्रकाशित पुस्तक पड़ी, जिसका शीर्षक था, *फ्रांसीसी सरकार के आदेश पर आयोजित 'पूर्व की यात्राएँ'*। लेखक ने अपने मतानुसार सन् 1829 के अभियान का वर्णन करते हुए अपने निष्कर्षों को इस प्रकार समाप्त किया है :

> "अपनी कल्पना शक्ति के लिए प्रसिद्ध एक कवि को इन मशहूर कारनामों में, जिनका वह साक्षी था, व्यंग्य के लिए विषय मिला न कि कविता के लिए।"

तुर्की अभियान में उपस्थित कवियों में से मैं केवल ए. एस. खम्याकोव और ए. एन. मुराव्योव के बारे में ही जानता था। दोनों काउंट दीबिच की फ़ौज में थे। इनमें से पहले ने उस समय कुछ सुन्दर कविताएँ लिखीं, दूसरे ने तीर्थस्थलों की अपनी यात्रा का बहुत प्रभावशाली वर्णन किया है। मगर अर्ज़रूम-अभियान के बारे में कोई व्यंग्यात्मक रचना मैंने नहीं पढ़ी।

अगर उसी किताब में कॉकेशस पलटन के जनरलों के नामों के बीच अपना नाम न देखता तो मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि बात यहाँ मेरे बारे में हो रही थी।

> "उसके (राजकुमार पास्केविच[1] की फ़ौज के) जनरलों में प्रमुख थे जनरल मुराव्योव...जॉर्जिया के राजकुमार चिचेवाद्ज़े...आर्मेनिया के राजकुमार बेबूतोव...राजकुमार पोत्योम्किन, जनरल रायेव्स्की; और अन्त में, महोदय पूश्किन....जो इसलिए राजधानी छोड़कर आये थे कि अपने देशवासियों की विजय के गीत गा सकें।"

1. पास्केविच इवान फ़्योदोरोविच (1782-1856)—तुर्की के साथ हुए युद्ध (1828-1829) में रूसी सेनाओं का नेतृत्व करनेवाले जनरल।

मानता हूँ कि फ्रांसीसी सैलानी की ये पंक्तियाँ, तमाम प्रशंसात्मक विशेषणों के बावजूद रूसी पत्रिकाओं की गालियों की अपेक्षा मुझे अधिक अपमानजनक लगीं। 'प्रेरणा ढूँढ़ने' को मैं बड़ी अटपटी एवं मूर्खतापूर्ण सनक मानता हूँ : प्रेरणा ढूँढ़ी नहीं जाती, वह स्वयं ही कवि को ढूँढ़ लेती है। भविष्य में होनेवाली विजय का यशगान गाने के लिए युद्ध में जाना, यह तो मेरे लिए एक ओर तो बड़े स्वाभिमान की, मगर दूसरी तरफ़ काफ़ी अनुचित बात होती।

मैं युद्ध सम्बन्धी निर्णयों में दख़ल नहीं देता। यह मेरा काम नहीं है। हो सकता है कि सगानलू पार करने का साहसिक कार्य, जिस कारनामे से काउंट पास्केविच ने तुर्की सेना के मुख्य कमांडर का ओस्मान पाशा से सम्बन्ध काट दिया, चौबीस घंटों के भीतर शत्रु सेना की दो बटालियनों की हार, अर्ज़रूम का अतिशीघ्र अभियान, सम्पूर्ण सफलता से मंडित यह सब, फ़ौजियों (जैसे कि उदाहरणार्थ, '*पूर्व की यात्रा*' के लेखक वाणिज्य दूत फोंतान्ये) की नज़रों में काफ़ी हास्यास्पद है, मगर मैं कट्टर जनरल पर व्यंग्य लिखने का साहस न करता, जिसने मेरा बड़े प्यार से अपने तम्बू में स्वागत किया था और अपनी सभी गहन चिन्ताओं के बीच स्नेहपूर्वक मेरा ध्यान रखने के लिए जो समय निकाला करता था। वह व्यक्ति, जिसे बलवानों की छत्रछाया की आवश्यकता नहीं है, उनके प्रेमपूर्ण स्वागत सत्कार का सम्मान करता है, क्योंकि अन्य किसी चीज़ की माँग नहीं कर सकता। कृतघ्नता के आरोप को निकृष्ट आलोचना या साहित्यिक गाली-गलौज़ की तरह बग़ैर विरोध प्रकट किये यूँ ही नहीं छोड़ा जा सकता।

इसीलिए मैंने इस प्रस्तावना को प्रकाशित करने का एवं 1829 के अभियान के बारे में, अपने द्वारा लिखे गये सभी यात्रा विवरणों को ज़ाहिर करने का निर्णय ले लिया—

1

मॉस्को से मैं कालुगा, बेल्येव और ओरेल गया और इस तरह अतिरिक्त दो सौ मीलों का चक्कर पड़ा; मगर इसके बदले मैंने एर्मोलोव[1] को देखा। वह ओरेल में रहता है, जिसके निकट उसका गाँव है। मैं उसके पास सुबह आठ बजे पहुँचा, मगर उसे घर पर नहीं पाया। मेरे गाड़ीवान ने मुझे बताया कि एर्मोलोव अपने सीधे-सादे धार्मिक पिता के अलावा और किसी के यहाँ नहीं जाता और शहरी अफ़सरों को अपने घर नहीं आने देता, अन्य सभी आज़ादी से उसके पास जा सकते हैं। घंटे भर बाद मैं फिर उसके यहाँ पहुँचा। एर्मोलोव ने अपने सहज स्नेह से मेरा स्वागत किया। पहली नज़र में मुझे उसमें उसकी तस्वीरों से कोई साम्य नज़र नहीं आया, जिनमें अक्सर उसका पार्श्व चित्रित किया गया था। चेहरा गोल, आग बरसाती भूरी आँखें, सफ़ेद खड़े बाल। हर्क्युलस के धड़ पर शेर का चेहरा था, मुस्कान अप्रिय लगी, क्योंकि स्वाभाविक नहीं थी। जब वह सोच में डूबा भौंहें सिकोड़ता है तो ख़ूबसूरत हो जाता है और दोव द्वारा चित्रित एक काव्यात्मक कृति की बरबस याद दिलाता है। वह हरा चेर्केसी लम्बा कुर्ता पहने था। उसके कमरे की दीवारों पर तलवारें और खंजर टँगे थे, जो कॉकेशस में उसके स्वामित्व के प्रतीक थे। ऐसा लग रहा था कि वह अपना निठल्लापन बड़े आराम से बर्दाश्त कर रहा है। उसने कई बार पास्केविच के बारे में बातें कीं जिनमें हर बार व्यंग्यात्मक कड़वाहट भरी थी; उसकी छोटी-मोटी जीतों के बारे में बातें करते हुए उसने नाविन से उसकी तुलना की, जिसके सामने तुरही की आवाज़ से ही दीवारें गिर जाया करती थीं और काउंट एरिवान्स्की को उसने काउंट एरिखोन्स्की का नाम दे दिया।

"उसे हमला करने दो।" एर्मोलोव ने कहा, "एक पाशा पर जो बेवक़ूफ़ हो, अकुशल हो, मगर सिर्फ़ ज़िद्दी हो, जैसे शूम्ल्या के पाशा पर—और समझो पास्केविच ख़त्म हो गया"।

मैंने एर्मोलोव को काउंट टॉलस्टॉय[2] के यह शब्द सुनाये, "कि पर्शिया के युद्ध

---

1. एर्मोलोव अलेक्सेइ पत्रोविच (1772-1861)—रूसी जनरल, सन् 1812 के युद्ध का हीरो। सन् 1816 से कॉकेशस में मुख्य सेनापति। सन् 1827 में ज़ार निकोलाइ-एक द्वारा उसे निवृत्त कर दिया गया और तब से वह अधिकांश समय अपनी ओर्लोव्स्की जागीर में ही बिताता था।
2. टॉलस्टॉय एफ. इ., जिसे 'अमेरिकन' कहा जाता था।

में पास्केविच ने इतना बढ़िया युद्ध किया कि किसी बुद्धिमान व्यक्ति को उससे अलग प्रतीत होने के लिए बुरे प्रदर्शन के अलावा कोई चारा ही न वचा।" एर्मोलोव मुस्कुराया, मगर सहमत नहीं हुआ।

"लोगों को और ख़र्चों को बचाया जा सकता था।" उसने कहा।

सोचता हूँ कि शायद वह अपने संस्मरण लिख रहा है या लिखना चाहता है। करामजिन का 'इतिहास' उसे पसन्द है, वह चाहता है कि वह ओजपूर्ण लेखनी रूसी प्रजा के परिवर्तन का चित्रण करे, नगण्यता से प्रसिद्धि और शक्तिशालिता की ओर। राजकुमार कूब्स्की के संस्मरणों के बारे में उसने बढ़-चढ़कर बातें कीं। जर्मनों को श्रेय मिला।

"पचास वर्ष बाद," उसने कहा, "लोग सोचेंगे कि इस अभियान में भी प्रशिया अथवा ऑस्ट्रिया की सहायक सेनाएँ थीं, जिनका संचालन फलाँ-फलाँ जर्मन जनरलों ने किया।" मैं उसके साथ दो घंटे रहा। उसे बड़ा अफ़सोस हो रहा था कि उसे मेरा पूरा नाम याद नहीं रहा। उसने तारीफ़ें करते हुए माफ़ी माँगी। बातचीत कई बार साहित्य तक पहुँची। ग्रिबोयेदोव की कविताओं के बारे में वह कहता है कि उनको पढ़ने से गालों के निकट की हड्डियों में दर्द होने लगता है। शासन और राजनीति के बारे में एक भी लफ़्ज़ नहीं कहा गया।

मेरा रास्ता कुर्स्क और खार्कोव से होकर जाता था, मगर मैं कुर्स्की होटल के बढ़िया खाने का त्याग करते हुए (जिसे हमारी यात्राओं में निठल्लापन नहीं कहा जाता) और खार्कोव विश्वविद्यालय को, जो कुर्स्की होटल से बढ़कर नहीं है, देखने में कोई दिलचस्पी न दिखाते हुए, तिफ़िलिसवाले सीधे रास्ते की ओर मुड़ गया।

येल्त्स तक रास्ते बड़े ख़तरनाक हैं। कई बार मेरी गाड़ी का पहिया कीचड़ में धँस गया, ओडेसा जैसे कीचड़वाले रास्ते पर चौबीस घंटों में मैं पचास मील से अधिक न जा सकता! आख़िरकार मैंने वोरोनेझ की स्तेपी को देखा और हरे-हरे मैदान में सरपट गाड़ी दौड़ाता रहा। नोवोचेर्कास्क में मुझे काउंट पूश्किन[1] मिले, जो तिफ़िलिस ही जा रहे थे और हमने साथ ही सफ़र करने का फ़ैसला किया।

यूरोप से एशिया में परिवर्तन हर घण्टे अधिकाधिक महसूस हो रहा था : जंगल लुप्त होते जा रहे हैं, पहाड़ियाँ समतल होती जा रही हैं, घास घनी होती जा रही है और शिद्दत से बढ़ती जा रही है; हमारे जंगलों में न देखे जानेवाले पंछी दिखाई देते हैं; राजमार्गों की ओर इंगित करनेवाले टीलों पर उकाब बैठे हैं, मानों चौकीदार हों, और गर्व से मुसाफ़िरों की ओर देख रहे हों; मेघाच्छादित चरागाहों पर–

---

1. काउंट पूश्किन–व्लादीमिर अलेक्संयेविच मूसिन–पूश्किन (1798-1854) जो डिसेम्बर क्रान्तिकारियों की उत्तरी इकाई के सदस्य थे, क्रान्ति को कुचलने के बाद उन्हें गार्डों की टुकड़ी से हटाकर पीटर के फ़ौजी दस्ते में भेज दिया गया।

घोड़ियों के मनमौजी
विचरते गर्वीले झुंड।

काल्मीकी डाक चौकी की झोंपड़ियों के निकट ही बसे हुए हैं। उनके तम्बुओं के निकट ही ओर्लोव्स्की के सुन्दर चित्रों द्वारा आपके परिचित उनके बदसूरत, झबरे घोड़े चरा करते हैं।

हाल ही में मैं एक काल्मीकी तम्बू में गया था (सफ़ेद चन्दोवे से मढ़ी गुँथी टहनियों की बनी चौकोर जगह)। नाश्ते के लिए पूरा परिवार एकत्रित था। बीचोंबीच देगची उबल रही थी, और धुआँ तम्बू के ऊपर बने छेद में से बाहर निकल रहा था। एक जवान काल्मीक औरत, देखने में अच्छी भली, तम्बाकू के कश खींचते हुए सिलाई कर रही थी। मैं उसकी बग़ल में बैठ गया।

"तेरा नाम क्या है?"

XX

"तेरी उमर कितनी है?"

"दस और आठ।"

"क्या सी रही है?"

"पाजामा।"

"किसके लिए?"

"अपने लिए।"

उसने अपना पाइप मुझे पकड़ाया और नाश्ता करने लगी। देगची में भेड़ की चर्बी और नमक डली चाय उबल रही थी। उसने मुझे अपना प्याला पेश किया। मैं इनकार नहीं करना चाहता था और बग़ैर साँस लिए गटकने लगा। मुझे नहीं लगता कि किसी और क़बीले की रसोई इससे बदतर होगी। मैंने इसके साथ खाने के लिए कुछ माँगा। मुझे घोड़े के सुखाये गये मांस का टुकड़ा दिया गया; मैं इससे भी बहुत खुश हो गया। काल्मीकों की चंचलता से मैं घबरा गया, मैं जल्दी से तम्बू से बाहर निकला और स्तेपी में स्थित त्सित्सेंया से निकला।

स्ताव्रोपोल में आसमान के छोर पर मुझे बादल दिखाई दिये, जिन्होंने ठीक नौ साल पूर्व मेरी नज़रों को आश्चर्यचकित किया था। वे वैसे ही थे, उसी जगह पर ये कॉकेशस श्रृंखला की हिमाच्छादित चोटियाँ हैं।

जोर्जियेव्स्क से मैं 'गर्याचिये वोदी'[1] गया। मुझे यहाँ काफ़ी परिवर्तन नज़र आया, हमारे ज़माने में गुसलख़ाने टूटी-फूटी, शीघ्रता से बनाई गयी झोंपड़ियों में हुआ करते थे। झरने, अक्सर अपने प्राकृतिक रूप में कल-कल करते, वाष्प उड़ाते पहाड़ों से विभिन्न दिशाओं में बहते, अपने साथ-साथ सफ़ेद और लाल निशान छोड़ जाते।

1. गर्याचिये वोदी–यहाँ गर्म पानी के झरने पाये जाते हैं।

हम काठ के प्यालों या टूटी बोतल के पेंदे से पानी भरा करते। आजकल आलीशान गुसलख़ाने और घर बन गये हैं। माशूक[1] की ढलान पर चीड़ के पेड़ों का गलियारा बनाया गया है। हर जगह साफ़-सुथरे रास्ते, हरी-हरी बेंचें, ख़ूबसूरत क्यारियाँ, पुल, मंडप हैं। झरने सँवार दिये गये हैं, पत्थरों से ढाँक दिये गये हैं, गुसलख़ानों की दीवारों पर पुलिस के नियम लिखे गये हैं, हर जगह सलीका, सफ़ाई, ख़ूबसूरती है...।

मानता हूँ : कॉकेशस के झरने आजकल काफ़ी सहूलियतें देते हैं, मगर मुझे उनके पुराने जंगली रूप के लिए अफ़सोस हुआ; मुझे टेढ़ी-मेढ़ी पथरीली पगडंडियों, झाड़ियों और खुली हुई खाइयों को याद करके दुःख होता है, जिनके ऊपर से मैं फिसल गया था। भारी मन से मैं 'वोदी' छोड़कर वापस जॉर्जियेव्स्क आया। जल्दी ही रात हो गयी। साफ़ आसमान लाखों सितारों से जगमगा रहा था। मैं पदकूमक[2] के किनारे-किनारे जा रहा था। यहाँ, मेरे साथ झरनों के संगीत को सुनते हुए ए. रायेव्स्की बैठा करता। भव्य बेश्तू[3] अपने अधीनस्थ पहाड़ों से घिरा हुआ, दूर, गहराता जा रहा था और अन्त में वह अँधेरे में गुम हो गया...

दूसरे दिन हम आगे की ओर चलकर एकातेरिनोग्राद पहुँचे, जो कभी हमारा उपनिवेश था।

एकातेरिनोग्राद से जॉर्जिया का सैनिक मार्ग आरम्भ होता है, राजमार्ग (डाकमार्ग) समाप्त हो जाता है। व्लादिकफ़काज़ तक किराये के घोड़ों पर जाते हैं। फिर कज़ाक टुकड़ी, पैदल सैनिक और एक तोप दी जाती है। डाक हफ़्ते में दो बार भेजी जाती है, और मुसाफ़िर उसी के साथ हो लेते हैं : इसे 'अकाजिया'[4] कहते हैं। हमने कुछ देर इन्तज़ार किया। डाक दूसरे दिन आयी और तीसरी सुबह को नौ बजे हम प्रस्थान करने के लिए तैयार थे। नियत स्थान पर लगभग पाँच सौ लोगों का पूरा कारवाँ जमा हो गया। ढोल बजाये गये। हम चल पड़े। आगे-आगे पैदल सिपाहियों से घिरी तोप जा रही थी। उसके पीछे एक क़िले से दूसरे में जानेवाले सिपाहियों की गाड़ियों, छकड़ों, बग्घियों की क़तार थी; उनके पीछे दो पहियोंवाली, माल लदी बैलगाड़ियाँ चरमरा रही थीं। दोनों ओर घोड़ों पर सवार चाबुकधारी निरीक्षक रोएँदार कोट पहने, रस्सी के फन्दे लिए चल रहे थे। यह सब मुझे पहले तो बहुत अच्छा लगा मगर शीघ्र ही मैं उकता गया। तोप एक-एक क़दम आगे बढ़ रही थी, मशाल सुलग रही थी और सिपाही उससे अपने-अपने पाइप सुलगा लेते। हमारे अभियान की धीमी गति (पहले दिन हम सिर्फ़ पन्द्रह मील चले), असहनीय गर्मी, रसद की कमी, बेचैन रैन बसेरे और चाबुकधारियों की गाड़ियों की निरन्तर चरमराहट ने मेरे सब्र का बाँध तोड़ दिया।

---

1. माशूक—पर्वत का नाम।
2. पदकूमक—कॉकेशस प्रान्त में स्थित पहाड़ी नदी।
3. बेश्तू—कॉकेशस शृंखला की एक पर्वत चोटी।
4. अकाजिया—अप्रत्याशित घटना/अवसर।

तातार लोग इस चरमराहट से बड़ा सम्मानित अनुभव करते, कहते कि वे ईमानदार आदमियों की भाँति जा रहे हैं, जिन्हें छिपने की कोई ज़रूरत नहीं है। इस बार इतने सम्मानित काफ़िले के साथ सफ़र न करना, मुझे ज़्यादा अच्छा लगता। रास्ता एक जैसा ही है : समतल; दोनों किनारों पर टीले। आसमान के छोर पर कॉकेशस की दिन प्रतिदिन ऊँची होती हुई चोटियाँ। क़िले, जो इन भागों में बहुतायत से थे, खाई से घिरे थे, जिन्हें हममें से हर कोई बिना दौड़े फाँद सकता था, जंग लगी तोपों से लैस थे, जिन्हें काउंट गुदोविच के ज़माने से दाग़ा नहीं गया था, टूटी हुई दीवारों पर बत्तख़ों और मुर्ग़ियों के झुंड दौड़ रहे थे। क़िलों में कई जीर्ण-शीर्ण झोंपड़ियाँ थीं, जिनमें मुश्किल से दस अंडे और छाछ मिल सकता था।

पहली देखने योग्य जगह थी क़िला मिनारेत। इसके निकट पहुँचते हुए, हमारा काफ़िला चीड़ और चिनारों से भरे टीलों के बीच स्थित वादी से गुज़रा। ये हैजे से मरनेवाले हज़ारों लोगों की क़ब्रें हैं। संक्रमित खाक से रंग-बिरंगे फूल पैदा हुए थे। बायीं ओर बर्फ़ीला कॉकेशस दमक रहा था; सामने भव्य वनाच्छादित पर्वत आसमान से बातें कर रहा था; उसके पीछे स्थित था क़िला। उसके चारों ओर कभी 'बोल्शोय कबार्द' में तातार्तुब नामक नष्ट हुई मुख्य बस्ती के चिह्न नज़र आ रहे थे।

पतली, अकेली मीनार लुप्त हो चुकी बस्ती की कहानी कह रही थी। पत्थरों के ढेरों के बीच, सूखी हुई नदी के किनारे वह बड़ी ख़ूबसूरती से खड़ी थी। अन्दर की सीढ़ी अभी पूरी तरह नष्ट नहीं हुई थी। मैं उस पर चढ़कर ऊपर छत पर पहुँचा, जहाँ से अब किसी मुल्ला की अज़ान नहीं छूटती थी। वहाँ मुझे कुछ अपरिचित नाम दिखाई दिये, शोहरत से प्यार करनेवाले मुसाफ़िरों ने जिन्हें कबेलुओं पर खुरचा था।

हमारा रास्ता तस्वीर की तरह ख़ूबसूरत हो चला था। पहाड़ हमारे सिरों पर फैले थे। उनकी चोटियों पर मुश्किल से दिखाई देनेवाले जानवरों के झुंड नज़र आ रहे थे, जो कीड़े-मकोड़ों की तरह लग रहे थे। हमें गड़रिया भी दिखाई दिया, शायद वह कोई रूसी हो, कभी गिरफ़्तार किया गया हो, और गुलामी में ही बुढ़ा गया हो। हमें और भी क़ब्रों के टीले तथा भग्नावशेष दिखाई दिये। दो-तीन स्मारक तो रास्ते के किनारे पर ही थे। वहाँ चेर्केसों[1] की प्रथानुसार, उनके घुड़सवार दफ़न थे। तातारी लिखावट, पत्थरों में उत्कीर्ण तलवार और ढाल, लुटेरे पूर्वजों की स्मृतियाँ छोड़ी गयी थीं लुटेरे पोतों के लिए।

चेर्केस हमसे घृणा करते हैं। हमने उन्हें खुले चरागाहों से खदेड़ दिया है; उनकी बस्तियाँ नष्ट हो गयी हैं, पूरे के पूरे क़बीले ख़त्म हो गये हैं। धीरे-धीरे वे पहाड़ों में छिप रहे हैं और वहाँ से अचानक हमला कर देते हैं। इन ख़ामोश चेर्केसों की दोस्ती का कोई भरोसा नहीं : वे हमेशा अपने ख़तरनाक हम क़बीलेवालों की मदद करने के

---

1. चेर्केस—रूस के चेर्केस स्वायत्त प्रान्त के निवासी।

लिए तैयार रहते हैं। उनकी दुस्साहसी आक्रामकता की आन-बान काफ़ी कम हो गयी है। अपने जितनी संख्या के कज़ाकों पर वह विरले ही हमला करते हैं, पैदल सेना पर तो कभी नहीं और तोप देखते ही भाग खड़े होते हैं। मगर किसी कमज़ोर टुकड़ी या असुरक्षित मुसाफ़िर पर हमला करने से कभी नहीं चूकते। इस प्रदेश में उनकी क्रूरता के क़िस्से मशहूर हैं। उन्हें शान्त करने का कोई तरीक़ा नहीं है, जब तक कि उन्हें बेहथियार नहीं कर दिया जाता, जैसे क्रीमिया के तातारों को बेहथियार किया गया था, जो कि बड़ा मुश्किल काम है, क्योंकि उनमें पीढ़ियों से दुश्मनी और ख़ूनी बदले की भावना चली आ रही है। खंजर और तलवार तो मानों उनके शरीर के अंग हैं, और बच्चा तुतलाने से भी पहले उन्हें सँभालना सीख जाता है। क़त्ल करना उनके लिए एक आसान-सी जिस्मानी हरकत है। क़ैदियों को वे धन पाने की आशा में सँभाले रखते हैं, मगर उससे बहुत ही वहशियाना बर्ताव करते हैं, उसे ताक़त से बाहर काम करने पर मजबूर करते हैं, खट्टा आटा खिलाते हैं, मारते हैं, जब जी चाहे, और उन पर पहरे के लिए बैठाते हैं बच्चों को, जो एक भी लफ़्ज़ के लिए अपनी छोटी-छोटी तलवारों से उनका काम तमाम करने के हक़दार होते हैं। हाल ही में एक ख़ामोश चेर्केस को पकड़ा गया, जिसने एक सिपाही पर गोली चलाई थी। उसने अपनी सफ़ाई देते हुए कहा कि उसकी बन्दूक़ काफ़ी दिनों से पड़ी-पड़ी जंग खा गयी थी। ऐसे लोगों का क्या किया जाए? मगर, फिर भी, उम्मीद की जा सकती है कि चेर्केसों के तुर्की के साथ व्यापार को काटकर, काले सागर के पूर्वी किनारे पर स्थापित किया गया आधिपत्य, उन्हें हमारे निकट आने पर मजबूर करेगा। शानोशौकत का प्रभाव उनके विद्रोह का दमन करने में प्रभावशाली होगा : समोवार का प्रचलन भी महत्त्वपूर्ण होगा। एक और भी तरीक़ा है—अधिक शक्तिशाली, अधिक नैतिक, हमारी सदी की शिक्षा के प्रसार के कारण अधिक मौलिक : बाइबिल का प्रचार। चेर्केसों ने अभी हाल ही में मोहम्मद के धर्म को (इस्लाम को) ग्रहण किया है। वे क़ुरान के जोशीले कट्टरपन्थी धर्मानुयायियों की ओर आकर्षित हुए, जिनमें प्रमुख था मन्सूर—एक असाधारण व्यक्ति, जो कफ़काज़ को रूसी आधिपत्य के ख़िलाफ़ काफ़ी लम्बे अर्से तक भड़काता रहा, अन्त में हमने उसे पकड़ लिया और वह सोलोवेत्स्की मॉनेस्ट्री में मर गया। कफ़काज़ को ईसाई मिशनरियों का इन्तज़ार है। मगर हमारे आलसी स्वभाव के होते हुए उन लोगों को जीवित शब्द के बदले मृत अक्षरों की गूँगी किताबें भेजना आसान रहेगा, जो निरक्षर हैं।

हम पर्वतों के प्रवेश-द्वार, व्लादीकाफ़काज़ पहुँचे, जो पहले काप्काय कहलाता था। यह ओसेतिनों की बस्तियों से घिरा है। मैं उनमें से एक बस्ती में घुसा और सीधे एक अन्तिम संस्कार में पहुँचा। एक साक्ल्या[1] के निकट भीड़ जमा थी। आँगन में चार

1. साकल्या—कफ़काज़ की पहाड़ियों के निवास को रूसी लोग 'साकल्या' कहते थे।

पहियोंवाली गाड़ी खड़ी थी, जिसमें दो साँड़ जुटे थे। मृतक के रिश्तेदार एवं मित्र सभी ओर से आ गये थे और वे अपना सिर पीटते हुए, रोते हुए साक्ल्या में जा रहे थे। औरतें चुपचाप खड़ी थीं। मृतक को लम्बा, ऊनी कोट पहनाकर बाहर लाया गया...

...कर रहा विश्राम योद्धा
अपने फ़ौजी कोट में,

उसे गाड़ी पर लिटाया गया। एक मेहमान ने मृतक की बन्दूक़ ली, और फूँक मारकर धूल हटाते हुए उसे मृत शरीर के निकट रख दिया। साँड़ चल पड़े। मेहमान पीछे-पीछे चलने लगे। मृत शरीर को बस्ती से कोई तीस मील दूर पहाड़ों में दफ़नाना था। अफ़सोस है कि कोई मुझे इन प्रथाओं का मतलब न समझा पाया।

कॉकेशस में रहनेवाले सभी लोगों में ओसेतिनी सबसे ग़रीब क़बीला है; उनकी औरतें बड़ी सुन्दर हैं, और सुनते हैं कि मुसाफ़िरों पर काफ़ी मेहरबान रहती हैं। क़िले के प्रवेश-द्वार पंर मैं एक क़ैदी ओसेतिन की बीवी और लड़की से मिला। वे उसके लिए खाना लायी थीं। दोनों ही शान्त एवं बहादुर प्रतीत हुईं, हालाँकि मेरे निकट आने पर दोनों ने अपने सिर झुका लिए और अपनी फटी हुई चादरों में छिप गयीं। क़िले में मैंने चेर्केसों के अमानात[1] को, ख़ूबसूरत और शोख़ बालकों को देखा। वे हर घड़ी शरारत करते रहते हैं और क़िले से बाहर भाग जाते हैं। उन्हें बड़ी बुरी हालत में रखा जाता है। वे चीथड़ों में, अधनंगे और घृणित रूप से गन्दे घूमते हैं। किसी-किसी को तो मैंने पेड़ों की छाल पहने देखा। शायद, खुले छोड़े गये अमानाती, व्लादीकाफ़काज के अपने जीवन के बारे में अफ़सोस नहीं करते।

तोप ने अब हमारा साथ छोड़ दिया। हम पैदल सैनिकों और कज़ाकों के साथ आगे बढ़े। कॉकेशस ने हमें अपने आगोश में ले लिया। हमें कानों को बहरा कर देनेवाला शोर सुनाई दिया और हमने विभिन्न दिशाओं में बहते तेरेक[2] को देखा। हम उसके दायें किनारे पर चल रहे थे। उसकी शोर मचाती लहरें, ओसेतिनी मझोली पनचक्कियों के कुत्तों के घरों जैसे पहियों को घुमा रही थी। जैसे-जैसे हम पहाड़ों पर आगे बढ़ते रहे, दर्रा अधिकाधिक सँकरा होता गया। दबोचा गया तेरेक गरजते हुए अपनी धुआँधार लहरें, उसका रास्ता रोके खड़ी चट्टानों के ऊपर से फेंक रहा है। दर्रा उसके बहाव के मुताबिक़ बल खाता हुआ जा रहा है। पहाड़ों की तलहटी उसकी लहरों के कारण चिकनी हो गयी है। मैं पैदल जा रहा था, प्रकृति की उदास ख़ूबसूरती से चकित, हर क्षण रुकता हुआ। बदली छाई थी; काली चोटियों के इर्द-गिर्द घने बादल मँडरा रहे थे। तेरेक की ओर देखते हुए काउंट पूश्किन ओर शेर्नाव्ल को इमात्रा की याद आ गयी और उन्होंने उत्तर की ओर गरजनेवाली नदी को बेहतर बतलाया। मगर

---

1. अमानात—यहाँ वन्दी गुलामों से तात्पर्य है, जो स्वामी की अमानत होते थे।
2. तेरेक—कफ़काज़ का एक दरिया।

में अपने सामने उपस्थित दृश्य की किसी से भी तुलना न कर सका।

लार्सा तक पहुँचने के बदले मैं उन विशाल चट्टानों को, जिनके बीच से तेरेक एक अनबूझ आवेश के साथ बहती है, मग्न होकर देखता रहा और काफ़िले से पिछड़ गया। अचानक मेरी ओर एक सिपाही दौड़ा-दौड़ा आया और दूर से ही चीख़ा, "हुज़ूर, रुकिये मत, मार डालेंगे!" यह चेतावनी, अभ्यस्त न होने के कारण मुझे बड़ी अजीब लगी। बात यह है कि ओसेतिनी डाकू इस सँकरी जगह पर काफ़ी सुरक्षित हैं और मुसाफ़िरों पर गोलियाँ चलाते हैं। हमारे प्रस्थान की पिछली शाम को ही उन्होंने जनरल बेकोविच पर इसी तरह हमला किया था, जो उनकी गोलियों की बौछार के बीच घोड़ा दौड़ाता हुआ निकल गया था। चट्टान पर किसी महल के भग्नावशेष बिखरे थे; वे ओसेतिनों के साक्ल्या से यूँ अटे पड़े थे मानो अबाबीलों के घोंसले हों।

लार्सा में हम रात गुज़ारने के लिए रुके। यहाँ हमें एक फ्रांसीसी मुसाफ़िर मिला, जिसने हमें आगामी मार्ग से डरा दिया। उसने हमें गाड़ियों को कोबी में ही छोड़कर घोड़ों पर जाने की सलाह दी। उसके साथ *इलियाड* के नाच रंग को याद करते हुए हमने पहली बार कारवेतिया[1] की शराब पी बदबूदार मशक से :

चमड़े की थैलियों में है शराब, ख़ुशी हमारी!

यहाँ मुझे 'कफ़काज़ के क़ैदी' की गन्दी-सी नक़ल मिली और मानता हूँ मैंने उसे बड़ी प्रसन्नता से दुबारा पढ़ लिया। यह सब कमज़ोर, कमसिन, अधूरा है मगर काफ़ी कुछ सही-सही अन्दाज़ लगाते हुए वर्णित है।

दूसरे दिन सुबह-सुबह हम आगे बढ़े। तुर्क क़ैदी रास्ता ठीक-ठाक कर रहे थे। वे उन्हें दिये जानेवाले खाने की शिकायत कर रहे थे। रूसी काली रोटी की वे किसी भी तरह आदत नहीं डाल पा रहे थे। इस बात से मुझे मेरे मित्र शेरेमेत्येव के उन शब्दों की याद आ गयी, जो उसने पेरिस से लौटने पर कहे थे, "बुरा है भाई, पेरिस में रहना : खाने को कुछ नहीं, काली रोटी चाहने पर भी नहीं मिलती!"

लार्सा से सात मील दूर दारियाल चौकी है। दर्रे का भी वही नाम है। दोनों ओर चट्टानें समानान्तर दीवारों की भाँति खड़ी हैं। यह जगह इतनी सँकरी है, इतनी सँकरी है—एक मुसाफ़िर लिखता है, कि सँकरेपन को केवल देखा ही नहीं, अपितु महसूस भी किया जा सकता है। आसमान का टुकड़ा एक फ़ीते की तरह हमारे सिरों के ऊपर चमकता है। पहाड़ों की ऊँचाई से पतली और छींटें उड़ाती हुई जलधाराओं ने मुझे रेम्ब्राँ के विचित्र पेंटिंग, *गनिमेद की रहस्यमय चोरी,* की याद दिला दी। दर्रा भी उसी की पसन्द के अनुरूप आलोकित है। कहीं-कहीं तेरेक चट्टानों की तलहटी को धो देती है, और मार्ग में पत्थर यूँ बिखरे पड़े हैं, मानों कोई बाँध बना हो। चौकी से कुछ दूर नदी के दूसरे किनारे पर बड़े साहस से एक छोटा-सा पुल फेंका गया है। उस पर अगर

---

1. कारवेतिया—पूर्वी जॉर्जिया का ऐतिहासिक प्रान्त।

खड़े हों, तो ऐसा प्रतीत होता है, मानों पनचक्की पर खड़े हों। पूरा पुल हिचकोले खाता रहता है, और तेरेक यूँ शोर मचाती है, जैसे अनाज के दानों को आगे बढ़ाने वाले पहिये हों।

दारियाल के सामने एकदम सीधी खड़ी चट्टान पर किसी क़िले के भग्नावशेष हैं। कहते हैं कि उसमें कोई राजकुमारी दारिया छिपी थी, उसी ने दर्रे को अपना नाम दे दिया : क़िस्सा है। प्राचीन फ़ारसी भाषा में दारियाल का मतलब है—प्रवेश-द्वार। प्लीनी[1] के कथनानुसार, कफ़काज़ के द्वार जिन्हें ग़लती से कैस्पियन द्वार कहा जाता था, यहीं स्थित थे। दर्रा लकड़ी के, लोहे की पट्टियाँ जड़े वास्तविक द्वारों से बन्द किया गया है, उनके नीचे, प्लीनी लिखता है, दिरिओदोरिस नामक नदी बहती है। वहीं दुर्ग का निर्माण किया गया, जिससे जंगली क़बीलों के पलायन को रोका जा सके, इत्यादि। काउंट ई. पोतोव्स्की का सफ़रनामा देखिए, जिसकी वैज्ञानिक खोजें भी उतनी ही दिलचस्प हैं, जितने स्पेनिश उपन्यास।

दारियाल से हम कज़बेक की ओर चले। हमने त्रोइत्स्की द्वार देखा (कमान, जो चट्टान में किसी ज्वलनशील पदार्थ के विस्फोट के कारण निर्मित हुई है)—उनके नीचे कभी पगडंडी हुआ करती थी, और अब तेरेक बहती है, अक्सर अपना मार्ग बदलते हुए।

कज़बेक गाँव से कुछ दूर हमने पगली खाई को पार किया, यह खाई मूसलाधार बारिश में बदहवास नाले में परिवर्तित हो जाती है। मगर इस समय यह एकदम सूखी थी और सिर्फ़ नाम से ही बड़ी प्रतीत होती थी।

कज़बेक गाँव कज़बेक पर्वत की तलहटी में स्थित है, और राजकुमार कज़बेक की मिल्कियत है। राजकुमार, पैंतालीस वर्ष का व्यक्ति, क़द में भेस बदले हुए फ्लीगेलमैन से भी ऊँचा था। हमने उसे दुखान (जॉर्जियन ढाबे जो काफ़ी ख़स्ताहाल हैं और रूसी ढाबों से ज़्यादा साफ़-सुथरे नहीं हैं) में देखा। दरवाज़े में एक चमड़े का फूला हुआ थैला पड़ा था (बैल के चमड़े का), अपने चारों पैर फैलाये। उस भीमकाय व्यक्ति ने उसमें से चिखीर[2] निकाली और मुझसे कुछ सवाल पूछे, जिनका मैंने उसके पद एवं डील-डौल के अनुसार आदरपूर्वक उत्तर दिया। हम गहरे दोस्तों की तरह विदा हुए।

प्रभाव शीघ्र ही धुँधला होने लगता है। मुश्किल से एक दिन भी नहीं बीता था कि तेरेक की गरज और उसके बेतरतीब जलप्रपात, दर्रे और अन्य जलप्रपात भी अब मेरा ध्यान आकर्षित नहीं कर रहे थे। अब मुझ पर सिर्फ़ तिफ़िलिस पहुँचने की धुन सवार थी। मैं वैसी ही बेरुख़ी से कज़बेक के निकट से गुज़रा, जैसे कभी चतीर्दागा के

---

1. प्लीनी—(23-79)—रोमन लेखक एवं वैज्ञानिक, *सरल इतिहास* (37 भागों में) के रचयिता।
2. चिख़ीर—कफ़काज़ की घर में बनाई हुई लाल शराब।

निकट से जहाज़ में गया था। यह भी सच है कि बरसात और कोहरे के कारण मैं उसकी बर्फ़ीली चोटियाँ नहीं देख पा रहा था, जो कवि की कल्पना के अनुसार क्षितिज को सहारा दे रही थीं।

प्रशिया के राजकुमार का इन्तज़ार हो रहा था। कज़बेक से कुछ दूर हमारे सामने से कई गाड़ियाँ आयीं और सँकरे रास्ते में मुसीबत खड़ी कर दी। जब तक सब गाड़ियाँ गुज़रती रहीं, टुकड़ी के अफ़सर ने हमसे कहा कि वह दरबारी फ़ारसी कवि को साथ ले जा रहा है, और, मेरी ख़्वाहिश के मुताबिक़ उसने फ़ाज़िल ख़ान से मेरा तआर्रूफ करवाया। मैं, दुभाषिये की मदद से पूरबी अन्दाज़ में, बढ़ा-चढ़ाकर उसका स्वागत करना चाहता था : मगर जब फ़ाजिल ख़ान ने मेरे अनावश्यक मसखरेपन का जवाब एक समझदार आदमी की सीधी-सादी, बुद्धिमत्तापूर्ण, सौजन्यपूर्ण बातों से दिया तो मुझे बड़ी शर्म आयी! "उसे मुझसे पीटर्सबुर्ग में मिलने की आशा थी; उसे अफ़सोस है कि हमारी यह मुलाक़ात जारी नहीं रह सकती वग़ैरह।" शर्म के मारे मुझे मसख़रा अन्दाज़ छोड़कर साधारण यूरोपीय जुमलों की ओर लौटना पड़ा। यह सबक है हमारी रूसी उपहासात्मकता का। आगे से कभी भी किसी व्यक्ति का मूल्यांकन उसकी भेड़ की ख़ाल की टोपी और रंगे हुए नाख़ूनों को देखकर नहीं करूँगा।

कोबी चौकी क्रेस्तोवोय पर्वतों की ठीक तलहटी में स्थित है, जहाँ से हमें गुज़रना था। हम यहाँ रात गुज़ारने के लिए रुक गये और सोचने लगे कि यह भयानक काम कैसे पूरा किया जाए : क्या गाड़ियाँ छोड़कर कज़ाकों के घोड़ों पर बैठा जाए, या ओसेतिनों से बैल मँगवाये जाएँ। किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए मैंने इस प्रान्त के प्रमुख चिल्यायेव महाशय को अपने पूरे कारवाँ की ओर से सरकारी निवेदन लिखा और हम घोड़ों के इन्तज़ार में सो गये।

दूसरे दिन क़रीब बारह बजे हमने शोरगुल एवं चीख़ें सुनीं और एक असाधारण दृश्य देखा : अधनंगे ओसेतिनियों के एक झुंड द्वारा हाँके जा रहे कमज़ोर, छोटे क़द के साँड़ों की 18 जोड़ियाँ बड़ी मुश्किल से मेरे मित्र ओ XX की हल्की गाड़ी खींच रहे थे। इस दृश्य ने मेरे सभी सन्देहों को काफूर कर दिया। मैंने अपनी भारी पीटर्सबुर्ग वाली गाड़ी को व्लादीकाफ़काज़ भेजकर घोड़े से तिफ़िलिस जाने का निर्णय कर लिया। काउंट पूश्किन ने मेरा अनुकरण न करना चाहा। उसने साँड़ों के पूरे झुंड को हर तरह की रसद से भरी अपनी गाड़ी में जोतकर बर्फ़ीली पर्वत श्रृंखला ठाठ से पार करना ज़्यादा उचित समझा। हमने एक-दूसरे से विदा ली और मैं जनरल ओगारेव के साथ, जो स्थानीय मार्गों की देख-रेख करते थे, चल पड़ा।

रास्ता बर्फ़ीली चट्टानों के मध्य से होकर गुज़रता था, जो 1827 के जून के अन्त में खिसक गयी थी। ऐसी घटनाएँ अक्सर हर सात साल बाद हुआ करती हैं। विशाल चट्टान ने, गिरते हुए, दर्रे की पूरे एक मील की दूरी को ढाँक दिया था और तेरेक का रास्ता रोक दिया था। नीचे खड़े पहरेदारों ने भयानक गड़गड़ाहट की आवाज़ सुनी और

देखा कि नदी फ़ौरन उथली हो गयी और पन्द्रह मिनट बाद एकदम ख़ामोश होकर सूख गयी। तेरेक चट्टान को भेदकर पूरे दो घण्टे बाद पूरे वेग से बाहर निकली। आह ...कितनी भयावह थी वह!

हम सीधे ऊपर-ऊपर चढ़ते रहे। हमारे घोड़े भुरभुरी बर्फ़ से सने थे, जिनके नीचे नदियाँ शोर मचा रही थीं। मैंने अचरज से रास्ते को देखा और समझ न पाया कि गाड़ियों में यहाँ से गुज़रना कैसे सम्भव हो सकता है।

इसी समय मुझे कानों को बहरा कर देनेवाली गड़गड़ाहट सुनाई दी। "यह चट्टान खिसकी है," मुझसे ओगारेव महाशय ने कहा। मैंने चारों ओर नज़र दौड़ाई और बग़ल में बर्फ़ का ढेर देखा, जो बिखर रहा था और धीरे-धीरे ऊपर से नीचे खिसक रहा था। छोटी-छोटी चट्टान खिसकने की घटनाएँ यहाँ अक्सर होती रहती हैं। पिछले साल रूसी गाड़ीवान क्रेस्तोबोय पर्वत से गुज़र रहा था। चट्टान खिसकी; भयानक चट्टान उसकी गाड़ी पर गिरी, गाड़ी को, घोड़े को और गाड़ीवान को निगल गयी, रास्ते को पार करते हुए अपने शिकार के साथ खाई में लुढ़क गयी। हम पहाड़ की चोटी पर पहुँच गये। यहाँ ग्रेनाइट की सलीब गाड़ी गयी है, पुराना स्मारक, जिसकी मरम्मत एर्मोलोव ने की थी।

यहाँ मुसाफ़िर अक्सर गाड़ियों से उतरकर पैदल चलते हैं। कुछ ही दिन पहले एक विदेशी दूत यहाँ से गुज़रा; वह इतना कमज़ोर था कि उसने अपनी आँखों पर पट्टी बाँधने की आज्ञा दी; उसे हाथों का सहारा देकर ले जाया गया और जब उसकी आँखों से पट्टी खोली गयी तो उसने घुटनों के बल खड़े होकर ईश्वर को धन्यवाद दिया..., इससे उसे ले जानेवालों को बड़ा अचरज हुआ।

डरावने कफ़काज़ से सुन्दर जॉर्जिया में हुआ आकस्मिक परिवर्तन मनोहारी है। दक्षिण की हवा अचानक मुसाफ़िर को थपकियाँ देने लगती है। गूट पर्वतों से दिखाई देती है कायशूर्स्काया वादी, अपनी रिहाइशी चट्टानों, बग़ीचों, चाँदी के पट्टे जैसी चमकती, बलखाती अराग्वा समेत—और वह भी अत्यन्त छोटे आकार में, तीन मील गहरी खाई के तल में, जहाँ से बड़ा ख़तरनाक रास्ता गुज़रता है।

हम वादी में उतरे। जवाँ चाँद साफ़ आसमान में दिखाई दे रहा था। साँझ की हवा ख़ामोश और गर्माहट लिए थी। मैंने अराग्वा के किनारे चिल्यायेव महाशय के घर में रात बिताई। दूसरे दिन मैंने भले मेज़बान से विदा ली और आगे बढ़ा।

यहाँ जॉर्जिया आरम्भ होता है। ख़ुशनुमा अराग्वा से सींची गयी प्रकाशमान वादियों ने उदास दर्रों और भयानक तेरेक का स्थान ले लिया। नंगी ऊँची-ऊँची चट्टानों के बदले मैंने अपने चारों ओर हरे-हरे पहाड़ और फलोंवाले पेड़ देखे। पानी के नल शिक्षा के प्रसार को प्रमाणित कर रहे थे। उनमें से एक ने तो मुझे पूरी तरह से दृष्टि भ्रम में डाल दिया : पानी का बहाव ऐसा लगता है, पहाड़ों पर नीचे से ऊपर की ओर होता है।

पायसानौर में मैं घोड़े बदलने के लिए रुका। यहाँ मैं फ़ारसी राजकुमार के साथ जा रहे रूसी अफ़सर से मिला। जल्दी ही मैंने घंटियों की आवाज़ सुनी और एक-दूसरे से बँधे एशियाई पद्धति से गठरियाँ लादे खच्चरों की एक पूरी क़तार रास्ते पर धीरे-धीरे चलती दिखाई दी। घोड़ों की राह न देखकर मैं पैदल ही चल पड़ा; और अनानूर से आधा मील दूर, रास्ते के मोड़ पर खोज़्रेव मिर्ज़ा से मिला। उसकी गाड़ियाँ खड़ी थीं। स्वयं उसने अपनी बग्घी से सिर बाहर निकालकर देखा और मेरा अभिवादन किया। हमारी मुलाक़ात के कुछ घंटों बाद राजकुमार पर पहाड़ी लुटेरे टूट पड़े। गोलियों की सनसनाहट सुनते ही, खोज़्रेव मिर्ज़ा अपनी बग्घी से बाहर कूदा, घोड़े पर बैठ गया और सरपट भागा। उसके निकट खड़े रूसी उसकी बहादुरी से भौंचक्के रह गये। बात यह थी कि युवा एशियाई, जिसे बग्घी की आदत नहीं थी, उसे आश्रय के बदले फ़न्दा समझता था।

मैं अनानूर तक पहुँचा, थकान महसूस किये बग़ैर। मेरे घोड़े आये नहीं थे। मुझे बताया गया कि दुशेत शहर तक दस मील से ज़्यादा दूरी नहीं है और मैं फिर से पैदल चल पड़ा। मगर मैं न जानता था कि रास्ता पहाड़ों से होकर गुज़रता है। ये दस मील पूरे बीस के समान हो गये।

शाम हो गयी; मैं आगे बढ़ता रहा, ऊँचाई पर चढ़ता रहा। रास्ता भटक जाना सम्भव नहीं था; मगर जगह-जगह झरनों के कारण बने मिट्टी के कीचड़ में मैं घुटनों तक धँस जाता। मैं पूरी तरह थक गया। अँधेरा बढ़ता जा रहा था। मैंने कुत्तों का रोना और भौंकना सुना और मैं यह सोचकर खुश हो गया कि शहर नज़दीक ही है। मगर मैं ग़लत था; जॉर्जियाई गड़रियों के कुत्ते भौंक रहे थे और उस प्रान्त में पाये जाने वाले जंगली जानवर, सियार रो रहे थे। मैंने अपनी बेसब्री को ख़ूब कोसा, मगर कुछ किया भी नहीं जा सकता था। आख़िरकार मुझे रोशनियाँ दिखाई दीं और क़रीब आधी रात को मैं वृक्षों से घिरे घरों के निकट पहुँचा। रास्ते में मिलनेवाले पहले आदमी ने मुझे मुखिया तक ले जाने का वादा किया और इसके बदले मुझसे बख़्शीश माँगी।

मुखिया जॉर्जिया का बूढ़ा अफ़सर था, उसके यहाँ मेरे आगमन ने काफ़ी हलचल मचा दी। मैंने माँग की, पहली कमरे की, जहाँ मैं कपड़े बदल सकूँ; दूसरी, एक गिलास शराब की; तीसरी, मुझे यहाँ लाकर छोड़नेवाले के लिए अबाज़ की। मुखिया को मालूम नहीं था कि मुझसे कैसे पेश आये, और वह मुझे अविश्वास से देखता रहा। यह देखकर कि उसे मेरी माँगें पूरी करने की कोई जल्दी नहीं थी, मैं उसके सामने ही कपड़े बदलने लगा, इस शानदार आज़ादख़याली की माफ़ी माँगते हुए। सौभाग्यवश मुझे जेब में अपना सफ़रनामा मिल गया, जो यह सिद्ध करता था कि मैं कोई रिनाल्डो रिनाल्डिनी नहीं, बल्कि एक शान्तिप्रिय मुसाफ़िर हूँ। इस ख़ुशनुमा दस्तावेज़ ने फ़ौरन अपना असर दिखाना शुरू कर दिया : मुझे कमरा दे दिया गया, शराब का गिलास

लाया गया और मेरे पथप्रदर्शक को, जॉर्जियन आतिथ्य के लिए शर्मनाक उसके लालच के लिए, डाँट पिलाते हुए, बख़्शीश दे दी गयी। मैं दीवान पर पसर गया इस उम्मीद के साथ कि अपने कारनामे के बाद घोड़े बेचकर सोऊँगा : मगर यह तो क़िस्मत में ही नहीं था! पिस्सुओं ने, जो सियारों से भी काफ़ी ख़तरनाक होते हैं, मुझ पर हमला बोल दिया और पूरी रात मुझे चैन न लेने दिया। सुबह मेरे पास मेरा आदमी आकर बोला कि काउंट पूश्किन साँड़ोंवाली गाड़ी पर बर्फ़ीले पहाड़ सकुशल पार कर दुशेत पहुँच गये हैं। मुझे शीघ्रता करनी चाहिए थी। ग्राफ पूश्किन और शैर्नोव्ल मेरे पास आये और साथ ही रवाना होने का आग्रह किया। मैंने इस ख़ुशनुमा ख़याल से दुशेत छोड़ा कि रात तिफ़िलिस में बिताऊँगा।

रास्ता वैसे ही मनोहर और तस्वीर की तरह था, हालाँकि रिहायशी बस्तियाँ विरले ही दिखाई दीं। गार्सिस्काल से कुछ मील दूर कुरा से होते हुए हम प्राचीन पुल से गुज़रे, जो रोमन चढ़ाइयों की यादगार था और घोड़े को बेतहाशा भगाते हुए, कभी सरपट चलते हुए, हम तिफ़िलिस की ओर आये, जहाँ बिना किसी का ध्यान आकर्षित किये रात के क़रीब ग्यारह बजे पहुँचे।

2

मैं एक सराय में रुक गया, दूसरे दिन तिफ़िलिस के सुन्दर हम्मामों की ओर चला। शहर मुझे घनी आबादीवाला लगा। एशियाई निर्माण और बाज़ार मुझे किशिनेव की याद दिला गये। सँकरे और टेढ़े-मेढ़े रास्तों पर गधे, पीठ पर दोनों ओर टोकरियाँ लादे भाग रहे थे; बैलगाड़ियाँ रास्ता रोक रही थीं। टेढ़े-मेढ़े चौक पर आर्मेनियाइयों जॉर्जियाइयों, चेर्केसियों और फ़ारसियों की भीड़ थी; उन्हीं के बीच में नौजवान रूसी कर्मचारी करावाख के घोड़ों पर सवार चल रहे थे। हम्माम के दरवाज़े पर बूढ़ा फ़ारसी मालिक बैठा था। उसने मेरे लिए दरवाज़ा खोला, मैं एक लम्बे-चौड़े कमरे में दाख़िल हुआ और वहाँ क्या देखा? पचास से अधिक औरतें, बूढ़ी और जवान, आधे कपड़े पहने हुए या बिलकुल वस्त्रहीन, खड़े-खड़े या बैठकर कपड़े उतार रही थीं, दीवारों से सटी बेंचों पर कपड़े पहन रही थीं। मैं रुक गया।

"चलो, चलो।" मालिक ने मुझसे कहा, "आज मंगल है : औरतों का दिन। कोई बात नहीं, अफ़सोस की बात नहीं।"

"बेशक़, अफ़सोस की बात नहीं," मैंने उसे जवाब दिया, "उल्टी बात है।"

आदमियों के प्रकट होने से वहाँ कोई भी असर नहीं पड़ा। वे आपस में बातचीत और हँसी मज़ाक़ करती रहीं। एक भी औरत अपनी चादर में छिपने के लिए नहीं भागी, एक ने भी कपड़े उतारना बन्द नहीं किया। ऐसा लगा, मानों मैं अदृश्य

रूप से वहाँ घुसा था। उनमें से कई सचमुच ख़ूबसूरत थीं और टी. मूर के वर्णन को सच सावित करती थीं :

युवती ख़ूबसूरत जॉर्जियन
चटख लाली, ताजा चमक लिए
युवतियों जैसी अपने देस की
निकलती तरोताज़ा तिफ़िलिसी हम्माम से।

—लाला रुख़

मगर जॉर्जियन बूढ़ियों जैसी घृणित कोई चीज़ मैंने अब तक नहीं देखी है : वे चुड़ैलें हैं।

फ़ारसी मुझे हम्माम में ले गया : गर्म, गन्धक-लोहे के पानी का सोता एक गहरे, चट्टान को काटकर बनाये गये एक गहरे हौज में गिर रहा था। आज तक मैंने न रूस में, न तुर्की में तिफ़िलिसी हम्माम जैसी ठाठ-बाट वाली आरामदेह चीज़ देखी है। उसके बारे में विस्तार से लिखूँगा।

मालिक ने मुझे हम्मामी-तातार के हवाले कर दिया। मुझे मानना पड़ेगा कि वह बग़ैर नाक के था; इससे उसके अपने काम में उस्ताद होने में कोई रुकावट नहीं होती थी। हसन (यह बिना नाकवाले तातार का नाम था) ने सबसे पहले मुझे पत्थरों के गर्म फ़र्श पर लिटा दिया; इसके बाद उसने मेरी उँगलियाँ चटखाना शुरू कर दिया, अंग-अंग खींचने लगा, मुझे पूरी ताक़त से मुक्कों से मारने लगा; मुझे ज़रा भी दर्द महसूस न हुआ, बल्कि आश्चर्यजनक रूप से हल्कापन महसूस हुआ। (एशियाई हम्मामी कभी-कभी बड़े जोश में आ जाते हैं, आपके कन्धों पर उछलकर चढ़ जाते हैं, पैरों से नितम्बों पर फिसलते हैं और पीठ पर उछलते कूदते हैं, लाजवाब है) इसके बाद वह बड़ी देर तक ऊनी दस्ताने से मेरा बदन पोंछता रहा और पूरी ताक़त से गरम पानी छिड़ककर, कुप्पी से साबुन छिड़के तौलिए से धोता रहा। इस एहसास को समझाया नहीं जा सकता : गरम साबुन हवा की तरह आपको धोता है। ऊनी दस्ताने और कुप्पी से साबुन छिड़के तौलिए का इस्तेमाल रूसी हम्माम में भी होना चाहिए : शौकीन लोग इस नयी चीज़ के इस्तेमाल के लिए शुक्रगुज़ार होंगे।

इसके बाद हसन ने मुझे हौज में डाल दिया, इसी के साथ यह समारोह समाप्त हुआ।

तिफ़िलिस में मुझे रायेव्स्की से मिलने की उम्मीद थी, मगर यह जानकर कि उसकी टुकड़ी कूच कर चुकी है, मैंने काउंट पास्केविच से फ़ौज में आने की अनुमति लेने का इरादा कर लिया।

तिफ़िलिस में मैं क़रीब दो हफ़्ते रहा और वहाँ के समाज से मिला 'तिफ़िलिस की ख़बरें' के सम्पादक सांकेविच ने मुझे इस प्रान्त के बारे में, राजकुमार त्सित्सिआनोव

के बारे में, ए.पी. एर्मोलोव आदि के बारे में काफ़ी दिलचस्प बातें बतलाईं। सांकेविच को जॉर्जिया से प्यार है और वह उसके उज्ज्वल भविष्य की कल्पना करता है।

जॉर्जिया सन् 1783 में रूस की छत्रछाया में आया, मगर इससे पराक्रमी आगा मोहम्मद को तिफ़िलिस को जीतने और लूटने में और बीस हज़ार लोगों को बन्दी बनाकर ले जाने में कोई कठिनाई नहीं हुई (सन् 1795 में)। जॉर्जिया सम्राट अलेक्सान्द्र के शाही दंड के नीचे सन् 1802 में आ गया। जॉर्जियन लोग लड़ाकू हैं। हमारे झंडे के नीचे वे अपने शौर्य का प्रदर्शन कर चुके हैं। उनकी बौद्धिक योग्यता को उच्च शिक्षा का इन्तज़ार है। स्वभाव से वे ख़ुशमिज़ाज और मिल-जुलकर रहनेवाले होते हैं। मर्द त्यौहारों पर पीते हैं और सड़कों पर घूमते हैं। काली आँखोंवाले बच्चे गाते हैं, फुदकते हैं और गुलाँटे मारते हैं, औरतें लेज़्गींका[1] नृत्य करती हैं।

जॉर्जियाई गीतों के शब्द बड़े प्यारे हैं। मुझे एक गीत का शब्दशः अनुवाद सुनाया गया; शायद वह हाल ही में रचा गया है; उसमें कुछ पूरबी निरर्थकता का अन्दाज़ है, जिसका अपना एक काव्यात्मक गुण है। यह रहा वह गीत :

"रूह, अभी अभी पैदा हुई जन्नत में! रूह, बनाई गई मेरी ख़ुशी के लिए!
तुझसे, ओ अमर आत्मा, ज़िन्दगी की आस है।
तुझसे, ओ बहार बसन्ती, पूनम के चाँद, तुझसे, मेरे रक्षक फ़रिश्ते,
तुझसे ज़िन्दगी की आस है।
चेहरा तेरा दमकता और मुस्कान देती ख़ुशी। दुनिया को पाने की नहीं ख़्वाहिश;
आस है तेरी निगाहों की। तुझसे, ज़िन्दगी की आस है।
पहाड़ी गुलाब, ओस से पुलकित! प्रकृति के प्रिय प्रीतम!
ख़ामोश, छिपे हुए ख़ज़ाने! तुझसे ज़िन्दगी की आस है।"

जॉर्जियाई हमारी तरह नहीं पीते और आश्चर्यजनक रूप से इस मामले में दृढ़ होते हैं। उनकी शराब बाहर नहीं ले जाई जा सकती और जल्दी से सड़ जाती है, मगर वहीं पर बड़ी बढ़िया रहती है। काखेतिन और कराबाख की शराब काफ़ी महँगी होती है। शराब को मरानों में, विशाल सुराहियों में, ज़मीन में गाड़कर रखा जाता है। उन्हें समारोहपूर्वक खोला जाता है। कुछ दिन पहले एक रूसी सैनिक ने, चुपचाप ऐसी एक सुराही को खोला, जिसमें गिरकर काख़ेतिनी शराब में डूबकर मर गया, जिस प्रकार अभागा क्लेरेन्स[2] शराब के पीपे में डूबा था।

तिफ़िलिस कूरा नदी के किनारे पर पथरीले पहाड़ों से घिरी वादी में स्थित है, वे चारों ओर से इसे हवाओं से ढाँक कर रखते हैं, और धूप में तप कर, ठहरी हुई हवा

---

1. लेज़्गींका—कॉकेशस का तीव्र गति वाला लोक-नृत्य।
2. क्लेरेन्स—अंग्रेज़ी ड्यूक, जिसे उसके भाई सम्राट् एड्वर्ड IV ने शराब के पीपे में डुबोकर मार डाला था (सन् 1478 में)।

को गर्माते नहीं, बल्कि उबाल देते हैं। यही कारण है असहनीय गर्मी का, जो तिफ़िलिस में होती है, बावजूद इसके कि तिफ़िलिस इकतालीस डिग्री अक्षांश पर ही स्थित है। उसके नाम (त्बिलिसकलार) का मतलब ही है–'गर्म शहर'।

शहर का अधिकांश भाग एशियाई तरीक़े से बनाया गया है : घर कम ऊँचाई के, छतें समतल। उत्तरी भाग में यूरोपीय वास्तुकला के अनुसार ऊँचे घर बन रहे हैं, और उनके निकट ठीक-ठाक (चौकोर) चौक बनाये जा रहे हैं। बाज़ार अनेक क़तारों में बँटा है; दुकानें तुर्क और फ़ारसी माल से अटी पड़ी हैं, जो आमतौर पर फैल रही महँगाई के हिसाब से काफ़ी सस्ता है। तिफ़िलिसी हथियारों की सारे पूरब में बड़ी क़द्र है। ग्राफ़ सामोयलोव और वी, जिन्हें यहाँ भीमकाय पराक्रमी माना जाता था, अक्सर अपनी नयी तलवारों की जाँच एक ही वार में मेढ़े को दो टुकड़ों में काटकर या साँड़ का सिर काटकर किया करते थे।

तिफ़िलिस की आबादी का अधिकांश भाग अर्मेनियाइयों का है : सन् 1825 में उनके यहाँ 2500 परिवार थे। वर्तमान युद्धों के दौरान उनकी संख्या और भी बढ़ गयी है। लगभग 1500 जॉर्जियन परिवार हैं। रूसी अपने आपको यहाँ का निवासी नहीं मानते। फ़ौजी, कर्त्तव्य का पालन करते हुए, जॉर्जिया में रहते हैं, क्योंकि उन्हें वैसी आज्ञा दी गयी है। नौजवान सरकारी अफ़सर यहाँ असेस्सर[1] बनकर आते हैं, जिसके लिए कुछ लोग लालायित रहते हैं। सभी जॉर्जिया को एक ज़बर्दस्ती का पड़ाव समझते हैं।

कहते हैं कि तिफ़िलिस की आबोहवा सेहत के लिए अच्छी नहीं है। यहाँ के सरसाम भयानक होते हैं : इनका पारे से इलाज किया जाता है, जिसका प्रयोग गर्मी के कारण हानिकारक नहीं होता। डॉक्टर अपने मरीज़ों को बग़ैर किसी परेशानी के पारे की गोलियाँ खिलाते हैं। जनरल सिप्यागिन, कहते हैं कि इसलिए मर गया, क्योंकि उसका निजी डॉक्टर जो उसके साथ पीटर्सबुर्ग से आया था, स्थानीय चिकित्सकों द्वारा सुझाई गयी दवा से डर गया और उसने मरीज़ को वे दवाएँ नहीं दीं। यहाँ के बुख़ार क्रीमिया के और मल्दाविया के बुख़ारों जैसे ही होते हैं और उसी तरह से उनका इलाज किया जाता है।

यहाँ के निवासी कूरा का मटमैला, मगर स्वादिष्ट पानी पीते हैं। सभी सोतों और कुओं के जल में गन्धक की मात्रा काफ़ी ज़्यादा होती है। मगर शराब का यहाँ इतना अधिक प्रयोग किया जाता है कि पानी की कमी अगर हो भी जाए, तो पता न चले।

तिफ़िलिस में मुद्रा के सस्ते मूल्य ने मुझे हैरान कर दिया। गाड़ी में दो रास्ते पार करके, क़रीब आधे घंटे बाद गाड़ी से उतरने के बाद मुझे चाँदी के दो रूबल देने पड़े।

---

1. असेस्सर–त्सारशाही रूस में आठवीं श्रेणी का सरकारी कर्मचारी।

पहले मैंने सोचा कि वह नवागन्तुक के अज्ञान का फ़ायदा उठाना चाहता है; मगर मुझे बताया गया कि वही असली दर है। और चीज़ें भी इसी अनुपात में महँगी हैं।

हम जर्मन बस्ती गये और वहाँ खाना खाया। वहीं तैयार की गयी बियर पी, जिसका स्वाद बहुत बुरा था और बहुत बुरे भोजन के लिए बहुत ज़्यादा क़ीमत चुकाई। मेरी सराय में भी इसी तरह की महँगी बकवास खिलाई गयी। बढ़िया खाने के शौक़ीन जनरल स्त्रेकालोव ने एक बार मुझे खाने पर बुलाया; मगर अफ़सोस उसके पास व्यंजन पद के हिसाब से परोसे जाते थे, और जो मेज़ पर अंग्रेज़ अफ़सर जनरल का चिह्न लगाये बैठे थे। नौकर इतने उत्साह से मेरे क़रीब से गुज़र जाते थे कि मैं मेज़ से भूखा ही उठा। शैतान ले जाए तिफ़िलिस के खाने के शौक़ीन को!

मैं बड़ी बेताबी से अपनी क़िस्मत के फ़ैसले का इन्तज़ार कर रहा था। आख़िरकार मुझे रायेव्स्की का ख़त मिला। उसने लिखा था कि मैं जल्दी से कार्स पहुँच जाऊँ, क्योंकि कुछ दिनों बाद फ़ौजें आगे जानेवाली थीं। मैं दूसरे ही दिन निकल पड़ा।

मैं घोड़े पर जा रहा था, कफ़क्राज की चौकियों पर हर बार घोड़ा बदलते हुए। मेरी चारों ओर की धरती गर्मी के कारण झुलसी हुई थी। जॉर्जिया के गाँव मुझे दूर से ख़ूबसूरत बाग़ों जैसे दिखाई देते, मगर नज़दीक पहुँचने पर कुछेक दयनीय साक्ल्या, धूलभरे चिनारों से घिरे नज़र आते। सूरज डूब चुका था, मगर हवा अभी भी दमघोंटू थी :

रातें गर्म!
सितारे अजनबी!...

चाँद चमक रहा था; हर चीज़ ख़ामोश थी; रात के सन्नाटे में बस मेरे घोड़े की टापों की आवाज़ गूँज रही थी। किसी आवास के निशान न पाकर मैं काफ़ी देर तक चलता रहा। आख़िरकार मुझे एक अकेली साक्ल्या दिखाई दी। मैं दरवाज़ा खटखटाने लगा। मालिक बाहर आया। मैंने पहले रूसी में और फिर तातारी ज़ुबान में पानी माँगा। वह मुझे समझ न पाया। ग़ज़ब की लापरवाही! तिफ़िलिस से तीस मील दूर है, और पर्शिया और तुर्की के रास्ते पर होते हुए भी वह न तो रूसी जानता था, न तातारी।

कज़ाक चौकी पर रात बिताने के बाद मैं सुबह-सुबह आगे चल पड़ा। रास्ता पहाड़ों और जंगलों से होकर जाता था। मुझे तातार मुसाफ़िर मिले; उनमें कुछ औरतें भी थीं। वे घोड़ों पर चादरें ओढ़े बैठी थीं; उनकी सिर्फ़ आँखें और एड़ियाँ ही नज़र आ रही थीं।

मैं बेज़ोब्दाल पर्वत पर चढ़ने लगा, जो जॉर्जिया को प्राचीन आर्मेनिया से अलग करता है। चौड़ा रास्ता, जिसके किनारों पर पेड़ लगे हैं, पहाड़ के नज़दीक से बल खाता हुआ जाता है। बेज़ोब्दाल की चोटी पर मैं एक छोटे-से दर्रे से होकर गुज़रा, जिसे शायद 'भेड़ियों का द्वार' कहते हैं, और जॉर्जिया की वास्तविक सीमा पर पहुँच गया।

मेरे सामने थे नये पहाड़, नया क्षितिज; मेरे नीचे मदहोश करने वाले हरे-हरे खेत फैले थे। मैंने फिर से एक बार झुलसे हुए जॉर्जिया को देखा और पहाड़ की ढलान से नीचे उतरने लगा, आर्मेनिया के ताज़ातरीन मैदानों की ओर। अवर्णनीय प्रसन्नता से मैंने महसूस किया कि गर्मी एकदम कम हो गयी है : आबोहवा एकदम बदल गयी थी।

बोझ लदे घोड़ों के साथ चल रहा मेरा आदमी मुझसे पिछड़ गया। फूले-फले निर्जन क्षेत्र में, जो दूरस्थ पहाड़ों से घिरा था, मैं अकेला चला जा रहा था। खोया-खोया-सा मैं चौकी के सामने से आगे निकल गया, जहाँ मुझे घोड़े बदलने थे। छह घंटों से अधिक समय बीत गया और मैं अगली चौकी तक की दूरी के बारे में आश्चर्य करने लगा। एक ओर मुझे पत्थरों के ढेर दिखाई दिये, जो साक्ल्या जैसे प्रतीत हो रहे थे और मैं उनकी ओर चल पड़ा। सचमुच में मैं एक आर्मेनियाई गाँव में पहुँच गया था। कुछ औरतें चटख रंगों के फटे-पुराने कपड़े पहने ज़मीन के नीचे स्थित साक्ल्या की चिकनी छत पर बैठी थीं। मैंने किसी तरह अपनी बात समझाई। उनमें से एक साक्ल्या में गयी और वहाँ से मेरे लिए पनीर और दूध लाई। कुछ मिनट आराम करने के बाद, मैं आगे बढ़ा और नदी के ऊँचेवाले किनारे पर अपने सामने गेरगेरा का क़िला देखा। ऊँचे किनारे से तीन धाराएँ शोर मचातीं, फ़ेन उड़ातीं नीचे की ओर आ रही थीं। मैंने नदी पार की। सीधे रास्ते से एक बैलगाड़ी ऊपर की ओर आ रही थी। कुछ जॉर्जियन बैलगाड़ी के साथ थे।

"कहाँ से आ रहे हैं?" मैंने उनसे पूछा।

"तेहरान से।"

"क्या ले जा रहे हैं?"

"ग्रिबोयेदोव को।" यह ग्रिबोयेदोव का मृत शरीर था, जिसे तिफ़िलिस ले जाया जा रहा था।

मैंने अपने ग्रिबोयेदोव से कभी मिलने की कल्पना भी नहीं की थी! मैं पिछले साल पीटर्सबुर्ग में उससे जुदा हुआ था, उसके पर्शिया जाने से पहले। वह बड़ा दुःखी था और उसे विचित्र पूर्वाभास हो रहा था। मैंने उसे दिलासा देना चाहा; उसने मुझसे कहा, "आप अभी इन लोगों को नहीं जानते : आप देखेंगे कि बात छुरियों तक पहुँचेगी।"

वह सोच रहा था कि ख़ून-ख़राबे की वजह होगी शाह की मौत और उसके सत्तर बेटों के बीच विवाद। परन्तु जक्खड़ बूढ़ा शाह अभी भी जीवित है, मगर ग्रिबोयेदोव के अभिशप्त शब्द सही साबित हुए। वह फ़ारसियों के खंजरों से मारा गया, अज्ञान और विश्वासघात का शिकार। उसका क्षत-विक्षत-विकृत शरीर, जो तीन दिनों तक तेहरान की भीड़ का खिलौना बना रहा, केवल उसके हाथ के कारण ही पहचाना जा सका जो कभी पिस्तौल की गोली से घायल हुआ था।

मेरा ग्रिबोयेदोव से परिचय सन् 1817 में हुआ था। उसका उदास स्वभाव,

उसका कटुतापूर्ण दिमाग़, उसकी भलमनसाहत, मानव की सर्वसाधारण कमज़ोरियाँ और विलासिता—सभी कुछ उसमें काफ़ी दिलकश था। अपनी प्रतिभा के अनुरूप स्वाभिमान के साथ पैदा हुआ वह लम्बे समय तक छोटी-छोटी ज़रूरतों और गुमनामी के जाल में फँसा रहा। सरकारी आदमी की योग्यताओं का उपयोग न हो सका; कवि की प्रतिभा को मान्यता न मिली; उसकी ठंडी और लाजवाब बहादुरी भी कुछ समय तक सन्देहों के घेरे में रही। कुछ दोस्तों को उसकी क़ाबलियत का ज्ञान था और जब कभी उन्हें उसके बारे में बातें करने का मौक़ा मिलता, जैसे वह कोई असाधारण व्यक्ति हो, तो वे उसके होठों पर अविश्वास की मुस्कुराहट देखते, बेवक़ूफ़ी भरी, बर्दाश्त न हो सकनेवाली मुस्कुराहट। लोग सिर्फ़ प्रसिद्धि पर भरोसा करते हैं और यह नहीं समझते कि उनके बीच कोई नेपोलियन हो सकता है, जिसने अभी तक किसी भी तीरन्दाज़ों की टुकड़ी का नेतृत्व नहीं किया है या कोई और देकार्त हो सकता है, जिसकी 'मॉस्को टेलीग्राफ़' में अभी तक एक भी पंक्ति न छपी हो। फिर भी, प्रसिद्धि के लिए हमारा सम्मान, शायद, हमारे अहम् से उपजता है : प्रसिद्धि की निर्मिति में हमारी भी तो आवाज़ होती है।

ग्रिबोयेदोव के जीवन को कुछ बादलों का ग्रहण लगा था : जोशीले प्रेम का परिणाम और ज़बर्दस्त परिस्थितियों का। उसने एक ही बार में अपनी जवानी का हमेशा के लिए फ़ैसला करने और जीवन को पूरी तरह बदल देने की आवश्यकता को महसूस किया। उसने पीटर्सबुर्ग और निठल्ली व्यभिचारिता से विदा ली, जॉर्जिया चला गया, जहाँ आठ साल अकेले, दिल लगाकर काम किया। सन् 1824 में मॉस्को में उसकी वापसी से उसके भाग्य में एक नया मोड़ आया और अविरल सफलताओं का सिलसिला शुरू हो गया। उसकी हस्तलिखित कॉमेडी 'ज्ञान के कारण दुःख' ने अवर्णनीय प्रभाव उत्पन्न किया और उसे फ़ौरन हमारे प्रथम श्रेणी के कवियों की पंक्ति में बिठा दिया। कुछ समय पश्चात् उस प्रान्त की सम्पूर्ण जानकारी ने, जहाँ युद्ध आरम्भ हो रहा था, उसके लिए एक नये कार्य क्षेत्र का द्वार खोल दिया; उसे राजदूत नियुक्त कर दिया गया। जॉर्जिया आकर उसने उससे विवाह कर लिया जिससे प्यार किया था...उसके तूफ़ानी जीवन के अन्तिम वर्षों से बढ़कर ईर्ष्याजनक और कोई बात मैं नहीं जानता। स्वयं मृत्यु भी, जिसने उसे साहसी, असमान युद्ध में दबोच लिया था, उसे भयानक, थका देनेवाली नहीं लगी। वह आकस्मिक एवं ख़ूबसूरत थी।

कितने अफ़सोस की बात है कि ग्रिबोयेदोव ने अपने संस्मरण नहीं छोड़े। उसकी जीवनगाथा लिखना उसके मित्रों का काम होता, मगर लाजवाब आदमी हमारे यहाँ ग़ायब हो जाते हैं; अपने पीछे बिना कोई निशान छोड़े। हम आलसी और अनुत्सुक हैं...

गेगेरा में मैं बुतुर्लीन से मिला, जो मेरी ही तरह फ़ौज में जा रहा था। बुतुर्लीन सभी सम्भव वहमों के साथ सफ़र कर रहा था। मैंने उसके साथ यूँ भोजन किया, मानो

पीटर्सबुर्ग में हूँ। हमने एक साथ सफ़र करने का इरादा किया; मगर बेचैनी का भूत फिर मुझ पर सवार हो गया। मेरे आदमी ने मुझसे आराम करने की अनुमति माँगी। मैं अकेला ही चल पड़ा, बिना पथ-प्रदर्शक के।

पहाड़ पार करके और पेड़ों से घिरी वादी में उतरने पर मैंने खनिज जल का सोता देखा, जो रास्ते के बीचोंबीच बह रहा था। यहाँ मैं आर्मेनियाई पादरी से मिला, जो ऐरेवान से अखाल्त्सिक जा रहा था।

"ऐरेवान की क्या ख़बर है?" मैंने उससे पूछा।

"ऐरेवान में हैज़ा है।" उसने जवाब दिया। "और अखाल्त्सिक के क्या हाल हैं?"

"अखाल्त्सिक में हैज़ा है।" मैंने उसे जवाब दिया।

इन शुभ समाचारों के आदान-प्रदान के बाद हम जुदा हुए।

मैं फ़सलों से लदे खेतों और फूलोंवाली वादियों से जा रहा था। पकी हुई फ़सल हसिये के इन्तज़ार में ज़मीन पर बिछी जा रही थी। मैं इस सुन्दर धरती पर मोहित हो गया, जिसकी उर्वरता पूरबी मुहावरों में समा गयी है। शाम होते-होते मैं पेर्निक पहुँच गया। यहाँ कज़ाक चौकी थी। चौकीदार ने मुझसे कहा कि तूफ़ान आनेवाला है और रात वहीं गुज़ारने की सलाह दी, मगर मैं उसी दिन, किसी भी हालत में, गुम्रोव पहुँच जाना चाहता था।

मुझे छोटे-छोटे पहाड़ पार करके जाना था, जो कार्स्क की प्राकृतिक सीमा थे। आसमान बादलों से घिरा था; मैं आशा कर रहा था कि हर घंटे तेज़ होनेवाली हवा उन्हें भगा देगी। मगर बारिश शुरू हो गयी और तेज़ होते-होते मूसलाधार हो गयी। पेर्निक से गुम्रोव की दूरी 27 मील है। मैंने अपने रोएँदार कोट के बन्द बाँधे, टोपी पर ऊनी शिरस्त्राण पहना और स्वयं को क़िस्मत के हवाले कर दिया।

दो घंटों से ऊपर बीत गये। बारिश रुकी नहीं। पानी की धाराएँ मेरे भारी हो चुके कोट और बुरी तरह पानी पी चुकी टोपी से गिर रही थीं। आख़िरकार ठंडी धारा मेरी टाई के पीछे तक पहुँचने लगी, और शीघ्र ही बारिश ने मेरा तार-तार भिगो दिया। रात अँधेरी थी; कज़ाक आगे-आगे चल रहा था, मुझे रास्ता दिखाते हुए। हम पहाड़ों पर चढ़ने लगे, इसी बीच बारिश थम गयी और बादल छँट गये। गुम्रोव तक दस मील बचे थे। आज़ादी से चल रही हवा इतनी तेज़ थी कि पन्द्रह मिनट में ही उसने मुझे पूरी तरह सुखा दिया। बुख़ार से बचने की बात मैं सोच भी नहीं रहा था। आख़िर आधी रात के क़रीब में गुम्रोव पहुँचा। कज़ाक मुझे सीधा चौकी ले गया। हम वहीं तम्बू में ठहरे, जहाँ मैं फ़ौरन घुस गया। वहाँ मुझे एक-दूसरे की बग़ल में सोये बारह कज़ाक दिखाई दिये। मुझे जगह दी गयी; मैं कोट पर लुढ़क गया, थकान के मारे बिना कुछ महसूस किये। इस दिन मैं 75 मील चला था। मैं मुर्दे की तरह सो गया।

सुबह कज़ाकों ने मुझे उठाया। पहला ही ख़याल मेरे मन में आया : कहीं मैं बुख़ार में तो नहीं पड़ा हूँ? मगर मैंने महसूस किया कि भगवान की दया से स्वस्थ और

तरोताज़ा हूँ। मैं तम्बू से बाहर सुबह की ताज़ी हवा में निकला। सूरज निकल रहा था। खुले आसमान में दो शिखरोंवाला बर्फ़ीला पहाड़ चमक रहा था।

"कौन-सा पहाड़ है?" मैंने अँगड़ाई लेते हुए पूछा, और जवाब में सुना, "यह अरारात है।"

शब्दों का प्रभाव कितना गहरा होता है! अतृप्त-सा मैं बाइबिल में वर्णित उस पर्वत को देखता रहा, उस नौका को देखा, जो उसकी चोटी की ओर जा रही थी नवनिर्माण और जीवन की आस में—और कौए और कबूतरों को जो धरती की ओर उड़ रहे थे। मृत्यु और सौहार्द के प्रतीक...

मेरा घोड़ा तैयार था। मैं मार्ग प्रदर्शक के साथ चल पड़ा। सुबह सुहानी थी। सूरज चमक रहा था। हम घास के चौड़े मैदानों से होकर जा रहे थे, घनी हरी घास पर से, जिसे ओस ने और कल की बारिश की बूँदों ने सींचा था। हमारे सामने नदी चमक रही थी, जिसे पार करके हमें जाना था।

"यह रही अर्पाचाय।" मुझसे कज़ाक ने कहा।

अर्पाचाय! हमारी सीमा! यह भी अरारात जैसी ही महत्त्वपूर्ण है। मैं एक अबूझ भावना से नदी तक घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए आया। अभी तक मैंने कभी पराई धरती को न देखा था। सीमा मेरे लिए एक रहस्यमय चीज़ थी, बचपन से ही यात्रा करना मेरा प्रिय सपना रहा है। इसके बाद भी मैं काफ़ी समय तक घुमक्कड़ ज़िन्दगी बिताता रहा, कभी दक्षिण, तो कभी उत्तर के फेरे लगाते हुए और कभी भी रूस की असीमित सीमाओं से नहीं छिटका। मैं खुशी-खुशी उस पावन नदी में उतरा और मेरा भला घोड़ा मुझे तुर्की के किनारे ले गया। मगर यह किनारा तो जीता जा चुका था, मैं अभी तक रूस में ही था।

कार्स तक अभी 75 मील बाक़ी थे। मुझे शाम तक अपने कैम्प को देख पाने की उम्मीद थी। मैं कहीं भी नहीं रुका। आधे रास्ते में, आर्मेनियाई गाँव में, जो नदी किनारे के पहाड़ों पर बनाया गया है, मैंने भोजन के बदले खाई बकवास च्युरेक, राख लगी आर्मेनियाई डबल रोटी, जो चपटी आधी रोटी की शक्ल में पकाई गयी थी, जिसके लिए दारियाल दर्रे में तुर्क क़ैदी इतना रोते थे। रूसी काली डबल रोटी के एक टुकड़े के लिए मैं कोई भी क़ीमत चुकाने को तैयार था, जिससे वे एकदम नफ़रत करते थे। मुझे नौजवान तुर्क, जो बड़ा ही बातूनी था, रास्ता दिखा रहा था। वह पूरे रास्ते तुर्की में ही बड़बड़ाता रहा, यह चिन्ता किये बग़ैर कि मैं उसकी बात समझ रहा हूँ या नहीं। मैंने उसकी ओर ध्यान केन्द्रित किया और उसकी बातों का अन्दाज़ा लगाने की कोशिश करने लगा। ऐसा लग रहा था कि वह रूसियों को ग़ालियाँ दे रहा है, और हमेशा उन्हें फ़ौजी कोट में देखने का आदी होने के कारण, मुझे कोट में देखकर विदेशी समझ बैठा। रास्ते में हमें रूसी अफ़सर मिला। वह हमारे कैम्प से आ रहा था और उसने मुझसे कहा कि फ़ौज कार्स से चल चुकी है। अपनी निराशा का मैं वर्णन नहीं

कर सकता : यह ख़याल कि मुझे तिफ़्लिस वापस लौटना पड़ेगा, वीरान अर्मीनिया में बेकार ही इतनी तकलीफ़ उठाने के बाद, मुझे मार डाले जा रहा था। अफ़सर अपने रास्ते चला गया; तुर्क ने फिर अपना राग अलापना शुरू किया; मगर अब मुझे उसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी।

मैंने घोड़े को एड़ लगाई और शाम को तुर्की गाँव में पहुँचा, जो कार्स से बीस मील दूर स्थित था।

घोड़े से कूदकर मैं पहली साक्ल्या में घुसना चाहता था, मगर दरवाज़े पर मेज़बान प्रकट हुआ और उसने मुझे गालियाँ देते हुए धक्का देकर बाहर कर दिया। मैंने उसके स्वागत का जवाब कोड़े से दिया। तुर्क चीख़ने लगा; लोग जमा हो गये। मेरे बटोहिये ने शायद मेरी हिमायत की। मुझे एक कारवाँ—सराय दिखाई गयी; मैं एक बड़ी साक्ल्या में घुसा, जो अस्तबल के समान थी; कोई जगह ऐसी न थी, जहाँ मैं अपना कोट बिछा सकता। मैंने घोड़े की माँग की। मेरे पास तुर्की प्रमुख आया। उसकी सभी समझ में न आनेवाली बातों का मैंने एक ही जवाब दिया : मुझे घोड़ा दो। तुर्क राजी नहीं हुए। आख़िरकार मैंने भाँप लिया कि उन्हें पैसे दिखाने चाहिएँ (जिससे मुझे शुरुआत करनी चाहिए थी)। फ़ौरन मुझे घोड़ा दे दिया गया और मुझे पथ-प्रदर्शक भी दिया गया।

मैं चौड़ी वादी से होकर जा रहा था, जो पहाड़ों से घिरी थी। जल्दी ही मुझे कार्स दिखाई दिया, जो उनमें से एक पहाड़ पर चमक रहा था। मेरे तुर्क ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, "कार्स, कार्स!" और अपना घोड़ा सरपट उस ओर दौड़ाया, मैं उसके पीछे-पीछे गया, बेचैनी से परेशान होते हुए, कार्स में मेरी क़िस्मत का फ़ैसला होनेवाला था। यहाँ मुझे पता करना था कि हमारा कैम्प कहाँ स्थित है, और क्या मेरे लिए फ़ौज तक पहुँचना सम्भव है या नहीं। इसी बीच आसमान बादलों से घिर आया और फिर से बारिश होने लगी, मगर मैं अब उसके बारे में चिन्ता नहीं कर रहा था।

हम कार्स में दाख़िल हुए। दीवार के द्वार तक जाते हुए हमने रूसी नगाड़ों की आवाज़ सुनी : शाम की धुन बजाई जा रही थी। सन्तरी ने मुझसे परिचय पत्र लिया और कमांडर के पास गया। मैं बारिश में क़रीब आधा घंटा खड़ा रहा। आख़िरकार मुझे अन्दर छोड़ा गया। मैंने मार्गदर्शक को मुझे सीधे हम्माम में ले चलने को कहा। हम टेढ़ी-मेढ़ी, ऊँची-नीची सड़कों पर चले; बकवास तुर्की पुलवाली सड़क पर घोड़े फिसल-फिसल जाते थे। हम एक घर के निकट रुके, जिसका बाहरी भाग बहुत ख़राब था। ये हम्माम थे। तुर्क घोड़े से उतरा और दरवाज़े खटखटाने लगा। किसी ने भी जवाब नहीं दिया। बारिश मुझ पर बुरी तरह बरस रही थी। आख़िर निकट के घर से एक नौजवान आर्मेनियाई बाहर आया और मेरे तुर्क से बातें करने के बाद मुझे उसने अपने पास बुलाया, स्पष्ट रूसी भाषा में बोलते हुए। वह मुझे तंग सीढ़ियों से अपने घर के दूसरे आवास खंड में ले गया। छोटे क़द के दीवानों और फटे पुराने गलीचोंवाले कमरे में एक वृद्धा, उसकी माँ, बैठी थी। वह मेरे क़रीब आयी और मेरा हाथ चूम

लिया। बेटे ने उसे अँगीठी जलाने और मेरे लिए खाना बनाने को कहा। मैंने कपड़े उतारे और अँगीठी के सामने बैठ गया। मेज़बान का छोटा भाई, सत्रह बरस का लड़का, अन्दर आया। दोनों भाई तिफ़िलिस में कई महीने रह चुके थे। उन्होंने मुझे बताया कि हमारी फ़ौजें कल ही यहाँ से कूच कर चुकी हैं, और हमारा कैम्प कार्स से 25 मील की दूरी पर है। मुझे पूरा इत्मीनान हो गया। जल्दी ही बुढ़िया ने मेरे लिए प्याज़ डालकर भेड़ का मांस बना दिया, जो मुझे पाक कला का बेहतरीन नमूना प्रतीत हुआ। हम सब एक ही कमरे में लेट गये: मैं बुझती हुई अँगीठी के सामने काउंट पास्केविच से दूसरे दिन मिलने की आशा लिए लेट गया।

सुबह मैं शहर देखने निकला। छोटा भाई मेरा पथ-प्रदर्शक बन गया। सुरक्षा व्यवस्था और भीतरी दुर्ग को, जो दुर्गम चट्टान पर बने थे, देखते हुए मैं समझने में असमर्थ था कि हमने कार्स पर अधिकार कैसे किया। मेरे आर्मेनियाई ने अपनी योग्यतानुसार फ़ौजी गतिविधियों को समझाया, जिनका वह स्वयं गवाह था। उसमें युद्ध करने का शौक़ देखकर मैंने उसे मेरे साथ फ़ौज में चलने के लिए कहा। वह फ़ौरन तैयार हो गया। मैंने उसे घोड़ों के लिए भेजा। वह एक अफ़सर के साथ लौटा, जिसने मुझसे लिखित में अनुमति पत्र माँगा। उसके एशियाई नाक-नक़्श को देखते हुए मैंने अपने काग़ज़ात को ढूँढ़ना ज़रूरी नहीं समझा और जेब में हाथ डालकर जो भी काग़ज़ हाथ में आया, उसे थमा दिया। अफ़सर ने बड़ी गम्भीरता से उसे देखकर, फ़ौरन महानुभाव के लिए, लिखित अनुमति के अनुसार, घोड़े लाने की आज्ञा दी और मेरा काग़ज़ मुझे लौटा दिया, यह काल्मीच्का के लिए पत्र था, जो कॉकेशस की किसी चौकी पर मैंने घसीट दिया था। आधे घंटे बाद मैं कार्स से निकला। आर्तेमी (मेरे अर्मेनियाई का यही नाम था) तुर्की घोड़े पर मेरे साथ-साथ चल रहा था, हाथ में पतली लचीली बर्छी लिए, कमरबन्द में खंजर खोंसे, तुर्कों और युद्धों के बारे में बड़बड़ाते हुए।

मैं चारों ओर गेहूँ बोयी गयी धरती पर चल रहा था, चारों ओर गाँव दिखाई दे रहे थे, मगर वे ख़ाली थे : निवासी भाग गये थे। रास्ता ख़ूबसूरत था और दलदली जगह पर पुलोंवाला–नालों के ऊपर पथरीले पुल बने थे। ज़मीन कुछ ऊँची हो चली थी–सगान-लू पर्वत शृंखला, प्राचीन ताव्र, के सामनेवाले टीले, दिखाई देने लगे थे। दो घंटे बीते; मैं ऊँची चढ़ाई पर पहुँचा और अचानक अपने कैम्प को देखा, जो कार्स-चाय के किनारे पर डेरा डाले था, कुछ ही मिनटों बाद मैं रायेव्स्की के तम्बू में था।

3

मैं समय पर पहुँच गया। उसी दिन (13 जून को) फ़ौजों को आगे चलने का हुक्म मिला। रायेव्स्की के यहाँ खाना खाते समय मैं युवा जनरलों की बातें सुन रहा था, जो

कूच करने की पूर्व निर्धारित योजना पर विचार कर रहे थे। जनरल बुर्त्सोव बाईं ओर से, अर्ज़रूमवाले राजमार्ग से, सीधे तुर्की कैम्प के एकदम सामने जानेवाला था, जबकि अन्य फ़ौजें दाहिनी ओर से दुश्मन को घेरती हुई आगे बढ़नेवाली थीं।

चार बजे के बाद फ़ौजों ने प्रस्थान किया। मैं नीझगोरद के घुड़सवार दस्ते के साथ रायेव्स्की से बातें करता हुआ जा रहा था, जिससे मैं पिछले कई सालों से मिला नहीं था। रात हो गयी, हम वादी में रुके, जहाँ पूरी फ़ौजों का पड़ाव था। यहाँ मुझे काउंट पास्केविच से परिचित करवाये जाने का सम्मान प्राप्त हुआ।

मुझे काउंट कैम्प फ़ायर के सामने घर में ही अपने अधिकारियों से घिरे हुए मिल गये, वे बड़े हँसमुख थे और उन्होंने बड़े प्यार से मेरा स्वागत किया। रणनीति से नावाक़िफ़, मुझको यह सन्देह भी नहीं हुआ कि इस क्षण लड़ाई के अंजाम के बारे में फ़ैसला हो रहा था। यहाँ मुझे हमारा वोलखोव्स्की दिखाई दिया, धूल-धूसरित, बढ़ी हुई दाढ़ी, हैरान परेशान! फिर भी एक पुराने दोस्त की तरह उसने मुझसे बतियाने का समय निकाल ही लिया। यहाँ मुझे मिखाईल पुश्शिन[1] भी दिखाई दिया, जो पिछले वर्ष घायल हो गया था। उसकी एक प्यारे साथी और बहादुर सैनिक के रूप में सभी इज़्ज़त करते हैं, उससे प्यार करते हैं। मेरे पुराने साथियों में से कइयों ने मुझे घेर लिया। कितने बदल गये थे वे! वक़्त कितनी जल्दी बीत जाता है!

है ऽ ऽ ऽ! ओ, पोस्तूम पोस्तूम
तेज़ी से उड़ते, जाते हैं, द्रुतगामी साल...[2]

मैं रायेव्स्की के पास वापस आया ओर उसके तम्बू में सो गया। आधी रात को भयानक चीख़ों ने मुझे जगा दिया : कोई भी यह सोच सकता था कि दुश्मन ने आकस्मिक हमला बोल दिया है। रायेव्स्की ने इस उत्तेजना का कारण जानने के लिए आदमी भेजा : कुछ तातारी घोड़े, रस्सी तुड़ाकर कैम्प में इधर-उधर भाग रहे थे, और मुसलमान (हमारी फ़ौज में काम करनेवाले तातारों को इसी नाम से पुकारते हैं) उन्हें पकड़ रहे थे।

सुबह फ़ौज आगे बढ़ी। हम जंगलों से ढँके पहाड़ों की ओर बढ़े। हम दर्रे में दाख़िल हुए। घुड़सवार सैनिक आपस में बातें कर रहे थे, "देखो भाई, सँभल के; कहीं तोप के गोलों न दबोच लें।" सचमुच वह जगह छुपकर हमला करने के लिए बड़ी अच्छी थी; मगर दूसरी ओर से बढ़े आ रहे जनरल बुर्त्सोव द्वारा ध्यान खींच लेने के कारण तुर्कों ने मौक़े का फ़ायदा नहीं उठाया। हम सही-सलामत ख़तरनाक दर्रे को पार

---

1. मिखाईल पुश्शिन—पूश्किन के सहपाठी का भाई, जिसे डिसेम्बर क्रान्ति में भाग लेने के फलस्वरूप सिपाही बनाकर कफ़क़ोज़ भेज दिया गया था। जब पूश्किन वहाँ पहुँचा, तब तक वह अफ़सर बन चुका था।
2. होरोशेयो के वीर काव्य से ली गई पंक्ति।

करके सगान-लू की चोटियों पर पहुँच गये–दुश्मन के कैम्प से दस मील दूर।

मौसम बड़ा उदास था। हवा ठंडी थी, पहाड़ चीड़ के दयनीय वृक्षों से ढँका था। खाइयों में बर्फ़ पड़ी थी।

हम कुछ सुस्ताकर थोड़ी देर आराम कर ही चुके थे कि गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। रायेव्स्की ने पता लगाने के लिए भेजा। उसे बताया गया कि तुर्कों ने हमारी सामने वाली चौकियों पर गोलीबारी की है। मैं सेमिचेव[1] के साथ इस नये दृश्य को देखने चल पड़ा। हमें ज़ख़्मी कज़ाक मिला, जो ख़ून से लथपथ, विवर्ण, थरथराते हुए, घोड़े की जीन पर बैठा था। दो कज़ाकों ने उसे सहारा दिया।

"क्या तुर्क बहुत सारे हैं?" सेमिचेव ने पूछा।

"सुअरों की तरह बढ़े आ रहे हैं, जनाब।" उनमें से एक ने जवाब दिया।

दर्रा पार करने के बाद अचानक सामनेवाले पहाड़ की ढलान पर हमने क़रीब दो सौ कज़ाकों को देखा, जो घोड़ों पर बिखरे हुए थे और उनके ऊपर थे क़रीब पाँच सौ तुर्क। कज़ाक धीरे-धीरे पीछे हट रहे थे; तुर्क बड़ी ढिठाई से बढ़े आ रहे थे, बीस क़दम की दूरी तक आते और गोलियाँ चलाकर एकदम पीछे भाग जाते। उनके ऊँचे शिरस्त्राण, ख़ूबसूरत कोट और घोड़ों की चमकीली ज़ीनें हमारे कज़ाकों के नीले कोटों और सीधी-साधी काठियों के बिलकुल विपरीत प्रतीत हो रहे थे। हमारे क़रीब पन्द्रह आदमी ज़ख़्मी हो चुके थे। सहायक जनरल बासोव ने सहायता मँगवाई। इस वक़्त उसका भी पैर ज़ख़्मी हो चुका था। कज़ाक अपनी जगह से भागने की तैयारी में थे। मगर बासोव फिर से घोड़े पर सवार हो गया और अपनी टुकड़ी का नेतृत्व करता रहा। सहायता वक़्त पर आ गयी। यह देखकर तुर्क फ़ौरन ग़ायब हो गये, पहाड़ पर एक कज़ाक की क्षतविक्षत निर्वस्त्र मृत देह छोड़कर, जिसका सिर ग़ायब था। काटे हुए सिर तुर्क कन्स्तान्तिनोपोल भेज देते हैं, और हाथों की हड्डियाँ, ख़ून में डुबोकर अपने झंडों पर उनसे निशान बनाते हैं। गोलियाँ थम गयीं। फ़ौजों के हमसफ़र, उक़ाब, पहाड़ों के ऊपर मँडरा रहे थे, अपने लक्ष्य को ऊँचाई से देखते हुए। इसी समय जनरलों और अफ़सरों की भीड़ दिखाई दी : काउंट पास्केविच आ पहुँचा था और उस पहाड़ की ओर बढ़ रहा था, जिसके पीछे तुर्क छिपे हुए थे। वे खाइयों और गहरी घाटी

---

1. सेमिचेव–डिसेम्बर क्रान्तिकारी; छह महीने की जेल के वाद उसे कफ़काज़ भेज दिया गया। नीचे वर्णित हमले में (14 जून, 1829) को स्वयं पूश्किन ने भी भाग लिया था :
"एक काव्यात्मक जोश में वह (पूश्किन) फ़ौरन उछलकर घोड़े पर वैठ गया और पलभर में चौकी पर पहुँच गया। अनुभवी मेजर सेमिचेव ने, जिसे रायेव्स्की ने कवि के पीछे भेजा था, वड़ी मुश्किल से उसे पकड़कर ज़वर्दस्ती कज़ाकों की अग्रिम पंक्ति से पीछे खींचा, उस क्षण, जव पूश्किन ने नये-नये फ़ौजी की ज़वर्दस्त वहादुरी से उत्साहित एक मृत कज़ाक की वर्छी खींचकर दुश्मन पर निशाना साधा था।"
(एन.ई. उशाकोव, एशियाई तुर्की में 1828-29 में हुई फ़ौजी कार्रवाइयों का इतिहास)

में छिपाये गये 4000 घुड़सवारों से लैस थे। पहाड़ की चोटी से हमें तुर्क छावनी दिखाई दी, जिसे पहाड़ियाँ और खाइयाँ हमसे जुदा कर रही थीं। हम काफ़ी देर से लौटे। हमारे कैम्प से आते समय मैंने अपने ज़ख़्मियों को देखा, जिनमें से पाँच आदमी उसी रात और दूसरे दिन मर गये थे। शाम को मैं नौजवान ओस्तेन-साकेन से मिलने गया जो उसी दिन एक दूसरी कार्रवाई में घायल हुआ था।

कैम्प की ज़िन्दगी मुझे बहुत पसन्द आ गयी। सुबह-सुवह तोप का गोला हमें जगाता। तम्बू में नींद बड़ी गहरी आती है। भोजन के समय हम एशियाई कबाब खाते ताव्र की बर्फ़ में जम चुकी अंग्रेज़ी बियर और शैम्पेन के साथ। हमारा समाज मिले-जुले लोगों का था। जनरल रायेव्स्की के तम्बू में मुसलमानी फ़ौजी दस्तों के 'बेग' जमा होते; और बातचीत होती दुभाषिये के ज़रिये। हमारी फ़ौज में हमारे कॉकेशस पार के प्रान्तों के लोग थे, और हाल ही में जीते गये प्रान्तों के निवासी भी थे। इनके बीच मैं बड़ी उत्सुकता से 'याज़िदों' को देखा करता, जिन्हें पूरबी मुल्कों में शैतान की इबादत करनेवाली क़ौम समझा जाता है। अरारात की तलहटी में क़रीब तीन सौ परिवार रहते हैं। उन्होंने रूसी सम्राट का आधिपत्य स्वीकार कर लिया है। उनका कमांडर, लम्बा, बदसूरत आदमी, लाल कोट और काली टोपी पहने कभी-कभी सलाम करने जनरल रायेव्स्की के पास आया करता, जो पूरे घुड़सवार दस्ते का कमांडर था। मैंने 'याज़िद' से उनके मज़हब के बारे में जानने की कोशिश की। मेरे स्रवालों के जवाब में उसने कहा कि यह अफ़वाह कि याज़िद शैतान की इबादत करते हैं, कोरी गप्प है; वे खुदा में यक़ीन करते हैं; उनके क़ायदे के मुताबिक़ शैतान को ग़ालियाँ देना, सचमुच बुरा और बदसलीके वाला काम समझा जाता है, क्योंकि अब वह दुःखी है, मगर वक़्त के साथ-साथ शायद उसे माफ़ कर दिया गया है, क्योंकि अल्लाह की रहम की कोई इन्तेहा नहीं होती। इस स्पष्टीकरण से मुझे तसल्ली हो गयी। मुझे बड़ी ख़ुशी हुई कि याज़िद शैतान के सामने सिर नहीं झुकाते हैं, और उनकी भ्रान्तियाँ काफ़ी हद तक माफ़ करने लायक़ हैं।

मेरा आदमी कैम्प पहुँचा, मेरे आने के तीन दिन बाद। वह काफ़िले के साथ आया, जो दुश्मन की कार्रवाई को देखते हुए फ़ौज के साथ सही सलामत जुड़ गया था। (नोट : पूरे अभियान के दौरान हमारे लम्बे कारवाँ की एक भी गाड़ी को दुश्मन ने नहीं पकड़ा था। जिस तरह से कारवाँ फ़ौज के पीछे-पीछे चलता था, वह सचमुच आश्चर्यजनक है।)

17 जून को सुबह हमने फिर से गोलीबारी की आवाज़ सुनी और दो घण्टे बाद कराबाख दस्ते को आठ तुर्की झंडों के साथ लौटते हुए देखा : जनरल फ्रेडरिक्स दुश्मन से जूझ गया था, उसने उसे पथरीले टीलों के पास दबोच कर भगा दिया; उस्मान पाशा, घुड़सवार दस्ते का नायक, बड़ी मुश्किल से अपनी जान बचा पाया।

18 जून को कैम्प दूसरी जगह रुका। 19 को तोप के गोले ने हमें जगाया ही

था कि चारों ओर हलचल होने लगी। जनरल अपनी-अपनी चौकियों की ओर चले, फ़ौजी दस्तों की क़तारें बन गयीं; अफ़सर अपनी-अपनी टुकड़ियों के पास खड़े हो गये। मैं अकेला ही बच रहा, यह न जानते हुए कि किस ओर जाऊँ, और मैंने घोड़े को खुदा के रहमोकरम पर छोड़ दिया।

मैं जनरल बुर्त्सोव से मिला जिसने मुझे बायें पार्श्व की ओर बुलाया। 'यह बायाँ पार्श्व क्या है?' मैंने सोचा और आगे चल पड़ा। मैंने जनरल मुराव्योव को देखा, जो तोपों को विभिन्न ठिकानों पर रखवा रहा था। जल्दी ही देलिबाश[1] नज़र आये, जो हमारे कज़ाकों पर गोलियाँ बरसाते हुए घाटी में घूम रहे थे। इस बीच उनकी पैदल सेना का एक बड़ा हिस्सा ढलान पर जा रहा था। जनरल मुराव्योव ने गोलीबारी करने का हुक्म दिया। गोला भीड़ के बीचोंबीच जाकर गिरा। तुर्की एक ओर को गिरकर ऊँचाई के पीछे छिप गये। मैंने काउंट पास्केविच को अपने सैनिक अधिकारियों से घिरे हुए देखा। तुर्क गहरी खाई के दूसरी ओर खड़ी हमारी फ़ौज के पीछे से घूम गये। काउंट ने पुश्किन को खाई का निरीक्षण करने के लिए भेजा। पुश्किन ने घोड़े को ऐड़ लगाई। तुर्कों ने उसे एक घुड़सवार समझकर उस पर गोलियों की बौछार कर दी। सभी हँस पड़े। काउंट ने तोपें दाग़ने का हुक्म दिया। दुश्मन घाटी में और ढलान पर बिखर गया। बायें पार्श्व में, जहाँ मुझे बुर्त्सोव ने बुलाया था, ज़ोरदार लड़ाई चल रही थी। हमारे सामने बीचोंबीच एकदम सामने तुर्क घोड़े दौड़ रहे थे। काउंट ने उसका मुक़ाबला करने के लिए जनरल रायेव्स्की को भेजा, जिसने अपने नीझेगोरोद्स्की दस्ते को आक्रमण करने के लिए उतारा। तुर्क ग़ायब हो गये। हमारे तातारों ने उनके ज़ख़्मियों को घेर लिया और फ़ौरन उनके कपड़े उतार लिए, वस्त्रहीन दशा में उन्हें खेत के बीच छोड़ दिया। जनरल रायेव्स्की खाई के किनारे पर रुक गया। दो स्क्वाड्रन, फ़ौज से अलग होकर उन्हें खदेड़ने निकल पड़े, उनका नेतृत्व जनरल सिमोनिच कर रहा था।

लड़ाई धीमी पड़ गयी; तुर्क हमारी नज़रों के सामने ही धरती खोदने लगे, पत्थरों को खींच-खींचकर लाने लगे और अपनी आदत के मुताबिक़ मोर्चे सँभालने लगे।

हमने उन्हें तंग नहीं किया। हम घोड़ों से उतर पड़े और भोजन करने लगे : जो भी खुदा की मेहरबानी से मिल गया वही खा लिया। इसी समय काउंट के पास कुछ क़ैदियों को लाया गया। उनमें से एक गम्भीर रूप से घायल था। उनसे पूछताछ की गयी। लगभग छह बजे फिर फ़ौजों को दुश्मन पर हमला करने का आदेश प्राप्त हुआ। तुर्क अपनी खाइयों के पीछे रेंग रहे थे, उन्होंने गोलियों की बौछार से हमारा स्वागत किया और जल्द ही पीछे हटने लगे। हमारा घुड़सवार दस्ता सामने था; हम खाई में उतरने लगे; घोड़ों की टापों के नीचे धरती कट-कटकर बिखरती जाती। किसी भी पल

---

1. देलिबाश—तुर्क घुड़सवार।

मेरा घोड़ा गिर सकता था, और तब यह मिश्रित घुड़सवार दस्ता मुझे रौंदता हुआ गुज़र जाता। मगर ख़ुदा ने बचा लिया। जैसे ही हम पहाड़ों से गुज़रनेवाले चौड़े रास्ते पर पहुँचे, हमारे घुड़सवार सरपट भागने लगे। तुर्क भाग रहे थे; कज़ाक रास्ते में फेंक दी गयी तोपों पर चाबुक बरसाते हुए गुज़र रहे थे। तुर्क रास्ते के दोनों ओर स्थित खाइयों में बिखर गये; वे अब गोलियाँ नहीं चला रहे थे, कम-से-कम मेरे कानों के निकट से तो एक भी गोली नहीं गुज़री। उनका पीछा करनेवालों में सबसे आगे थे हमारे तातारी दस्ते जिनके घोड़े ताक़त और रफ़्तार में सबसे आगे रहते हैं। मेरा घोड़ा, लगाम मुँह में भींचे, उनसे पिछड़ नहीं रहा था; मैं बड़ी मुश्किल से उसे थाम रहा था। वह एक युवा तुर्क के मृत शरीर के सामने रुक गया जो रास्ते के बीचोंबीच पड़ा था। उसकी उम्र, शायद 18 साल की थी, विवर्ण कमसिन चेहरा, बिगाड़ा नहीं गया था। उसका टोप धूल में लुढ़क गया था; घुटे हुए सिर पर गोली लगी थी। मैं क़दम-क़दम बढ़ता गया; जल्दी ही रायेव्स्की ने मुझे पकड़ लिया। उसने काग़ज़ के टुकड़े पर काउंट पास्केविच के लिए दुश्मन की पूरी तरह हार के बारे में सन्देश लिखा और आगे चल पड़ा। मैं दूर से उसके पीछे-पीछे चल रहा था। रात हो गयी। मेरा थका हुआ घोड़ा पिछड़ रहा था और हर क़दम पर लड़खड़ा रहा था। काउंट पास्केविच ने कार्रवाई न रोकने का आदेश दिया और स्वयं निर्देशन करने लगा। हमारी घुड़सवार टुकड़ियाँ मुझ तक पहुँच गयीं; मैंने कज़ाक तोपख़ाने के नायक कमांडर पोल्याकोव को देखा जिसने उस दिन महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, और उसके साथ एक निर्जन गाँव में पहुँचा जहाँ रात हो जाने के कारण काउंट पास्केविच फ़ौजी कार्रवाई रोक कर विश्राम कर रहा था।

हमने काउंट को भूमिगत साक्ल्या की छत पर, अलाव के सामने बैठे देखा। उसके पास क़ैदियों को लाया गया। वह उनसे पूछताछ कर रहा था। वहीं लगभग सभी कमांडर मौजूद थे। कज़ाक उनके घोड़ों की लगामें थामे थे। अलाव साल्वातोर-रोज़ा[1] की क़ाबिले तारीफ़ तस्वीर, 'अँधेरे में नदी का शोर', को आलोकित कर रहा था। इसी समय काउंट को सूचना दी गयी कि गाँव में बारूद का बड़ा ज़खीरा छोड़ दिया गया है और विस्फोट होने का ख़तरा है। काउंट अपने पूरे तामझाम के साथ साक्ल्या छोड़कर चल पड़ा। हम अपने पड़ाव की ओर चल पड़े जो यहाँ से तीस मील दूर था, यहाँ हमने रात बिताई। रास्ता घुड़सवार दस्तों से भरा था। हम इस जगह पहुँचे ही थे कि अचानक आसमान चमक उठा, जैसे कोई उल्का चमकी हो, और हमने कानों को बहरा कर देनेवाला विस्फोट सुना। साक्ल्या, जिसे हम क़रीब पन्द्रह मिनट पहले छोड़ आये थे, चिथड़े-चिथड़े होकर हवा में उड़ गयी : उसी में बारूद का ज़खीरा था। लुढ़कते हुए पत्थरों ने कई कज़ाकों को दबा दिया।

---

1. साल्वातोर रोज़ा (1615-1673) इतालवी चित्रकार। 17-18 सदी की यूरोपियन फ़ौजी दृश्यों के चित्रण पर उसने गहरा प्रभाव डाला था।

बस यही कुछ मैं उस समय देख पाया। शाम को मुझे पता चला कि इस हमले में अर्ज़रूम का सेराक्सीर[1] जो तीस हज़ार सैनिकों को लेकर गाकी पाशा की फ़ौज से मिलने जा रहा था, हार गया। सेराक्सिर अर्ज़रूम की ओर भाग गया; उसकी सेना जिसे सगान-लू के पीछे धकेल दिया गया था, बिखर गयी, तोपख़ाना पकड़ लिया गया और हमारे हाथों अकेला गाकी पाशा पड़ गया। काउंट पास्केविच ने उसे सँभलने का समय ही नहीं दिया।

4

दूसरे दिन चार बजते ही छावनी जाग गयी और उसे आगे बढ़ने का हुक्म मिला। तम्बू से निकलते ही मेरी मुलाक़ात काउंट पास्केविच से हो गयी, जो सबसे पहले उठ गया था। उसने मुझे देखा।

"आप कल के वाक़ये के बाद थक तो नहीं गये?"

"थोड़ा-सा।"

"काउंट महाशय, मुझे आपके लिए थोड़ा-सा अफ़सोस है, क्योंकि हमें एक और रास्ता पार करना है, जिससे कि पाशा को पकड़ सकें, और उसके बाद दुश्मन को और तीस मील पीछे धकेलना है।"

हम आगे चले और क़रीब आठ बजे एक ऊँची जगह पर पहुँचे, जहाँ से गाकी पाशा की छावनी यूँ दिखाई दे रही थी, मानों हथेली पर रखी हो। तुर्की ने अपने सभी तोपख़ानों से गोले बरसाना शुरू किया जिनसे कोई नुक़सान नहीं हो सकता था। इसी बीच उनकी छावनी में काफ़ी गहमा-गहमी चल रही थी। थकान और सुबह की गर्मी ने हममें से कइयों को घोड़ों से उतरकर हरी घास में लेटने को मजबूर कर दिया। मैंने लगाम अपने हाथ पर अटका ली और आगे जाने के आदेश की प्रतीक्षा में मीठी नींद सो गया। पन्द्रह मिनट बाद मुझे जगाया गया। चारों ओर हलचल थी। एक ओर से क़तारें तुर्की छावनी की ओर बढ़ रही थीं; दूसरी ओर से—घुड़सवार दस्ता दुश्मन को खदेड़ने की तैयारी कर रहा था। मुझे नीझेगोरोदुस्की दस्ते के पीछे जाना था, मगर मेरा घोड़ा लड़खड़ा रहा था। मैं पिछड़ गया। मेरे सामने से उलान्स्की दस्ता गुज़र गया। उसके बाद तीन तोपों के साथ वोल्ख़ोव्स्की दस्ता उछलता हुआ जाने लगा। जंगल लगे पहाड़ों पर मैं अकेला रह गया। संयोग से एक घुड़सवार मिल गया, जिसने बताया कि जंगल दुश्मनों से भरा है। मैं मुड़ा। मुझे पैदल सेना के साथ जनरल मुराव्योव मिल गया। उसने एक टुकड़ी को जंगल साफ़ करने के लिए भेज दिया। ढलवाँ घाटी की ओर आते समय मैंने एक अजीब तस्वीर देखी। पेड़ के नीचे हमारा एक तातार-बेग

---

1. सेराक्सीर—तुर्की फ़ौजों का मुख्य कमांडर।

गम्भीर रूप से घायल हुआ पड़ा था। उसके पास उसका मेहबूब ज़ार-ज़ार रो रहा था। मुल्ला, घुटने टेके नमाज़ पढ़ रहा था। आख़िरी साँसें गिनता हुआ बेग ग़ज़ब के सुकून के साथ टकटकी बाँधे अपने नौजवान दोस्त को देखे जा रहा था। घाटी में क़रीब पाँच सौ क़ैदी जमा किये गये। कुछ ज़ख़्मी तुर्कों ने मुझे इशारों से बुलाया, शायद वे मुझे डॉक्टर समझकर मदद माँग रहे थे, जो मैं उन्हें नहीं दे सकता था। जंगल में से अपने ज़ख़्म को ख़ून से लथपथ चीथड़े से दबाये एक तुर्क बाहर आया। सिपाही उसे, शायद इन्सानियत के नाते, घोंपने के लिए आगे बढ़े। मगर इससे मैं बहुत हैरान हो गया; मैं उसकी हिमायत करके ज़बर्दस्ती ख़ून से लथपथ पस्त ग़रीब तुर्क को उसके साथियों के पास ले गया। उनके साथ जनरल अन्रेप था। वह दोस्ताना अन्दाज़ में उनके पाइपों से हुक़्क़ा पी रहा था, तुर्की छावनी में हैज़ा फैलने की अफ़वाहों के वावजूद। क़ैदी आपस में शान्तिपूर्वक बातें करते हुए बैठे थे। क़रीब-क़रीब सभी नौजवान थे। थोड़ी देर आराम करके हम आगे बढ़े। पूरे रास्ते में मुर्दे बिखरे पड़े थे। पन्द्रह मील के बाद मुझे नीझेगोरोद्स्की दस्ता मिला, जो चट्टानों के बीच से बहती नदी के किनारे पर रुका था। दुश्मन का पीछा कुछ और घंटों तक चलता रहा। शाम होते-होते हम घने जंगल से घिरी एक वादी में पहुँचे और आख़िरकार पिछले दो दिनों में अस्सी मील से ऊपर का सफ़र करने के बाद मैं आराम से सोया।

दूसरे दिन दुश्मन का पीछा कर रही फ़ौजों को छावनी में वापस लौटने का हुक्म मिला। यहाँ हमें पता चला कि क़ैदियों के बीच एक अर्धनारी पुरुष है। मेरे अनुरोध पर रायेव्स्की ने उसे लाने का हुक्म दिया। मैंने एक ऊँचे, काफ़ी मोटे, मुड़ी हुई नाकवाले व्यक्ति को देखा। हमने डॉक्टर की मौजूदगी में उसका निरीक्षण किया। इस आदमी का औरतों जैसा सीना था, अविकसित पुरुष जननांग था। हमने उससे पूछा कि कहीं उसे बधिया तो नहीं किया गया।

उसने जवाब दिया, "ख़ुदा ने मुझे बधिया किया है।"

यह बीमारी, जिसके बारे में हिप्पोक्रेट को मालूम था, मुसाफ़िरों के अनुसार ख़ानाबदोश तातारों और तुर्कों में पाई जाती है। इस अर्धनारी मूर्ति को तुर्की में 'होस्स' कहते हैं।

हमारी फ़ौजें कल ही जीती हुई तुर्की छावनी में खड़ी थीं। काउंट पास्केविच का तम्बू क़ैद किये गये गाकी पाशा के हरे तम्बू के निकट ही था। मैं उसके पास गया और उसे अपने अफ़सरों से घिरा पाया। वह पैरों को अपने नीचे मोड़े बैठा हुआ हुक़्क़ा पी रहा था। वह चालीस साल का दिखाई देता था। उसके ख़ूबसूरत चेहरे पर गरिमा और गहरी शान्ति थी। आत्मसमर्पण करने के वाद उसने अनुरोध किया कि उसे एक प्याला कॉफ़ी दी जाए और उससे सवाल न पूछे जाएँ।

हम घाटी में खड़े थे। सगान-लू के वर्फ़ीले और जंगलों से लदे पहाड़ पीछे छूट गये थे। हम आगे चले, दुश्मन कहीं नज़र नहीं आ रहा था। गाँव सुनसान थे।

आसपास का नज़ारा भी बड़ा दयनीय था। हमने पथरीले किनारों के बीच तेज़ी से बहते अराक्स को देखा। हस्सन-काले से पन्द्रह मील दूर सात असमान मेहराबों के ऊपर ख़ूबसूरती से बनाया गया लाजवाब पुल है। कहते हैं कि यह पुल एक दौलतमन्द चरवाहे ने बनवाया था, जो टीले की ऊँचाई पर फ़कीरों की हालत में मर गया, जहाँ दो अकेले चीड़ के पेड़ों से घिरी अभी भी उसकी क़ब्र है। आसपास के गाँवों से लोग यहाँ दुआ माँगने आते हैं। पुल को 'चबान केप्री' (चरवाहे का पुल) कहते हैं। तेब्रीज जाने के लिए रास्ता यहीं से गुज़रता है।

पुल से कुछ क़दम चलने पर कारवाँ सराय के अँधेरे भग्नावशेषों में गया। मुझे एक बीमार गधे को छोड़कर और कोई नहीं नज़र आया, जिसे भागते हुए गाँववाले छोड़ गये थे।

24 जून को सुबह हम प्राचीन क़िले हस्सन-काले पहुँचे, जिसमें कल ही राजकुमार बेकोविच रुका था। वह हमारे रात के ठिकाने से पन्द्रह मील दूर था। दूर-दूर के पड़ावों ने मुझे थका दिया। मुझे उम्मीद थी कि आराम कर सकूँगा; मगर हुआ उल्टा ही।

घुड़सवार दस्ते के प्रस्थान करने से पहले हमारे कैम्प में आर्मेनियाई आये, जो पहाड़ों में रहते थे, और माँग करने लगे कि तुर्कों से उनकी रक्षा की जाए जिन्होंने तीन दिन पहले उनके मवेशियों को भगा दिया था। जनरल अन्रेप ठीक से समझ न पाया कि वे क्या चाहते हैं, उसने सोचा कि पहाड़ों में तुर्क दस्ता है, और वह उलान्स्की दस्ते की एक स्क्वार्डन को लेकर चल पड़ा, रायेव्स्की को यह सन्देश भेजकर कि पहाड़ों में तीन हज़ार तुर्क मौजूद हैं। रायेव्स्की उसके पीछे चल पड़ा जिससे मुसीबत के समय उसकी मदद कर सके। मैंने स्वयं को नीझेगोरोद्स्की दस्ते से जुड़ा समझकर बड़े उद्विग्न मन से घोड़े को एड़ लगाई और आर्मेनियाइयों की आज़ादी के लिए निकल पड़ा। क़रीब बीस मील जाने पर हम एक गाँव में गये और कुछ पिछड़ गये घुड़सवारों को देखा, जो हाथों में नंगी तलवारें लिए तेज़ी से कुछ मुर्ग़ियों का पीछा कर रहे थे। यहाँ एक गाँववाले ने रायेव्स्की को समझाया कि बात तीन हज़ार साँड़ों की हो रही थी, जिन्हें तीन दिन पहले तुर्कों ने भगा दिया था और जिन्हें दो दिनों बाद पकड़ना काफ़ी आसान होगा। रायेव्स्की ने घुड़सवारों को मुर्ग़ियों का पीछा करने से रोका और जनरल अन्रेप को वापस लौटने का आदेश दिया। हम वापस आये और पहाड़ों से उतरकर हस्सन-काले के नज़दीक पहुँच गये। मगर इस तरह कुछ अर्मेनियाई मुर्ग़ियों की जान बचाने के चक्कर में चालीस मील का फ़ासला तय करना पड़ा, जो मुझे ज़रा भी दिलचस्प नहीं लगा।

हस्सन-काले को अर्ज़रूम का प्रवेश-द्वार समझा जाता है। शहर एक चट्टान की तलहटी में है, जिसका सिरमौर एक क़िला है। उसमें क़रीब सौ आर्मेनियाई परिवार हैं। हमारी छावनी क़िले के सामने फैले-चौड़े समतल मैदान में थी। यहाँ मैं एक गोल

पथरीली इमारत में गया, जिसमें गन्धक-लौह का गर्म पानी झरता है। गोलाकार हम्माम का व्यास तीन साझेन[1] है। मैंने दो बार तैरकर उसे पार किया और अचानक मेरा सिर घूमने लगा और जी मिचलाने लगा, बड़ी मुश्किल से मैं सोते के पथरीले किनारे पर आया। इन झरनों का पानी पूरब में काफ़ी मशहूर है, मगर अच्छे डॉक्टर न होने की वजह से, यहाँ के निवासी उनका बग़ैर सोचे-समझे, बग़ैर कोई फ़ायदा उठाये उपयोग करते हैं।

हस्सन-काले की दीवारों के नीचे मूर्त्स नदी बहती है, उसके किनारे लौह के झरनों से ढँके हैं, जो पत्थरों के नीचे से फूटकर नदी में जा मिलते हैं। उनके पानी का स्वाद उतना अच्छा नहीं है, जितना कफ़काज़ की नार्ज़ान[2] का है, और वह ताँबे जैसा प्रतीत होता है।

25 जून को सम्राट के जन्मदिन पर क़िले की दीवारों के नीचे हमारी छावनी में फ़ौजें सामूहिक प्रार्थनाएँ सुन रही थीं। काउंट पास्केविच के यहाँ भोज पर, जब सम्राट की सेहत के लिए जाम पिये जा रहे थे, काउंट ने अर्ज़रूम के अभियान का ऐलान किया। शाम के पाँच बजे फ़ौजे निकल भी पड़ीं।

26 जून को हम अर्ज़रूम से पाँच मील दूर पहाड़ों में थे। इन पहाड़ों को अक-दाग़ (सफ़ेद पहाड़) कहते हैं; वे खड़िया के हैं। सफ़ेद और रपटीली धूल से आँखों में दर्द हो रहा था; उनका ग़मगीन नज़ारा दिल में उदासी पैदा कर रहा था। अर्ज़रूम की नज़दीकी का एहसास और इस अभियान के ख़त्म होने का यक़ीन हमें कुछ तसल्ली दे रहा था।

शाम को काउंट पास्केविच आसपास की जगह का निरीक्षण करने निकला। तुर्क घुड़सवार, जो पूरे दिन हमारी चौकियों के सामने चक्कर लगा रहे थे, उन्होंने उस पर गोलियाँ बरसाना शुरू कर दिया। काउंट ने, जनरल मुराव्योव से सलाह-मशविरा जारी रखते हुए, उन्हें कई बार कोड़ों से धमकाया। उनकी गोलियों का जवाब नहीं दिया गया।

इस बीच अर्ज़रूम में भगदड़ मच गयी। सेराक्सीर ने, जो अपनी पराजय के बाद भागकर शहर में आ गया था, रूसियों की सम्पूर्ण पराजय की अफ़वाह फैला दी। उसके पीछे-पीछे आज़ाद किये गये क़ैदियों ने निवासियों को काउंट पास्केविच का सन्देश सुनाया। भगोड़ों ने सेराक्सीर का झूठ पकड़ लिया। जल्दी ही रूसियों के शीघ्र आगमन की ख़बर भी मिल गयी। लोग आत्मसमर्पण की बात करने लगे। सेराक्सीर और फ़ौजों ने मुक़ाबला करने का विचार किया। बग़ावत हो गयी। क्रुद्ध भीड़ द्वारा कुछ फ्रांसीसी मार डाले गये।

हमारे कैम्प में (26 की सुबह) प्रजा और सेराक्सीर के प्रतिनिधि आये, दिन

---

1. साझेन–दूरी नापने की इकाई जो क़रीब तीन गज (2.13 मीटर) के बराबर होती है।
2. नार्ज़ान–उत्तरी काफ़काज़ में खनिज जल का सोता, जल को भी इसी नाम से पुकारा जाता है।

ातचीत में बीता, शाम के पाँच बजे नुमाइन्दे अर्ज़रूम की ओर चले, उनके साथ थे जनरल राजकुमार बेकोविच, जो एशियाई ज़ुबानें और तौर-तरीक़े अच्छी तरह जानते थे।

दूसरे दिन सुबह हमारी फ़ौज आगे बढ़ी। अर्ज़रूम की उत्तरी दिशा में, तोप-दाग़ की चोटी पर तुर्की तोपख़ाना था। फ़ौजें उस ओर बढ़ीं, तुर्की गोलों की दनदनाहट का जवाब नगाड़ों और संगीत से देते हुए। तुर्क भाग गये और तोप-दाग़ पर हमारा क़ब्ज़ा हो गया। मैं वहाँ कवि युसिफोविच के साथ पहुँचा। छोड़े गये तोपख़ाने के पास हमें काउंट पास्केविच अपने पूरे तामझाम के साथ दिखाई दिया। पहाड़ की ऊँचाई से घाटी में दिखाई दिया अर्ज़रूम, अपने क़िले, मीनारों, हरी-हरी छतों समेत, जो एक-दूसरे पर जमाई गयी थीं। काउंट घोड़े पर था। उसके सामने ज़मीन पर तुर्की प्रतिनिधि, जो शहर की चाबियाँ लाये थे, बैठे थे मगर अर्ज़रूम में परेशानी का माहौल था। अचानक शहर के परकोटे पर आग चमकी, धुआँ उठा, और गोले उड़े तोप-दाग़ की ओर। उनमें से कुछ तो काउंट पास्केविच के सिर के ऊपर से गुज़र गये।

"देखिये कैसे हैं ये तुर्क," ...उसने मुझसे कहा, "इनका कभी भरोसा नहीं किया जा सकता।"

इसी समय राजकुमार बेकोविच, जो बातचीत के दौरान कल से अर्ज़रूम में ही था, तोप-दाग़ पर घोड़ा दौड़ाता हुआ आया।

उसने बतलाया कि सेराक्सीर और प्रजा तो कब से आत्मसमर्पण के पक्ष में है मगर कुछ अनुशासनहीन अर्नाऊत[1] तोपची—पाशा के नेतृत्व में शहर के तोपख़ाने पर क़ब्ज़ा करके विद्रोह कर रहे हैं। जनरल काउंट के पास आये और उनसे तुर्की तोपख़ाने की मुँह बन्द करने की इजाज़त माँगी। अर्ज़रूम के प्रभावशाली व्यक्तियों ने भी, जो अपने ही गोलों की आग के नीचे बैठे थे, इसका समर्थन किया। काउंट कुछ देर तक टालता रहा; आख़िरकार उसने इजाज़त दे दी, यह कहते हुए कि, "उनकी बेवक़ूफ़ी की इन्तेहा हो गयी!" फ़ौरन तोपें लाई गयीं, गोले दाग़े जाने लगे और दुश्मनों के गोले धीरे-धीरे ख़ामोश हो गये। हमारी फ़ौजें अर्ज़रूम की ओर चल पड़ीं और 27 जून को, पल्तावा के युद्ध की वर्षगाँठ पर, शाम को छह बजे अर्ज़रूम के क़िले पर रूसी झंडा फहराने लगा।

रायेव्स्की शहर में गया—मैं उसके साथ चल पड़ा, हम शहर में दाख़िल हुए, जो बड़ी अजीब-सी तस्वीर पेश कर रहा था। तुर्क अपनी समतल छतों से हमारी ओर बड़ी गम्भीरता से देख रहे थे। आर्मेनियाई सँकरे रास्तों पर शोर मचाते हुए जमा हो रहे थे। उनके बच्चे हमारे घोड़ों के सामने दौड़ रहे थे, सलीब का निशान बनाते दुहरा रहे थे : "ईसाई! ईसाई...!" हम क़िले की ओर चले, जिसमें हमारा तोपख़ाना जा रहा था; बड़े

---

1. अर्नाऊत : अल्बानियाइयों को तुर्क इस नाम से पुकारते थे।

ताज्जुब से मैंने वहाँ अपने आर्तेमी को देखा, जो शहर में सैर-सपाटे कर रहा था, बग़ैर उस कठोर आदेश की ओर ध्यान दिये, जिसमें कहा गया था कि बग़ैर ख़ास इज़ाज़त लिए कोई छावनी छोड़कर कहीं न जाए।

शहर की सड़कें सँकरी और टेढ़ी-मेढ़ी हैं। घर काफ़ी ऊँचे हैं। लोग बड़ी तादाद में थे—दुकानें बन्द थीं। शहर में क़रीब दो घंटे बिताने के बाद मैं छावनी में लौट आया; सेराक्सीर और वन्दी बनाये गये चारों पाशा वहाँ मौजूद थे। पाशाओं में से एक, सूखा-सा बूढ़ा, बेहद बातूनी, बड़ी ज़िन्दादिली से हमारे जनरलों से कुछ कह रहा था। मुझे फ्रॉक कोट में देखकर उसने पूछा कि मैं कौन हूँ। पुश्किन ने मुझे शायर का ख़िताब दिया। पाशा ने सीने पर हाथ रखकर मुझे झुककर सलाम किया, दुभाषिये की मदद से यह कहते हुए : "बड़ी मुबारक है वह घड़ी, जब मिलते हैं शायर से। शायर भाई है दरवेश का। उसका न तो कोई ख़ानदान होता है, न ही भाई बन्द; जब हम ग़रीब परेशान होते हैं नाम के लिए, हुकूमत के लिए, दौलत के लिए, वह खड़ा रहता है धरती के बादशाहों की बराबरी से और लोग उसे सलाम करते हैं।"

पाशा का यह पूरबी स्वागत हम सबको बहुत अच्छा लगा। मैं सेराक्सीर को देखने गया। उसके तम्बू में घुसते समय मैंने उसके माशूक़ छोकरे, काली आँखोंवाले चौदह बरस के लड़के को देखा, जो अर्नाऊती क़ीमती पोशाक पहने था। सेराक्सीर, सफ़ेद बालोंवाला बूढ़ा, साधारण चेहरे-मोहरेवाला, गहरे ख़यालों में खोया बैठा था। उसके नज़दीक हमारे अफ़सरों की भीड़ थी। उसके तम्बू से बाहर निकलते हुए मैंने अधनंगे नौजवान को देखा जो भेड़ की ख़ाल की टोपी पहने था, एक हाथ में मोटा डंडा लिए, कन्धों पर रोएँदार ख़ाल डाले। वह ज़ोर-ज़ोर से चीख़ रहा था। मुझे बताया गया कि वह मेरा भाई दरवेश था जो विजेताओं को सलाम करने आया था। उसे ज़बर्दस्ती वहाँ से भगाया गया।

5

अर्ज़रूम (जिसे ग़लती से अर्ज़ेरूम, एर्जरूम, एर्जरोन कहते हैं) की स्थापना लगभग सन् 415 में हुई, फ्योदोसी द्वितीय के शासनकाल में और उसे फ्योदोसीओपोल कहा जाता था। उसके नाम से सम्बन्धित कोई भी ऐतिहासिक संस्मरण नहीं है। मुझे उसके बारे में बस इतना पता चला कि गाजीबाबा[1] के कथानुसार किसी अपमान का बदला

---

1. गाजीबाबा—अंग्रेज़ी लेखक मोरियेर के उपन्यास 'इस्पानी गाजीबाबा के कारनामे का एक चरित्र' (1824-1828) यहां उस वाकये का ज़िक्र किया जा रहा है, जब पर्शियन राजदूत ने अर्ज़रूम से गुज़रते हुए उसका सामान चोरी करनेवाले, उसके साथ-साथ दौड़नेवाले सेवक को पकड़कर →

चुकाने के लिए यहाँ पर्शिया के राजदूत को इन्सान के कानों के बदले बकरी के कान भेंट किये गये थे। अर्ज़रूम एशियाई तुर्की का प्रमुख शहर है। उसकी जनसंख्या एक लाख बताई जाती है, मगर शायद यह बढ़-चढ़कर कहा गया है। यहाँ घर पत्थरों के हैं, छतें घास-फूस से ढँकी हैं, जिसके कारण ऊँचाई से देखने पर शहर बड़ा अजीब प्रतीत होता है।

यूरोप और पूरब के बीच ज़मीन के रास्ते से होनेवाला प्रमुख व्यापारी माल अर्ज़रूम से भेजा जाता है। मगर शहर में माल बहुत ही कम बेचा जाता है : उसे यहाँ खोला ही नहीं जाता, इस बात पर तुर्नफोर ने भी ग़ौर किया था, जो लिखता है कि अर्ज़रूम में एक चम्मच रूबार्ब[1] मिलना सम्भव न होने से मरीज़ मर सकता है, जबकि उसकी कई बोरियाँ शहर में पड़ी होती हैं।

'एशियाई शानोशौकत' से बढ़कर कोई और निरर्थक शब्द-रचना मुझे मालूम नहीं। शायद यह मुहावरा ईसाइयों के अभियान के समय जन्मा होगा, जब ग़रीब बाँके लड़ाकू जवान अपने महलों की नंगी दीवारें और बलूत की कुर्सियाँ छोड़कर आये और पहली बार उन्होंने देखे लाल दीवान, भड़कीले क़ालीन और रंग-बिरंगे पत्थर जड़ी-मूठोंवाले खंजर। आज तो कहना पड़ेगा; एशियाई ग़रीबी, एशियाई कमीनापन वग़ैरह, मगर शानोशौकत तो यूरोप की थाती है। अर्ज़रूम में मुँहमाँगी क़ीमत देकर भी वह चीज़ नहीं ख़रीदी जा सकती, जो प्स्कोव प्रान्त के क़स्बाई शहर की छोटी-से-छोटी दुकान में भी मिल जाती है।

अर्ज़रूम की आबोहवा सेहत के लिए अच्छी नहीं है। शहर समुद्र से सात हज़ार फ़ीट की ऊँचाई पर एक ढलान पर बसा है। इसे घेरनेवाले पहाड़ साल के ज़्यादातर दिनों में बर्फ़ से ढँके रहते हैं। धरती पर जंगल नहीं हैं, मगर वह उपजाऊ है। वह अनेक सोतों द्वारा सींची जाती है और पानी के नलों से अटी पड़ी है। अर्ज़रूम अपने पानी के लिए मशहूर है। येफ्रात शहर से सिर्फ़ तीन मील की दूरी पर बहती है। मगर हर जगह बहुत सारे फ़व्वारे हैं। हरेक के पास ज़ंजीर से बँधा लोहे का मग्गा होता है और भले मुसलमान पीते जाते हैं और तारीफ़ करते नहीं थकते। लकड़ी सगान-लू से लायी जाती है।

अर्ज़रूम के शस्त्रागार में हमें अनेक पुराने हथियार मिले—शिरस्त्राण, ढालें, तलवारें, जो शायद गॉडफ्रेड के ज़माने से ही ज़ंग खा चुकी थीं। मस्जिदें नीची और अँधेरी। शहर के बाहर क़ब्रिस्तान है। स्मारक अक्सर खम्भों जैसे हैं, जिन पर पत्थर का टोप बना है। दो तीन पाशाओं की क़ब्रें कुछ हटकर थीं, मगर उनमें कलात्मकता

→ उसके कान काटने की आज्ञा दी। नौकरों ने राजदूत को धोखा देकर आदमी के कानों के बदले बकरी के कान पेश कर दिये।

1. रूबार्ब (रेवत—चीनी) एक लता विशेष, जिसके काढ़े से दवा आदि बनाई जाती है।

ज़रा भी नहीं थी; कोई पसन्द कोई विचार...कुछ भी नहीं...एक मुसाफ़िर लिखता है कि एशिया के सारे शहरों में से सिर्फ़ अर्ज़रूम में ही उसने घंटाघर देखा, जिसकी घड़ी ख़राब हो चुकी थी।

सुल्तान द्वारा लाये गये नये क़ायदे अभी तक अर्ज़रूम में पहुँचे नहीं थे। सेनाएँ अभी अपनी रंग-बिरंगी पूरबी पोशाक ही पहनती हैं। अर्ज़रूम और कोन्स्तान्तिनोपोल में प्रतिद्वन्द्विता चलती है, ठीक वैसी ही जैसी कज़ान और मॉस्को के बीच है। यह रहीं एक व्यंग्यात्मक कविता की आरम्भिक पंक्तियाँ जिन्हें विशेष तुर्की पैदल सेना के अमीन-ओग्लू[1] ने लिखा है :

पूजते हैं काफ़िर आज स्ताम्बूल को
मगर मारेंगे, ठोकरें कल
जैसे दबायें सोये नाग को,
बढ़ जायेंगे आगे—यूँ ही उसे छोड़कर।
सो रहा दुर्भाग्य से पूर्व स्ताम्बूल
मुख मोड़ा स्ताम्बूल ने पैगम्बर से;
पुरातन उसके पूरबी सच को
कर दिया मलिन धूर्त पश्चिम ने।
पाप की मिठास की ख़ातिर स्ताम्बूल ने
दग़ा किया नमाज़ और तलवार से।
भूल गया स्ताम्बूल युद्ध का पसीना
पीता शराब इबादत की घड़ी में।

विश्वास की पाक अगन है बुझ गयी उसमें
बीवियाँ जायें उसमें क़ब्रिस्तानों में,
चौराहों पर भेजते वृद्धाओं को,
और बुलातीं वे मर्दों को हरम में
सोता रिश्वतख़ोर हिजड़ा।

मगर नहीं है ऐसा पहाड़ी अर्ज़रूम;
कई रास्तों वाला हमारा अर्ज़रूम,
सोते नहीं है हम शर्मनाक शानोशौकत में,
पीते नहीं मदमस्त प्याले से
शराब में जो है दुराचारिता, आग और शोरोगुल
रखें रोज़ा : संजीदगी से

---

1. अमीन ओग्लू—काल्पनिक पात्र है। कविता वास्तव में पूश्किन द्वारा लिखी गयी है।

पियें आबे-हयात;
बेख़ौफ़ और ख़ुशी से झूमते,
जंग में जाते बाँके जवान।
हमारे हरमों तक कोई न पहुँचे,
हिजड़े हैं ज़ालिम न हैं रिश्वतख़ोर,
बैठें बीवियाँ वहाँ सुकून से।

सेराक्सीर के महल में मैं उन कमरों में रहा, जहाँ हरम था। पूरे दिन मैं अनगिनत रास्तों से गुज़रता रहा : एक कमरे से दूसरे कमरे में, एक छत से दूसरी छत पर, एक सीढ़ी से दूसरी सीढ़ी पर। महल लूटा-खसोटा गया प्रतीत हो रहा था; सेराक्सीर भागते-भागते जो भी ले जा सकता था, ले गया। दीवान नंगे पड़े थे, कालीन निकाल लिए गये थे। जब मैं शहर में घूमता तो तुर्क मुझे बुलाकर ज़बान दिखाया करते। (वे हर विदेशी को डॉक्टर समझते।) इससे मैं उकता गया, मैं भी इसका जवाब उसी तरह देने को तैयार था। शामें मैं ज़हीन और प्यारे सूखोरुकोव[1] के साथ गुज़ारा करता, हमारे पेशों की समानता हमें नज़दीक ले आयी। वह मुझे अपनी साहित्यिक धारणाओं के बारे में बताता, अपनी ऐतिहासिक खोजों के बारे में बातें करता, जिन्हें उसने इतनी लगन से और सफलतापूर्वक आरम्भ किया था। उसकी इच्छाओं और माँगों की छोटी-सी सीमा दिल को छू लेती है। अफ़सोस होगा, अगर वे पूरी नहीं होंगी।

सेराक्सीर का महल मुसलसल ज़िन्दादिली की तस्वीर पेश कर रहा था, वहाँ जहाँ गम्भीर पाशा अपनी बीवियों और अनगिनत औलादों के बीच ख़ामोशी से बैठकर हुक़्क़ा पिया करता, वहाँ उसे पराजित करनेवाला अपने जनरलों की जीत के समाचार पा रहा था, पुरस्कार बाँट रहा था, मुहब्बत के नये क़िस्सों के बारे में बातें कर रहा था। मूश का पाशा काउंट पास्केविच के पास आकर अपने भतीजे के लिए जगह की प्रार्थना करने लगा। महल में चलते हुए यह प्रभावशाली तुर्क एक कमरे में रुका, ज़ोर-ज़ोर से कुछ शब्द बोलने के बाद सोच में डूब गया; इसी कमरे में सेराक्सीर के आदेश पर उसके पिता का सिर काट दिया गया था। ये है असली पूरबी असर! मशहूर बेय बुलात[2], कॉकेशस की बिजली, चेर्केसी गाँवों के दो नेताओं के साथ आया, जो पिछली लड़ाइयों के दौरान काफ़ी अप्रसन्न थे। उन्होंने काउंट पास्केविच के यहाँ भोजन किया। बेय बुलात पैंतीस साल का आदमी, छोटे क़द और चौड़े कन्धोंवाला

1. सूखारुकोव—वासीलि दिमित्रियेविच (1795-1841) अफ़सर, दिसम्बर क्रान्तिकारियों से उसके घनिष्ठ सम्बन्ध थे, दोन की कज़ाक सेनाओं के बारे में सामग्री एकत्रित कर रहा था।
2. बेय बुलात—कॉकेशस की विद्रोही पहाड़ी जनजातियों का सरगना, जो 1829 रूसियों के पक्ष में शामिल हो गया था।

था। वह रूसी में नहीं बोलता, या यूँ दिखाता है कि नहीं बोलता। अर्ज़रूम में उसके आगमन से मुझे बड़ी ख़ुशी हुई : पहाड़ों और कवार्दा से होकर सही सलामत जाने में उसकी बड़ी मदद मिली।

अर्ज़रूम के निकट बन्दी बनाये गये और सेराक्सीर के साथ तिफ़िलिस भेजे गये उसमान पाशा ने काउंट पास्केविच से अर्ज़रूम में छोड़े गये अपने हरम की हिफ़ाज़त करने की प्रार्थना की। शुरू के दिनों में उसके बारे में हम क़रीब-क़रीब भूल ही गये थे। एक बार खाना खाते समय दस हज़ार फ़ौजियों के मौजूद रहने के बावजूद मुसलमानी शहर की ख़ामोशी के बारे में बातें करते हुए, जहाँ एक भी बाशिन्दे ने किसी भी सिपाही के अत्याचार की शिकायत नहीं की थी, काउंट को उसमान पाशा के हरम की याद आयी और उसने अब्रामोविच महाशय को पाशा के घर जाकर उसकी बीवियों से यह पूछने की आज्ञा दी कि वे ख़ुश हैं या नहीं, और उन्हें किसी तरह की तकलीफ़ तो नहीं है। मैंने म.अ. के साथ जाने की इजाज़त माँगी। हम चल पड़े। म.अ. ने अपने साथ रूसी अफ़सर को दुभाषिये के रूप में लिया, जिसकी कहानी बड़ी अजीब है। अठारह वर्ष की उम्र में वह पर्शियनों द्वारा क़ैद कर लिया गया। उसका जननांग काट डाला गया और वह बीस वर्ष से भी अधिक समय से पाशा के लड़कों में से एक के हरम में हिजड़े का काम कर रहा है। उसने अपने दुर्भाग्य की कहानी, पर्शिया में अपने वास्तव्य की कहानी, दिल को छू लेनेवाली सादगी से बतलाई। शारीरिक दृष्टि से उसके द्वारा बताये गये तथ्य महत्त्वपूर्ण थे।

हम उसमान पाशा के घर तक आये। हमें एक खुले कमरे में ले जाया गया, जो बड़े क़रीने से सजाया गया था। रंगीन खिड़कियों के ऊपर कुरान शरीफ़ की आयतें लिखी गयी थीं। उनमें से एक मुझे मुसलमानी हरम के लिए बड़ी पेचीदा-सी लगी : *तुझे होगा जोड़ना और तोड़ना*। हमारे लिए चाँदी के प्यालों में कॉफ़ी लाई गयी। गरिमायुक्त सफ़ेद दाढ़ीवाले एक बुज़ुर्ग, उसमान पाशा के पिता, बीवियों की ओर से काउंट पास्केविच का शुक्रिया अदा करने आये—मगर म. अ. ने साफ़-साफ़ कह दिया कि उसे उसमान पाशा की बीवियों के पास भेजा गया है और वह उनसे मिलना चाहता है, जिससे कि ख़ुद उनसे यह जान सके कि अपने पति की अनुपस्थिति में वे हर चीज़ से सन्तुष्ट हैं। पर्शियन क़ैदी ने इस सबका अनुवाद किया ही था कि बुज़ुर्ग ने अप्रसन्नता से ज़बान से 'टच् टच्' करते हुए कहा कि वह हमारी इस माँग से किसी भी हालत में सहमत नहीं हो सकता और अगर पाशा को, अपनी वापसी पर, पता चलेगा कि पराये मर्दों ने उसकी बीवियों को देखा है, तो उसका, बूढ़े का, और हरम के सभी सेवकों का सिर क़लम करने का हुक्म दे देगा। सेवकों ने, जिनके बीच एक भी हिजड़ा नहीं था, बूढ़े के शब्दों का समर्थन किया, मगर म.अ. टस-से-मस नहीं हुआ।

"आप अपने पाशा से डरते हैं?" उसने उनसे कहा, "और मैं अपने सेराक्सीर से, और मैं उसकी आज्ञा की अवहेलना नहीं कर सकता।"

कोई चारा न था। हमें बग़ीचे से होकर ले जाया गया, जहाँ दो मरियल फ़व्वारे थे। हम पत्थरों की छोटी-सी इमारत के पास आये। बूढ़ा हमारे और दरवाज़े के बीच खड़ा हो गया, सावधानी से उसे खोला, हाथों से ब्योंडा थामे हुए और हमने सिर से पीले जूतों तक सफ़ेद चादर से ढँकी एक औरत को देखा। हमारे दुभाषिये ने अपना सवाल दुहराया : हमने सत्तर साल की बुढ़िया की अस्पष्ट बातें सुनीं; म.अ. ने उसे रोका।

"यह पाशा की माँ है।" उसने कहा—"मुझे बीवियों के पास भेजा गया है, उनमें से एक को लाइये। सभी काफ़िर के अनुमान से चकित रह गये; बुढ़िया चली गयी और एक मिनट बाद एक औरत के साथ आयी, जो उसी तरह आवृत्त थी जैसी कि वह स्वयं थी। घूँघट के पीछे से प्यारी युवा आवाज़ फूटी। उसने काउंट को दुःखी विधवाओं की ओर ध्यान देने के लिए धन्यवाद दिया और रूसियों के व्यवहार की प्रशंसा की।

म.अ. के पास उससे बातचीत जारी रखने की कला थी। इसी बीच मैंने अपनी चारों ओर नज़र दौड़ाते हुए अचानक दरवाज़े के ठीक ऊपर एक गोल खिड़की देखी और देखे उस गोल खिड़की में उत्सुक काली आँखोंवाले पाँच-छह गोल सिर। मैं अपनी खोज के बारे में म.अ. को बताने ही वाला था, मगर सिर झुकते रहे, आँख मारते रहे और कुछ उँगलियाँ मुझे धमकाने लगीं, यह जताते हुए कि मैं ख़ामोश रहूँ। मैं मान गया और अपनी खोज के बारे में किसी से नहीं कहा। वे सभी चेहरों से प्यारी लग रही थीं, मगर उनमें से एक भी सुन्दर नहीं थी, वह जो दरवाज़े के पास म.अ. से बातें कर रही थी, शायद हरम की प्रमुख थी, दिलों की दौलत, प्यार का गुलाब—कम-से-कम मैंने ऐसी कल्पना की।

आख़िर म.अ. ने जवाबतलबी ख़त्म की। दरवाज़ा बन्द हो गया। खिड़की के चेहरे भी ग़ायब हो गये। हमने बाग़ और घर देखा और अपनी दूतगिरी से ख़ुश होकर वापस लौटे।

इस तरह मैंने हरम देखा : यह सौभाग्य बिरले यूरोपवासी को ही प्राप्त होता था। यह रही किसी पूरबी उपन्यास के लिए पृष्ठभूमि।

लड़ाई ख़त्म हो गयी लगती थी। मैं वापसी की तैयारी करने लगा 14 जुलाई को मैं सार्वजनिक हम्माम में गया और मुझे ज़िन्दगी से बड़ी कोफ़्त हुई। मैंने गन्दी चादरों, घटिया सेवा वग़ैरह के लिए गालियाँ दीं। अर्ज़रूम के और तिफ़िलिस के हम्मामों में मुक़ाबला कैसे किया जा सकता है!

महल में लौटने पर पहरा दे रहे कोनोन्वित्सिन से पता चला कि अर्ज़रूम में हैज़ा फैल रहा है। करांटीन की सभी भयानकताओं की तस्वीर मेरे सामने खिंच गयी और

मैंने उसी दिन फ़ौज छोड़ने का इरादा कर लिया। आदत न होने से हैज़े की मौजूदगी का ख़याल बड़ा अप्रिय लगा। इस असर को ठीक-ठाक करने के लिए मैं बाज़ार में घूमने चला गया। हथियार बनाने में निपुण लुहार की दुकान के सामने रुककर मैं कोई एक खंजर देखने लगा कि तभी किसी ने अचानक मेरे कन्धे पर मारा। मैंने मुड़कर देखा : मेरे पीछे एक भयानक भिखारी खड़ा था। वह मौत की तरह सफ़ेद था; लाल-लाल सूजी हुई आँखों से आँसू बह रहे थे। मेरे दिमाग़ में फिर से हैज़े का ख़याल कौंध गया। मैंने भिखारी को एक अबूझ तिरस्कार की भावना से दूर धकेल दिया और बड़ी अप्रसन्नता से अपनी सैर से वापस लौटा।

मगर उत्सुकता ने फिर से सिर उठाया; दूसरे दिन मैं डॉक्टर के साथ उस तम्बू में गया, जहाँ हैज़े के मरीज़ पड़े थे। मैं घोड़े से नहीं उतरा और सावधानी बरतते हुए हवा की दिशा में खड़ा हो गया। तम्बू में से एक मरीज़ को बाहर लाया गया; वह एकदम विवर्ण-सा था और शराबी की तरह लड़खड़ा रहा था। दूसरा मरीज़ बेहोश पड़ा था। हैज़ा पीड़ित मरीज़ को देखकर और उसे जल्दी ही अच्छा होने का दिलासा देकर, मैंने उन दो तुर्कों पर ध्यान दिया, जो उसे हाथों का सहारा देकर बाहर लाये, उसके कपड़े उतारे, नब्ज़ देखी, जैसे कि हैज़ा जुकाम की तरह है। मानता हूँ कि इस उदासीनता को देखकर मुझे अपनी यूरोपियन भीरुता पर शर्म आयी और मैं फ़ौरन शहर लौट आया।

19 जुलाई को काउंट पास्केविच से विदा लेने आया तो मैंने उसे बड़ा दुःखी पाया। शोक समाचार प्राप्त हुआ था कि जनरल बुर्त्सोव बायबुर्त के निकट मारा गया है। वीर बुर्त्सोव के लिए मुझे बड़ा दुःख हुआ, मगर यह घटना हमारी छोटी-सी फ़ौज के लिए, जो अनजान धरती पर गहरे पैठ गयी थी और असफलता की ख़बर पाते ही विद्रोह करने पर उतारू दुश्मनों से घिरी हुई थी, आत्मघाती हो सकती थी।

इस तरह, लड़ाई दुबारा शुरू हो रही थी! ग्राफ़ ने मुझे आगामी आक्रमणों का गवाह बनने का सुझाव दिया। मगर मुझे रूस जाने की जल्दी थी...ग्राफ़ ने यादगार के तौर पर मुझे तुर्की तलवार भेंट की। वह मैंने सँभाल कर रखी है, अप्रतिम 'हीरो' के पीछे-पीछे अर्ज़रूम के जीते गये वीरान इलाक़ों की यात्रा की याद में। उसी दिन मैंने अर्ज़रूम छोड़ दिया।

मैं परिचित मार्ग से वापस तिफ़िलिस आया। वे जगहें जो कुछ ही दिन पहले पन्द्रह हज़ार सैनिकों की उपस्थिति से सजीव हो गयी थीं, अब ख़ामोश और दयनीय लग रही थीं। मैंने सगान-लू पार किया और बड़ी मुश्किल से उस जगह को पहचान पाया जहाँ हमारी सेना का लश्कर था। गुम्रा में मैंने तीन दिनों का करांटीन सहा। फिर से मैंने देखा बेज़अब्दाल और ठंडे अर्मोनिया के ऊँचे समतल मैदानों को गर्म जॉर्जिया की ख़ातिर छोड़ा। मैं तिफ़िलिस पहुँचा पहली अगस्त को। यहाँ मैं कुछ दिनों तक प्यारे और ख़ुशमिज़ाज समाज के बीच रहा। कुछ शामें जॉर्जियन संगीत और गीतों की ध्वनि

के बीच बाग़ों में बिताई। मैं आगे चला। पहाड़ों से मेरा सफ़र यादगार रहा, क्योंकि कोवी के निकट रात को मुझे तूफ़ान ने पकड़ लिया। सुबह कज़बेक के नज़दीक से जाते हुए मुझे आश्चर्यजनक नज़ारा दिखाई दिया। सफ़ेद बिखरे-बिखरे बादल पहाड़ की चोटी से फैल रहे थे और सुनसान मॉनेस्ट्री सूरज की किरणों से आलोकित, हवा में तैरती प्रतीत हो रही थी, जिसे बादल उठा ले जा रहे थे। क्रुद्ध बाल्का भी अपने विराट रूप में मुझे नज़र आया : बारिश के पानी से भर गयी खाई अपने भयानक गर्जन से तेरेक को भी मात दे रही थी। किनारे कट गये थे, विशाल पत्थर अपनी जगह से हट गये थे, और बहाव को रोक रहे थे। अनेकों ओसेतिन रास्ते की मरम्मत कर रहे थे। मैं सही-सलामत वहाँ से पार हो गया। आख़िर मैं तंग दर्रे से निकलकर वोल्शाया कबार्द के चौड़े खुले मैदानों में पहुँचा। व्लादीकाफ़काज में मुझे दोरोखोव और पुश्किन मिले। दोनों इस युद्ध में खाये ज़ख़्मों के इलाज के लिए औषधि वाले झरनों की ओर जा रहे थे। पुश्किन की मेज़ पर मुझे रूसी पत्रिकाएँ दिखाई दीं। पहला लेख, जिस पर मेरी नज़र पड़ी, मेरी एक रचना की समीक्षा थी। उसमें मुझे और मेरी कविताओं को दिल खोलकर गालियाँ दी गयी थीं। मैं उसे ज़ोर से पढ़ने लगा। पुश्किन ने मुझे यह ज़िद करते हुए रोक दिया कि मैं नक़ल उतारने के अन्दाज़ में पढ़ूँ। यह जानना उचित होगा कि समीक्षा हमारे आलोचकों की आम क्लिष्टताओं से सुसज्जित थी : यह थी एक बातचीत जो गिरजाघर के अधिकारी, प्रार्थना के लिए सफ़ेद डबल रोटी पकानेवाली औरत और प्रिंटिंग प्रेस के प्रूफ़ रीडर के बीच हो रही थी, जो इस छोटी-सी हास्य नाटिका का विश्लेषण कर रहा था। पुश्किन की ज़िद मुझे इतनी दिलचस्प लगी कि पत्रिका के लेख को पढ़कर जो अप्रसन्नता मुझ पर छा गयी थी, बिलकुल ग़ायब हो गयी और हम सच्चे दिल से ठहाके लगाने लगे।

ऐसा था प्रिय समाज में मेरा पहला स्वागत!

हुकुम की बेगम
–नवीनतम पहेलियों की किताब–

1

हुकुम की बेगम इशारा करती है
रहस्यमय दुश्मनी की ओर।
और बरसात के मौसम में
इकट्ठे होते वे
अक्सर;
जमें रहते–भगवान उन्हें माफ़ करना!–
पचास से लेकर सौ
और जीतते रहते
और लिखते जाते खड़िया से।
ऐसे, बरसात के मौसम में,
व्यस्त रहते वे, काम में।

एक बार घुड़सवार दस्ते के नारूमोव के यहाँ ताश खेली जा रही थी। सर्दियों की लम्बी रात पता ही नहीं चला, कब बीत गयी; खाना खाने बैठे सुबह पाँच बजे। जो जीते थे, दिल लगाकर खा रहे थे, दूसरे बदहवासी से अपनी-अपनी ख़ाली प्लेटों के सामने बैठे थे। मगर शैम्पेन आयी, बातचीत सजीव हो उठी और सभी उसमें हिस्सा लेने लगे।

"तुमने क्या किया सूरिन?" मेज़बान ने पूछा।

"हार गया, हमेशा की तरह! मानना पड़ेगा, कि मैं बदक़िस्मत हूँ : मिरान्दोल[1] खेलता हूँ, कभी भी अपना आपा नहीं खोता, कोई भी चीज़ मेरा ध्यान नहीं हटाती, मगर फिर भी हार ही जाता हूँ!"

"और तुम कभी लालच में नहीं पड़ते? कभी एक ही पत्ते पर रक़म नहीं लगाई?...तुम्हारी सहनशीलता मुझे चौंका देती है।"

---

1. ताश का खेल, जिसमें दो पत्तों पर छोटी-सी रक़म लगाई जाती है, जीतने पर दुगुनी रक़म लगाते हैं।

"ओर हेर्मन कैसा है?" एक मेहमान ने नवयुवक इंजीनियर की ओर इशारा करते हुए कहा, "आज तक उसने ताश को छुआ नहीं है, आज तक एक भी कोड-वर्ड नहीं कहा है, मगर पाँच बजे तक हमारे साथ बैठता है, और हमारा खेल देखता रहता है।"

"खेल में मेरी गहरी दिलचस्पी है," हेर्मन ने कहा, "मगर मैं अतिरिक्त धन पाने की आशा में, अपनी पूँजी खो देने की स्थिति में नहीं हूँ।"

"हेर्मन जर्मन है : वह बहुत सावधानी से चलता है, बस यही बात है!" तोम्स्की ने टिप्पणी की, "और अगर कोई ऐसा है, जिसे मैं समझ नहीं पाता, तो वह है मेरी दादी आन्ना फेदोतोव्ना।"

"कैसे? क्या?" मेहमान चिल्लाये।

"मैं समझ नहीं पाता," तोम्स्की ने आगे कहा, "कि मेरी दादी जुआ क्यों नहीं खेलती।"

"इसमें अजीब बात क्या है," नारुमोव ने कहा, "कि अस्सी साल की बुढ़िया ताश नहीं खेलती?"

"तो तुम्हें उसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं है?"

"नहीं! सचमुच, कुछ भी नहीं!"

"ओऽ, तो सुनिये :

"यह जानना ज़रूरी है कि मेरी दादी साठ साल पहले पेरिस गयी थी और वहाँ बड़ी लोकप्रिय थी। लोग उसके पीछे-पीछे भागते, ताकि मॉस्को की वीनस की एक झलक देख लें। रिशेल्ये[1] उसके पीछे पागल था और नानी यह यक़ीन दिलाती है कि उसकी कठोरता के कारण वह स्वयं को गोली मारते-मारते रह गया।

"उस समय महिलाएँ फराओन खेला करती थीं। एक बार वह ड्यूक ओर्लिन्स्की से बहुत बड़ी रक़म हार गयी। घर आकर दादी ने चेहरे से नक़ली तिलों को निकालते हुए और अपनी तगड़ी खोलते हुए दादा जी को अपनी हार के बारे में बताया और पैसे दे देने का हुकुम दिया।

जहाँ तक मुझे याद है, स्वर्गीय दादा जी, दादी के हरकारे जैसे थे। वह उससे ऐसे डरते थे मानो वह आग हो। मगर इतनी बड़ी रक़म हारने की बात सुनकर, वह आगबबूला हो गये। हिसाब की कॉपी लाये, उसे बताया कि छह महीनों में वे क़रीब पाँच लाख ख़र्च कर चुके हैं। जहाँ तक कि पेरिस के निकट उनके पास मॉस्को के पासवाला गाँव नहीं है, न ही सारातोव का गाँव है। उन्होंने साफ़-साफ़ पैसे देने से इनकार कर दिया। दादी ने उन्हें एक झापड़ लगाया और अपने गुस्से को प्रदर्शित करने की नीयत से अकेली सो गयी।

"दूसरे दिन उसने पति को बुलाने की आज्ञा दी इस उम्मीद से कि घरेलू सज़ा

---

1. रिशेल्ये—ल्युद्विक पन्द्रह का दरबारी, अपने प्रेम प्रकरणों के लिए प्रसिद्ध।

का उस पर असर हो गया होगा, मगर वह टस-से-मस नहीं हुए। ज़िन्दगी में पहली बार उनके सामने सफ़ाई पेश करने की और उनसे बहस करने की नौबत आयी। उसने उन्हें मनाने के बारे में सोचा। प्यार से यह साबित करने की कोशिश की कि क़र्ज़ क़र्ज़ में फ़र्क़ होता है, और राजकुमार और गाड़ी बनानेवाले में फ़र्क़ होता है। मगर कहाँ! दादा जी ने बग़ावत कर दी थी। नहीं, और बस नहीं! दादी जी समझ नहीं पाई कि किया क्या जाए?

"उनसे एक बहुत बड़े व्यक्ति का संक्षिप्त-सा परिचय था। आपने काउंट सेंट जेर्मन[1] के बारे में सुना होगा, जिसके बारे में इतनी अजीब-अजीब बातें कही जाती हैं। आप जानते हैं कि वह स्वयं को अमर यहूदी समझता था, जीवन के अमृत का और दार्शनिक पत्थर का आविष्कारक कहता था, वग़ैरह-वग़ैरह। उस पर लोग हँसा करते, जैसे किसी नीम-हकीम पर हँसते हैं, और कज़ानोवा[2] ने अपने संस्मरणों में कहा है, कि वह जासूस है; फिर भी, अपनी रहस्यमयता के बावजूद सेंट जेर्मन का व्यक्तित्व बड़ा शालीन था और समाज में सभी उसे बहुत प्यार करते थे। दादी तो अभी तक उसको बेपनाह प्यार करती है और यदि कोई उसके बारे में बदतमीज़ी से बात करे, तो गुस्सा हो जाती है। दादी को मालूम था, कि सेंट जेर्मन के पास काफ़ी धन सम्पत्ति है। उसने उससे मदद माँगने की ठान ली। उसे रुक्का लिखा और फ़ौरन अपने यहाँ आने के लिए विनती की।

"बूढ़ा सनकी फ़ौरन आ गया और उसे शोकमग्न पाया। उसने सर्वाधिक काले रंगों में पति की क्रूरता का चित्रण किया और अन्त में कहा कि वह सारी उम्मीदें उसकी दोस्ती और दया पर लगाये बैठी है।

"सेंट जर्मन सोच में डूब गया।

"मैं इतना धन आपको दे सकता हूँ," उसने कहा, "मगर जानता हूँ कि जब तक आप मुझे उसे लौटा न देंगी, आपको चैन न आयेगा, और मैं आपको नयी मुसीबत में डालना नहीं चाहता। एक और उपाय है : आप जीत सकती हैं।"

"मगर प्यारे काउंट", दादी ने जवाब दिया, "मैं आपसे कह रही हूँ कि मेरे पास पैसे बिलकुल नहीं है।"

"पैसों की ज़रूरत ही नहीं है," सेंट जेर्मन ने प्रतिवाद किया, "कृपया मेरी बात सुनिये।" और उसने वह रहस्य बताया, जिसके लिए कोई भी मुँहमाँगा दाम दे देता...

नौजवान खिलाड़ी दुगुने ध्यान से सुनने लगे। तोम्स्की ने पाइप खींचा, धुआँ छोड़ा और आगे बोला :

—उसी शाम को दादी वेर्साली में महारानी के यहाँ ताश के खेल में पहुँची।

---

1. अठारहवीं शताब्दी के अन्त का फ्रांसीसी कीमियागर और जोखिमबाज़।

2. कज़ानोवा—प्रसिद्ध इतालवी ज़ोखिमबाज़।

ड्यूक ऑर्लिन्स्की ताश फेंट रहा था, दादी ने हौले से माफ़ी माँगते हुए कहा कि क़र्ज़ की रक़म नहीं लाई, अपनी सफ़ाई में एक छोटा-सा क़िस्सा सुनाया और उसके सामने खेलने बैठ गयी। उसने तीन पत्ते चुने उन्हें एक के बाद एक चला : तीनों पत्तों ने उसे जिताया और नानी से अपना पूरा का पूरा उधार चुका दिया।

"इत्तेफ़ाक!" एक मेहमान बोला।

"क़िस्सा है!" हेर्मन ने टिप्पणी की।

"हो सकता है, निशान लगे हुए पत्ते थे।" तीसरे ने कहा।

"मैं ऐसा नहीं सोचता।" तोम्स्की ने अकड़ के साथ कहा।

"ऐसा कैसे हो सकता है।" नारूमोव ने कहा, "तुम्हारी एक दादी है, जो एक साथ तीन पत्ते बूझती है, और तुमने उससे अभी तक यह जादू नहीं सीखा?"

"हाँ, मामला टेढ़ा है!" तोम्स्की ने जवाब दिया, "उनके चार बेटे थे, जिनमें मेरे पिता भी हैं; चारों ही बड़े बुरे खिलाड़ी थे, मगर उसने एक को भी अपना रहस्य नहीं बतलाया, हालाँकि यह उनके लिए बुरा नहीं होता और मेरे लिए भी। मगर मुझे मेरे चाचा, काउंट इवान इलिच ने कुछ बतलाया—क़सम खाकर यक़ीन भी दिलाया। स्वर्गीय चाप्लीत्स्की, वही जो भयानक ग़रीबी में मरा, करोड़ों उड़ाकर, अपनी जवानी में एक बार हार गया—शायद ज़ोरिच से—क़रीब तीन लाख। वह बदहवास था। दादी को, जो नौजवानों की शरारतों के बारे में बड़ी कठोर थी, न जाने कैसे चाप्लीत्स्की पर दया आ गयी। उन्होंने उसे तीन पत्ते दिये, इस शर्त पर कि वह एक के बाद एक उन्हें चले, और उससे वचन लिया कि फिर कभी जुआ न खेलेगा। चाप्लीत्स्की अपने विजेता के पास आया; वे खेलने बैठे। चाप्लीत्स्की ने पहले पत्ते पर पचास हज़ार लगाये और जीत गया; दूसरे पत्ते पर दुगुना, तीसरे पर उसका भी दुगुना—उधार भी चुका दिया और कुछ अधिक ही जीत गया...

मगर, अब सोने का वक़्त हो गया है, पौने छह बज चुके हैं।

वाक़ई में उजाला होने लगा था : नौजवानों ने अपने-अपने जाम ख़ाली किये और बिखर गये।

2

"आपको, शायद नौकरानियाँ ही पसन्द हैं।"
"क्या करें मैडम? वे ज़्यादा तरोताज़ा होती हैं।"
—सोसाइटी की गपशप

बूढ़ी काउंटेस...अपने सिंगार कक्ष में आईने के सामने बैठी थी। तीन लड़कियाँ उसे घेरे हुए थीं। एक ने हाथ में लाली की डिबिया पकड़ रखी थी, दूसरी ने हेयर पिनों का

डिब्बा, तीसरी ने आग के रंगों के रिबनवाली ऊँची टोपी। काउंटेस को अपनी बहुत पहले मुरझा चुकी जवानी के बारे में कोई ख़ुशफ़हमी नहीं थी, मगर उसने युवावस्था की सारी आदतें बरक़रार रखी थीं। सत्तर के दशक के फ़ैशन का कड़ाई से पालन करती और सिंगार-पटार में उतना ही समय लगाती, जितना साठ साल पहले लगाया करती थी। खिड़की के पास हाथों में फ्रेम लिए एक युवती बैठी थी, जिसका उसने पालन-पोषण किया था।

"नमस्ते, दादी माँ," अन्दर आते हुए नौजवान अफ़सर ने कहा, "नमस्ते, मैडम लीज़ा। दादी माँ, मैं आपके पास एक प्रार्थना लेकर आया हूँ।"

"क्या बात है, पॉल?"

"मुझे अपने एक दोस्त का आपसे परिचय कराने की और उसे आपके यहाँ शुक्रवार को नृत्योत्सव में लाने की आज्ञा दें।"

"उसे सीधे बॉल-नृत्य में ही ले आना और वहीं उसका तआर्रुफ़ भी करा देना। कल तुम XX के यहाँ गये थे?"

"क्या कहती हैं! बड़ा मज़ा आया, सुबह के पाँच बजे तक नाचते रहे। एलेत्स्काया कितनी अच्छी लग रही थी!"

"और, मेरे प्यारे! उसमें क्या अच्छी बात है? ऐसी ही थी उसकी दादी, राजकुमारी दार्या पेत्रोव्ना?...हो सकता है; मैं सोचती हूँ, अब वह बहुत बूढ़ी हो गयी होगी, राजकुमारी दार्या पेत्रोव्ना?"

"बूढ़ी कैसे हो गयी होगी?" तोम्स्की ने असावधानी से उत्तर दिया, "वह तो सात साल पहले ही मर गयी।"

जवान लड़की ने सिर उठाया और नौजवान की ओर देखकर इशारा किया। उसे याद आया कि बूढ़ी काउंटेस से उसकी हमउम्र सहेलियों की मृत्यु की ख़बर छिपाई जाती है, और उसने अपना होंठ काट लिया। मगर काउंटेस ने वह बात जो उसके लिए नयी थी, बड़ी उदासीनता से सुनी।

"मर गयी!" उसने कहा, "और मुझे मालूम ही नहीं! हमें एक साथ ही साम्राज्ञी की सेवा में उपस्थित किया गया था, और जब हमें पेश किया गया, तो साम्राज्ञी..." और काउंटेस ने सौवीं बार पोते को अपना चुटकुला सुनाया।

"अच्छा पॉल," उसने फिर कहा, "अब मेरी उठने में मदद करो। लिजांका, मेरी नसवार की डिबिया कहाँ है?"

और काउंटेस अपनी नौकरानियों के साथ अपना साज़-सिंगार पूरा करने के लिए परदों के पीछे चली गयी। तोम्स्की युवती के साथ अकेला रह गया।

"आप यह किसका परिचय करवाना चाहते हैं?" लिजावेता इवानोव्ना ने हौले से पूछा।

"नारूमोव का। क्या आप उसे जानती हैं?"

"नहीं! वह फ़ौजी है या सरकारी अफ़सर?"

"फ़ौजी।"

"इंजीनियर?"

"नहीं, अश्वारोही। और आपने यह क्यों सोच लिया कि वह इंजीनियर है?"

"युवती मुस्कुरा दी, उसने कुछ भी नहीं कहा।"

"पॉल!" परदे के पीछे से काउंटेस चिल्लाई, "मेरे लिए कोई नया उपन्यास भेज देना, सिर्फ़, यह देखना कि वह आधुनिक न हो।"

"क्या मतलब, दादी माँ?"

"मतलब कि ऐसा उपन्यास, जहाँ हीरो न तो बाप का, न ही माँ का गला दबाये और जहाँ डूबी हुई लाशें न हों। मुझे डूबकर मरनेवालों से बहुत डर लगता है!"

"आजकल ऐसे उपन्यास नहीं होते। कहीं आपको रूसी उपन्यास तो नहीं चाहिए?"

"क्या रूसी उपन्यास होते हैं?...भेजो, मेरे लाडले, मेहरबानी करके, भेजो!"

"माफ़ कीजिए, दादी माँ; मैं जल्दी में हूँ...माफ़ करना लिज़ावेता इवानोव्ना! आपने ऐसा क्यों सोचा कि नारूमोव इंजीनियर है?"

और तोम्स्की सिंगार-कक्ष से बाहर निकल गया।

लिज़ावेता इवानोव्ना अकेली रह गयी : उसने काम करना बन्द कर दिया और खिड़की से बाहर देखने लगी। जल्दी ही सड़क के एक ओर, नुक्कड़वाले मकान के पीछे से एक नौजवान अफ़सर दिखाई दिया। उसके गालों पर लाली छा गयी : उसने फिर से काम करना आरम्भ कर दिया और सिर को कढ़ाई करनेवाली फ्रेम के एकदम ऊपर झुका लिया। इसी समय काउंटेस अन्दर आयी, पूरी तरह तैयार होकर।

"हुक्म दो, लिज़ांका," उसने कहा, "गाड़ी तैयार करने का, और हम घूमने चलेंगे।"

लिज़ांका कढ़ाई करना छोड़कर उठ गयी और अपना सामान समेटने लगी।

"क्या है, मेरी माँ! बहरी है क्या!" काउंटेस चीख़ी, "जल्दी से गाड़ी लगाने को कहो।"

"अभी लीजिए!" युवती ने धीमे से जवाब दिया और बाहरी-कक्ष की ओर भागी।

नौकर ने आकर काउंटेस को राजकुमार पावेल अलेक्सान्द्रोविच द्वारा भेजी गयी किताबें दीं।

"अच्छा! शुक्रिया कहो।" काउंटेस ने कहा, "लिज़ांका, लिज़ांका! कहाँ भाग रही हो?"

"कपड़े बदलने।"

"बदल लोगी, माँ! यहाँ बैठ। पहला खंड खोल, ज़ोर से पढ़..."

युवती ने किताब ले ली और कुछ पंक्तियाँ पढ़ीं।

"ज़ोर से!" काउंटेस ने कहा, "तुझे क्या हो गया है, मेरी अम्मा? आवाज़ बन्द हो गयी है क्या?...रुक : मेरे नज़दीक बेंच खिसका...हाँ!"

लिज़ावेता इवानोव्ना ने और दो पृष्ठ पढ़े। काउंटेस जम्हाइयाँ लेने लगी।

"फेंक इस किताब को।" उसने कहा, "क्या बकवास है! इसे वापस राजकुमार पावेल को भेजकर धन्यवाद दे दे...तो गाड़ी कहाँ है?"

"गाड़ी तैयार है।" लिज़ावेता इवानोव्ना ने सड़क की ओर देखकर कहा।

"तुमने अभी तक कपड़े क्यों नहीं पहने?" काउंटेस ने कहा, "हमेशा तेरा इन्तज़ार करना पड़ता है! मेरी माँ, यह, बर्दाश्त नहीं होता।"

लिज़ा अपने कमरे की ओर भागी। दो मिनट भी नहीं बीते होंगे कि काउंटेस अपनी पूरी ताक़त से घंटी बजाने लगी। तीन लड़कियाँ एक दरवाज़े से भागकर आयीं और दूसरे से आया नौकर।

"क्या है यह, बुलाने पर भी नहीं आती हो।" काउंटेस ने उनसे कहा। "लिज़ावेता इवानोव्ना से कहो कि मैं उसका इन्तज़ार कर रही हूँ।"

लिज़ावेता इवानोव्ना ढीली-ढाली घर की पोशाक और टोपी पहनकर आयी।

"आख़िर आ ही गयी, अम्मा मेरी!" काउंटेस ने कहा, "क्या सिंगार किया है! यह किसलिए?...किसको लुभाना है?...और मौसम कैसा है?—शायद हवा चल रही है।"

"बिलकुल नहीं महोदया। बड़ा ख़ामोश मौसम है!" नौकर ने जवाब दिया।

"तुम लोग तो जो मुँह में आये बक देते हो। झरोखा खोलो। ऐसा ही है : हवा! और बेहद ठंडी। गाड़ी को वापस भेज दो। लिज़ावेता इवानोव्ना हम नहीं जाएँगे, सजने-सँवरने की कोई ज़रूरत नहीं थी।"

"तो यह है मेरी ज़िन्दगी!" लिज़ावेता इवानोव्ना ने सोचा।

वाक़ई में लिज़ावेता इवानोव्ना बड़ी अभागी लड़की थी। पराई रोटी कड़वी होती है, दान्ते कहता है, और पराई ड्योढ़ी की सीढ़ियाँ सख़्त होती हैं, मगर पराधीनता का दुःख मशहूर बुढ़िया की इस ग़रीब आश्रित लड़की के अलावा और कौन समझ सकता है? काउंटेस...बेशक, बुरे दिलवाली नहीं थी; मगर मनमौजी थी, जैसी सोसाइटी द्वारा सिर चढ़ाई गयी महिलाएँ होती हैं, कंजूस थी, निष्ठुर स्वार्थ में डूबी हुई, जैसे वे सभी बूढ़े लोग, जो अपने ज़माने में प्यार लुटा चुके हैं और वर्तमान से अनभिज्ञ रहते हैं। वह ऊँची सोसाइटी के सभी कार्यकलापों में हिस्सा लेती थी, बॉल-नृत्यों में घिसटती हुई ले जाई जाती, जहाँ एक कोने में बैठी रहती, लाली पोते, पुराने फ़ैशन की वेशभूषा

किये, मानों नृत्य के हाल की एक भौंड़ी-सी और अनिवार्य सजावट हो। उसके पास सभी आमन्त्रित आकर झुक-झुककर अभिवादन करते, जैसे कि यह एक प्रथा हो, और उसके बाद कोई भी उसकी ओर ध्यान नहीं देता। अपने यहाँ वह पूरे शहर को बुलाया करती, शिष्टाचार का कड़ाई से पालन करती और चेहरे से किसी को भी न पहचानती। उसके असंख्य नौकर-चाकर, उसके प्रवेश-कक्ष तथा लड़कियों के कमरे में चर्बी चढ़ाते और बाल पकाते हुए मनमानी करते। मरणासन्न बुढ़िया को लगातार लूटते जाते। लिज़ावेता इवानोव्ना घर की पीड़ा सहनेवाली थी। वह प्याले में चाय डालती और शक्कर की बरबादी के लिए डाँट खाती; वह ज़ोर से उपन्यास पढ़ती और लेखक की सभी ग़लतियों के लिए दोषी ठहराई जाती। वह काउंटेस के साथ सैर पर जाती और मौसम तथा सड़क की हालत के लिए ज़िम्मेदार ठहराई जाती। उसकी कोई तनख़्वाह नियत की गयी थी, जिसे कभी भी पूरी तरह नहीं दिया जाता था; और इस पर भी उससे यह उम्मीद की जाती कि वह उसी तरह की पोशाकें पहने जैसे सभी, यानी कि कुछ ही लोग, पहना करते हैं। सोसाइटी में तो उसकी भूमिका बहुत ही दयनीय थी। उसे सभी जानते थे और कोई भी उस पर ध्यान न देता था; बॉल-नृत्यों में वह तभी नृत्य करती, जब किसी के साथ पार्टनर न होता और महिलाएँ तो उसे हर बार अपने साथ घसीटकर प्रसाधन-कक्ष में ले जातीं, जब उन्हें अपने बनाव-सिंगार में कुछ ठीक करना होता। वह स्वाभिमानी थी, अपनी परिस्थिति को अच्छी तरह समझती थी और अपनी आँखें खुली रखती थी, बड़ी बेताबी से किसी मुक्तिदाता का इन्तज़ार करते हुए। मगर अपनी झूठी प्रसिद्धि के प्रति सतर्क नौजवान उसकी ओर ध्यान न देते, हालाँकि लिज़ावेता इवानोव्ना उन बेशर्म और निष्ठुर युवतियों की तुलना में सौ गुना अधिक सुन्दर थी, जिनके चारों ओर वे मँडराते रहते। कितनी बार, हौले से, उकताहट भरे और शानदार मेहमानख़ाने को छोड़कर वह अपने दयनीय कमरे मे आँसू बहाने चली जाती, जहाँ काग़ज़ जड़ा पार्टीशन, अलमारी, छोटा-सा आईना और रँगी हुई खटिया थी और जहाँ ताँबे के शमादान में चर्बी की मोमबत्ती उदासी से जलती रहती।

एक बार—यह हुआ था उस शाम के दो दिन बाद, जिसका वर्णन इस कहानी के आरम्भ में किया गया है, और उस दृश्य के एक हफ़्ता पहले जहाँ हम रुके थे, एक बार लिज़ावेता इवानोव्ना ने, फ्रेम लिए खिड़की के पास बैठे-बैठे, अचानक सड़क की ओर नज़र डाली और देखा एक युवा इंजीनियर को, जो बिना हिले-डुले खड़ा था तथा उसकी खिड़की की ओर देखे जा रहा था। उसने सिर झुकाया और फिर से काम में व्यस्त हो गयी। पाँच मिनट बाद उसने फिर देखा नौजवान अफ़सर उसी जगह पर खड़ा था। राह चलते अफ़सरों के साथ छिछोरापन करने की आदत न होने के कारण उसने सड़क की ओर देखना बन्द कर दिया और क़रीब दो घंटे तक बिना सिर उठाये

सिलाई करती रही। भोजन परोसा गया। वह उठी, अपना सामान समेटने लगी और, यूँ ही सड़क की ओर देखा तो फिर से अफ़सर को पाया। उसे यह बड़ा अजीब लगा। भोजन के बाद वह खिड़की की ओर कुछ परेशान भाव से गयी, मगर अफ़सर अब वहाँ नहीं था, और वह उसके बारे में भूल गयी...

दो दिन बाद, काउंटेस के साथ गाड़ी में बैठने के लिए बाहर निकलते हुए, उसने फिर से उसे देखा। वह दरवाज़े के पास ही खड़ा था, अपना चेहरा ऊदबिलाव की तरह कॉलर में छिपाये, टोपी के नीचे से उसकी काली आँखें चमक रही थीं। लिज़ावेता इवानोव्ना न जाने क्यों डर गयी और एक अस्पष्ट धड़कन लिए गाड़ी में बैठ गयी।

घर लौटने पर वह खिड़की की ओर भागी, अफ़सर पहलेवाली जगह पर खड़ा था, उसकी ओर टकटकी लगाकर देखते हुए। उत्सुकता तथा अपने लिए सर्वथा नयी भावना से परेशान होते हुए वह दूर हट गयी।

उस समय से एक भी दिन ऐसा न बीता कि नौजवान, नियत समय पर, उनके घर की खिड़की के नीचे प्रकट न हुआ हो। उनके बीच एक अनकहा रिश्ता बन गया। अपनी जगह पर बैठे-बैठे काम करते हुए वह उसकी निकटता को महसूस करती, सिर उठाती, उसे हर दिन अधिकाधिक देर तक देखने लगी। नौजवान शायद इसके लिए उसका आभारी था : अपनी पैनी जवाँ नज़र से वह देख लेती कि हर बार जब उनकी नज़रें मिलतीं, उसके विवर्ण गालों पर फ़ौरन लाली छा जाती। एक सप्ताह बाद वह उसकी ओर देखकर मुस्कुराई...

जब तोम्स्की ने काउंटेस से अपने दोस्त का परिचय करवाने की इजाज़त माँगी, तो बेचारी ग़रीब लड़की का दिल ज़ोर से धड़कने लगा। मगर यह जानकर कि नारूमोव इंजीनियर नहीं, अपितु घुड़सवार सेना का अफ़सर है, उसे अफ़सोस हुआ कि इस धृष्ट सवाल से उसने छैले तोम्स्की के सामने अपना भेद खोल दिया है।

हेर्मन रूस में बस गये जर्मन का बेटा था, जिसने उसके लिए थोड़ी-सी पूँजी छोड़ी थी। अपनी आत्मनिर्भरता को पुख़्ता बनाने की आवश्यकता में दृढ़ विश्वास होने के कारण हेर्मन ब्याज़ को हाथ तक नहीं लगाता था, सिर्फ़ अपने वेतन पर ही गुज़ारा किया करता, छोटे-से-छोटा शौक़ भी पूरा न करता। मगर वह छुपा रुस्तम था, अपनी इज़्ज़त उसे प्यारी थी और उसके साथियों को उसकी अत्यधिक सतर्कता का मज़ाक़ उड़ाने का मौक़ा बिरले ही मिलता था। उसकी महत्त्वाकांक्षा अदम्य थी और कल्पना प्रबल, मगर दृढ़ता ने उसे जवानी की आम भटकनों से बचाये रखा था। इसलिए, मिसाल के तौर पर दिल से एक खिलाड़ी होते हुए भी, उसने हाथों में कभी ताश नहीं लिए थे, क्योंकि वह यह समझता था कि उसकी परिस्थितियाँ उसे इजाज़त नहीं देतीं कि (जैसा वह कहता था) *अधिक पाने की इच्छा में ज़रूरी आवश्यकताओं की क़ुर्बानी दी जाए*—मगर, साथ ही पूरी-पूरी रात वह जुए की मेज़ों पर बैठा-बैठा बड़ी उत्तेजना

के साथ खेल की नयी-नयी चालों का निरीक्षण किया करता।

तीन पत्तोंवाले मज़ाक़ ने उसकी कल्पना शक्ति पर गहरा असर किया और पूरी रात वह उसके दिमाग़ से नहीं निकला। "क्या बात हो, अगर," दूसरे दिन शाम को पीटर्सबुर्ग की सड़कों पर टहलते हुए उसने सोचा, "क्या बात हो, अगर बूढ़ी काउंटेस अपना भेद मुझ पर खोल दे! या फिर मुझे वे तीन विश्वसनीय पत्ते बता दे! अपनी क़िस्मत क्यों न आज़मायी जाए?...उसके सामने जाऊँ, उसका कृपापात्र बन जाऊँ—हो सकता है, उसका प्रेमी बन जाऊँ, मगर इस सबके लिए ज़रूरत है वक़्त की—और वह तो सत्तासी साल की है—वह एक सप्ताह बाद मर सकती है—दो दिन बाद भी!...हाँ और वह मज़ाक़?...क्या उस पर भरोसा किया जाए?...नहीं! मितव्ययता, संयम और परिश्रम के प्रति प्रेम : यही तीन मेरे विश्वसनीय पत्ते हैं, यही तिगुना, सात गुना करेंगे मेरी पूँजी को और मुझे चैन तथा आत्मनिर्भरता देंगे!"

इस तरह से तर्क करते हुए वह पीटर्सबुर्ग की एक मुख्य सड़क पर एक प्राचीन वास्तुकला के अनुसार बनाये गये घर के सामने आया। सड़क पर कई गाड़ियाँ थीं, गाड़ियों की एक क़तार जगमगाते दरवाज़े की ओर जा रही थी। गाड़ी में से हर पल कभी किसी युवा सुन्दरी का सुडौल पाँव, तो कभी चरमराता फ़ौजी जूता, कभी धारियोंवाला मोजा और राजदूत का जूता नज़र आता। शानदार दरवान के निकट से फर कोट और बरसातियाँ गुज़र जातीं। हेर्मन रुक गया।

"यह किसका घर है?" उसने नुक्कड़वाले सन्तरी से पूछा।

"काउंटेस XX का।" सन्तरी ने जवाब दिया।

हेर्मन काँप गया। उसके ख़यालों में फिर से वह चामत्कारिक चुटकुला घूम गया। वह उस घर की गृहस्वामिनी तथा उसकी विचित्र योग्यता के बारे में सोचता हुआ उसके आसपास चक्कर लगाने लगा। देर रात गये वह अपने छोटे-से बसेरे में वापस लौटा; काफ़ी देर तक सो न सका, और जब नींद उस पर हावी हुई, तो उसे सपने में दिखाई दिये ताश के पत्ते, हरी मेज़, नोटों की गड्डियाँ और सिक्कों के ढेर। वह एक के बाद एक पत्ता खेलता जा रहा था, दृढ़ता से दाँव लगाता, लगातार जीत रहा था और अपने पास सोने के सिक्के खींच लेता, नोटों को जेब में रख लेता। देर से उठने पर, उसने अपनी काल्पनिक दौलत के खो जाने के कारण आह भरी। फिर से शहर में टहलने के लिए निकल पड़ा और दुबारा काउंटेस XX के घर के सामने पहुँच गया। एक अज्ञात शक्ति, शायद उसे उसकी ओर खींच रही थी। वह रुक गया और खिड़कियों की ओर देखने लगा। एक में उसने काले बालोंवाला, झुका हुआ—शायद किसी किताब पर या क़सीदाकारी पर—सिर देखा। सिर ऊपर उठा। हेर्मन ने एक ताज़ा तरीन चेहरा और काली आँखें देखीं। इसी क्षण ने उसके भाग्य का फ़ैसला कर दिया।

3

जितनी देर में मैं एक पृष्ठ पढ़ता हूँ, मेरे फ़रिश्ते,
उससे चौगुनी रफ़्तार से आप मुझे लिखती हैं।

—पत्र-व्यवहार

लिज़ावेता इवानोव्ना ने अपना चोगा और टोपी उतारी ही थी कि काउंटेस ने उसे फिर से बुला भेजा और दुबारा गाड़ी तैयार करने की आज्ञा दी। वे गाड़ी में बैठने लगीं। उसी समय, जब दो नौकरों ने बुढ़िया को उठाकर गाड़ी के दरवाज़े में घुसाया, लिज़ावेता इवानोव्ना ने गाड़ी के पहिये के पास अपने इंजीनियर को देखा। उसने उसका हाथ पकड़ लिया; वह डर के मारे अपनी सुध-बुध खो बैठी, नौजवान ग़ायब हो गया; ख़त उसके हाथ में रह गया। उसने वह दस्ताने के पीछे छिपा लिया और पूरे रास्ते न कुछ देखा, न सुना। काउंटेस को गाड़ी में हर घड़ी सवाल पूछने की आदत थी : "यह हमसे कौन मिला था?" "इस पुल का नाम क्या है?" "उस पोस्टर पर क्या लिखा है?" लिज़ावेता इवानोव्ना आनन-फ़ानन में ग़लत-सलत जवाब दिये जा रही थी और उसने काउंटेस को गुस्सा दिला दिया।

"तुझे क्या हो गया है, अम्मा मेरी! ये बुत क्यों बन गयी है? तू मेरी बात क्या सुन नहीं रही या फिर समझ नहीं रही है?...हे भगवान, मैं तुतलाती नहीं हूँ और अभी मेरा दिमाग़ भी नहीं फिरा है!"

लिज़ावेता इवानोव्ना उसकी बात सुन ही नहीं रही थी। घर लौटने पर वह अपने कमरे में भागी, दस्ताने में से ख़त निकाला; वह सीलबन्द नहीं था। लिज़ावेता इवानोव्ना ने उसे पढ़ा। ख़त में प्यार का इज़हार किया गया था; वह बड़ी नज़ाकत से लिखा गया था, उसका हरेक शब्द ईमानदारी से किसी जर्मन उपन्यास से लिया गया था। मगर लिज़ावेता इवानोव्ना को जर्मन नहीं आती थी और वह ख़त पढ़कर बहुत खुश हुई।

मगर इस ख़त ने उसे बहुत परेशान कर दिया। पहली बार वह किसी जवान आदमी से गुप्त, घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने जा रही थी। उसकी धृष्टता ने उसे डरा दिया। उसने स्वयं को असावधान रहने के लिए कोसा और यह न जान पाई कि अब क्या किया जाए : "क्या खिड़की के पास बैठना बन्द कर दे और उदासीनता से जवान अफ़सर को आगे बढ़ने से हतोत्साहित कर दे?" "क्या उसे जवाब भेजा जाए?" "क्या रूखाई और दृढ़ता से जवाब दिया जाए?" उसे सलाह देनेवाला कोई न था, उसकी न तो कोई सहेली थी, न ही संरक्षिका। लिज़ावेता इवानोव्ना ने जवाब देने का निश्चय किया।

वह लिखने की मेज़ पर बैठी, फिर उसने क़लम उठाई, काग़ज़ लिया और

सोचने लगी। कई बार उसने ख़त शुरू किया, और उसे फाड़ दिया : कभी उसे ख़त के भाव बड़े नाज़ुक प्रतीत होते, तो कभी काफ़ी कठोर। आख़िरकार उसने कुछ पंक्तियाँ लिखीं, जिनसे उसे सन्तोष हुआ।

"मुझे यक़ीन है।" उसने लिखा, "कि आपके इरादे नेक हैं और आप अपने बेसमझे-बूझे आचरण से मुझे अपमानित करना नहीं चाहते थे; मगर हमारा परिचय इस तरह न होना चाहिए था! आपका ख़त आपको लौटा रही हूँ और उम्मीद करती हूँ, कि आगे से मुझे अकारण बदतमीज़ी पर शिकायत करने का मौक़ा न मिलेगा।"

दूसरे दिन हेर्मन को आते देखकर, लिज़ावेता इवानोव्ना फ्रेम छोड़कर उठी, हाल में आयी, झरोखा खोला और जवान अफ़सर की फुर्ती पर भरोसा करते हुए सड़क पर ख़त को फेंक दिया। हेर्मन भागकर निकट आया, उसे उठाया और कनफ़ेक्शनरी की दुकान में घुस गया। सील फाड़कर, उसने अपना ख़त और लिज़ावेता इवानोव्ना का जवाब पाया। उसे यही उम्मीद थी और वह अपने षड्यन्त्र के बारे में सोचते हुए घर लौटा।

इसके तीन दिन बाद फ़ैशन की दुकान से एक जवान, चंचल आँखोंवाली मैडम लिज़ावेता इवानोव्ना के लिए एक रुक्का लाई। बिल चुकाने की माँग की आशंका करते हुए लिज़ावेता इवानोव्ना ने परेशानी से उसे खोला और अचानक हेर्मन की लिखाई को पहचान लिया।

"प्यारी, तुम ग़लती कर रही हो।" उसने कहा, "यह रुक्का मेरे लिए नहीं है।"

"नहीं, बिलकुल आप ही के लिए है।" उस ढीठ लड़की ने अपनी शरारत भरी मुस्कान न छिपाते हुए जवाब दिया, "कृपया पढ़ लीजिए!"

लिज़ावेता इवानोव्ना ने जल्दी से चिट्ठी पढ़ी। हेर्मन ने मिलने की माँग की थी।

"ऐसा नहीं हो सकता!" लिज़ावेता इवानोव्ना ने इस माँग के उतावलेपन और इसके लिए इस्तेमाल किये गये तरीक़े से घबराकर कहा, "यह, बिलकुल, मेरे लिए नहीं लिखा गया है!" और उसने ख़त के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

"अगर ख़त आपके लिए नहीं है तो आपने उसे फाड़ क्यों दिया?" मैडम बोली, "मैं उसे वापस कर देती, जिसने इसे भेजा है।"

"मेहरबानी से, प्यारी!" लिज़ावेता इवानोव्ना ने उसकी टिप्पणी से भड़कते हुए कहा, "आगे से मेरे पास कोई चिट्ठी-विट्ठी न लाना। और उससे, जिसने तुम्हें भेजा है, कहना कि उसे शर्म आनी चाहिए..."

मगर हेर्मन हताश न हुआ। लिज़ावेता इवानोव्ना को हर रोज़ किसी-न-किसी तरीक़े से उसके ख़त मिला करते। अब वे जर्मन से अनुवादित न होते थे। हेर्मन ख़ुद ही उन्हें लिखता, लालसा से उत्तेजित होकर और उस भाषा में लिखता, जो उसकी अपनी थी : उनमें होती थी उसकी इच्छाओं की दृढ़ता और उसकी बेलगाम कल्पना

की बेतरतीबी। लिज़ावेता इवानोव्ना अब उन्हें वापस भेजने के बारे में न सोचती : वह उनमें सराबोर हो जाती; वह उनके जवाब देने लगी, और उसके ख़त हर दिन अधिकाधिक लम्बे और नज़ाकत भरे होने लगे। अन्त में उसने खिड़की से उसकी ओर यह ख़त भेजा :

"आज XX के राजदूत के यहाँ बॉल-नृत्य है। काउंटेस वहाँ जाएँगी। हम दो बजे तक वहाँ रहेंगे। यह मौक़ा है आपके लिए मुझसे अकेले में मिलने का। जैसे ही काउंटेस जाएँगी, उसके नौकर-चाकर, शायद, इधर-उधर हो जायेंगे। ड्योढ़ी में रहेगा, दरबान, मगर वह भी अक्सर अपने कमरे में चला जाता है। साढ़े ग्यारह बजे आइए। सीधे सीढ़ियाँ चढ़ जाइए। अगर प्रवेश-कक्ष में कोई मिल गया, तो पूछिए कि क्या काउंटेस घर पर हैं! आपसे कहा जाएगा, "नहीं।" और तब कुछ न किया जा सकेगा। आपको वापस लौट जाना पड़ेगा। मगर, शायद आपको कोई न मिले। लड़कियाँ अपने कमरे में होती हैं, सभी एक कमरे में। प्रवेश-कक्ष से बायें मुड़ जाइए, सीधे काउंटेस के शयन-कक्ष तक आइए। शयन-कक्ष में परदे के पीछे दो छोटे-छोटे दरवाज़े देखेंगे, दायें है अध्ययन-कक्ष, जहाँ काउंटेस कभी भी नहीं जातीं; बायें, गलियारे में, और वहीं एक छोटी-सी तंग घुमावदार सीढ़ी है : वह मेरे कमरे में आती है।"

हेर्मन बेचैन हो रहा था, शेर की तरह, नियत समय का इन्तज़ार करते हुए। दस बजे वह काउंटेस के घर के सामने खड़ा था। मौसम बड़ा ख़तरनाक था : हवा चिंघाड़ रही थी, गीली बर्फ़ के फाहे गिर रहे थे; बत्तियाँ धुँधली-धुँधली चमक रही थीं; रास्ते ख़ाली थे। कभी-कभी अपनी मरियल घोड़ीवाली बग्घी को लिए, किराये का कोई कोचवान देर से जानेवाली सवारी को ढूँढ़ते हुए गुज़रता। हेर्मन ने सिर्फ़ एक फ्रॉक कोट पहना था, न तो वह हवा महसूस कर रहा था, न ही बर्फ़। आख़िरकार काउंटेस की गाड़ी लगाई गयी। हेर्मन ने देखा कि नौकर हाथों का सहारा देकर झुकी हुई कमरवाली बुढ़िया को, जो सेबल का कोट पहने थी, लाये और कैसे उसके पीछे-पीछे ठंडी बरसाती पहने, ताज़े फूलों को सिर में लगाये उसकी आश्रिता दिखाई दी। दरवाज़े बन्द हो गये। नर्म बर्फ़ पर गाड़ी कठिनाई से आगे बढ़ी। दरबान ने दरवाज़े बन्द कर दिये। खिड़कियों में अँधेरा छा गया। हेर्मन सुनसान घर के चारों ओर चहलक़दमी करने लगा; वह बत्ती के पास आया घड़ी देखी—ग्यारह बजकर बीस मिनट हुए थे। वह बत्ती के नीचे ही खड़ा रहा, घड़ी की सुइयों पर नज़र गड़ाये और बाक़ी बचे मिनटों के ख़त्म होने का इन्तज़ार करते हुए।

ठीक साढ़े ग्यारह बजे हेर्मन काउंटेस के घर का दरवाज़ा लाँघकर जगमगाती ड्योढ़ी में आया। दरबान नहीं था। हेर्मन भागकर सीढ़ियों पर चढ़ा, प्रवेश-कक्ष का दरवाज़ा खोला और नौकर को देखा, जो लैम्प के नीचे सोया था, पुरानी, धब्बेदार कुर्सियों पर। हल्के मगर दृढ़ क़दमों से वह उसके निकट से गुज़रा। हाल और

मेहमानख़ाने में अँधेरा था। प्रवेश-कक्ष से यहाँ पर हल्की रोशनी आ रही थी। हेर्मन शयन-कक्ष में घुसा। पुरानी प्रतिमाओं से अटे पड़े आले के सामने सोने का लैम्प जल रहा था। बदरंग भारी कपड़े से मढ़ी कुर्सियाँ और रोयेंदार तकियोंवाले सोफ़े, जिनका सुनहरा रंग उतर चुका था, चीनी काग़ज़ चिपकाई गयी दीवारों के पास एक दयनीय-सी तरतीब में रखे हुए थे। दीवार पर दो चित्र लटके हुए थे, पेरिस की मैडम लेब्रेन द्वारा बनाये गये। उनमें से एक था क़रीब चालीस वर्ष के, भरे बदन, लाल गालोंवाले आदमी का जो सितारे जड़ी हल्की हरी फ़ौजी वर्दी पहने था; दूसरा था तोते जैसी नाकवाली नवयौवना का, कनपटियों पर चिपके बाल, और पाउडर लगे बालों पर गुलाब लगा था। सभी कोनों में चीनी मिट्टी के चरवाहों की मूर्तियाँ, प्रसिद्ध लेरूआ द्वारा निर्मित मेज़ घड़ियाँ, छोटी-छोटी सन्दूक़चियाँ, खेलने के चक्र, पंखे और महिलाओं के खिलौने थे, जिनका पिछली शताब्दी के अन्त में मोंगोलफिये[1] के गुब्बारों और मेस्मेर[2] के चुम्बकत्व के साथ ही आविष्कार हुआ था। हेर्मन परदे के पीछे गया। उसके पीछे छोटा-सा लोहे का पलंग था, दायीं ओर एक दरवाज़ा था, जो अध्ययन-कक्ष को जाता था, बाईं ओर दूसरा—गलियारे में। हेर्मन ने उसे खोला, तंग घुमावदार सीढ़ी को देखा, जो ग़रीब आश्रिता के कमरे तक जाती थी...मगर वह वापस आया और अँधेरे अध्ययन-कक्ष में घुस गया।

समय बहुत धीरे-धीरे बीत रहा था। चारों ओर ख़ामोशी थी। मेहमानख़ाने में बारह घंटे बजे, सभी कमरों में एक के बाद एक घड़ी बारह बजाती रही—फिर सब ख़ामोश हो गया। हेर्मन ठंडी अँगीठी का सहारा लिए खड़ा था। वह शान्त था, उसका दिल सामान्य रूप से धड़क रहा था, जैसे उस आदमी का दिल जो कुछ ख़तरनाक, मगर ज़रूरी काम करने का निश्चय कर चुका हो। घड़ी ने सुबह का एक और दो भी बजाये, और उसने दूर से आती गाड़ी की खटखट सुनी। एक अनचाही परेशानी ने उसे दबोच लिया। गाड़ी नज़दीक आकर रुक गयी। उसने नीचे छोड़े जाते पायदान की आवाज़ सुनी। घर में चहल-पहल होने लगी। लोग भागे, आवाज़ें आने लगीं, और घर में उजाला हो गया। तीन पुरानी नौकरानियाँ शयन-कक्ष में भागती हुई आयीं, और अधमरी-सी काउंटेस भीतर आकर ऊँची टेकवाली आरामकुर्सी में ढेर हो गयी। हेर्मन ने झिरी से देखा : लिज़ावेता इवानोव्ना उसके पास से होकर गुज़री। हेर्मन ने उसके कमरे की सीढ़ियों पर उसके शीघ्र क़दमों की आहट सुनी। उसके दिल में कोई चीज़ उसे धिक्कारती-सी प्रतीत हुई और फिर से ख़ामोश हो गयी। वह मानों बुत बन गया।

1. मोंगोलफिये का गुब्बारा—जून, 1783 में फ्रांसीसी आविष्कारक मोंगोलफिये बन्धुओं ने पहली बार हवाई जहाज़ जैसी चीज़ उड़ाई थी—काग़ज़ का गुब्बारा गर्म धुएँ से भरा हुआ।
2. मेस्मेर का चुम्बकत्व—ऑस्ट्रियन डॉक्टर (1734-1815) का सिद्धान्त, जिसके अनुसार हर व्यक्ति में सजीव चुम्बकत्व होता है, जो दूसरे लोगों पर प्रभाव डालता है।

काउंटेस आईने के सामने कपड़े उतारने लगी। उसके सिर से गुलाबों से सजी टोपी निकाली गयी; उसके सफ़ेद, छोटे-छोटे बालोंवाले सिर से पाउडर लगा विग हटाया गया। उसके चारों ओर पिनों की बारिश हो गयी। चाँदी के तार से कढ़ी पीली पोशाक उसके सूजे हुए पैरों के पास गिर पड़ी। हेर्मन उसके शृंगार के तिरस्करणीय रहस्यों का साक्षी था; अन्त में काउंटेस रातवाले गाऊन और टोपी में रह गयी; इस वेशभूषा में, जो उसकी वृद्धावस्था के अनुरूप थी, वह कम डरावनी और बेतरतीब-सी दीख रही थी।

अक्सर सभी बूढ़े लोगों की तरह काउंटेस को भी अनिद्रा की शिकायत थी। कपड़े उतारने के बाद वह खिड़की के पास आरामकुर्सी पर बैठी और नौकरानियों को बाहर भेज दिया। मोमबत्तियाँ बाहर ले जाई गयीं, कमरा फिर से एक ही लैम्प की रोशनी से प्रकाशित होने लगा। काउंटेस एकदम पीली पड़ी हुई, लटकते हुए होंठों को हिलाती, दायें-बायें डोलती हुई बैठी थी। उसकी धुँधली आँखों में थी सम्पूर्ण विचारहीनता, उसकी ओर देखते हुए कोई भी यह सोच सकता था कि भयानक बुढ़िया का हिलना उसकी अपनी इच्छा से नहीं, बल्कि किसी रहस्यमय प्रेरणा की बदौलत हो रहा था।

अचानक यह मुर्दा जैसा चेहरा अवर्णनीय रूप से बदल गया। होंठों ने हिलना बन्द कर दिया, आँखें सजीव हो उठीं : काउंटेस के सामने एक अनजान आदमी खड़ा था।

"डरिये मत, भगवान के लिए, डरिये नहीं!" उसने स्पष्ट और धीमी आवाज़ में कहा, "मेरा आपको नुक़सान पहुँचाने का कोई इरादा नहीं है; मैं आपसे एक मेहरबानी की दरख़्वास्त करने आया हूँ।"

बुढ़िया चुपचाप उसे देखती रही और ऐसा लगा कि उसने कुछ सुना नहीं। हेर्मन ने अन्दाज़ लगाया कि शायद वह बहरी है, और, उसके कान के ठीक ऊपर झुकते हुए, उसने वही बात दुहराई। बुढ़िया पहले की भाँति चुप रही।

"आप!" हेर्मन कहता रहा, "मेरी ज़िन्दगी को सुखी बना सकती हैं, और इसके लिए आपको कुछ भी न करना पड़ेगा, मैं जानता हूँ कि आप लगातार तीन पत्ते बूझ सकती हैं..."

हेर्मन रुका। शायद काउंटेस समझ गयी थी कि उससे किस बात की माँग की जा रही थी; शायद वह जवाब देने के लिए शब्द ढूँढ़ रही थी।

"वह तो एक मज़ाक़ था।" आख़िर उसने कह दिया, "क़सम खाती हूँ! वह एक मज़ाक़ था।"

"यह मज़ाक़वाली बात नहीं है," हेर्मन ने गुस्से से प्रतिवाद किया, "याद कीजिए चाप्लित्स्की को, जिसे आपने जीतने में मदद की थी।"

काउंटेस परेशान हो गयी प्रतीत हुई। उसके हाव-भाव उसकी आत्मा की कशमकश को प्रकट कर रहे थे, मगर वह फ़ौरन पहलेवाली भावहीनता की स्थिति में आ गयी।

"क्या आप" हेर्मन ने आगे कहा, "मुझे वे तीन भरोसेमन्द पत्ते बता सकती हैं?"

काउंटेस ख़ामोश रही, हेर्मन कहता रहा : "यह भेद आप किसके लिए सँभाल कर रखेंगी? पोतों के लिए? वे तो वैसे भी अमीर हैं; वे तो पैसे की क़ीमत भी नहीं जानते। आपके तीन पत्ते पैसे उड़ानेवालों की मदद नहीं कर सकते। जो पिता की जायदाद सँभाल नहीं सकता, वह वैसे भी ग़रीबी में ही मरेगा, चाहे कोई शैतान उसकी कितनी ही मदद करे। मैं धन उड़ानेवाला नहीं हूँ; मैं पैसे की क़ीमत जानता हूँ। आपके तीन पत्ते मेरे लिए बेकार नहीं साबित होंगे। तो!..."

वह रुका और धड़कते दिल से, उसके जवाब का इंतज़ार करने लगा। काउंटेस ख़ामोश थी; हेर्मन घुटनों के बल खड़ा हो गया।

"अगर कभी," उसने कहा, "आपके दिल में प्यार की भावना जागी हो, अगर आपको उससे उत्पन्न उत्साह की याद हो, अगर ज़िन्दगी में एक भी बार नवजात पुत्र का रोना सुनते ही आप मुस्कुराई हों, अगर कभी आपके सीने में कभी कोई मानवीय चीज़ धड़की हो, तो मैं आपसे विनती करता हूँ कि पत्नी, प्रियतमा, माँ की—जो भी जीवन में पवित्र है, उसकी—नैसर्गिक भावनाओं से मेरी प्रार्थना को न ठुकराइये! मुझ पर अपना भेद खोल दीजिए। आपको अब उससे क्या मिलेगा?...हो सकता है वह भयानक पाप हो, वह सुख का नाश करनेवाला हो, हो सकता है शैतान का खेल हो ...सोचिए : आप बूढ़ी हैं; आपका जीवन ज़्यादा नहीं बचा है, मैं आपके गुनाह अपनी आत्मा पर लेने के लिए तैयार हूँ। मुझे सिर्फ़ अपना रहस्य बता दीजिए। सोचिए, एक आदमी का सुख आपके हाथों में है; न सिर्फ़ मैं, बल्कि मेरे बच्चे, पोते और पड़पोते भी आपको दुआएँ देंगे, आपकी याद को पवित्र मानते रहेंगे..."

बुढ़िया ने एक भी शब्द नहीं कहा।

हेर्मन उठा।

"बूढ़ी चुड़ैल!" उसने दाँत पीसते हुए कहा, "मैं तुझे जवाव देने पर मजबूर करूँगा..."

इतना कहकर उसने जेब से पिस्तौल निकाली। पिस्तौल देखते ही काउंटेस के चेहरे पर दूसरी बार तीव्र भाव प्रकट हुए। उसने सिर हिलाया और हाथ ऊपर को उठाया, मानों गोली से बचना चाहती हो...फिर एक ओर को लुढ़क गयी...और निश्चल पड़ी रही।

"बचपना छोड़िए।" हेर्मन ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा, "आख़िरी वार पूछता हूँ : अपने तीनों पत्ते मुझे बतायेंगी?—हाँ या ना?"

काउंटेस ने जवाब नहीं दिया। हेर्मन ने देखा कि वह मर चुकी थी।

4

7 मई, 18XX

वह व्यक्ति जिसका न कोई
ईमान है, न धरम

—पत्र व्यवहार

लिज़ावेता इवानोव्ना अपने कमरे में अभी तक नृत्य की पोशाक पहने बैठी गहरे सोच में डूबी थी। घर लौटने पर, उसने तुरन्त उनींदी नौकरानी को वापस भेज दिया, जो बड़े बेमन से उसकी मदद करने आयी थी। उससे बोली कि वह खुद ही कपड़े बदल लेगी और धड़कते दिल से अपने कमरे में आयी, वहाँ हेर्मन को पाने की उम्मीद से और उसके वहाँ न होने की इच्छा से। पहली ही नज़र में उसने उसकी अनुपस्थिति को ताड़ लिया और उनकी मुलाक़ातं में बाधा डालने के लिए भाग्य को धन्यवाद दिया। वह बैठी रही, बिना कपड़े उतारे और उन हालात को याद करने लगी, जो इतने कम समय में उसे इतनी दूर तक बहकाकर ले गये थे। उस घड़ी को गुज़रे तीन हफ़्ते भी नहीं हुए थे, जब उसने पहली बार खिड़की से नौजवान को देखा था, और वह उससे पत्र-व्यवहार भी करने लगी थी, और वह उससे रात में मिलने की माँग भी कर बैठा था। वह उसका नाम भर जानती थी, वह भी इसलिए कि उसके कुछ ख़तों में उसने हस्ताक्षर किये थे। कभी भी उससे बात नहीं की थी, उसकी आवाज़ न सुनी थी, उसके बारे में कभी कुछ न सुना था...आज की शाम तक। अजीब बात है! आज ही की शाम को नृत्य में तोम्स्की ने युवा राजकुमारी पोलिना XX पर गुस्सा होते हुए, जो हमेशा से विपरीत उसके साथ चुहल नहीं कर रही थी, बेपरवाही दिखाते हुए बदला लेना चाहा। उसने लिज़ावेता इवानोव्ना को बुलाया और उसके साथ लगातार माज़ूर्का नृत्य करता रहा। पूरे वक़्त इंजीनियर अफ़सरों के प्रति उसकी दिलचस्पी का मज़ाक़ उड़ाता रहा, यक़ीन दिलाता रहा कि वह उसकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा जानता है। और उसके कुछ चुटकुले तो इतने पैने थे कि लिज़ावेता इवानोव्ना ने कई बार सोचा कि उसका रहस्य वह जानता है।

"आपको यह सब किसने बताया?" उसने मुस्कुराते हुए पूछा।

"आपके परिचित के दोस्त ने।" तोम्स्की ने जवाब दिया, "एक बेहतरीन इन्सान ने!"

"यह बेहतरीन इन्सान है कौन?"

"उसका नाम है हेर्मन।"

लिज़ावेता इवानोव्ना ने कोई जवाब नहीं दिया, मगर उसके हाथ-पैर मानों बर्फ़ हो गये...

"यह हेर्मन," तोम्स्की कहता रहा, "एक रूमानी शख़्सियत है : उसका रूप

नेपोलियन जैसा, और आत्मा मेफ़िस्तोफ़ेलिस जैसी है। मैं सोचता हूँ कि उसकी अन्तरात्मा पर कम-से-कम तीन गुनाहों का बोझ है। आप कितनी पीली पड़ गयीं!..."

"मेरा सिर दुख रहा है...क्या कहा आपसे हेर्मन ने या जो भी उसका नाम है?..."

"हेर्मन अपने दोस्त से बहुत नाराज़ है : वह कहता है कि उसके स्थान पर वह ख़ुद एकदम दूसरा ही रास्ता अख़्तियार करता...मैं तो समझता हूँ कि ख़ुद हेर्मन को आप में दिलचस्पी है, कम-से-कम अपने दोस्त की प्यार भरी बातें वह उदासीनता से नहीं सुनता है।"

"मगर उसने मुझे देखा कहाँ?"

"चर्च में, हो सकता है—जब आप टहल रही हों!...भगवान ही जाने! हो सकता है, आपके कमरे में जब आप सो रही हों : उससे..."

उनके निकट आती तीन महिलाओं ने 'बेपरवाही या अफ़सोस' जताते हुए उनके बीच हो रही बातचीत को भंग कर दिया, जो लिज़ावेता इवानोव्ना के लिए दर्दनाक रूप से दिलचस्प साबित हो रही थी।

तोम्स्की ने जिस महिला को चुना वह स्वयं राजकुमारी XX ही थी। एक अतिरिक्त चक्कर लगाकर और अपनी कुर्सी के सामने एक और बार मुड़कर वह उसके सामने अपनी सफ़ाई पेश करने में क़ामयाब हो गयी थी। तोम्स्की, अपनी जगह पर लौटते हुए, न तो हेर्मन के बारे में सोच रहा था और न ही लिज़ावेता इवानोव्ना के बारे में। उसने टूट गयी बातचीत को ताज़ा करने की भरसक कोशिश की; मगर माज़ूर्का समाप्त हो चुका था, और इसके फ़ौरन बाद बूढ़ी काउंटेस वहाँ से निकल गयी।

तोम्स्की के शब्द माज़ूर्का के दौरान की गयी बकवास ही थे, मगर वे स्वप्नदर्शी युवती के दिल में गहरे पैठ गये। तोम्स्की ने जो तस्वीर पेश की थी, वह उसकी अपनी कल्पना में खींचे गये चित्र से मिलती थी, और आधुनिक उपन्यासों की बदौलत यह नीच बन चुका व्यक्ति उसे भयभीत कर रहा था, उसकी विचारशक्ति पर हावी हो चुका था। वह नंगे हाथों को एक-दूसरे पर रखे, फूलों से सजे सिर को अनावृत वक्ष पर झुकाये बैठी थी...अचानक दरवाज़ा खुला, और हेर्मन भीतर आया। वह काँप गयी।

"आप कहाँ थे?" उसने घबराहट भरी फुसफुसाहट से पूछा।

"बूढ़ी काउंटेस के शयनकक्ष में," हेर्मन ने जवाब दिया, "मैं अभी उसके पास से ही आ रहा हूँ। काउंटेस मर गयी।"

"हे भगवान!...क्या कह रहे हैं?"

"और शायद," हेर्मन कहता रहा, "उसकी मौत का कारण मैं हूँ।"

लिज़ावेता इवानोव्ना ने उसकी ओर देखा और तोम्स्की के शब्द उसके दिमाग़ में गूँजने लगे : *इस आदमी की अन्तरात्मा पर कम-से-कम तीन गुनाहों का बोझ है।*

हेर्मन ने खिड़की की सिल पर उसके निकट बैठकर सब कुछ सुना दिया।

लिज़ावेता इवानोव्ना ख़ौफ़ से उसे सुनती रही। तो, ये आवेगपूर्ण पत्र, ये सुलगती माँगें, यह धृष्टता, दृढ़ता से उसका पीछा करना, यह सब प्यार नहीं था! पैसा, इसी की दीवानी थी उसकी आत्मा! वह उसकी इच्छाएँ पूरी करके उसे सुखी नहीं बना सकती थी! ग़रीब बेचारी आश्रित लड़की अपनी अभिभाविका की हत्या करनेवाले उस डाकू की अन्धी सहायिका के अलावा और कुछ न थी! देर से होनेवाले, यातनापूर्ण पछतावे के कारण वह फूट-फूटकर रो पड़ी। हेर्मन ख़ामोशी से उसे देखता रहा; उसके दिल में भी टीस उठ रही थी, मगर बेचारी ग़रीब लड़की के आँसू और उसका शोकविह्वल अनूठा सौन्दर्य भी उसकी गम्भीर आत्मा को उत्तेजित नहीं कर रहा था। मृत बुढ़िया का ख़याल उसकी अन्तरात्मा को कचोट नहीं रहा था। उसे सिर्फ़ एक बात का ख़ौफ़ था : उस रहस्य का हमेशा के लिए खो जाना, जिससे वह धनवान होने की आस लगाये बैठा था।

"आप राक्षस हैं!" आख़िरकार लिज़ावेता इवानोव्ना ने कहा।

"मैं उसे मारना नहीं चाहता था।" हेर्मन ने जवाब दिया, "मेरी पिस्तौल भरी हुई नहीं है।"

वे ख़ामोश हो गये।

सुबह हो रही थी। लिज़ावेता इवानोव्ना ने ख़त्म होती हुई मोमबत्ती को बुझा दिया : मरियल-सी रोशनी ने उसके कमरे को प्रकाशित कर दिया। उसने रोने से लाल हुई अपनी आँखों को पोंछा और हेर्मन की ओर देखा : वह खिड़की की सिल पर बैठा था, हाथ बाँधे और गुस्से से नाक-भौंह चढ़ाये। इस स्थिति में वह ग़ज़ब से नेपोलियन की तस्वीर की याद दिला रहा था। इस साम्य ने लिज़ावेता इवानोव्ना को भी चौंका दिया।

"आप घर से बाहर कैसे जाएँगे?" आख़िर लिज़ावेता इवानोव्ना ने कहा, "मैं आपको गुप्त सीढ़ियों से ले जाना चाहती थी, मगर उसके लिए शयनकक्ष के पास से होकर जाना पड़ता है, और मुझे डर लग रहा है।"

"मुझे बताइये कि वह गुप्त सीढ़ी कैसे ढूँढ़ूँ; मैं निकल जाऊँगा।"

लिज़ावेता इवानोव्ना उठी, अलमारी में से चाबी निकाली, उसे हेर्मन के हाथ में रखा और उसे विस्तार से सूचनाएँ दीं। हेर्मन ने उसके ठंडे, समर्थन न देते हुए हाथ को दबाया, उसके झुके हुए सिर को चूमा और बाहर निकल गया।

वह घुमावदार सीढ़ी से नीचे उतरा और फिर से काउंटेस के शयनकक्ष में आया। मृत बुढ़िया बुत बनी बैठी थी, उसके चेहरे पर गहरी शान्ति थी। हेर्मन उसके सामने रुका, बड़ी देर तक उसकी ओर देखता रहा, मानों उस भयानक सत्य की जाँच करना चाहता हो। अन्त में वह अध्ययन-कक्ष में आया। दीवार पर लगे काग़ज़ के पीछे दरवाज़े को टटोला और अँधेरी सीढ़ियों से नीचे उतरने लगा, विचित्र प्रकार के

एहसास से परेशान होते हुए। इसी सीढ़ी से, उसने सोचा, हो सकता है, क़रीब साठ साल पहले, इसी शयनकक्ष में, इसी समय, कसीदा किया हुआ कफ्तान पहने, 'शाही परिन्दे' के ढंग से बाल सँवारे, सीने से अपनी तिकोनी टोपी लगाये, चोरी-चोरी आया होगा कोई ख़ुशक़िस्मत नौजवान, जो कभी का क़ब्र में सड़ चुका होगा, और उसकी बूढ़ी हो चुकी प्रियतमा के दिल ने आज धड़कना बन्द कर दिया...

सीढ़ियों के नीचे हेर्मन को दरवाज़ा मिल गया, जिसे उसने उसी चाबी से खोला और हवादार गलियारे में आया, जो उसे सड़क पर ले गया।

5

उस रात स्वर्गीय बैरोनेस ब XX मेरे पास आई।
वह सफ़ेद पोशाक़ में थी और मुझसे बोली, "नमस्ते, कौंसिलर महोदय।"

—श्वेडेनबोर्ग

उस मनहूस रात के तीन दिन बाद, सुबह नौ बजे, हेर्मन गिरजे में गया, जहाँ मृत काउंटेस के लिए प्रार्थना की जानेवाली थी। पश्चात्ताप का अनुभव न करते हुए भी वह अपनी अन्तरात्मा की आवाज़ को पूरी तरह दबा न पाया, जो बार-बार कहे जा रही थी : तू बुढ़िया का हत्यारा है! सच्चे विश्वास की उसमें कमी होते हुए भी, वह पूर्वाग्रहों को बहुत मानता था। वह मानता था कि मृत काउंटेस उसके जीवन पर हानिकारक प्रभाव डाल सकती थी, और उसने उसके अन्तिम संस्कार में जाने का निश्चय किया, ताकि उससे माफ़ी माँग सके।

गिरजाघर लोगों से खचाखच भरा हुआ था। हेर्मन बड़ी मुश्किल से भीड़ में से गुज़र सका। ताबूत बड़ी शानदार मुर्दागाड़ी पर रखा था—मख़मली छतरी के नीचे। दिवंगता सीने पर दोनों हाथ बाँधे, झालरवाली टोपी और सफ़ेद साटिन की पोशाक़ में लेटी थी। उसके घर के लोग चारों ओर खड़े थे, नौकर काले अंगरखे पहने, कन्धे पर कुलचिह्नवाले फ़ीते टाँगे और हाथों में मोमबत्तियाँ लिए; रिश्तेदार-बच्चे, पोते और पड़पोते गहरे शोक में डूबे हुए। कोई भी रो नहीं रहा था, आँसू तो दिखावा ही प्रतीत होते। काउंटेस इतनी वूढ़ी थी कि उसकी मृत्यु से किसी को भी सदमा न पहुँचता और उसके रिश्तेदार तो कितने ही समय से उसे कोई खंडहर मानने लगे थे। युवा पादरी प्रार्थना कर रहा था। सीधे और मर्मस्पर्शी शब्दों में उसने धर्मपरायण महिला की शान्तिपूर्ण मृत्यु का वर्णन किया, जो दीर्घावधि से अपने ईसाई जीवन के अन्त की तैयारी बड़ी शान्ति एवं स्नेह से कर रही थी। "मौत के फ़रिश्ते ने।" वक्ता ने कहा, "उसे सद्विचारों में लिप्त और ईश्वर की प्रतीक्षा करते हुए पाया।" प्रार्थना शोकपूर्ण शिष्टाचार के साथ समाप्त हुई।

पहले रिश्तेदार मृतका से विदा लेने पहुँचे। फिर अनेक मेहमान उसके सामने शीश झुकाने आगे बढ़े, जो एक लम्बे अर्से तक उनके हर्षोल्लासयुक्त समारोहों का एक हिस्सा थी। उनके बाद आगे बढ़े सभी नौकर चाकर। सबसे अन्त में एक बूढ़ी दासी, मृतका की हमउम्र, उसके निकट आयी। दो युवा लड़कियाँ हाथों का सहारा देकर उसे ला रही थीं। उसमें ज़मीन तक झुकने की शक्ति भी नहीं थी, और उसने अपनी मालकिन का ठंडा हाथ चूमते हुए कुछ आँसू बहाये। उसके बाद हेर्मन ने ताबूत के निकट जाने का निश्चय किया। वह ज़मीन पर झुका और कुछ क्षणों तक ठंडे फ़र्श पर पड़ा रहा, जहाँ फ़र की टहनियाँ बिखरी पड़ी थीं। आख़िर वह उठा, मृतका की तरह ही विवर्ण, मुर्दागाड़ी की सीढ़ियाँ चढ़ा और झुका...इसी क्षण उसे यूँ महसूस हुआ कि दिवंगता एक आँख सिकोड़े, व्यंग्य से उसकी ओर देख रही है, हेर्मन फ़ौरन पीछे हटा, लड़खड़ाया और ज़मीन पर चारों ख़ाने चित हो गया। उसे उठाया गया। उसी समय बेहोश लिज़ावेता इवानोव्ना को चर्च की ड्योढ़ी में लाया गया। इस घटना ने शोकपूर्ण रस्म की गरिमा को कुछ क्षणों के लिए भंग कर दिया। मेहमानों में दबी-दबी फुसफुसाहट फैल गयी, और मृतका के एक रिश्तेदार, एक दुबले-पतले दरबारी अफ़सर ने, अपने निकट खड़े अंग्रेज़ के कान में फुसफुसाकर कहा कि यह जवान अफ़सर काउंटेस का अवैध बेटा है, जिसके जवाब में अंग्रेज़ ने बड़ी उदासीनता से 'ओह?' कहा।

पूरे दिन हेर्मन बड़ा व्यग्र रहा। दूरदराज़ के एक शराबख़ाने में भोजन करते हुए वह, आन्तरिक परेशानी को भुलाने के लिए, अपनी आदत के विपरीत काफ़ी पी गया। मगर शराब ने उसके विचारों को और भी उत्तेजित कर दिया। घर लौटकर उसने बग़ैर कपड़े उतारे स्वयं को पलंग पर झोंक दिया और गहरी नींद में सो गया।

रात को उसकी आँख खुल गयी : चाँद उसके कमरे को प्रकाशित कर रहा था। उसने घड़ी की ओर देखा, पौने तीन बजे थे। उसकी नींद उड़ चुकी थी; वह पलंग पर बैठ गया और बूढ़ी काउंटेस के अन्तिम संस्कार के बारे में सोचने लगा।

इसी समय सड़क से किसी ने उसके कमरे में खिड़की से झाँका, और फ़ौरन पीछे हट गया। हेर्मन ने इस ओर कोई ध्यान न दिया। एक मिनट बाद उसने सुना कि प्रवेश-कक्ष का दरवाज़ा खुला। हेर्मन ने सोचा, कि उसका अर्दली, आदत के मुताबिक़ नशे में धुत्त होकर, रात की सैर से वापस लौटा है। मगर उसने एक अनजानी आहट सुनी : कोई चल रहा था, जूतों को धीरे-धीरे घसीटते हुए। दरवाज़ा खुला, सफ़ेद पोशाक में एक महिला भीतर आयी। हेर्मन ने उसे अपनी बूढ़ी आया समझा और वह अचरज करने लगा कि उसे इस समय यहाँ आने की क्या ज़रूरत पड़ गयी। मगर सफ़ेद महिला, मानों तैरती-सी अचानक उसके सामने आ गयी—और हेर्मन ने काउंटेस को पहचान लिया।

"मैं अपनी इच्छा के विपरीत तुम्हारे पास आयी हूँ।" उसने दृढ़ स्वर में कहा, "मगर मुझे आज्ञा मिली है कि तुम्हारी प्रार्थना पूरी करूँ। तिग्गी, सत्ता और इक्का

क्रमानुसार तुम्हें जितायेंगे, मगर इस शर्त पर कि एक दिन में तुम एक से ज़्यादा पत्ता न चलोगे और इसके बाद जीवनभर जुआ नहीं खेलोगे। यदि तुम मेरी आश्रिता लिज़ावेता इवानोव्ना से ब्याह कर लो, तो अपनी मौत के लिए तुम्हें क्षमा कर दूँगी।"

इतना कहकर वह हौले से मुड़ी, दरवाज़े की ओर गयी और जूते घिसटती हुई छिप गयी। हेर्मन ने ड्योढ़ी में दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ सुनी और देखा कि किसी ने फिर से उसके कमरे में झाँक कर देखा।

हेर्मन काफ़ी देर तक होश न सँभाल सका। वह दूसरे कमरे में आया। उसका अर्दली फ़र्श पर सोया था; हेर्मन ने झकझोर कर उसे जगाया। अर्दली, हमेशा की तरह, नशे में धुत था; उससे कोई भी पते की बात मालूम नहीं हो सकती थी। हेर्मन अपने कमरे में वापस आया, मोमबत्ती जलाई और जो कुछ उसने देखा था वह लिखने लगा।

6

"*अतान्दे*!"[1]
"आपकी हिम्मत कैसे हुई
मुझसे *अतान्दे* कहने की?"
"हुजूर मैंने कहा, प्लीज़ *अतान्दे* !"

जिस तरह भौतिक विश्व में दो शरीर एक ही जगह पर नहीं रह सकते, उसी तरह भावनात्मक विश्व में भी दो स्थिर विचार एक साथ नहीं रह सकते। तिग्गी, सत्ता और इक्के ने शीघ्र ही हेर्मन के दिमाग़ से मृत बुढ़िया के ख़याल को परे हटा दिया। तिग्गी, सत्ता, इक्का उसके दिमाग़ से हटते ही नहीं थे, और उसके होंठों पर थिरकते रहते। किसी युवा लड़की को देखकर वह कहता, "कितनी सुघड़ है!...असली पान की तिग्गी।" उससे पूछते, "कितने बजे हैं," वह जवाब देता, "सत्ता में पाँच मिनट कम हैं।" तोंदवाला हर आदमी उसे इक्के की याद दिलाता। तिग्गी, सत्ता, इक्का, नींद में भी सभी सम्भावित रूपों में, उसका पीछा करते : तिग्गी एक बहुत बड़ा फूल बन जाती, सत्ता गोथिक शैली का द्वार, इक्का विशाल मकड़ी। उसके सभी विचार एक ही बिन्दु पर घुल मिल जाते, उस रहस्य का लाभ उठाना, जो उसे इतना महँगा पड़ा था। वह सेवानिवृत्त होने, और यात्रा पर जाने के बारे सोचने लगा। वह पेरिस के आम जुआघरों में जाकर जादुई ख़ज़ाने हासिल करना चाहता था। एक संयोग ने उसे इन परेशानियों से मुक्त कर दिया।

मॉस्को में अमीर जुआरियों का एक क्लब बनाया गया मशहूर चेकालिन्स्की की अध्यक्षता में, जिसने पूरी उम्र जुआ खेलते हुए बिताई थी और जिसने हुंडियाँ जीतकर

---

1. अतान्दे—ताश के खेल में एक शव्द, जो यह सुझाता है कि दाँव न लगाया जाए (फ्रांसीसी शव्द से, जिसका अर्थ है—रुकिये)।

तथा नक़द रक़म हारकर करोड़ों की दौलत जमा कर ली थी। उसके लम्बे अनुभव के कारण यार दोस्त उस पर विश्वास करते थे, और सभी के लिए खुले हुए उसके घर, बढ़िया रसोइये और स्नेह तथा प्रसन्नता के वातावरण ने आम लोगों का आदर जीत लिया था। वह पीटर्सबुर्ग आया। युवा वर्ग उसके यहाँ उमड़ने लगा, ताश के खेल के लिए नृत्योत्सवों को भूल गया और सुन्दरियों के पीछे भागने के बदले जुए का दीवाना हो गया। नारूमोव उसके पास हेर्मन को ले आया।

वे शानदार कमरों की एक लम्बी क़तार से होकर गुज़रे, जहाँ शिष्ट सेवक तैनात थे। कई जनरल और गुप्तचर सेवा के कौंसिलर व्हिस्ट[1] खेल रहे थे, युवक लोग बैठे थे, मखमली सोफ़ों पर पसर कर आइसक्रीम खा रहे थे, पाइप के कश लगा रहे थे। मेहमानख़ाने में एक लम्बी मेज़ के पीछे, जहाँ क़रीब बीस खिलाड़ी जमा थे, मेज़बान बैठा पैसों का हिसाब-किताब रख रहा था। वह क़रीब साठ साल का व्यक्ति था, अत्यन्त सम्माननीय व्यक्तित्व का स्वामी था; सिर रुपहले बालों से ढँका हुआ; गोल और तरोताज़ा चेहरे से भलमनसाहत टपक रही थी; सदाबहार मुस्कुराहट से सजीव आँखें चमक रही थीं। नारूमोव ने हेर्मन का उससे परिचय करवाया। चेकालिन्स्की ने दोस्ताना ढंग से उससे हाथ मिलाया, तक़ल्लुफ़ न बरतने की विनती की और पत्ते फेंटना ज़ारी रखा।

बाज़ी काफ़ी देर तक चली। मेज़ पर क़रीब तीस पत्ते थे।

चेकालिन्स्की हर दाँव के बाद रुकता, ताकि खिलाड़ियों को सोचने-समझने का मौक़ा दे सके। हारी हुई रक़म लिखता जाता, शराफ़त से उनकी माँगों को सुनता, और भी अधिक शिष्टता से किसी असावधान हाथ द्वारा मोड़ दिये गये पत्ते के कोने को ठीक कर देता। आख़िरकार बाज़ी समाप्त हुई। चेकालिन्स्की ने पत्ते फेंटे, और अगली बाज़ी के लिए पत्ते बाँटने लगा।

"एक पत्ता लगाने की इजाज़त दीजिए।" एक मोटे महाशय के पीछे से जो वहीं जमा हुआ था, हाथ बढ़ाते हुए, हेर्मन ने कहा। चेकालिन्स्की मुस्कुराया और उसने सहमति दिखाते हुए ख़ामोशी से सिर झुकाया। नारूमोव ने मुस्कुराते हुए हेर्मन को लम्बे समय से चला आ रहा अपना उपवास तोड़ने पर बधाई दी और उसे शुभकामनाएँ दीं।

"ये लो!" हेर्मन ने अपने पत्ते पर खड़िया से दाँव की रक़म लिखते हुए कहा।

"कितना है, जनाब?" मेज़बान ख़ज़ांची ने आँखें सिकोड़ते हुए पूछा, "माफ़ कीजिए, मैं देख नहीं पा रहा हूँ।"

"सैंतालीस हज़ार।" हेर्मन ने जवाब दिया।

इन शब्दों को सुनते ही सभी के सिर अचानक घूम गये और सभी आँखें हेर्मन पर टिक गयीं। "वह पागल हो गया है!" नारूमोव ने सोचा।

---

1. व्हिस्ट—ताशों का एक खेल।

"मुझे यह कहने की अनुमति दें।" चेकालिन्स्की ने अपनी सदाबहार मुस्कुराहट से कहा, "कि आपका दाँव बहुत तगड़ा है : अभी तक यहाँ किसी ने भी दो सौ पचहत्तर से अधिक की बाज़ी नहीं लगाई है।"

"क्या बात है?" हेर्मन ने प्रतिवाद किया, "आप मेरा पत्ता खेलेंगे या नहीं?"

चेकालिन्स्की ने सिर झुकाया, उसी तरह मौन सहमति के अन्दाज़ में।

"मैं सिर्फ़ इतना अर्ज़ करना चाहता हूँ," उसने कहा, "कि दोस्तों का विश्वासपात्र होने के कारण, मैं बिना रक़म के नहीं खेल सकता। मेरी ओर से, तो मैं, बेशक, यक़ीन कर सकता हूँ कि आपका बस एक लफ़्ज़ ही काफ़ी है, मगर खेल के नियम और हिसाब-किताब की ख़ातिर आपसे पत्ते पर रक़म रखने की प्रार्थना करता हूँ।"

हेर्मन ने जेब से बैंक नोट निकाला और उसे चेकालिन्स्की की ओर बढ़ा दिया, जिसने सरसरी नज़र से देखकर उसे हेर्मन के पत्ते पर रख दिया।

वह पत्ते बाँटने लगा। दायीं ओर नहला और बायीं ओर तिग्गी पड़ी थी।

"जीत गया!" हेर्मन ने अपना पत्ता दिखाते हुए कहा।

खिलाड़ियों के बीच खुसर-पुसर होने लगी। चेकालिन्स्की ने भँवें चढ़ाईं, मगर मुस्कुराहट फ़ौरन उसके चेहरे पर लौट आयी।

"क्या रक़म लेंगे?" उसने हेर्मन से पूछा।

"मेहरबानी होगी।"

चेकालिन्स्की ने जेब से कुछ बैंक नोट निकाले और फ़ौरन हिसाब चुका दिया। हेर्मन ने अपने पैसे उठाये और मेज़ से हट गया। नारूमोव सँभल नहीं पा रहा था। हेर्मन ने लैमोनेड का गिलास पिया और घर चला गया।

दूसरे दिन शाम को वह फिर से चेकालिन्स्की के यहाँ पहुँचा। मेज़बान पत्ते बाँट रहा था। हेर्मन मेज़ की ओर बढ़ा; खिलाड़ियों ने फ़ौरन उसके लिए जगह ख़ाली कर दी। चेकालिन्स्की ने स्नेहपूर्वक अभिवादन किया।

हेर्मन ने नयी बाज़ी का इन्तज़ार किया, पत्ता रखकर उस पर अपने सैंतालीस हज़ार और कल की जीती हुई रक़म रख दी।

चेकालिन्स्की पत्ते बाँटने लगा। गुलाम दायीं ओर और सत्ता बायीं ओर आया।

हेर्मन ने सत्ता खोला।

सभी चीख़ पड़े। चेकालिन्स्की प्रकट रूप से परेशान हो गया। उसने चौरानवे हज़ार गिने और हेर्मन को दे दिये। हेर्मन ने बड़े ठंडेपन से पैसे लिये और फ़ौरन चला गया।

अगली शाम को हेर्मन फिर से मेज़ के पास आया। सभी उसका इन्तज़ार कर रहे थे। जनरल और गुप्तचर सेवा के कौन्सिलर अपना 'व्हिस्ट' छोड़कर इस असाधारण खेल को देखने आ गये। युवा अफ़सर सोफ़ों से उछलकर आ गये; सभी बैरे मेहमानख़ाने में जमा हो गये। सभी ने हेर्मन को घेर लिया। दूसरे खिलाड़ियों ने बेचैनी से इन्तज़ार करते हुए कि खेल कैसे समाप्त होगा, अपने दाँव नहीं लगाये। हेर्मन मेज़

के सामने खड़ा था—अकेला ही, विवर्ण मुख, किन्तु फिर भी मुस्कुराते हुए चेकालिन्स्की के साथ बाज़ी खेलने को तैयार। हरेक ने ताश की एक-एक नयी ग्ड्डी निकाली। चेकालिन्स्की फेंटने लगा। हेर्मन ने पत्ते काटे और अपना पत्ता लगाया, उसे बैंक नोटों से ढँक दिया। यह किसी द्वन्द्व-युद्ध के समान प्रतीत हो रहा था। चारों ओर गहरी ख़ामोशी थी।

चेकालिन्स्की पत्ते बाँटने लगा, उसके हाथ काँप रहे थे। दायें पड़ी थी बेगम, बायें था इक्का।

"इक्का जीत गया!" हेर्मन ने कहा और अपना पत्ता खोला।

"आपकी बेगम पिट गयी।" चेकालिन्स्की ने वड़े प्यार से कहा।

हेर्मन काँप गया; सचमुच, इक्के के बदले उसके सामने थी, हुकुम की बेगम। उसे अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हुआ, वह समझ नहीं पा रहा था कि यह बेवक़ूफ़ी उससे कैसे हो गयी।

इस क्षण उसे महसूस हुआ कि हुकुम की बेगम आँख मारते हुए मुस्कुराई। एक अजीब-सी समानता ने उसे चौंका दिया...

"बुढ़िया!" वह भयभीत होकर चिल्लाया।

चेकालिन्स्की ने जीती हुई रक़म अपनी ओर खींच ली। हेर्मन निश्चल खड़ा था। जब वह मेज़ से हटा, तो शोर मचने लगा, "बढ़िया खेला!" खिलाड़ी कह रहे थे। चेकालिन्स्की फिर से पत्ते फेंटने लगा, खेल हमेशा की तरह चलता रहा।

उपसंहार

हेर्मन पागल हो गया। वह ओबुखोवा अस्पताल के सत्रह नम्बर के कमरे में है, किसी भी सवाल का जवाब नहीं देता और असाधारण तेज़ी से बड़बड़ाता रहता है : "तिग्गी, सत्ता, इक्का! तिग्गी, सत्ता, बेगम!..."

लिज़ावेता इवानोव्ना की एक बहुत ही प्यारे नौजवान से शादी हो गयी, वह कहीं नौकरी करता है और उसके पास काफ़ी सम्पत्ति है, वह बूढ़ी काउंटेस के भूतपूर्व क़ारिन्दे का बेटा है। लिज़ावेता इवानोव्ना एक ग़रीब रिश्तेदार का पालन-पोषण कर रही है।

तोम्स्की घुड़सवार दस्ते का कप्तान बन गया है और पोलिना से शादी करनेवाला है।

ताबूतसाज़

क्या नहीं दिखाई देता हर दिन ताबूत,
जर्जर सृष्टि की सफ़ेदी का?

—देर्झाविन

ताबूतसाज़ आद्रियान प्रोखोराव का अन्तिम सामान ताबूत ले जानेवाली गाड़ी पर फेंका गया और मरियल जोड़ी चौथी बार बसमान्नाया से निकीत्स्काया की ओर घिसटने लगी, जहाँ अपने पूरे परिवार समेत ताबूतसाज़ रहने के लिए जा रहा था। दुकान बन्द करके उसने दरवाज़े पर तख्ती ठोंक दी कि घर बिकाऊ है, और किराये पर भी दिया जा सकता है, और वह पैदल अपने नये घर की ओर चल पड़ा। पीले घर के निकट आते हुए, जो उसकी कल्पना को इतने दिनों से ललचा रहा था और जिसे आख़िरकार उसने अच्छी-ख़ासी रक़म देकर ख़रीद ही लिया था, बूढ़ा ताबूतसाज़ अचरज़ से यह सोच रहा था कि उसके दिल को ख़ुशी क्यों नहीं हो रही है? अनजान दहलीज को लाँघकर जब उसने अपने नये घर में अव्यवस्था देखी, तो पुराने, जर्जर घर को याद करके उसने एक आह भरी, जहाँ पिछले अठारह सालों से हर चीज़ बड़े सलीक़े से रखी जाती थी, वह अपनी दोनों लड़कियों और नौकरानी को उनकी सुस्ती के लिए डाँटने लगा, और ख़ुद उनका हाथ बँटाने लगा। जल्दी ही सब ठीक-ठाक हो गया, मूर्तियोंवाला आला, बर्तनोंवाली अलमारी, मेज़, सोफ़ा और पलंग पिछले कमरे में अपनी-अपनी नियत जगह पर बैठ गये, रसोई घर और मेहमानख़ाने में मेज़बान के हाथों की बनाई गयी चीज़ें; हर रंग और हर नाप के ताबूत, मातमी टोपियों, लबादों और मशालोंवाली अलमारियाँ समा गयीं। दरवाज़े पर उल्टी मशाल लिए आमूर[1] की तस्वीरवाला बोर्ड टँग गया, जिसके नीचे लिखा था, "यहाँ सादे और रंगीन ताबूत बेचे और बनाये जाते हैं, किराये पर भी दिये जाते हैं, पुराने ताबूतों की मरम्मत की जाती है।"

लड़कियाँ अपने कमरे में चली गयीं। आद्रियान ने एक बार अपने घर का चक्कर लगाया, खिड़की के पास बैठ गया और समोवार रखने का आदेश दिया।

---

1. आमूर—कामदेव। जब उल्टी मशाल आमूर के हाथ में हो तो वह मृत्यु देवता का प्रतीक बन जाता है।

विद्वान पाठक जानते हैं कि शेक्सपियर एवं वाल्टर स्कॉट[1] दोनों ने अपने तावूतसाज़ों का ख़ुशमिज़ाज और मज़ाक़िया व्यक्तियों के रूप में वर्णन किया है, जिससे इस विरोधाभास से हमारी कल्पना को चौंका दें। यथार्थ का सम्मान करते हुए हम उनका अनुकरण नहीं कर सकते और यह स्वीकार करने पर मजबूर हैं कि हमारे ताबूतसाज़ का मिज़ाज उसके नैराश्यभरे व्यवसाय के एकदम अनुकूल था। आद्रियान प्रोखोरोव आमतौर से उदास और गुमसुम रहता था। वह अपनी ख़ामोशी तभी तोड़ा करता, जब अपनी वेटियों को निठल्लेपन से खिड़की के पास बैठे-बैठे आने-जानेवालों को ताकता हुआ पाकर डाँटता या फिर अपने सामान की उन लोगों से बढ़ा-चढ़ाकर क़ीमत माँगता, जिन्हें दुर्भाग्यवश (और कभी-कभी प्रसन्नतापूर्वक) उसकी ज़रूरत पड़ती। तो, आद्रियान खिड़की के पास बैठकर और चाय का सातवाँ प्याला पीते हुए, अपनी आदत के मुताबिक़ उदासी भरे ख़यालों में खोया हुआ था। वह उस मूसलाधार बारिश के बारे में सोच रहा था। जिसने पिछले सप्ताह सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर की शवयात्रा को नगरद्वार के निकट दबोच लिया था। कई लबादे इस वजह से सिकुड़ गये थे, कई टोपियाँ मुड़ गयी थीं। उसने अनुमान लगाया कि उसे काफ़ी रक़म ख़र्च करनी पड़ेगी, क्योंकि पुरानी दफ़न सामग्री की हालत बड़ी ख़स्ता हो चुकी थी। उसे इस घाटे को बूढ़ी सेठानी त्र्यूखिना के सिर मढ़ना था, जो पिछले क़रीब साल भर से मौत की कगार पर थी। मगर त्र्यूखिना राजगुल्याय में मर रही थी, और प्रोखोराव को डर था कि उसके वारिस, अपने वादे के बावजूद, उसे इतनी दूर ख़बर भेजने के बारे में आलस न कर बैठें और निकट के ही किसी ताबूतसाज़ से सौदा पक्का न कर लें।

इन विचारों को तोड़ा फ्रीमेसनो[2] के अन्दाज़ में दी गयी तीन अकस्मात दस्तकों ने। "कौन है?" ताबूतसाज़ ने पूछा। दरवाज़ा खुला और एक आदमी जिसे देखते ही, पहली ही नज़र में, यह पता चल जाता था कि वह कोई जर्मन क़ारीगर है, भीतर आया और प्रसन्नतापूर्वक ताबूतसाज़ के निकट आया।

"माफ़ कीजिए, प्यारे पड़ोसी," उसने उस रूसी लहज़े में कहा, जिसे आज हम बग़ैर मुस्कुराये नहीं सुन सकते, "माफ़ कीजिए कि मैंने आपको परेशान किया...। मैं जल्दी-से-जल्दी आपसे पहचान करना चाहता था। मैं मोची हूँ, मेरा नाम गोत्लिब शुल्त्स है, और मैं सड़क पार के इस घर में रहता हूँ, जो आपकी खिड़कियों के सामने है। कल मैं अपनी शादी की सिल्वर जुबली मना रहा हूँ, और मैं आपसे और आपकी बेटियों से विनती करता हूँ कि मेरे यहाँ दोस्तों की तरह खाना खाएँ।"

निमन्त्रण सहर्ष स्वीकार कर लिया गया। ताबूतसाज़ ने मोची से बैठने और

---

1. यहाँ शेक्सपियर के 'हैम्लेट' और वॉल्टर स्कॉट के 'लामेरमूर की दुल्हन' में वर्णित ताबूतसाज़ों की ओर इशारा किया गया है।
2. अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में रहस्यवादी संगठन, जो मानव के नैतिक पुनरुद्धार के लिए कार्यरत था। इस संगठन के सदस्य दरवाज़े पर तीन बार दस्तक दिया करते थे।

एक प्याला चाय पीने का अनुरोध किया, और गोत्लिब शुल्त्स के मिलनसार स्वभाव की बदौलत वे दोनों ही प्यार से बातचीत करने लगे।

"जनाब का काम धन्धा कैसा चल रहा है?" आद्रियान ने पूछा।

"ऐ–खे–खे," शुल्त्स ने जवाब दिया, "कभी अच्छा, कभी बुरा। शिकायत कर नहीं सकता। हालाँकि, बेशक़, मेरा माल वैसा नहीं है, जैसा आपका : ज़िन्दा आदमी जूते के बग़ैर काम चला सकता है, मगर मुर्दा तो ताबूत के बग़ैर हिल नहीं सकता।"

"एकदम सही फ़र्माया," आद्रियान ने कहा, "मगर फिर भी, अगर ज़िन्दा आदमी के पास जूते ख़रीदने के लिए पैसे न हों तो, वह, बुरा मत मानना, नंगे पैर भी चल सकता है, मगर ग़रीब मुर्दा अपने लिए मुफ़्त में ही ताबूत ले लेता है।"

इस तरह उनकी बातचीत कुछ और देर चलती रही, आख़िरकार मोची उठा और अपने निमन्त्रण को दुहराते हुए उसने ताबूतसाज़ से विदा ली।

दूसरे दिन ठीक बारह बजे, ताबूतसाज़ और उसकी बेटियाँ अपने नये ख़रीदे गये घर के फाटक से निकलीं और पड़ोसी के घर की ओर चलीं। आद्रियान प्रोखोरोव के रूसी कफ़्तान और अकुलीना तथा दार्या के यूरोपीय साज-सिंगार का वर्णन नहीं करूँगा, और इस बारे में आधुनिक छायावादियों की आदत का अनुसरण नहीं करूँगा। फिर भी यह बताना, मैं समझता हूँ, ज़्यादती नहीं होगी कि दोनों लड़कियों ने पीली टोपियाँ और लाल जूते पहने थे, जो वे ख़ास मौक़ों पर ही पहना करती थीं।

मोची का छोटा-सा फ़्लैट मेहमानों से खचाखच भरा था, जिनमें अधिकांश जर्मन कारीगर थे, अपनी पत्नियों और शागिर्दों के साथ। रूसी अफ़सरों में से था सन्तरी, चुखोनी युर्को, जो अपने साधारण से ओहदे के बावजूद मेज़बान का ख़ास कृपापात्र था। पच्चीस साल तक उसने इस ओहदे पर रहकर सच्चाई एवं विश्वास के साथ सेवा की थी, जैसे पोगोरेल्सकी के डाकिये[1] ने की थी। सन् '12 के अग्निकांड ने प्रारम्भिक राजधानी के साथ-साथ उसकी पीली चौकी को भी ख़ाक कर दिया था। मगर, दुश्मन को खदेड़ने के तुरन्त बाद ही, उसकी जगह पर खड़ी हो गयी नयी चौकी–भूरी, डोरिक शैली के सफ़ेद खम्भोंवाली, और युर्को फिर से *कवच पहने, फरसा लिए*[2] उसके आसपास गश्त लगाने लगा। वह निकीत्स्की दरवाज़े के आसपास रहनेवाले अधिकांश जर्मनों से परिचित था : उनमें से तो किसी-किसी को युर्को के पास इतवार की रात भी बितानी पड़ती थी। आद्रियान ने भी फ़ौरन उससे परिचय कर लिया, क्योंकि वह ऐसा आदमी था, जिसकी मदद की देर-सवेर ज़रूरत पड़ सकती थी और जब मेहमान मेज़ की ओर चले, तो वे साथ-साथ ही बैठे। शुल्त्स महोदय और महोदया और उनकी सत्रह वर्षीय बेटी लोत्खेन, मेहमानों के साथ खाना खाते हुए, परोस भी रहे थे और बावर्चिन को

---

1. ए. पोगोरेल्सकी की दीर्घकथा 'लाफ़ेर्त की नानबाइन' का एक पात्र।
2. ए. ई. इज़माइलोव की लोककथा 'पगली पाखोमोव्ना' से ली गयी पंक्तियाँ।

परोसने में मदद भी कर रहे थे। बियर बह रही थी। युर्को चार आदमियों का खाना खा रहा था, आद्रियान भी उससे पीछे नहीं था, उसकी बेटियाँ वड़ी तमीज़ से बैठी थीं; जर्मन में हो रही बातचीत लगातार तेज़ होती जा रही थी।

अचानक मेज़वान ने सबका ध्यान आकृष्ट किया और सीलबन्द बोतल का कॉर्क खोलते हुए रूसी में चिल्लाकर बोला, "मेरी दयालु लुइज़ा की सेहत के लिए!" शैम्पेन का फेन उड़ने लगा। मेज़बान ने नज़ाकत से अपनी चालीस वर्षीय जीवन-संगिनी का तरोताज़ा चेहरा चूमा और मेहमानों ने भी शोर मचाते हुए दयालु लुइज़ा की सेहत का जाम पिया।

"मेरे प्यारे मेहमानों की सेहत की ख़ातिर!" मेज़बान ने घोषणा की, दूसरी बोतल खोली—और मेहमानों ने दुबारा अपने जाम ख़ाली करते हुए उसे धन्यवाद दिया। अब तो एक के बाद एक सेहतवाले जामों का ताँता लग गया : हर मेहमान की सेहत का अलग-अलग जाम पिया गया, मॉस्को की सेहत का जाम पिया गया और पूरे एक दर्जन जर्मन शहरों की सेहत का जाम भी पिया गया, सभी वर्कशॉपों और हर वर्कशॉप के स्वास्थ्य के लिए अलग-अलग, सभी कारीगरों और शागिर्दों की सेहत के जाम पिये गये। आद्रियान बड़े जोश से पी रहा था और इतना ख़ुश था कि उसने ख़ुद भी एक मज़ाहिया जाम का प्रस्ताव रख दिया। अचानक एक मेहमान, मोटा नानबाई, जाम उठाते हुए चहका, "उनकी सेहत के लिए, जिनकी ख़ातिर हम काम करते हैं, हमारे ग्राहकों के लिए!" यह प्रस्ताव भी, अन्य प्रस्तावों के समान एक सुर में और ख़ुशी-ख़ुशी मान लिया गया। मेहमान एक-दूसरे का झुक-झुककर अभिवादन करने लगे, दर्ज़ी मोची को, मोची दर्ज़ी को, नानबाई उन दोनों को, सभी नानाबाई को वग़ैरह-वग़ैरह। इन परस्पर अभिवादनों के बीच युर्को अपने पड़ोसी की ओर मुख़ातिब होते हुए चीख़ा, "क्या बात है? पियो, प्यारे, अपने मुर्दों की सेहत की ख़ातिर।"

सभी ठहाका लगाने लगे, मगर ताबूतसाज़ ने स्वयं को अपमानित अनुभव करते हुए नाक-भौंह चढ़ा ली। किसी का भी इस ओर ध्यान नहीं गया, मेहमान पीते रहे और जब वे मेज़ से उठे तो रात की अन्तिम प्रार्थना की घंटियाँ बज रही थीं।

मेहमान देर से विदा हुए और अधिकांश ख़ुश थे। मोटा नानबाई और जिल्दसाज़, जिसका चेहरा—

लाल जिल्द से मढ़ा हुआ लग रहा था,

युर्को को हाथों का सहारा देकर उसकी चौकी की ओर ले चले और इस रूसी कहावत को सिद्ध करने लगे, "क़र्ज़ वसूलना बड़ा मज़ेदार लगता है।" ताबूतसाज़ घर लौटा नशे में धुत और ग़ुस्से से पागल।

"यह क्या बात हुई," वह ज़ोर-ज़ोर से बड़बड़ाते हुए तर्क करने लगा, "मेरा धन्धा औरों से बुरा कैसे हुआ?" क्या ताबूतसाज़ जल्लाद का भाई होता है? काफ़िर

किसलिए हँसते हैं? क्या ताबूतसाज़ रंग-बिरंगा मसख़रा है? मैं तो नये घर में आने की ख़ुशी में इन्हें बुलाकर बढ़िया दावत देना चाहता था, मगर अब यह न होगा। मैं तो उन्हें बुलाऊँगा, जिनके लिए काम करता हूँ, ईसाई मुर्दों को।"

"क्या कहते हो, मालिक?" नौकरानी ने कहा, जो इस समय उसके जूते उतार रही थी, "क्या कह रहे हो? सलीब का निशान बनाओ! मुर्दों को नये घर में दावत पर बुलायेंगे! कैसी डरावनी बात है!"

"ऐ ख़ुदा, बुलाऊँगा," आद्रियान कहता रहा, "और कल ही बुलाऊँगा। मेरे मेहरबानो, कृपया कल शाम को मेरे यहाँ दावत पर आइए, जो भी ख़ुदा देगा, उसी से आपकी ख़ातिर करूँगा।" इतना कहकर ताबूतसाज़ पलंग पर गया और जल्दी ही खर्राटे भरने लगा।

जब आद्रियान को जगाया गया तो आँगन में अभी अँधेरा ही था। सेठानी त्र्यूखिना उसी रात को मर गयी थी और उसके कारिन्दे ने यह ख़बर लेकर एक सन्देशवाहक को घोड़े पर आद्रियान के पास भेजा था। ताबूतसाज़ ने इसके लिए उसे वोद्का के लिए दस कोपेक दिये, जल्दी से कपड़े पहने और किराये की गाड़ी लेकर राज़गुल्याइ की ओर चल पड़ा। मृतका के दरवाज़े पर पुलिस पहुँच चुकी थी और व्यापारी ऐसे घूम रहे थे, जैसे मृत शरीर की गन्ध पाकर कौए मँडराते हैं। मृतका मेज़ पर पड़ी थी, मोम की तरह पीली, मगर शरीर अभी सड़ा नहीं था। उसके निकट रिश्तेदारों, पड़ोसियों और नौकर-चाकरों की भीड़ थी। सभी खिड़कियाँ खुली थीं, मोमबत्तियाँ जल रही थीं, पादरी प्रार्थना का पाठ कर रहे थे। आद्रियान फ़ैशनेबुल फ्रॉक कोट पहने युवा व्यापारी, त्र्यूखिना के भानजे के पास आया और बोला कि ताबूत, मोमबत्तियाँ, कफ़न और दफ़न की अन्य सभी चीज़ें उसे अच्छी हालत में फ़ौरन पहुँचा दी जाएँगी। वारिस ने अनमनेपन से यह कहते हुए उसे धन्यवाद दिया कि क़ीमत के बारे में वह सौदेबाज़ी नहीं करेगा और उसके ईमान पर वह सारी बात छोड़ता है। ताबूतसाज़ ने अपनी आदत के मुताबिक़ क़सम खाकर कहा कि वह ज़्यादा पैसे नहीं लेगा; अर्थपूर्ण नज़र से कारिन्दे से कुछ कहा और सामान की तैयारी करने निकल पड़ा। पूरे दिन राज़गुल्याइ से निकीत्स्की दरवाज़े तक चक्कर लगाता रहा, शाम तक पूरा इन्तज़ाम कर दिया और अपनी किराये की गाड़ी छोड़कर पैदल ही घर की ओर चल पड़ा। चाँदनी रात थी। ताबूतसाज़ सही-सलामत निकीत्स्की दरवाज़े तक पहुँच गया। गिरजे के पास उसे हमारे परिचित युर्को ने ललकारा और ताबूतसाज़ को पहचान कर, उसे शुभरात्रि कह डाला। काफ़ी रात हो चुकी थी। ताबूतसाज़ अपने घर के निकट पहुँचा ही था कि उसे ऐसा लगा कि कोई उसके फाटक के पास आया, दरवाज़ा खोला और अन्दर छिप गया।

"इसका क्या मतलब है?" आद्रियान सोचने लगा। "अब किसे फिर से मेरी ज़रूरत पड़ गयी? कहीं चोर तो नहीं आ पहुँचा? कहीं मेरी बेवक़ूफ़ छोकरियों के पास

प्रेमी तो नहीं आते? ख़ुदा ख़ैर करे!" और ताबूतसाज़ ने अपने दोस्त युर्को को सहायता के लिए बुलाने का विचार कर लिया।

इसी क्षण कोई और भी फाटक के नज़दीक आया और अन्दर जाने लगा, मगर, भागते हुए मेज़बान को देखकर रुक गया और अपनी तिकोनी टोपी उतारकर अभिवादन करने लगा। आद्रियान को उसका चेहरा जाना-पहचाना लगा, मगर जल्दबाज़ी में वह उसे ठीक से न देख पाया।

"आप मेरे पास आये हैं?" हाँफते हुए आद्रियान ने कहा, "कृपया भीतर आइये।"

"तकल्लुफ़ न कर प्यारे," उसने घुटी-सी आवाज़ में जवाब दिया, "आगे चल; मेहमानों को रास्ता दिखा।" आद्रियान को भी तकल्लुफ़ करने की फ़ुर्सत नहीं थी। दरवाज़ा खुला था, वह सीढ़ियों पर चढ़ने लगा, और वह उसके पीछे-पीछे। आद्रियान को यूँ लगा कि उसके कमरों में लोग चल रहे हैं।

"कैसी शैतानियत है!" उसने सोचा और फ़ुर्ती से अन्दर गया...अब तो उसकी टाँगें थरथराने लगीं। कमरा मुर्दों से भरा हुआ था। खिड़की से आती हुई चाँद की रोशनी उनके पीले और नीले चेहरों, लटकते हुए होंठों, धुँधली, अधमुँदी आँखों और उभरी हुई नाकों पर पड़ रही थी...आद्रियान ने ख़ौफ़ से उन लोगों को पहचाना, जिन्हें उसकी सहायता से दफ़नाया गया था, और अपने साथ आये हुए मेहमान में उसने देखा ब्रिगेडियर को, जो मूसलाधार बारिश के दौरान दफ़नाया गया था। वे सभी, औरतें और मर्द, झुककर अभिवादन करते हुए, ताबूतसाज़ को घेरकर खड़े हो गये, सिवाय एक भिखारी के, जिसे हाल ही में मुफ़्त में दफ़नाया गया था। और जो सकुचाते हुए, अपनी क़मीज़ पर लजाते हुए चुपचाप एक कोने में खड़ा था। अन्य सभी ने बढ़िया कपड़े पहने थे : मृत औरतें रिबनवाली टोपियों में, मृतक अफ़सर वर्दियों में, मगर बढ़ी हुई दाढ़ियों में थे, व्यापारी त्यौहारोंवाली वेशभूषा में थे।

"देखो, प्रोखोरोव," ब्रिगेडियर ने इस सम्माननीय जमघट की ओर से कहा, "हम सभी तुम्हारे निमन्त्रण पर उठकर आये हैं, घर पर वे ही रुके हैं, जो एकदम पस्त हो चुके हैं, जो बिलकुल सड़ चुके हैं, और जिनकी सिर्फ़ बिना चमड़ी की हड्डियाँ ही शेष बची हैं, मगर उनमें से भी एक से रहा न गया—इतनी इच्छा थी उसकी तुम्हारे यहाँ आने की...।"

इसी क्षण एक छोटा-सा अस्थिपंजर भीड़ में से कोहनियाँ मारता हुआ आया और आद्रियान की ओर बढ़ा। उसकी खोपड़ी ताबूतसाज़ की ओर देखकर बड़े प्यार से मुस्कुराई। हल्के हरे और लाल रंग के चीथड़े और तार-तार हुए गाढ़े के टुकड़े उस पर ऐसे लटक रहे थे, मानों डंडे पर लटके हों और घुटनों तक के जूतों में टाँगों की हड्डियाँ यूँ बज रही थीं, जैसे ओखली में मूसल।

"तूने मुझे नहीं पहचाना प्रोखोरोव।" अस्थिपंजर बोला, "याद है गारद के सेवानिवृत्त सार्जंट प्योत्र पेत्रोविच कुरील्किन की, जिसे सन् 1799 में, तूने अपना पहला

ताबूत बेचा था—और वह भी चीड़ का, बलूत का कहकर?" इतना कहकर मुर्दे ने अपने हड्डियोंवाले आलिंगन में उसे लेना चाहा—मगर आद्रियान ने अपनी पूरी ताक़त बटोरकर ज़ोर से चीख़ मारी और उसे परे धकेल दिया। प्योत्र पेत्रोविच लड़खड़ाया, गिर पड़ा और पूरी तरह बिखर गया। मुर्दों के बीच गुस्से की लहर दौड़ गयी, वे सब अपने साथी की इज़्ज़त की ख़ातिर आगे आये, ग़ालियाँ और धमकियाँ देते हुए आद्रियान की ओर बढ़े और बेचारा मेज़बान उनकी चीख़ों से बहराया हुआ और क़रीब-क़रीब दबोचा हुआ, अपने होश खो बैठा और ख़ुद भी सेवानिवृत्त सार्जंट की हड्डियों पर गिर पड़ा।

सूरज बड़ी देर से उस बिस्तर को रोशन कर रहा था जिस पर ताबूतसाज़ लेटा हुआ था। आख़िरकार उसने आँखें खोलीं और अपने सामने समोवार गर्माती हुई नौकरानी को देखा। ख़ौफ़ से आद्रियान ने कल की घटनाओं को याद किया। त्र्यूखिना, ब्रिगेडियर और सार्जंट कुरील्किन उसकी धुँधली कल्पना में तैर गये। वह ख़ामोशी से इन्तज़ार करता रहा कि नौकरानी बातचीत शुरू करे और कल रात की घटनाओं का परिणाम बतलाये।

"कितनी गहरी नींद सोये तुम, मालिक, आद्रियान प्रोखोरोविच," अक्सीन्या ने उसकी ओर गाऊन बढ़ाते हुए कहा, "तुम्हारे पास पड़ोसी दर्ज़ी आया था, और यहाँ का सन्तरी भी बता गया है कि आज इन्स्पेक्टर का जन्मदिन है, मगर तुम तो सो रहे थे, और हम तुमको जगाना नहीं चाह रहे थे।"

"और क्या मरहूम त्र्यूखिना के यहाँ से मेरे पास कोई आया था?"

"मरहूम? क्या वह मर गयी?"

"बेवक़ूफ़ कहीं की। क्या तूने उसके दफ़न का सामान रखवाने में मेरी मदद नहीं की थी?"

"क्या कहते हो, मालिक? कहीं तुम पागल तो नहीं हो गये या फिर अभी तक कल का नशा उतरा नहीं है? कल कहाँ किसी को दफ़नाया गया? तुम सारे दिन जर्मन के यहाँ दावत उड़ाते रहे, नशे में धुत वापस लौटे, बिस्तर पर लुढ़क गये और अभी तक सोते रहे, जब तक कि प्रार्थना की घंटियाँ नहीं बजने लगीं।"

"ओह, क्या सचमुच!" ख़ुश होते हुए ताबूतसाज़ ने कहा।

"बिलकुल सच।" नौकरानी ने जवाब दिया।

"अगर ऐसा है, तो जल्दी से मुझे चाय दे और लड़कियों को भी बुला ले।"

निशाना

हमने एक दूसरे पर गोलियाँ चलाईं।
—बरातीन्स्की

मैंने क़सम खाई थी कि द्वन्द्व-युद्ध के नियम के अनुसार उसे मार डालूँगा (उस पर मेरा निशाना अभी बाक़ी था।)
—पड़ाव की एक शाम

1

हम XX स्थान पर थे। फ़ौजी अफ़सर के जीवन से सब वाक़िफ़ हैं। सुबह सैनिक शिक्षा, घुड़सवारी का प्रशिक्षण, रेज़िमेंट के कमांडर के साथ या यहूदी के शराबख़ाने में दिन का भोजन, शाम को शराब और ताश। XX में न तो कोई घर हमारे लिए खुला था, न ही कोई विवाह योग्य लड़की थी, हम एक-दूसरे के यहाँ एकत्रित होते, जहाँ, अपनी वर्दियों को छोड़कर कुछ भी दिखाई न देता।

सिर्फ़ एक व्यक्ति, सैनिक न होते हुए भी, हमसे जुड़ा हुआ था। उसकी उम्र लगभग पैंतीस साल थी और इसलिए हम उसे बुज़ुर्ग माना करते। अनुभव ने उसे हमारे मुक़ाबले अनेक सहूलियतें दी थीं, साथ ही उसकी सदाबहार उदासी, झक्की स्वभाव और ज़हरीली ज़बान हमारे युवा दिमाग़ों पर बुरी तरह छा गये थे। कोई रहस्य मानों उसके भाग्य को घेरे हुए था, वह रूसी प्रतीत होता था, मगर नाम उसका विदेशी था। कभी वह हुस्सार घुड़सवार दस्ते में रह चुका था, बढ़िया काम किया था; कोई भी नहीं जानता था कि ऐसी कौन-सी वजह थी, जिसने उसे सेवानिवृत्ति के लिए और इस दयनीय जगह पर रहने के लिए प्रेरित किया था, जहाँ पर वह एक साथ भिखारियों जैसी और फ़िज़ूलख़र्ची की ज़िन्दगी बिताया करता था : हमेशा पैदल चला करता, काले बदरंग फ्रॉक कोट में, मगर हमारी रेज़िमेंट के सभी अफ़सरों की हमेशा दावतें किया करता। यह सच है कि उसके यहाँ भोजन में दो या तीन चीज़ें ही हुआ करतीं, जो एक सेवानिवृत्त सैनिक बनाया करता था, मगर शैम्पेन की तो नदियाँ बहती थीं। कोई उसकी आर्थिक परिस्थिति और आमदनी के बारे में न जानता था, और उससे

इस बारे में पूछने की हिम्मत भी नहीं करता था। उसके पास किताबें थीं, ज़्यादातर युद्ध सम्बन्धी, और उपन्यास। वह ख़ुशी-ख़ुशी उन्हें पढ़ने के लिए दिया करता और कभी भी वापस न माँगता : मगर वह भी वे किताबें कभी न लौटाता जो पढ़ने के लिए माँग कर लाता था। उसका मुख्य शौक़ था, पिस्तौल से गोलियाँ चलाना। उसके कमरे की सभी दीवारें गोलियों से बिंध गयी थीं, छलनी हो गयी थीं, जैसे मधुमक्खियों का छत्ता हों। उस दयनीय मिट्टी के घर की, जिसमें वह रहता था, एकमात्र शान थी पिस्तौलों का विशाल संग्रह। कौशल, जो उसने प्राप्त कर लिया था, अविश्वसनीय था और अगर वह पिस्तौल की गोली से किसी की टोपी पर नाशपाती रखकर उसे बींधने का आह्वान करता, तो हमारे दस्ते का कोई भी जवान उसके सामने अपना सिर बेझिझक पेश कर देता। हमारे बीच अक्सर द्वन्द्व-युद्ध के बारे में ही बातचीत होती, सिल्वियो (इसी नाम से पुकारूँगा उसे) कभी भी उसमें दख़ल न देता। यह पूछने पर कि क्या उसने कभी द्वन्द्व-युद्ध किया है, वह बड़े रूखेपन से कहता कि किया है, मगर विस्तार से न बताता और ज़ाहिर था कि उसे ऐसे प्रश्न अच्छे न लगते। हम समझते थे कि उसकी आत्मा पर उसके भयानक कौशल के किसी अभागे शिकार का बोझ है। फिर भी, हम यह सन्देह भी नहीं कर सकते थे कि उसमें क़ायरता जैसी कोई चीज़ होगी। कुछ लोग ऐसे होते हैं, जिनका बाह्य रूप ऐसे सन्देहों को दूर ही रखता है। एक आकस्मिक घटना ने हमें आश्चर्यचकित कर दिया।

एक बार हम क़रीब दस अफ़सर सिल्वियो के यहाँ खाना खा रहे थे। हमेशा की ही तरह, यानी कि बहुत ज़्यादा, पी रहे थे, भोजन के बाद हमने मेज़बान को मनाया कि वह हमारे साथ ताश के खेल में ख़ज़ांची बन जाए। बड़ी देर तक वह मना करता रहा, क्योंकि वह कभी खेला ही नहीं था, आख़िरकार उसने ताश लाने को कहा, पचासेक सिक्के[1] मेज़ पर डाल दिये और पत्ते बाँटने लगा। हम उसे घेर कर बैठ गये और खेल शुरू हो गया। सिल्वियो खेल के दौरान एकदम ख़ामोश रहता था, कभी बहस न करता, न ही कोई सफ़ाई देता। अगर दाँव लगानेवाला गिनने में ग़लती कर देता तो या तो वह बकाया रक़म उसे तुरन्त अदा कर देता या अतिरिक्त रक़म लिख लेता। हम यह जानते थे और उसे अपने ढंग से काम करने देते, मगर हमारे बीच एक अफ़सर था, जो हाल ही में तबादले पर आया था। उसने भी, वहीं खेलते हुए, असावधानी से एक पॉइंट बढ़ा दिया। सिल्वियो ने खड़िया ली और अपनी आदत के मुताबिक़ हिसाब ठीक कर दिया। अफ़सर यह सोचते हुए कि उसने ग़लती कर दी है, उससे बहस करने लगा। सिल्वियो चुपचाप पत्ते बाँटता रहा। अफ़सर ने आपा खोते हुए ब्रश लेकर वह मिटा दिया, जो उसके हिसाब से व्यर्थ में ही लिखा गया था।

---

1. प्राचीन रूस में सोने के सिक्के 3, 5 या 10 रूबल के होते थे।

सिल्वियो ने खड़िया लेकर दुबारा लिख दिया। शराब, खेल और साथियों की हँसी से क्रोधित अफ़सर ने तैश में आकर मेज़ पर से ताँबे का शमादान उठाया और उसे सिल्वियो पर दे मारा जिसने फ़ौरन झुककर इस वार से अपने आपको बचा लिया। हम परेशान हो गये।

ग़ुस्से से फ़क सिल्वियो उठा और दहकती आँखों से बोला, "प्रिय महोदय, कृपया यहाँ से बाहर जाइए और भगवान को धन्यवाद दीजिए कि यह मेरे घर के अन्दर हुआ।"

हमें परिणाम में कोई सन्देह नहीं था और हमने नये साथी को मरा हुआ मान लिया। अफ़सर यह कहकर फ़ौरन बाहर निकल गया कि वह ख़ज़ांची महोदय की शर्तों पर इस अपमान का जवाव देने के लिए तैयार है। खेल कुछ और मिनटों तक चला, मगर यह महसूस करके कि मेज़बान की अब खेल में कोई दिलचस्पी नहीं रही, हम एक के बाद एक निकलकर अपने-अपने फ़्लैट में चले गये, यह अनुमान लगाते हुए कि शीघ्र ही एक जगह ख़ाली होनेवाली है।

दूसरे दिन घुड़दौड़ के मैदान में हम पूछ ही रहे थे कि बेचारा लेफ़्टिनेंट अब तक ज़िन्दा है या नहीं कि वह स्वयं ही हमारे बीच प्रकट हो गया। हमने उससे वही सवाल पूछा। उसने जवाब दिया कि सिल्वियो के बारे में उसे अभी तक कोई ख़बर नहीं है। हम हैरान रह गये। हम सिल्वियो के घर आये और हमने उसे आँगन में दरवाज़े पर चिपकाये गये इक्के पर लगातार गोलियाँ बरसाते देखा। उसने कल की घटना के बारे में एक भी शब्द कहे बग़ैर हमेशा की तरह हमारा स्वागत किया...। तीन दिन बीत गये। लेफ़्टिनेंट अभी तक ज़िन्दा था। हम अचरज से एक-दूसरे से पूछ रहे थे : क्या सचमुच सिल्वियो द्वन्द्व-युद्ध नहीं करेगा? सिल्वियो ने द्वन्द्व-युद्ध नहीं किया। वह बड़ी साधारण-सी सफ़ाई पेश करने से ही सन्तुष्ट हो गया और उसने समझौता कर लिया।

नौजवानों की राय में उसे इससे बहुत बड़ा नुक़सान पहुँचा था। बहादुरी के अभाव को युवा वर्ग कभी क्षमा नहीं करता, जो पराक्रम को मानव का सर्वोच्च गुण मानता है और इसके रहते अन्य सभी सम्भव त्रुटियों को क्षमायोग्य समझता है। मगर धीरे-धीरे लोग सब कुछ भूल गये और सिल्वियो ने दुबारा अपनी पहली प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली।

सिर्फ़ मैं ही उससे निकटता न बढ़ा पाया। स्वभाव से रोमांटिक होने के कारण, मैं औरों की तुलना में सबसे ज़्यादा उस आदमी के प्रति लगाव रखता था, जिसका जीवन एक पहेली था और जो मुझे किसी रहस्यमय कथा का नायक प्रतीत होता था। वह मुझे प्यार करता था, कम-से-कम मुझ अकेले के लिए ही उसने अपनी कटु ज़बान को छोड़ दिया था और मुझसे वह बड़ी सरलता तथा असाधारण प्रसन्नता से अनेक विषयों के बारे में बातचीत करता। मगर उस मनहूस शाम के बाद यह ख़याल कि

उसका आत्मसम्मान कलंकित हो गया है और वह कलंक उसी की ग़लती के कारण धुल नहीं पाया है, मुझे छोड़ नहीं रहा था और उसके साथ पहले की तरह बर्ताव करने में बाधा डाल रहा था; मुझे उसकी ओर देखने से शर्म आती थी।

सिल्वियो इतना बुद्धिमान एवं अनुभवी था कि इसकी अनदेखी न कर सकता था और इसका कारण बूझे बग़ैर नहीं रह सकता था। ऐसा लगा कि उसे इससे चोट पहुँची है; कम-से-कम मैंने दो बार ऐसा महसूस किया कि वह मुझे सफ़ाई देना चाहता है; मगर मैं ऐसे मौक़ों से दूर भागता रहा और सिल्वियो मुझसे दूर हो गया। तब से मैं उससे सिर्फ़ दोस्तों की उपस्थिति में ही मिलता और हमारी पहलेवाली खुलकर होनेवाली बातचीत बन्द हो गयी।

राजधानी के उदासीन नागरिक उन अनेक अनुभूतियों से अनभिज्ञ रहते हैं, जो गाँव या क़स्बों के निवासियों के लिए इतनी परिचित होती हैं, उदाहरण के लिए, डाकवाले दिन का इन्तज़ार; मंगलवार और शुक्रवार को हमारा सेना का दफ़्तर अफ़सरों से खचाखच भरा रहता, किसी को पैसों का इन्तज़ार रहता, किसी को ख़तों का, किसी को अख़बार का। लिफ़ाफ़े अक्सर वहीं खुल जाया करते, समाचारों का आदान-प्रदान हो जाता और दफ़्तर बड़ा ही सजीव प्रतीत होता। सिल्वियो को हमारी ही रेज़िमेंट के पते पर ख़त मिला करते थे, और वह आमतौर पर वहीं रहा करता। एक दिन उसे एक लिफ़ाफ़ा दिया गया, जिसकी मुहर उसने बड़ी बेसब्री से खोली। ख़त को सरसरी नज़रों से पढ़ते हुए उसकी आँखें चमकने लगीं। अफ़सरों ने, जो अपने-अपने पत्रों में व्यस्त थे, कोई ग़ौर नहीं किया।

"महानुभावो," सिल्वियो ने उनसे कहा, "परिस्थितियों की माँग है कि मैं यहाँ से फ़ौरन चल पड़ूँ; आज ही रात को जाऊँगा; उम्मीद है कि आप मेरे यहाँ आख़िरी बार भोजन करने से इनकार न करेंगे। मैं आपका भी इन्तज़ार करूँगा।" उसने मेरी ओर मुख़ातिब होते हुए अपनी बात ज़ारी रखी, "ज़रूर करूँगा।" इतना कहकर वह जल्दी से चला गया और हम, सिल्वियो के यहाँ मिलने की बात तय करते हुए अपने-अपने रास्ते चले गये।

मैं नियत समय पर सिल्वियो के यहाँ पहुँचा और मैंने लगभग पूरी रेज़िमेंट को वहाँ पाया। उसका सब सामान बाँध दिया गया था, नंगी, छलनी हुई दीवारें अकेली रह गयी थीं। हम मेज़ के चारों ओर बैठ गये, मेज़बान बहुत ख़ुश था और जल्दी ही उसकी प्रसन्नता सभी पर छा गयी, हर मिनट कॉर्क फ़टाक से उड़ते, गिलास फेन उगलते और सूँ ... सूँ करते, और हम हर सम्भव तरीक़े से मुसाफ़िर के लिए शुभ यात्रा और हर तरह की ख़ुशी की कामना कर रहे थे। काफ़ी रात को हम मेज़ से उठे। टोपियाँ पहन-पहनकर जाते हुए सभी से विदा लेते हुए सिल्वियो ने ठीक उसी क्षण मेरा हाथ थामकर मुझे रोक लिया, जब मैं बाहर निकलने ही वाला था।

"मुझे आपसे कुछ कहना है।" उसने हौले से कहा। मैं रुक गया।

मेहमान चले गये; हम दोनों ही रह गये, एक-दूसरे के सामने बैठकर ख़ामोशी से पाइप के कश लगाते रहे। सिल्वियो परेशान था; उसकी छलछलाती मस्ती का नामोनिशान तक न वचा था। उदास फ़क चेहरा, दहकती आँखें और घना धुआँ, जो उसके मुँह से निकल रहा था, उसे सचमुच के शैतान जैसा बना रहे थे। कुछ क्षण बीत गये और सिल्वियो ने ख़ामोशी को तोड़ा।

"शायद हम फिर कभी न मिल पायें।" उसने मुझसे कहा, "जुदा होने से पहले मैं सफ़ाई देना चाहता था। आपने देखा ही होगा कि मुझे औरों की राय की परवाह नहीं है, मगर आपसे मैं प्यार करता हूँ और महसूस करता हूँ कि यदि मेरे बारे में आपके दिल में ग़लत धारणा रह गयी तो मेरे दिल पर एक बड़ा बोझ रह जाएगा।"

वह रुका और अपना पाइप भरने लगा, मैं नज़रें झुकाये ख़ामोश रहा।

"आपको बड़ा अजीब लगा था," वह कहता रहा, "कि मैंने उस पियक्कड़ झक्की आर XX को क्यों नहीं ललकारा। आप मानेंगे कि हथियार चुनने का पहला हक़ मेरा होते हुए, उसका जीवन मेरी मुट्ठी में था, और मेरा क़रीब-क़रीब सुरक्षित था : सुलह करने का श्रेय मैं बड़ी आसानी से अपनी महानता को दे सकता हूँ, मगर मैं झूठ बोलना नहीं चाहता। अगर मैं अपने जीवन को ज़रा भी दाँव पर न लगाते हुए आर XX को सज़ा दे सकता, तो मैं उसे किसी क़ीमत पर माफ़ नहीं करता।"

मैंने अचरज से सिल्वियो की ओर देखा। ऐसी स्वीकारोक्ति ने मुझे बुरी तरह परेशान कर दिया। सिल्वियो कहता रहा, "बिलकुल यही बात है : मुझे अपने जीवन को मौत के हवाले करने का कोई हक़ नहीं है। छह साल पहले मैंने एक झापड़ खाया था और मेरा दुश्मन अभी तक जीवित है।"

मेरी उत्सुकता पूरी तरह जाग उठी थी।

"आपने उससे द्वन्द्व-युद्ध नहीं किया?" मैंने पूछा, "शायद हालात ने आपको एक-दूसरे से अलग कर दिया?"

"मैंने उससे द्वन्द्व-युद्ध किया था," सिल्वियो ने जवाब दिया, "और यह है यादगार हमारे द्वन्द्व-युद्ध की।" सिल्वियो उठा और उसने गत्ते के डिब्बे से सुनहरे फुन्दे और फ़ीतेवाली लाल टोपी निकाली; उसने उसे पहन लिया, वह माथे के ऊपर, गोली से छिदी हुई थी।

"आप जानते हैं," सिल्वियो ने आगे कहा, "कि मैंने XX घुड़सवार दस्ते में काम किया था। मेरा स्वभाव आपको मालूम ही है : मुझे अव्वल आने की आदत पड़ गयी है, मगर चढ़ती जवानी के दिनों में तो मुझ पर यह जुनून सवार था। हमारे ज़माने में हुल्लड़बाज़ी करने का फ़ैशन था : मैं सेना में पहले नम्बर का हुल्लड़बाज़ था। हम पियक्कड़पन की शेख़ी मारा करते, मैं मशहूर बुर्त्सोव से भी ज़्यादा पी गया था,

जिसका गुणगान देनिस दावीदोव[1] ने किया है। द्वन्द्व-युद्ध तो हमारी रेज़िमेंट में हर पल होते रहते थे : मैं उन सभी में या तो गवाह या योद्धा के रूप में मौजूद रहता था। साथी मेरा आदर करते और रेज़िमेंट के कमांडर, जो हर मिनट बदला करते थे, मुझे एक अवश्यम्भावी बुराई की तरह देखा करते।

"मैं सुकून से (या बेचैनी से) अपनी ख्याति का मज़ा ले रहा था कि हमारी रेज़िमेंट में आया धनी और प्रसिद्ध परिवार का एक नौजवान (उसका नाम नहीं बताना चाहता)। आज तक मैंने ऐसे भाग्यशाली और होनहार व्यक्ति को नहीं देखा था। कल्पना कीजिए : जवानी, बुद्धि, ख़ूबसूरती, पागलों-जैसी बेतहाशा प्रसन्नता, लापरवाह बहादुरी, ऊँचा नाम, पैसे, जिनका हिसाब भी वह नहीं जानता था और जो कभी ख़त्म ही नहीं होते थे और सोचिए हम पर उसने कैसा प्रभाव डाला होगा। मेरा अव्वल दर्ज़ा डगमगाने लगा। मेरी ख्याति से आकर्षित होकर वह मेरे साथ दोस्ती करना चाहता था, मगर मैं उससे बड़ी बेरुख़ी से मिला और वह भी बग़ैर अफ़सोस किये मुझसे दूर हो गया। मैं उससे नफ़रत करता था। रेज़िमेंट में और महिलाओं के बीच उसकी सफलता ने मुझे पूरी तरह निराश कर दिया। मैं उससे झगड़ा करने के अवसर ढूँढ़ता; मेरी व्यंग्यात्मक चुटकियों का जवाब वह व्यंग्यात्मक चुटकियों से ही दिया करता, जो एकदम अप्रत्याशित और मेरी चुटकियों से ज़्यादा तीखी हुआ करतीं, और बेहद दिलचस्प होती थीं; वह मज़ाक़ करता था और मैं जली-कटी सुनाता। आख़िरकार एक बार एक पोलिश ज़मींदार के यहाँ नृत्योत्सव में, उसे सभी नारियों के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ देखकर, ख़ासतौर से गृहस्वामिनी के भी, जिसके साथ मेरा सम्बन्ध था, मैंने उसके कान में कोई भद्दी-सी बात कही। वह भड़क गया और उसने मुझे एक झापड़ मार दिया। हमने तलवारें खींच लीं, औरतें बेहोश होने लगीं; हमें खींचकर अलग किया गया और उसी रात हम द्वन्द्व-युद्ध के लिए चल पड़े।

"यह हुआ सूर्योदय के समय। मैं नियत स्थान पर अपने तीन सहायकों के साथ खड़ा था। बड़ी बेचैनी से मैं अपने प्रतिद्वन्द्वी का इन्तज़ार कर रहा था। वसन्त का सूरज निकला, गर्मी हो चली थी। मैंने दूर से उसे देखा। वह पैदल आ रहा था, तलवार पर फ़ौजी क़मीज़ लटकाये, एक सहायक के साथ। हम उसकी ओर बढ़े। वह नज़दीक आया, हाथों में चेरियों से भरी टोपी थामे। सहायकों ने बीस क़दम की दूरी नापी। मुझे पहला निशाना लगाना था : मगर गुस्से के कारण मैं इतना बेचैन था कि मुझे अपने हाथ की दृढ़ता पर विश्वास न रहा और स्वयं को शान्त होने के लिए थोड़ा समय देने

1. देनिस दावीदोव—कवि, सैनिक विषयों के लेखक। सन् 1812 में उन्होंने फ्रांसीसी सेना के विरुद्ध छापामार युद्ध किया था। बुर्त्सोव ने भी इस युद्ध में पराक्रम दिखाया था। दावीदोव की कविताओं में अक्सर बुर्त्सोव का उल्लेख किया गया है।

के इरादे से मैंने उससे पहला निशाना लगाने को कहा; मेरा प्रतिद्वन्द्वी राज़ी न हुआ। हमने सिक्का उछाला, पहला मौक़ा मिला उसे, तक़दीर के सदाबहार सिकन्दर को। उसने निशाना साधा और मेरी टोपी में छेद कर दिया। अब मेरी बारी थी। आख़िर उसका जीवन मेरे हाथ में आ ही गया; मैंने ललचाई नज़रों से उसकी ओर देखा, परेशानी की कम-से-कम हल्की-सी परछाईं देखने के लिए...वह पिस्तौल के सामने खड़ा था, टोपी से पकी हुई चेरियाँ चुनता हुआ और गुठलियाँ थूकता हुआ, जो मुझ तक आ रही थीं। उसकी बेपरवाही ने मुझे ग़ुस्से से पागल कर दिया। क्या फ़ायदा होगा, मैंने सोचा, उसकी ज़िन्दगी छीनकर, जब वह उसकी ज़रा भी हिफ़ाज़त नहीं करता है? मेरे दिमाग़ में एक कटु विचार झाँका। मैंने पिस्तौल नीचे कर लिया। 'आपको शायद अभी मरने की फ़ुर्सत नहीं है,' मैंने उससे कहा, 'आप कृपया नाश्ता कीजिए; मैं आपको परेशान नहीं करना चाहता।' 'आप मुझे ज़रा भी परेशान नहीं कर रहे हैं।" उसने प्रतिवाद किया, "कृपया गोली चलाइए या फिर, जैसा आप चाहें : ...आपका निशाना बाक़ी रहा; मैं हमेशा आपकी ख़िदमत में हाज़िर रहूँगा।' मैं अपने सहयोगियों से बोला कि इस समय गोली चलाने का मेरा कोई इरादा नहीं है और द्वन्द्व युद्ध वहीं समाप्त हो गया।

"मैं सेना से निवृत्त होकर इस जगह पर चला आया। तब से एक भी दिन ऐसा नहीं बीता, जब मैंने प्रतिशोध लेने के बारे में न सोचा हो। आज वह घड़ी आ गयी है..."

सिल्वियो ने जेब से सुबह आया हुआ ख़त निकालकर मुझे पढ़ने के लिए दिया। किसी ने (शायद उसके विश्वस्त साथी ने) मॉस्को से लिखा था कि एक *मशहूर शख़्स* शीघ्र ही सुन्दर युवती से विधिवत् शादी करनेवाला है।

"आप समझ जायेंगे।" सिल्वियो ने कहा, "कि यह *मशहूर शख़्स* कौन है। मॉस्को जाऊँगा। देखेंगे, क्या अब भी, ब्याह से ठीक पहले, वह मौत की अगुवानी उतनी ही लापरवाही से करता है, जैसा कभी उसने चेरियाँ खाते हुए किया था!"

इतना कहकर सिल्वियो खड़ा हो गया, उसने अपनी टोपी ज़मीन पर फेंक दी और कमरे में यूँ चक्कर लगाने लगा, जैसे कोई शेर अपने पिंजरे में लगाता है। मैं निःस्तब्ध-सा उसकी बातें सुनता रहा, अजीब से, परस्पर विरोधी ख़याल मुझे परेशान कर रहे थे।

नौकर अन्दर आया और बोला कि घोड़े तैयार हैं सिल्वियो ने कसकर मेरा हाथ दबाया, हमने एक-दूसरे को चूमा। वह गाड़ी में बैठ गया, जहाँ उसके दो सूटकेस रखे थे, एक पिस्तौलों से भरा हुआ, दूसरा उसकी रोज़मर्रा की चीज़ोंवाला। हमने एक बार फिर एक-दूसरे से विदा ली और घोड़े चल पड़े।

2

कुछ साल बीत गये और पारिवारिक परिस्थितियों ने मुझे एन XX क़स्बे के एक दयनीय गाँव में बसने पर मजबूर कर दिया। घर-गृहस्थी के कामों में व्यस्त मैं अपनी पुरानी हुल्लड़भरी और मस्त ज़िन्दगी को याद करके चुपचाप आहें भरा करता। ख़ासकर इस निपट एकान्त में शिशिर की एवं जाड़ों की शामें बिताना मुझे बहुत कठिन लगता। दोपहर के भोजन तक का समय तो मैं किसी तरह काट लेता, अपनी बुढ़िया से बतियाते, काम के सिलसिले में नये दफ़्तरों के चक्कर लगाते-लगाते; मगर जैसे ही अँधेरा घिरने लगता, मैं समझ नहीं पाता कि कहाँ जाऊँ? अलमारियों के ऊपर और तहख़ाने में जो थोड़ी-बहुत किताबें मिली थीं, वे मुझे ज़ुबानी याद हो गयी थीं। सभी क़िस्से-कहानियाँ, जो मेरी भंडारन किरीलोव्ना को याद थे, मुझे कई बार सुनाये जा चुके थे; किसान औरतों के गाने मुझे उदास कर देते। मैंने कड़वी शराब पीने का प्रयास किया, मगर उससे मेरा सिर दुखने लगता था; और, मानता हूँ कि मुझे यह डर भी था कि कहीं मैं *शोक से शराबी* न बन जाऊँ, यानी कि निरा पियक्कड़, जिसके कई उदाहरण मैंने हमारे क़स्बे में देखे थे। मेरे आसपास कोई घनिष्ठ पड़ोसी भी न थे, सिवाय दो या तीन पियक्कड़ों के, जिनकी बातों में आहें और हिचकियों की भरमार रहती थी। एकान्त मेरी बर्दाश्त से बाहर हो चला था।

मेरे घर से चार मील दूर काउंटेस बी. XX की सम्पन्न जागीर थी; मगर वहाँ सिर्फ़ मुंशी ही रहता था, काउंटेस तो अपनी जागीर में सिर्फ़ एक बार आयी थी, अपनी शादी के पहले साल में, और वह भी महीने भर के लिए। मगर मेरे एकान्तवास के दूसरे वसन्त में यह अफ़वाह फैली कि काउंटेस अपने पति के साथ अपने गाँव गर्मियाँ बिताने आ रही है। और सचमुच, जून के आरम्भ में वे आ भी गये।

अमीर पड़ोसियों का आगमन ग्रामवासियों के लिए महत्त्वपूर्ण होता है। ज़मींदार और उनके नौकर-चाकर इस बारे में दो महीने पहले से तीन साल बाद तक बातें करते रहते हैं। जहाँ तक मेरा सवाल है, तो मानता हूँ कि जवान और ख़ूबसूरत पड़ोसन के आगमन की ख़बर ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला, मैं उसे देखने के लिए व्यग्र हो उठा, और इसलिए उसके पहुँचने के बाद के पहले ही इतवार को दोपहर के खाने के बाद XX गाँव की ओर चल पड़ा, उन महानुभावों को अपना परिचय देने, निकटतम पड़ोसी और आज्ञाकारी सेवक के रूप में।

सेवक मुझे काउंट के अध्ययन-कक्ष में लाया और ख़ुद मेरे बारे में बताने के लिए चला गया। विशाल अध्ययन-कक्ष सभी सम्भव शानोशौकत से सँवारा गया था; दीवारों से लगकर किताबों की अलमारियाँ खड़ी थीं, जिनमें से हरेक के ऊपर ताँबे का एक-एक बुत था; संगमरमर की अँगीठी के ऊपर एक चौड़ा शीशा था; फ़र्श पर हरा

पड़ा और उसके ऊपर गलीचे बिछे थे। अपने छोटे-से दयनीय कोने में शानोशौकत का अनभ्यस्त होने के कारण और लम्बे समय से औरों के ठाठबाठ के दर्शन न होने के कारण मैं सकुचा गया और एक अजीब-सी धड़कन लिए काउंट का इस तरह इन्तज़ार करने लगा, जैसे प्रान्तीय शहर से आया हुआ कोई प्रार्थी मन्त्री के बाहर आने का इन्तज़ार करता है।

दरवाज़ा खुला और क़रीब बत्तीस वर्ष का ख़ूबसूरत आदमी भीतर आया। काउंट खुले दिल से, स्नेहपूर्वक मेरी ओर बढ़े, मैंने हिम्मत बटोरते हुए अपना परिचय देने की कोशिश की, मगर उन्होंने मुझे रोक दिया। हम बैठ गये। उसकी निःसंकोच और प्यारी बातों ने मेरी सकुचाहट को ख़त्म कर दिया, मैं अपनी स्वाभाविक हालत में आ ही रहा था कि अचानक काउंटेस ने प्रवेश किया, और मैं पहले से भी ज़्यादा परेशान हो गया। वाक़ई में वह बहुत सुन्दर थी। काउंट ने मेरा परिचय करवाया; मैंने सहज दिखाई देने की कोशिश की; मगर जितना ही मैं निःसंकोच होने का प्रयत्न करता, मेरा अटपटापन उतना ही बढ़ता जाता। उन्होंने मुझे सँभलने और नये परिचय से अभ्यस्त होने के लिए समय देने के उद्देश्य से, आपस में बातें करना आरम्भ कर दिया, मुझसे भले पड़ोसी की तरह, बिना किसी औपचारिकता के व्यवहार करने लगे। इसी दौरान मैं कमरे में चहलक़दमी करने लगा, किताबों और तस्वीरों को देखते हुए। तस्वीरों को तो मैं समझता नहीं हूँ, मगर उनमें से एक ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। यह स्विट्ज़रलैंड का कोई दृश्य था, मगर मुझे चित्र ने इतना नहीं चौंकाया, जितना कि इस बात ने कि तस्वीर पर एक के ऊपर एक दो गोलियाँ चलाई गयी थीं।

"क्या बढ़िया निशाना है!" मैंने काउंट की ओर मुख़ातिब होते हुए कहा।

"हाँ," उसने जवाब दिया, "लाजवाब निशाना है। क्या आप अच्छा निशाना लगा लेते हैं?" उसने आगे कहा।

"लाजवाब," मैंने जवाब दिया, इस बात से खुश होकर कि बातचीत आख़िरकार उस चीज़ के बारे में हो रही है, जो मेरे दिल के क़रीब है। "तीस क़दम दूर से ताश के पत्ते पर अचूक निशान लगाता हूँ, ज़ाहिर है—पहचान की पिस्तौलों से।"

"सच?" काउंटेस ने एकाग्रता के भाव से कहा। "और तुम, मेरे दोस्त, क्या तीस क़दम दूर से ताश के पत्ते पर निशाना लगा सकते हो?"

"कभी," काउंट ने जवाब दिया, "हम कोशिश करेंगे। अपने ज़माने में मैं भी बुरा निशानेबाज़ नहीं था, मगर चार साल हो गये हैं, मैंने हाथों में पिस्तौल ही नहीं ली है।"

"ओऽ," मैंने टिप्पणी की, "तब तो मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि हुज़ूर बीस क़दम दूर से भी ताश पर निशाना नहीं लगा सकते : पिस्तौल हर रोज़ प्रैक्टिस की माँग करती है, यह मैं अपने अनुभव से जानता हूँ। हमारी रेज़िमेंट में मैं एक बेहतरीन निशानेबाज़ समझा जाता था। एक बार मैंने पूरे एक महीने तक पिस्तौल को

हुआ नहीं : मेरी पिस्तौलें मरम्मत के लिए दी गयी थीं; तो आपका क्या ख़याल है, हुजूर? पहली बार, जब मैंने पिस्तौल चलाना शुरू किया, चार बार बोतल का निशाना चूक गया—पच्चीस क़दम की दूरी से। हमारे यहाँ एक घुड़सवार दस्ते का अफ़सर था, जान देनेवाला, शौक़ीन; वह उस समय वहीं था और मुझसे बोला, मान ले, भाई, तेरा हाथ बोतल पर नहीं उठ रहा है। नहीं, जनाब इस प्रैक्टिस को कभी नहीं छोड़ना चाहिए, वर्ना आदत छूट जाएगी। बेहतरीन निशानेबाज़, जिससे मिलने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था, हर रोज़ पिस्तौल चलाता था, कम-से-कम तीन बार, दोपहर के भोजन से पहले। उसे इसकी ऐसी आदत पड़ गयी थी, जैसी वोद्का के जाम की।"

काउंट और काउंटेस खुश थे कि मैं बोल रहा था।

"निशाना कैसा था उसका?" काउंट ने मुझसे पूछा।

"ऐसा, हुजूर, कि अगर वह देखता कि दीवार पर मक्खी बैठी है : आप हँस रही हैं, काउंटेस? हे भगवान, सच कह रहा हूँ। अगर वह मक्खी देख लेता तो चीख़ता, 'कुज़्का, पिस्तौल!' कुज़्का भरी हुई पिस्तौल लाता। वह घोड़ा दबाता और मक्खी को दीवार से चिपका देता!"

"आश्चर्य की बात है!" काउंट ने आगे पूछा, "और उसका नाम क्या था?"

"सिल्वियो हुजूर।"

"सिल्वियो!" अपनी जगह से उछलते हुए काउंट चीख़ पड़ा, "आप सिल्वियो को जानते थे?"

"कैसे नहीं जानता महाशय, मैं उसका दोस्त था, मगर पाँच साल हो गये, उसकी कोई ख़बर नहीं है। हुजूर, क्या आप भी उसे जानते थे?"

"जानता था, बड़ी अच्छी तरह से जानता था। क्या उसने आपको बताया था ...मगर नहीं, मैं नहीं सोचता, क्या उसने आपको एक बड़ी अजीब घटना के बारे में बताया था?"

"झापड़ तो नहीं हुजूर, जो उसे नृत्योत्सव में किसी मनचले ने मारा था?"

"क्या उसने इस मनचले का नाम आपको बताया था?"

"नहीं हुजूर, नहीं बताया...आह! हुजूर," मैंने सच्चाई को भाँपते हुए कहा, "माफ़ कीजिए...मैं नहीं जानता था...कहीं आप ही तो?..."

"मैं ही," काउंट ने अत्यन्त परेशानी से कहा, "और यह बिंधी हुई तस्वीर हमारी अन्तिम भेंट की निशानी है..."

"आह, मेरे प्यारे," काउंटेस ने कहा, "भगवान के लिए, कुछ न कहो; मुझे सुनने में डर लगेगा।"

"नहीं," काउंट ने प्रतिवाद किया, "मैं सब कुछ बतलाऊँगा; वह जानता है कि मैंने कैसे उसके दोस्त का अपमान किया था, यह भी जान लें कि सिल्वियो ने कैसे मुझसे प्रतिशोध लिया था।"

काउंट ने अपनी कुर्सी मेरे निकट खिसकाई और मैंने वड़ी तन्मयता से यह कहानी सुनी।

"पाँच साल पहले मैंने शादी की। पहला महीना, हनीमून, मैंने यहाँ, इसी गाँव में बिताया। इस घर का आभारी हूँ मैं जीवन की बेहतरीन घड़ियों के लिए और एक तकलीफ़देह याद के लिए।

"एक शाम को हम घोड़ों पर जा रहे थे, मेरी बीवी का घोड़ा न जाने क्यों अड़ियलपन दिखा रहा था, वह घवरा गयी, उसने मुझे रास थमा दी और पैदल घर की ओर चल पड़ी, मैं आगे-आगे जा रहा था। आँगन में मैंने एक सफ़री गाड़ी देखी, मुझे बताया गया, कि मेरे अध्ययन-कक्ष में एक आदमी बैठा है, जो अपना नाम नहीं वताना चाहता, मगर उसने सिर्फ़ इतना बतलाया है कि उसे मुझसे काम है। मैं कमरे में आया और अँधेरे में मैंने वढ़ी हुई दाढ़ीवाले, धूल-धूसरित आदमी को देखा, वह यहाँ, अँगीठी के पास खड़ा था। उसके नाक नक़्श याद करने की कोशिश करते हुए मैं उसके निकट गया। 'तुमने मुझे नहीं पहचाना, काउंट?' उसने थरथराती आवाज़ में पूछा। 'सिल्वियो!' मैं चीख़ पड़ा और मानता हूँ कि मैंने महसूस किया कि मेरे सिर के बाल खड़े हो गये हैं। 'एकदम सही,' उसने आगे कहा, 'मेरा निशाना बाक़ी है, मैं अपनी पिस्तौल भरने के लिए आया हूँ, क्या तुम तैयार हो?' उसकी बाजूवाली जेव से पिस्तौल झाँक रही थी। मैंने बारह क़दम गिने और वहाँ, कोने में, खड़ा हो गया उससे यह कहते हुए कि वह जल्दी से गोली चला ले, बीवी के लौटने से पहले। वह टाल रहा था—उसने रोशनी माँगी। मोमबत्तियाँ जंला दी गयीं। मैंने दरवाज़ा बन्द कर दिया किसी को भी अन्दर न छोड़ने की हिदायत दी और फिर से उससे गोली चलाने का अनुरोध किया। उसने पिस्तौल निकाली और निशाना साधा...मैं पल-पल गिन रहा था...मैं उसके बारे में सोच रहा था...एक भयानक मिनट वीता। सिल्वियो ने हाथ नीचे कर लिया। 'मुझे अफ़सोस है उसने कहा, कि मेरी पिस्तौल में चेरी की गुठलियाँ नहीं भरी हैं...गोली भरी हैं। मुझे यूँ लग रहा है कि यह द्वन्द्व-युद्ध नहीं है, बल्कि हत्या है : मुझे निहत्थे पर निशाना लगाने की आदत नहीं है। फिर से शुरू करते हैं, सिक्का उछालते हैं कि पहले कौन गोली चलायेगा?' मेरा सिर घूमने लगा। लगता है कि मैं राज़ी नहीं हो रहा था...आख़िरकार हमने एक और पिस्तौल भरी, दो पर्चियाँ डालीं, उसने उन्हें टोपी में रखा, जिसमें मैंने कभी छेद किया था, मेरा फिर से पहला नम्बर निकला। 'अरे काउंट, ग़ज़ब की क़िस्मतवाला है तू'" उसने ऐसी मुस्कुराहट के साथ कहा, जिसे मैं कभी न भूल सकूँगा। समझ नहीं पा रहा हूँ कि मुझे क्या हो गया था और उसने मुझे कैसे इसके लिए मजबूर कर दिया...मगर—मैंने गोली चलाई और निशाना लगा इस तस्वीर पर। (काउंट ने उँगली से छिदी हुई तस्वीर की ओर इशारा किया) उसका चेहरा आग की तरह दहक रहा था, काउंटेस अपने रूमाल से भी ज़्यादा सफ़ेद पड़ गयी थी; मैं चीख़े बग़ैर न रह सका।

"मैंने गोली चलाई," काउंट कहता रहा, "और शुक्र है भगवान का कि निशाना चूक गया, उसके बाद सिल्वियो... (इस क्षण वह सचमुच बड़ा भयानक लग रहा था) सिल्वियो ने मेरी ओर पिस्तौल तानी। अचानक दरवाज़े खुल गये, माशा दौड़ती हुई अन्दर आयी और चीख़ मारकर मेरे गले से लिपट गयी। उसकी उपस्थिति ने मेरी बहादुरी वापस लौटा दी। 'प्यारी,' मैंने उससे कहा, "क्या तुम देख नहीं रही हो कि हम मज़ाक़ कर रहे हैं? कितनी डर गयीं तुम! जाओ, एक गिलास पानी पियो और फिर हमारे पास आओ, मैं अपने पुराने दोस्त और साथी से तुम्हें मिलवाऊँगा।"

"माशा को विश्वास नहीं हो रहा था। 'कहिये, क्या मेरे पति सच कह रहे हैं,' उसने ख़ौफ़नाक सिल्वियो से पूछा। 'क्या यह सच है कि आप लोग मज़ाक़ कर रहे थे?' 'वह हमेशा मज़ाक़ करता है, काउंटेस,' सिल्वियो ने उसे जवाब दिया, 'एक दिन उसने मुझे मज़ाक़ में झापड़ मार दिया, मज़ाक़ में ही मेरी यह टोपी छेद दी, मज़ाक़ में अब मुझ पर ताना हुआ निशाना छोड़ दिया, अब मेरा भी मज़ाक़ करने का मन हो आया है...' इतना कहकर उसने मुझ पर पिस्तौल तान दी...उसके सामने! माशा उसके पैरों पर गिर पड़ी। 'उठो, माशा, शर्म की बात है!' मैं बदहवासी में चीख़ा, 'और आप, हुज़ूर, इस ग़रीब बेचारी औरत का मज़ाक़ उड़ाना बन्द करेंगे या नहीं? गोली चलायेंगे या नहीं?' 'नहीं चलाऊँगा,' सिल्वियो ने जवाब दिया, 'मैं सन्तुष्ट हूँ, मैंने तुम्हारी घबराहट, तुम्हारी सकुचाहट देख ली, मैंने तुम्हें मुझ पर निशाना लगाने को मजबूर कर दिया, मेरे लिए इतना ही काफ़ी है। तुम मुझे हमेशा याद रखोगे। तुम्हें तुम्हारी अन्तरात्मा के हवाले करता हूँ।' इतना कहकर वह निकलने ही वाला था, मगर दरवाज़े पर रुक गया, मेरे द्वारा छेदी गयी तस्वीर को देखा, उस पर गोली चलाई, बग़ैर कोई निशाना साधे और छिप गया। बीवी बेहोश पड़ी थी, लोग उसे रोक न पाये और ख़ौफ़ से उसकी ओर देखते रहे, वह ड्योढ़ी में आया और गाड़ीवान को पुकारकर चलता बना, इससे पहले कि मैं सँभल पाता।"

काउंट ख़ामोश हो गया। इस तरह मुझे उससे कथा का अन्त मालूम हुआ, जिसके आरम्भ ने मुझे इतना विचलित कर दिया था। इसके नायक से मैं फिर कभी मिल न सका। कहते हैं कि सिल्वियो, अलेक्सान्द्र इस्पिलान्ती[1] की बग़ावत के समय भूमिगत ग्रीक संगठनों का नेतृत्व कर रहा था और वह स्कुल्यानो के निकट हुए युद्ध में मारा गया।

1. अलेक्सान्द्र इस्पिलान्ती—ग्रीकवासियों के स्वाधीनता संग्राम का एक नेता।

हुआ क़िस्मत का फ़ैसला, मैं शादी करने चला...

मेरी क़िस्मत का फ़ैसला हो गया। मैं शादी कर रहा हूँ...

वह, जिसे मैं पिछले दो सालों से प्यार कर रहा हूँ, जिसे हर जगह पहले मेरी आँखें ढूँढ़तीं, जिसके मिलन को मैं सौभाग्य समझता—हे भगवान—वह...क़रीब-क़रीब मेरी हो गयी है।

निश्चित उत्तर की अपेक्षा करना मेरे जीवन का सबसे दुःखद अनुभव रहा है। ताश के निर्णायक पत्ते का इन्तज़ार, आत्मा का धिक्कार, द्वन्द्व-युद्ध से पहले की नींद—यह सब तो उसकी तुलना में कुछ भी नहीं है।

बात यह है कि मुझे सिर्फ़ इनकार का ही डर नहीं था। मेरा एक मित्र कहा करता, "समझ में नहीं आता कि पैग़ाम कैसे भेजा जाए, अगर जानते हो कि शायद, इनकार नहीं किया जाएगा।"

शादी! कहना आसान है—अधिकांश लोग शादी में देखते हैं उधार माँगी हुई शालें, नयी गाड़ी और गुलाबी अंगरखा।

दूसरे देखते हैं—दहेज और तरक़्क़ी करती हुई ज़िन्दगी...

तीसरे शादी इसलिए करते हैं, क्योंकि सभी शादी करते हैं—क्योंकि उनकी उम्र तीस साल की है। उनसे पूछिये कि शादी का मतलब क्या है, तो जवाब में भद्दा-सा चुटकुला सुना देंगे।

मैं शादी कर रहा हूँ, यानी कि मैं अपनी आज़ादी का बलिदान कर रहा हूँ, अपनी बेफ़िक्र, मनमौजी आज़ादी का, अपनी ऐशो-आराम की आदतों का, निरुद्देश्य यात्राओं का, एकान्त का, अस्थिरता का।

मैं अपनी अधूरी ज़िन्दगी को दुहरी बनाना चाहता हूँ। सुख को पाने की मैंने कभी कोशिश नहीं की, मैंने उसके बग़ैर ही काम चला लिया। अब मुझे दो व्यक्तियों के लिए उसकी ज़रूरत है, उसे कहाँ से लाऊँ?

जब तक मैं कुँआरा हूँ, मेरे कर्तव्य क्या हैं? मेरे एक बीमार चाचा हैं, जिन्हें मैं लगभग कभी नहीं देखता। उनके पास जाता हूँ—वह बड़े ख़ुश होते हैं, नहीं—ऐसा करके वह मुझे क्षमा कर देते हैं, "मेरा छैला जवान है, उसके पास मेरे लिए समय ही

नहीं है।" मैं किसी को ख़त नहीं लिखता हूँ, हर महीने अपना क़र्ज़ चुका देता हूँ। सुबह जब जी चाहे, तब उठता हूँ, जिससे चाहता हूँ, उसी से मिलता हूँ, सैर करने का मन करता है—मुझे मेरी ज़हीन, शान्त झेनी साज़ चढ़ाकर दे दी जाती है, गलियों में घूमता हूँ, निचले घरों की खिड़कियों में झाँकता हूँ : कहीं पूरा परिवार समोवार के पास बैठा है, तो कहीं नौकर घर में झाड़ू लगा रहा है; आगे, एक छोटी लड़की पिआनो बजाना सीख रही है, उसकी बग़ल में है संगीतज्ञ। वह अपना बदहवास चेहरा मेरी ओर घुमाती है, शिक्षक उसे डाँटता है, मैं क़दम-क़दम चलकर आगे बढ़ जाता हूँ—घर वापस आता हूँ—किताबें काग़ज़ छाँटता हूँ, अपनी सिंगार मेज़ को सँवार देता हूँ, अगर किसी से मिलने जाना हो, तो अस्त-व्यस्तता से कपड़े पहनता हूँ, अगर रेस्टॉरेंट में खाना खाना हो, जहाँ कोई नया उपन्यास या नयी पत्रिकाएँ पढ़ना हो तो पूरी तरह मन लगाकर तैयार होता हूँ, अगर वॉल्टर स्कॉट या कूपर ने नया कुछ नहीं लिखा हो, या अख़बारों में किसी क़ानूनी कार्रवाई का वर्णन न हो, तो बर्फ़ में रखी हुई शैम्पेन की बोतल की माँग करता हूँ, देखता हूँ कि जाम ठंड से कैसे जम जाता है, धीरे-धीरे चुस्कियाँ लेता यह सोचकर ख़ुश होते हुए कि भोजन की क़ीमत सत्रह रूबल है, और मैं यह शरारत कर सकता हूँ। थियेटर में जाता हूँ, किसी बॉक्स में कोई बेहतरीन केश-विन्यास, काली आँखें देखता हूँ, हमारे बीच इशारेबाज़ी होने लगती है, मैं बाहर निकलने तक उसी में व्यस्त रहता हूँ। शाम या तो हुल्लड़बाज़ों के साथ बिताता हूँ, जहाँ, पूरे शहर के लोग खचाखच भरे होते हैं, जहाँ मैं सबको और सब कुछ देखता हूँ और जहाँ मेरी ओर कोई ध्यान नहीं देता या फिर अपने प्रिय मित्रों के छोटे से जमघट में, जहाँ मैं अपने बारे में बतलाता हूँ और जहाँ मेरी बात सुनी जाती है। वापस लौटता हूँ देर से, कोई अच्छी-सी किताब पढ़ते हुए सो जाता हूँ। दूसरे दिन फिर घोड़ी पर सवार होकर गलियों में टहलता हूँ, उस घर के सामने से, जहाँ बच्ची पिआनो बजा रही थी। वह पियानो पर कल के पाठ को दुहरा रही है। उसने मेरी ओर देखा, जैसे किसी परिचित को देखते हैं, और मुस्कुरा दी। यह है मेरी कुँआरी ज़िन्दगी।

अगर मुझे अस्वीकार करते हैं, मैंने सोचा, तो परदेस चला जाऊँगा और मैंने स्वयं की पानी के जहाज़ पर कल्पना की। मेरे चारों ओर भगदड़ मची है, लोग विदा ले रहे हैं, सूटकेस ला रहे हैं, घड़ी देख रहे हैं। जहाज़ चल पड़ा : समुद्री, ताज़ा हवा चेहरे को थपकियाँ दे रही थी, मैं देर तक दूर भागते हुए किनारे को देखता हूँ—मेरी जन्मभूमि, अलविदा! मेरी बग़ल में एक जवान औरत को उल्टियाँ हो रही हैं, इससे उसके चेहरे पर एक शिथिल नज़ाकत का भाव आ जाता है...वह मुझे पानी देने के लिए कहती है। शुक्र है भगवान का, क्रोंश्ताद तक मुझे कोई काम तो है...

इसी समय मुझे एक रुक्का दिया गया : यह मेरे ख़त का जवाब था। मेरी मंगेतर के पिता ने मुझे बड़े प्यार से अपने यहाँ बुलाया था...शक की कोई गुंजाइश ही नहीं है, मेरा पैग़ाम क़ुबूल कर लिया गया है। नादेंका, मेरा फ़रिश्ता—वह मेरी है।

...इस स्वर्गीय ख़याल के आगे सभी निराशाजनक सन्देह काफ़ूर हो गये। मैं गाड़ी की ओर भागता हूँ, सरपट दौड़ता हूँ, यह रहा उनका घर, स्वागत-कक्ष में आता हूँ, नौकरों की भागदौड़ से ताड़ जाता हूँ कि मैं दूल्हा हूँ। मैं सकुचा गया : ये लोग मेरे दिल का हाल जानते हैं, अपनी ख़ुशामदी ज़ुबान में मेरे प्रेम के बारे में बातें करते हैं।...

पिता और माँ मेहमानख़ाने में बैठे थे। पहले ने खुली हुई बाँहों से मेरा स्वागत किया। उसने जेब से रूमाल निकाला, वह रोना चाहता था, मगर रो न पाया और उसने नाक पोंछने का इरादा कर लिया। माँ की आँखें लाल थीं। नादेंका को बुलाया गया : वह आयी विवर्ण, असहज...पिता बाहर जाकर सन्त निकोलाय और कज़ान की मैडोना की मूर्तियाँ लेकर आये। हमें आशीर्वाद दिया गया। नादेंका ने अपना ठंडा, ख़ामोश हाथ मेरे हाथ में दिया। माँ दहेज के बारे में बताने लगी, पिता साराृतोव के गाँव के बारे में—और मैं दूल्हा बन गया।

और, इस तरह ये सिर्फ़ दो दिलों का भेद न रहा। आज यह ख़बर घर की है, कल हो जाएगी—चौराहे की।

इस तरह वह कविता, जो एकान्त में, गर्मी की रातों में चाँद की रोशनी में सोची गयी थी, बेची जाएगी किताबों की दुकान में और आलोचित होगी, पत्रिकाओं में बेवक़ूफ़ों द्वारा।

सभी मेरे सौभाग्य से प्रसन्न हैं, सभी बधाइयाँ दे रहे हैं, सभी ने मुझसे प्यार किया है। हर कोई अपनी-अपनी पेशकश कर रहा है : कोई अपना घर, कोई उधारी में पैसे, कोई चौड़ी कॉलरवाला लम्बा फ्रॉक कोट। कोई मेरे भावी विस्तृत परिवार की चिन्ता करते हुए मुझे बारह दर्जन दस्ताने दे रहा है मैडम ज़ोन्ताग[1] की तस्वीरवाले।

नौजवान मेरा रोब मानने लगे हैं : मुझमें दुश्मन को देखने लगे हैं। महिलाएँ सामने तो मेरी पसन्द की तारीफ़ कर रही हैं, मगर पीछे से मेरी दुल्हन पर तरस खा रही हैं, "बेचारी! वह इतनी जवान है, इतनी भोली है और वह इतना मनचला, इतना अनैतिक... ।"

मानता हूँ कि इससे मैं उकताने लगा हूँ। मुझे तो किसी प्राचीन क़बीले की रस्म पसन्द है, दूल्हा चुपके से अपनी दुल्हन को चुरा ले जाता है। दूसरे दिन वह शहर के अफ़वाह फैलानेवालों के सामने उसे अपनी पत्नी के रूप में पेश करता है। हमारे यहाँ पारिवारिक ख़ुशी की तैयारियाँ की जाती हैं छपे हुए निमन्त्रण पत्रों से, उपहारों से, पूरे शहर के जाने-पहचाने औपचारिक पत्रों से, मिलने-जुलने से, एक शब्द में कहूँ तो हर तरह के लालच से...

1. ज़ोन्ताग—जर्मन गायिका।

कप्तान की बेटी

युवावस्था से ही इज़्ज़त सँभालो—एक कहावत

1

गारद का सार्जंट

—काश, कल ही वह गारद का कप्तान बन जाता।
—उसकी ज़रूरत नहीं; फ़ौज में काम करने दो।
—ठीक कहा! उसे तकलीफ़ उठाने दो....
....
मगर उसका पिता है कौन?

—कन्याझ्निन

मेरे पिता अन्द्रेइ पेत्रोविच ने अपनी युवावस्था में ग्राफ़[1] मीनिख के अधीन काम किया और करीब सन् 17...में सेवानिवृत्त हो गए। तब से वह अपने सिंबिर्स्कवाले गाँव में रहने लगे, जहाँ उन्होंने स्थानीय निर्धन कुलीन की बेटी अव्दोत्या वासिल्येव्ना यू. से शादी कर ली। हम नौ बच्चे थे। मेरे सभी भाई और बहनें बचपन में ही मर गये।

जब माँ के गर्भ में था, तभी मेरा नाम सेम्योनोव्स्की दस्ते में सार्जंट के रूप में लिख लिया गया, गारद के मेजर राजकुमार बी.की मेहरबानी से, जो हमारे नज़दीकी रिश्तेदार थे। यदि आशा के विपरीत माँ बेटी को जन्म देती तो पिता, आवश्यक स्थानों पर, अनवतरित सार्जंट की मृत्यु की ख़बर दे देते, और मामला वहीं ख़त्म हो जाता। अपनी पढ़ाई समाप्त करने तक मुझे अवकाश पर समझा गया।

उस समय हमारा लालन-पालन आज की तरह नहीं किया जाता था। पाँच वर्ष की उम्र में मुझे साईस सावेलिच के हाथों में सौंप दिया गया, जिसे शराबी न होने के कारण मेरे पालन-पोषण की ज़िम्मेदारी सौंप दी गयी। उसकी देख-रेख में बारहवें वर्ष में मैं रूसी लिखना-पढ़ना सीख गया और तेज़-तर्रार घोड़े के लक्षण पहचानने लगा। इसी समय पिताजी मॉस्को से साल भर की शराब और जैतून के तेल के साथ मेरे लिए फ्रांसीसी, मिस्यो[1] बोप्रे, को लाये। उसका आगमन सावेलिच को ज़रा भी अच्छा नहीं लगा। "भगवान की दया से, वह अपने आप से बुदबुदाया, बच्चा शायद नहलाया-धुलाया जाता है, बाल सँवारे जाते हैं, उसे खिलाया-पिलाया जाता है। बेकार पैसा ख़र्च करके मुस्यो को रखने की क्या ज़रूरत है, जैसे कि अपने लोग मिलते ही न हों।"

बोप्रे अपनी मातृभूमि में नाई था, फिर प्रशिया में सिपाही बना, फिर रूस आया शिक्षक बनने के लिए, बिना इस शब्द का मतलब समझे। वह बाँका छैला था, मगर

---

1. ग्राफ़—काउंट।

वला का छिछोरा और बिगड़ा हुआ था। उसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी सुन्दरियों के प्रति उसकी लालसा थी, अक्सर अपनी इस दुर्बलता के लिए उसे घूँसे पड़ते थे, जिनके कारण वह रात-दिन कराहा करता था। इसके साथ ही वह (उसके कथनानुसार) बोतल का दुश्मन भी नहीं था, मतलब (रूसी में कहें तो) ज़्यादा पी जाने का शौक़ीन था। मगर, क्योंकि शराब हमारे यहाँ सिर्फ़ खाने के वक़्त ही दी जाती थी और वह भी एक छोटा-सा जाम, और शिक्षक को अक्सर छोड़ दिया जाता था, इसलिए मेरा बोप्रे जल्दी ही रूसी वोद्का का आदी हो गया और अपने देश की शराबों के मुक़ाबले उसे ही पसन्द करने लगा, यह कहकर कि वह पेट के लिए ज़्यादा फ़ायदेमन्द है। हम दोनों की फ़ौरन गहरी छनने लगी, और हालाँकि कॉण्ट्रेक्ट के मुताबिक़ उसे मुझे फ्रांसीसी, जर्मन और अन्य विषय पढ़ाने चाहिए थे मगर उसने मुझसे थोड़ी बहुत बोलचाल की रूसी सीखना ज़्यादा उचित समझा और फिर हममें से हरेक अपने-अपने काम में मगन हो गया। हम पक्के दोस्त बन गये। मैं कोई दूसरा शिक्षक नहीं चाहता था। मगर शीघ्र ही क़िस्मत ने हमें जुदा कर दिया, और यह हुआ कुछ ऐसे :

चेचकरू मोटी धोबिन पलाश्का और कानी ग्वालिन अकूल्का एक दिन सलाह करके एक साथ मेरी माँ के पैरों पर जा गिरीं और रोते-रोते अपने गुनाहों को क़बूल करते हुए मिस्यो की शिकायत करने लगीं, जिसने उसकी अनुभवहीनता का फ़ायदा उठाकर उन्हें फुसला लिया था। माँ ऐसे मामलों को मज़ाक़ में नहीं लेती थी, सो उन्होंने पिताजी से शिकायत कर दी। उनकी कार्रवाई फटाफट होती थी। उन्होंने उसी वक़्त बदमाश फ्रांसीसी को पेश करने की आज्ञा दी। उनसे कहा गया कि मुस्यो मुझे पढ़ा रहा है। पिता मेरे कमरे की ओर निकल पड़े। इस समय बोप्रे पलंग पर गहरी नींद ले रहा था। मैं अपने काम में मगन था। यह बताना होगा कि मेरे लिए मॉस्को से भूगोल का नक़्शा मँगवाया गया था। वह दीवार पर बिना किसी उपयोग के टँगा था और काफ़ी दिनों से अपने काग़ज़ की लम्बाई और चिकनाई से मुझे ललचा रहा था। मैंने उसकी पतंग बनाने का फ़ैसला किया और बोप्रे की नींद का फ़ायदा उठाकर काम में लग गया। पिताजी ठीक उस समय कमरे में आये जब मैं 'केप ऑफ गुड होप' में पूँछ चिपका रहा था। भूगोल में मेरे अभ्यास को देखकर पिताजी ने मेरा कान पकड़कर खींचा, फिर बोप्रे के पास भागकर गये, बड़ी बेदर्दी से उसे जगाया और गालियों की बौछार शुरू कर दी। बोप्रे ने घबराकर उठना चाहा, मगर उठ न सका : अभागा फ्रांसीसी नशे में धुत था। सात मुसीबत, एक इलाज। पिता ने गरेबान पकड़कर उसे पलंग से उठाया, दरवाज़े से बाहर धकेला और उसी दिन घर से निकाल दिया, जिससे सावेलिच को बेहद ख़ुशी हुई। इसी के साथ मेरी शिक्षा समाप्त हो गयी।

मैं गँवारों की तरह रहता था, कबूतरों के पीछे भागते और नौकर-छोकरों के

---

1. मिस्यो—महाशय

साथ मेंढक-कूद का खेल खेलते हुए। इसी बीच मैं सोलह बरस का हो गया। यहाँ मेरे भाग्य ने पलटा खाया।

एक बार पतझड़ के मौसम में माँ मेहमानख़ाने में शहदवाला मुरब्बा बना रही थी, और मैं होंठों को चाटते हुए, उबलते हुए फेन को देख रहा था। पिताजी खिड़की के पास बैठकर दरबारी कैलेंडर[1] पढ़ रहे थे, जो हर वर्ष उन्हें भेजा जाता था।

यह किताब हमेशा उन पर गहरा असर डालती थी : वे कभी भी बग़ैर एकाग्रता के उसे बार-बार नहीं पढ़ते थे, और इस पढ़ने से उनमें आश्चर्यजनक उत्तेजना भर जाया करती। माँ, जो उनकी रुचियों और आदतों को अच्छी तरह जानती थी, हमेशा इस मुसीबत की मारी किताब को कहीं दूर छिपा देने की कोशिश करती, और इस तरह दरबारी कैलेंडर कई-कई महीने तक उन्हें नज़र नहीं आता। मगर जब वे संयोगवश उसे ढूँढ़ लेते तो कई घंटों तक अपने हाथों से न छोड़ते। तो, पिताजी दरबारी कैलेंडर पढ़ रहे थे, कभी-कभी कन्धे उचका देते और दबी ज़बान से दुहराते "लेफ़्टिनेंट-जनरल।...वह मेरी कम्पनी में सार्जंट था। दोनों रूसी पदकों से सम्मानित। ...और क्या हम बहुत पहले..." आख़िर पिताजी ने कैलेंडर दिवान पर फेंक दिया और विचारों में डूब गये, जो किसी अच्छी चीज़ का लक्षण नहीं था।

अचानक वे माँ से मुख़ातिब हुए, "अव्दोत्या वासिल्येव्ना, पेत्रूशा कितने साल का हो गया?"

"ये सत्रहवाँ साल चल रहा है।" माँ ने जवाब दिया, "पेत्रूशा का जन्म उस साल हुआ था, जब बुआ नस्तास्या गेरासीमोव्ना की एक आँख चली गयी थी, और जब..."

"बस", पिताजी ने टोकते हुए कहा, "अब उसे फ़ौज में भेजने का वक़्त हो गया है। लड़कियों के और कबूतरख़ानों के इर्द-गिर्द दौड़ना बहुत हो गया।"

जल्दी ही मुझसे जुदा होने के ख़याल से माँ को इतना धक्का पहुँचा कि उसके हाथों से चम्मच छूटकर भगौने में गिर गयी और चेहरे पर आँसू बहने लगे। इसके विपरीत मेरे हर्षोल्लास का वर्णन करना कठिन है। फ़ौजी नौकरी का ख़याल मेरे दिलो-दिमाग़ में आज़ादी के ख़याल से, पीटर्सबुर्ग की ऐशो-आराम की ज़िन्दगी से जुड़ गया। मैंने स्वयं की गारद के अफ़सर के रूप में कल्पना की, जो मेरे विचार से मानव के सर्वोच्च सुख का प्रतीक था।

पिताजी अपने इरादों को बदलना या उनको पूरा करने में देर करना पसन्द नहीं करते थे। मेरे प्रस्थान का दिन निश्चित हो गया। प्रस्थान की पूर्व सन्ध्या में पिता जी ने कहा कि मेरे हाथ मेरे भावी अफ़सर को ख़त भेजना चाहते हैं, और उन्होंने क़लम और काग़ज़ मँगवाया।

---

1. दरबारी कैलेंडर—वार्षिक सरकारी प्रकाशन, जिसमें फ़ौजियों और दरबारियों की सूचियाँ छपा करती थीं।

“अन्द्रेइ पेत्रोविच भूलना मत,” माँ ने कहा, “मेरी ओर से भी राजकुमार बी. का अभिवादन करना, कहना, मैं आशा करती हूँ कि वे अपनी कृपा दृष्टि पेत्रूशा पर बनाये रखेंगे।”

“क्या बकवास है!” पिताजी ने भौंहें सिकोड़ते हुए जवाब दिया, “मैं राजकुमार बी. को क्यों लिखने लगा?”

“तुम्हीं ने तो कहा, कि पेत्रूशा के अफ़सर को लिखना चाहते हो?”

“तो, फिर?”

“तो पेत्रूशा का अफ़सर राजकुमार बी. ही तो हुआ। पेत्रूशा का नाम तो सेम्यानोव्स्की दस्ते में है।”

“नाम लिखा है! लिखा होगा, मुझे इससे क्या? पेत्रूशा पीटर्सबुर्ग नहीं जाएगा। पीटर्सबुर्ग में नौकरी करके वह सीखेगा क्या? फ़िज़ूलख़र्ची और आवारागर्दी? नहीं, उसे फ़ौज में काम करने दो, कड़ी मेहनत करेगा, देश की रक्षा के लिए तैयार रहेगा, सैनिक बनेगा, न कि छैला। गारद में नाम लिखा है! उसका पासपोर्ट कहाँ है? इधर दो।”

माँ ने मेरा पासपोर्ट ढूँढ़ा, जो उसके सन्दूक़ में रखा हुआ था, उस क़मीज़ के साथ, जिसमें मेरा बपतिस्मा किया गया था, और थरथराते हाथों से उसे पिताजी को दे दिया। पिताजी ने बड़े ध्यान से उसे पढ़ा, अपने सामने मेज़ पर रखा और अपना ख़त शुरू किया।

उत्सुकता मुझे खाए जा रही थी, अगर पीटर्सबुर्ग नहीं तो, मुझे कहाँ भेज रहे हैं? मैं पिताजी की क़लम से, जो बड़े धीरे-धीरे चल रही थी, नज़र नहीं हटा रहा था। आख़िर उन्होंने ख़त पूरा किया और पासपोर्ट के साथ एक पैकेट में बन्द किया, चश्मा उतारा और मुझे बुलाकर कहा, “यह ख़त है अन्द्रेइ कार्लोविच आर, मेरे पुराने साथी और मित्र के लिए। तुम ओरेनबुर्ग जा रहे हो उसके अधीन काम करने के लिए।”

इस तरह, मेरी सारी महान आशाएँ चूर-चूर हो गयी। पीटर्सबुर्ग के आमोद-प्रमोद युक्त, जीवन के बदले दूर किसी सुनसान कोने में स्थित दुर्ग की सेना की उकताहट मेरी राह देख रही थी। फ़ौज की नौकरी, जिसके बारे में एक मिनट पहले मैं इतनी ख़ुशी के साथ सोच रहा था, मुझे एक दुःखद दुर्भाग्य प्रतीत हुई। मगर बहस करने में कोई तुक नहीं था। दूसरे दिन सुबह ड्योढ़ी में सफ़री गाड़ी लाई गयी, उसमें सूटकेस, चाय के बर्तनों की पेटी और पाव रोटियों और केक पेस्ट्रियों की पोटलियाँ, घर के लाड़-प्यार की आख़िरी निशानी, रख दी गयी। मेरे माता-पिता ने मुझे आशीर्वाद दिया।

पिताजी ने मुझसे कहा, “अलविदा, प्योत्र! जिसकी वफ़ादारी की क़सम खाओगे ईमानदारी से उसकी सेवा करना; अफ़सरों की आज्ञा का पालन करना, उनका प्यार पाने की कोशिश न करना, ख़ुद आगे बढ़कर अपनी सेवाएँ पेश न करना, कर्तव्य से मुख न मोड़ना, और यह कहावत याद रखना, पोशाक की शुरू से हिफ़ाज़त करो, और इज़्ज़त की जवानी से।”

माँ ने आँसू बहाते हुए मुझे अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने को कहा, और सावेलिच से कहा कि वह बच्चे की देखभाल करे। मुझे ख़रगोश की ख़ाल का कोट ओर ऊपर से लोमड़ी की ख़ाल का ओवरकोट पहना दिया गया। मैं सावेलिच के साथ गाड़ी में बैठ गया और आँसू बहाते हुए सफ़र पर चल पड़ा।

उसी रात मैं सिम्बिर्स्क पहुँचा, जहाँ एक दिन रुककर ज़रूरत का सामान ख़रीदना था, इसकी ज़िम्मेदारी सावेलिच को सौंपी गयी थी। मैं होटल में ठहरा, सावेलिच सुबह से बाज़ार चला गया। खिड़की से गन्दी गली को देखते-देखते उकताकर मैं सभी कमरों के चक्कर लगाने लगा। बिलियर्ड वाले कमरे में जाने पर मैंने एक ऊँचे, लम्बी, काली मूँछोंवाले लगभग पैंतीस वर्ष के आदमी को देखा, जो गाऊन पहने, हाथ में बिलियर्ड स्टिक लिए और दाँतों में पाइप दबाये था। वह स्कोर लिखनेवाले के साथ खेल रहा था, जो हर बार जीतने पर वोद्का का एक जाम पी लेता, और हारने पर बिलियर्ड की मेज़ के नीचे अपने हाथों-पैरों पर रेंगता। मैं उनका खेल देखने लगा, जितनी अधिक देर तक वह चलता रहा, उतनी ही बिलियर्ड के नीचे की सैरों की संख्या बढ़ती गयी, जब तक कि आख़िर में स्कोर लिखनेवाला मेज़ के नीचे ही न रह गया। महाशय ने उससे कुछ ज़ोरदार शब्द कहे मानों मृतक को श्रद्धांजलि दे रहा हो और मुझसे खेलने की पेशकश की। मैंने खेलना न जानने के कारण इनकार कर दिया। यह उसे, ज़ाहिर है, बड़ा अजीब लगा। उसने सहानुभूतिपूर्वक मेरी ओर देखा; मगर हम बातें करने लगे। मुझे पता चला कि उसका नाम इवान इवानोविच ज़ूरिन है, वह XX की हुस्सार रेजिमेंट का कप्तान है और सिम्बिर्स्क में फ़ौजियों की भर्ती के लिए आया है, तथा होटल में रुका है। ज़ूरिन ने जो कुछ भी मौजूद था, उसे अपने साथ खाने के लिए मुझे निमन्त्रण दिया : फ़ौजियों की तरह। मैं खुशी-खुशी मान गया। हम मेज़ पर बैठे। ज़ूरिन बहुत पी रहा था और मेरी भी आवभगत कर रहा था, यह कहते हुए कि मुझे फ़ौजी ज़िन्दगी की आदत डालनी चाहिए, उसने मुझे फ़ौजी चुटकुले सुनाए, जिन्हें सुनते हुए मैं हँसी से दुहरा हुआ जा रहा था, और हम मेज़ से उठे सच्चे दोस्तों की तरह। अब उसने कहा कि वह मुझे बिलियर्ड सिखाएगा।

"यह", वह बोला, "हमारे फ़ौजी भाई के लिए ज़रूरी है। कूच के समय, मिसाल के तौर पर, किसी छोटी-सी जगह पहुँचे तो क्या करोगे? पूरे वक़्त यहूदियों को पीटते ही तो नहीं रहोगे। मजबूरी में होटल जाओगे और बिलियर्ड खेलने लगोगे, और इसके लिए खेलना आना चाहिए।"

मुझे पूरा विश्वास हो गया और मैं बड़ी लगन से खेल सीखने लगा। ज़ूरिन ज़ोर-ज़ोर से मेरा हौसला बढ़ा रहा था, मेरी शीघ्र प्रगति से आश्चर्यचकित हो रहा था, और कुछ पाठों के बाद, उसने पैसे लगाकर खेलने का प्रस्ताव रखा, एक-एक ताँबे का

सिक्का लगाकर, जीतने की नीयत से नहीं, बल्कि इसलिए कि बेकार ही में न खेला जाए, जो कि उसकी राय में बड़ी भद्दी आदत है। मैं यह भी मान गया, और ज़ूरिन ने 'रम' लाने की आज्ञा दी और मुझे भी चखने को कहा यह दुहराते हुए कि मुझे फ़ौजी ज़िन्दगी से वाक़िफ़ होना चाहिए; और बग़ैर 'रम' के भी कोई फ़ौजी ज़िन्दगी है। मैंने उसकी बात मान ली। इस बीच हमारा खेल चलता रहा। जितनी बार मैं अपने गिलास से 'रम' गटकता, उतना ही निडर होता जाता था। हर घड़ी मेरी गेंदें मेज़ से उड़ती हुई जातीं, मैं गुस्सा होने लगा, स्कोर लिखनेवाले को गालियाँ देने लगा, जो भगवान जाने कैसी गिनती कर रहा था, कि खेल बढ़ता जाता था, सारांश में, मैं एक खुली छूट पाए बच्चे की तरह बर्ताव कर रहा था। अनजाने ही समय बीत गया। ज़ूरिन ने घड़ी की ओर देखा, डंडी रख दी और मुझसे कहा कि मैं सौ रूबल हार गया हूँ। मैं कुछ परेशान हो गया। मेरे पैसे सावेलिच के पास थे। मैं माफ़ी माँगने लगा। ज़ूरिन ने मुझे टोकते हुए कहा, "प्लीज़! परेशान न होना। मैं इन्तज़ार कर सकता हूँ, और फ़िलहाल अरीनूश्का के पास चलें।"

क्या कहूँ? दिन मेरा वैसे ही फ़ालतू बीत गया, जैसे उसकी शुरुआत हुई थी। हमने अरीनुश्का के यहाँ रात का खाना खाया। ज़ूरिन हर मिनट मेरा जाम भरता रहा, यह कहते हुए कि मुझे फ़ौजी ज़िन्दगी की आदत डालनी चाहिए। मेज़ से उठकर मैं मुश्किल से अपने पैरों पर खड़ा हो पा रहा था, आधी रात को ज़ूरिन मुझे होटल वापस लाया।

सावेलिच ड्योढ़ी में ही हमें मिला। फ़ौजी सेवा के प्रति मेरी स्पष्ट कोशिशें देखकर वह चौंक गया। "ये, मालिक, क्या हुआ है तुम्हें?" उसने दुःखी स्वर में कहा, "यह तुम कहाँ से धुत होकर आये हो? आह, भगवान आज तक ऐसा गुनाह न हुआ था!"

"चुप, बुड्ढे!" मैंने लड़खड़ाती आवाज़ से उसे जवाब दिया, "तू सचमुच नशे में है, सो जा...और मुझे बिस्तर पर लिटा दे।"

दूसरे दिन मैं सिर दर्द लिए उठा, कल की घटनाओं की धुँधली याद के साथ। मेरे ख़यालों को चाय का प्याला लेकर आते हुए सावेलिच ने तोड़ा। "जल्दी, प्योत्र अन्द्रेइच," उसने सिर हिलाते हुए मुझसे कहा, "बहुत जल्दी शुरू कर रहे हो भटकना। किस पर गये हो? शायद, न तो बाप, न ही दादा शराबी थे, माँ के बारे में कुछ कहना भी पाप है : आज तक क्वास[1] को छोड़कर मुँह में कुछ नहीं डाला है और इस सबका ज़िम्मेदार कौन है? नासपीटा मुस्यो! जब देखो तब अन्तीपेव्ना के पास भागकर आता, "मदाम, जे वू प्री, वोद्क्यू"।[2] और लो जे वू प्री! क्या कहें : अच्छी बात सिखाई उस

---

1. क्वास—कोका कोला जैसे स्वाद वाला रूसी पेय।
2. जे वू प्री, वोद्क्यू—कृपया वोद्का दें (फ्रांसीसी)।

कुत्ते के पिल्ले ने। और मालिक को भी एक काफ़िर को ही रखना था तुम्हारे लिए, जैसे अपने लोग थे ही नहीं!"

मुझे शर्म आ रही थी। मैंने मुँह फेरकर उससे कहा "यहाँ से जाओ, सावेलिच, मुझे चाय नहीं चाहिए।" मगर जब सावेलिच उपदेश देने लगता तो उसे दूर हटाना बड़ा मुश्किल काम था। "देखा न, प्योत्र अन्द्रेइच, शराब पीकर बहकने का नतीजा? सिर है भारी, खाने का मन नहीं। पियक्कड़ आदमी किसी काम के लायक़ नहीं रहता ...ककड़ी का नमकीन रस शहद के साथ पियो, मगर सबसे अच्छी रहेगी आधा गिलास वोद्का, लाऊँ?"

इसी समय एक छोकरे ने अन्दर आकर ई. ई. जूरिन की चिट्ठी दी। मैंने उसे खोलकर पढ़ा, लिखा था :

> "प्यारे प्योत्र अन्द्रयेविच, कृपया मेरे नौकर के साथ सौ रूबल भेज दो, जो तुम कल मुझसे हारे थे। मुझे पैसों की बहुत ज़रूरत है।"
>
> ख़िदमत में हाज़िर,
इवान जूरिन

कोई चारा न था। मैंने उदासीनता दिखाते हुए सावेलिच को, जो मेरे पैसों, कपड़ों और मेरे सारे क्रिया कलापों की बड़ी लगन के साथ देखभाल करता था, आज्ञा दी कि छोकरे को सौ रुबल दे दे।

"कैसे! किसलिए?" भौंचक्के से सावेलिच ने पूछा, "मैं उसका क़र्ज़दार हूँ।" मैंने यथासम्भव ठंडेपन से जवाब दिया।

"क़र्ज़दार!" सावेलिच ने जो पल-पल अधिकाधिक चौंकता जा रहा था, प्रतिवाद किया, "कब से तुम, मालिक उसके देनदार हो गये? बात कुछ गड़बड़ लगती है। तुम्हारी मर्ज़ी मालिक, मगर पैसे तो मैं दूँगा नहीं।"

मैंने सोचा कि अगर इस निर्णायक घड़ी में मैं ज़िद्दी बूढ़े को ठीक न करूँगा, तो आगे उसके चंगुल से निकलना मुकिश्ल हो जाएगा और, मैंने गर्व से उसकी ओर देखते हुए कहा, "मैं तुम्हारा मालिक हूँ, और तुम मेरे नौकर। पैसे मेरे हैं। मैं उन्हें हार गया हूँ, इसलिए कि मैंने ऐसा करने की सोची। तुम्हें सलाह देता हूँ कि अक़्लमन्दी न दिखाओ और वही करो, जिसका तुम्हें हुक्म दिया जाता है।"

सावेलिच को मेरे शब्दों से इतना गहरा धक्का पहुँचा कि वह हाथ नचाकर मानों बुत बन गया।

"खड़े क्यों हो?" मैं ग़ुस्से से चीख़ा। सावेलिच रोने लगा।

"मालिक, प्योत्र अन्द्रेइच," उसने थरथराती आवाज़ में कहा, "मुझे दुःख देकर मार न डालो। मेरी ज़िन्दगी! मुझ बूढ़े की बात सुनो : इस डाकू को लिख दो, कि तुम मज़ाक़ कर रहे थे, कि हमारे पास इतने पैसे हैं ही नहीं। सौ रूबल! हे दयालु भगवान!

कह दो कि माँ-बाप ने ज़ोर देकर तुम्हें अख़रोटों के अलावा कुछ और न खेलने का हुक्म दिया है..."

"बस, बहुत हो चुका झूठ," मैंने कड़ाई से उसे टोका, "पैसे यहाँ दो, वर्ना तुम्हें धक्के देकर भगा दूँगा।"

सावेलिच ने बड़े दुःख से मेरी ओर देखा और मेरे क़र्ज़ का इन्तज़ाम करने चला गया। मुझे बेचारे बूढ़े पर दया आयी, मगर मैं आज़ादी चाहता था और यह साबित करना चाहता था कि अब मैं बच्चा नहीं हूँ। ज़ूरिन को पैसे दे दिये गये। सावेलिच ने उस नासपीटे होटल से मुझे ले जाने की जल्दी की। वह यह ख़बर लेकर आया कि घोड़े तैयार हैं। बेचैन मन और ख़ामोश पश्चात्ताप से मैं सिम्बिर्स्क से निकला, अपने शिक्षक से विदा लिए बग़ैर और यह सोचते हुए कि उससे फिर कभी मुलाक़ात न होगी।

2

पथ-प्रदर्शक

देस मेरे, मेरे प्यारे देस
अनजान देस,
क्या ख़ुद मैं तेरे पास आया,
या बढ़िया घोड़ा ले आया :
भले जवाँ मुझको लायी
चंचलता मस्त जवानी की
और मस्ती मयख़ाने की —एक प्राचीन गीत

रास्ते में मेरे ख़याल बहुत सुखद नहीं थे। उस समय की क़ीमतों के हिसाब से मेरी हार कोई साधारण नहीं थी। अपने दिल में मैं यह स्वीकार भी कर रहा था कि सिम्बिर्स्क के होटल में मेरा बर्ताव बेवक़ूफ़ी भरा था, और सावेलिच के सामने मैं ख़ुद को अपराधी महसूस कर रहा था। यह सब मुझे बड़ी तकलीफ़ दे रहा था। बूढ़ा गाड़ी के वक्से पर बैठा था, मुझसे मुँह फेर कर, चुपचाप, सिर्फ़ बीच-बीच में वह खँखार लेता था। मैं निश्चय ही उससे सुलह करना चाहता था। मगर यह न समझ पा रहा था कि कैसे शुरुआत करूँ! आख़िरकार मैंने उससे कहा, "बस, बस, सावेलिच! बस हो गया, दोस्ती कर लें, ग़लती हो गयी, देख रहा हूँ कि मैं दोषी हूँ। मैंने कल मनमानी की, और बेकार ही तुम्हारा अपमान कर दिया। वादा करता हूँ कि आगे से समझदारी से काम लूँगा, और तुम्हारी बात मानूँगा। ऊँ, गुस्सा मत करो, समझौता कर लेते हैं।"

"आह, बाप मेरे, प्योत्र अन्द्रेइच!" उसने गहरी साँस लेते हुए कहा, "गुस्सा तो

॥ अपने आप पर हूँ, पूरी तरह से क़सूरवार मैं ही हूँ। मैं तुम्हें अकेले होटल में छोड़कर ना कैसे गया! क्या करें? गुनाह ने बहका दिया : सोचा, पादरी की बीवी के पास जाऊँ, अपनी रिश्तेदार को देख लूँगा। तो : रिश्तेदार के यहाँ क्या गया, जैसे जेल में आ गया। मुसीबत ही मुसीबत!...मैं मालिकों को क्या मुँह दिखाऊँगा? क्या कहेंगे वे, जब सुनेंगे कि बच्चा पीता है और जुआ खेलता है।"

बेचारे सावेलिच को तसल्ली देने के लिए मैंने उसे वचन दिया कि आगे से उसकी रज़ामन्दी के बग़ैर एक भी कोपेक ख़र्च न करूँगा। धीरे-धीरे वह शान्त हो गया, हालाँकि बीच-बीच में सिर हिलाकर अपने आप से बड़बड़ा लेता, "सौ रूबल! क्या कोई आसान बात हैं!"

मैं अपने लक्ष्य के क़रीब पहुँच रहा था। मेरे चारों ओर फैले थे, सुनसान मैदान, गड्ढों और टीलों से अटे हुए। हर चीज़ बर्फ़ से ढँकी हुई थी। सूरज डूब रहा था। गाड़ी संकरे रास्ते पर, या सही-सही कहूँ, तो किसानों की गाड़ियों द्वारा बनाई गयी पगडंडी पर जा रही थी। अचानक गाड़ीवान एक ओर को देखने लगा और अन्त में टोपी उतारकर, मेरी ओर मुड़ा और बोला "मालिक, क्या लौटने की इजाज़त देंगे?"

"वह क्यों?"

"वक़्त ठीक नहीं है, हवा चलने लगी है, देखो, वह कैसे बर्फ़ को उड़ा रही है।"

"क्या मुसीबत है?"

"देखते हो वहाँ क्या है?" (गाड़ीवान ने चाबुक़ से पूरब की ओर इशारा किया)।

"मैं तो कुछ भी नहीं देख रहा, सिवाय सफ़ेद स्तेपी और साफ़ आसमान के।"

"वहाँ—वहाँ : वह बादल।"

मैंने सचमुच ही आसमान के छोर पर सफ़ेद छोटा-सा बादल देखा, जिसे पहले मैं दूरस्थ टीला समझ बैठा था। गाड़ीवान ने मुझे समझाया कि यह छोटा बादल तूफ़ान का इशारा दे रहा है।

मैं इन जगहों के तूफ़ानों के बारे में सुन चुका था और जानता था कि गाड़ियों के पूरे-के-पूरे कारवाँ वे उड़ा ले जाते हैं। सावेलिच ने, गाड़ीवान की राय के मुताबिक़, वापस मुड़ने की सलाह दी। मगर मुझे हवा तेज़ नहीं प्रतीत हुई, मुझे उम्मीद थी कि हम अगली चौकी तक सही-सलामत, समय रहते पहुँच जाएँगे और मैंने तेज़ी से चलने का हुक्म दिया।

गाड़ीवान घोड़ों को सरपट दौड़ा रहा था, मगर वह लगातार पूरब की ओर देखता जाता। घोड़े हिलमिलकर दौड़ रहे थे। इसी बीच हवा लगातार तेज़ होती गयी। छोटा-सा बादल बड़े सफ़ेद बादल में परिवर्तित हो गया, जो मुश्किल से ऊपर की ओर उठ रहा था, वह बड़ा हो गया और धीरे-धीरे पूरे आकाश में फैल गया। हिमकण गिरने लगे, और अचानक वे फ़ाहे बनकर बरसने लगे। हवा चिंघाड़ रही थी, बर्फ़ीला तूफ़ान

आ गया था। देखते-ही-देखते काला आसमान बर्फ़ीले सागर में समा गया। सब कुछ ओझल हो गया।

"आह, मालिक" गाड़ीवान चीख़ा, "मुसीबत : तूफ़ान!"

मैंने गाड़ी से बाहर झाँककर देखा : चारों ओर अँधेरा और तूफ़ान था। हवा इतने क्रोध से चिंघाड़ रही थी, मानों कोई जीवित प्राणी हो, बर्फ़ ने मुझे और सावेलिच को ढाँक दिया, घोड़े क़दम-क़दम चल रहे थे, और जल्दी ही वे रुक गए।

"तुम चलते क्यों नहीं हो?" मैंने बेचैनी से गाड़ीवान से पूछा।

"कैसा चलना?" उसने अपनी सीट से नीचे उतरते हुए कहा, "वैसे भी पता नहीं हम कहाँ पहुँच गये हैं, रास्ता है नहीं और चारों ओर घुप्प अँधेरा है।" मैं उसे गालियाँ देने लगा। सावेलिच ने उसका पक्ष लिया।

"न सुनने की ज़िद सवार थी," उसने गुस्से से कहा, "सराय में लौट चलते, चाय पीते, सुबह तक आराम करते, तूफ़ान थम जाता, आगे बढ़ जाते और हमें जल्दी क्या है? जैसे शादी में जाना है!"

सावेलिच सही कह रहा था। करने को कुछ था नहीं। बर्फ़ थी कि गिरती ही जा रही थी। गाड़ी के चारों ओर एक टीला बन गया। घोड़े खड़े थे, सिर झुकाए, बीच-बीच में सिहरते हुए। गाड़ीवान चारों ओर घूम रहा था, कोई काम न होने के कारण घोड़ों के साज़ को ठीक कर लेता था। सावेलिच बड़बड़ा रहा था, मैंने चारों ओर देखा, इस उम्मीद से कि कहीं किसी घर या रास्ते का निशान मिल जाए, मगर चक्कर काटती धुँधली बर्फ़ीली आँधी के अलावा कुछ भी न देख पा रहा था...अचानक कोई काली-सी चीज़ नज़र आयी।

"ऐ, गाड़ीवान!" मैं चिल्लाया, "देखो, वह क्या है वहाँ काला-काला?"

गाड़ीवान ध्यान से देखने लगा, "भगवान जाने, मालिक," उसने अपनी जगह पर बैठते हुए कहा, "गाड़ी कहो तो गाड़ी नहीं, पेड़ कहो तो पेड़ नहीं, और लगता है, हिल रही है। हो सकता है भेड़िया हो, या कोई आदमी।"

मैंने उस अनजान वस्तु की ओर चलने की आज्ञा दी, जो कि फ़ौरन हमारी ओर ही आने लगी। दो मिनट बाद हम एक आदमी के क़रीब पहुँचे।

"हेऽऽ, भले आदमी।" गाड़ीवान ने चिल्लाकर उससे कहा, "बोलो, क्या तुम जानते हो कि रास्ता कहाँ है?"

"रास्ता तो यही है, मैं कड़ी ज़मीन पर खड़ा हूँ।" मुसाफ़िर ने जवाब दिया, "क्या बात है?"

"सुनो, भले किसान," मैंने उससे कहा, "क्या तुम इस इलाक़े को जानते हो? क्या तुम मुझे रात बिताने के लिए किसी जगह ले जा सकते हो?"

"इलाक़ा तो मेरा जाना पहचाना है।" मुसाफ़िर ने जवाब दिया, "भगवान की दया से मैं इस पर कई बार गुज़रा हूँ पैदल और गाड़ी पर, इस छोर से उस छोर तक।

मगर, देखते हो, मौसम कैसा है : रास्ता भटक जाओगे। बेहतर है कि यहीं रुककर इन्तज़ार किया जाए, जव तूफ़ान थमेगा तो आसमान साफ़ हो जाएगा, तब सितारों की रोशनी में रास्ता ढूँढ़ लेंगे।"

उसके ठंडेपन से मुझे दिलासा मिला। मैंने तय कर लिया था कि स्वयं को भगवान के भरोसे छोड़कर, रात स्तेपी में ही बिताई जाए, कि अचानक मुसाफ़िर उछल कर गाड़ी के सन्दूक़ पर बैठ गया और गाड़ीवान से बोला "तो, भगवान की दया से, आसरा नज़दीक ही है, गाड़ी बायीं ओर मोड़ लो और चल पड़ो।"

"और मैं बायीं ओर क्यों जाऊँ?" गाड़ीवान ने अप्रसन्नता से पूछा, "तुम्हें रास्ता कहाँ दिखाई दे रहा है? *क्या बात है : घोड़े पराये, साज़ अपना नहीं, भगाये जा, रुकना नहीं।*" मुझे गाड़ीवान सही नज़र आया।

सचमुच, "मैंने कहा, "तुम ऐसा क्यों सोच रहे हो कि नज़दीक ही कोई घर है?"

"इसलिए कि हवा वहाँ से आयी है," मुसाफ़िर ने जवाब दिया, "और मैं सुन रहा हूँ, धुएँ की गन्ध, मतलब, गाँव पास में ही है।"

उसकी बुद्धि की तीक्ष्णता एवं सूक्ष्म घ्राण शक्ति ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। मैंने गाड़ीवान को चलने की आज्ञा दी। गहरी बर्फ़ में घोड़े मुश्किल से आगे बढ़ रहे थे। गाड़ी हौले-हौले चल रही थी, कभी टीले पर चढ़ जाती, कभी गढ़े में धँस जाती और कभी एक ओर को, तो कभी दूसरी ओर को झुक जाती। यह तूफ़ानी समुद्र में जहाज़ का सफ़र करने जैसा था।

सावेलिच कराह रहा था, हर पल मुझसे टकरा टकरा जाता। मैंने परदा नीचे गिरा दिया, ओवरकोट में दुबक गया और तूफ़ान की लोरी और आराम से चल रही गाड़ी के हिचकोलों के बीच ऊँघने लगा।

मुझे सपना आया, जिसे मैं कभी भी भूल नहीं सका, और जब मैं अपने जीवन की विचित्र परिस्थितियों की उससे तुलना करता हूँ, तो उसमें मैं भावी घटनाओं की सूचना-सी पाता हूँ। पाठक मुझे क्षमा करें, क्योंकि शायद वह अपने अनुभव से जानता है कि पूर्वाग्रहों के प्रति सम्भावित तिरस्कार की भावना के बावजूद मनुष्य कितनी आसानी से अन्धविश्वास के वश हो जाता है।

मैं आत्मा एवं विचारों की उस अवस्था में था, जब यथार्थ कल्पना को मौक़ा देते हुए, सपने की प्रथम अस्पष्ट अवस्था में उसके साथ एकरूप हो जाता है। मुझे यूँ लगा कि तूफ़ान अभी भी तांडव कर रहा था और हम बर्फ़ीले वीराने में भटके हुए हैं...। अचानक मुझे फाटक दिखाई दिया और मैं हमारी हवेली के आँगन में घुसा। पहले मुझे ख़तरा महसूस हुआ कि माता-पिता की स्नेहिल छत्रछाया में मेरी इस मजबूरन वापसी से पिताजी मुझ पर नाराज़ न हो जाएँ और इसे सोची-समझी अवज्ञा न समझ बैठें। बेचैनी से मैं गाड़ी से बाहर कूदा और क्या देखता हूँ : गहरे दुःख में डूबी हुई माँ मुझसे आँगन में मिली। धीरे-धीरे वह कहने लगी, "पिता मृत्यु शैया पर

पड़े हैं और तुमसे विदा लेना चाहते हैं।" डर के मारे मैं सकते में आ गया और उसके पीछे-पीछे शयनकक्ष में आया। देखा, कमरे में धुँधली रोशनी है, पलंग के पास दुःखी चेहरों से लोग खड़े हैं। मैं हौले से पलंग के पास जाता हूँ, माँ परदा उठाकर कहती है, "अन्द्रेइ पेत्रोविच, पेत्रूशा आया है, वह तुम्हारी बीमारी की ख़बर सुनकर लौट आया है, उसे आशीर्वाद दो।" मैं घुटनों के बल खड़ा हो गया और अपनी आँखें मरीज़ पर टिका दीं। यह क्या?...पिता के स्थान पर देखता हूँ काली दाढ़ीवाला एक किसान जो प्रसन्नता से मेरी ओर देख रहा था। मैं हैरान होकर माँ की ओर मुड़ते हुए बोला, "इसका क्या मतलब है? यह तो पिताजी नहीं हैं और मैं किसान से क्यों आशीर्वाद लूँ?" "एक ही बात है, पेत्रूशा," माँ ने मुझे जवाब दिया, "यह तुम्हारे धर्मपिता हैं, उसका हाथ चूमो, और उसे तुम्हें आशीर्वाद देने दो..." मैं राज़ी नहीं हुआ। तब किसान उछलकर पलँग से कूदा, पीठ के पीछे से उसने कुल्हाड़ी निकाली और चारों ओर घुमाने लगा। मैं भागना चाहता था...और भाग न सका, कमरा मृत शरीरों से भर गया, मैं एक मृत शरीर से टकरा गया और ख़ून के तालाब में फिसल गया...भयानक किसान ने प्यार से मुझे बुलाया और कहा, "डरो मत, मेरे आशीर्वाद की छाँव में आओ...," भय और घबराहट मुझ पर हावी हो गये...इसी क्षण मैं जाग गया, घोड़े खड़े थे, सावेलिच मेरा हाथ खींच रहा था, और कह रहा था, "बाहर आओ, मालिक, हम पहुँच गये हैं।"

"कहाँ पहुँच गये?" मैंने आँखे मलते हुए पूछा।

"सराय में, भगवान ने मदद की, सीधे अहाते में ही घुस गये हैं। जल्दी आओ मालिक, कुछ गर्मा लो।"

मैं गाड़ी से बाहर आया। तूफ़ान अभी भी चल रहा था, हालाँकि उसका ज़ोर कुछ कम हो गया था। अँधेरा इतना था, कि हाथ को हाथ न सूझता था। मालिक हमें फाटक के पास मिला, हाथों में पकड़ी लालटेन कोट के पल्ले के नीचे छिपाए, और मुझे तंग, मगर साफ़ कमरे में ले गया, एक छोटी-सी मशाल उसे आलोकित कर रही थी। दीवार पर एक भाला और ऊँची कज़ाक टोपी लटक रही थी।

सराय का मालिक, जो याइक[1] का कज़ाक था, साठ साल का देहाती प्रतीत हो रहा था, मगर काफ़ी चुस्त और तरोताज़ा था। सावेलिच मेरे पीछे-पीछे सन्दूक़ लाया, उसने आग की माँग की जिससे चाय बना सके, जिसकी पहले कभी मुझे इतनी ज़रूरत महसूस नहीं हुई थी। मेज़बान इन्तज़ाम करने चला गया।

"रहबर कहाँ है?" मैंने सावेलिच से पूछा।

"यहाँ हुज़ूर," ऊपर से एक आवाज़ ने मुझे जवाब दिया।

मैंने भट्ठी के ऊपर बनी सोने की जगह पर नज़र डाली और देखी काली दाढ़ी

---

1. याइक—यूराल नदी का प्राचीन नाम, जो पुगाचोव के विद्रोह के बाद बदल दिया गया था।

ार दो चमकती आँखें। "क्या भाई ठंड खा गये?"

"एक फटे पुराने कोट में कैसे ठिठर न जाऊँ! भेड़ की ख़ाल का कोट था, मगर छिपाने से क्या फ़ायदा? कल शराबख़ाने के मालिक के पास गिरवी रख दिया : ऐसा लगा कि ठंड ज़्यादा नहीं है।"

इसी समय मालिक उबलते समोवार के साथ अन्दर आया, मैंने अपने पथ प्रदर्शक को चाय का प्याला पेश किया : किसान नीचे उतरा। उसकी शक्ल सूरत बढ़िया थी : वह कोई चालीस साल का मझोले क़द का दुबला-पतला और चौड़े कन्धोंवाला आदमी था। उसकी काली दाढ़ी से सफ़ेदी झाँक रही थी, चंचल, सजीव आँखें निरन्तर दौड़ रही थीं।

उसके चेहरे पर बड़े प्यारे, मगर धूर्त भाव थे। बाल गोलाई में कटे हुए थे, उसने फटा पुराना कोट और तातारी सलवार पहनी थी। मैंने चाय का प्याला उसकी ओर बढ़ाया, उसने थोड़ी-सी चाय पी और नाक-भौंह सिकोड़ी, "हुजूर, मुझ पर मेहरबानी कीजिए, एक गिलास शराब लाने का हुक़्म दीजिए, चाय हम कज़ाकों का पेय नहीं है।" मैंने खुशी-खुशी उसकी इच्छा पूरी की।

मालिक ने अलमारी से बोतल की ओर देखकर बोला, "ऐ ऽऽ, तुम फिर हमारे इलाक़े में! कहाँ से भगवान लाया तुम्हें?" मेरे रहबर ने अर्थपूर्ण ढंग से आँख मारी और मुहावरे में जवाब दिया, "उड़कर आया बाग़ में, भाँग में मारी चोंच, दादी ने जो मारा पत्थर, निकल गया नज़दीक से! और तुम्हारे लोग कैसे हैं?"

"हमारे क्या!" मालिक ने भी पराई भाषा में बातचीत जारी रखते हुए कहा। "प्रार्थना का घंटा बजा आने न दे पोपन : पोप मेहमानी में गया, शैतान आये बनकर मेहमान।"

"चुप रहो चाचा," मेरे आवारा ने प्रतिवाद किया, "बारिश होगी, तो खुमियाँ भी होंगी, खुमियाँ होंगी तो, टोकरियाँ भी आएँगी। और अब (यहाँ उसने दुबारा आँख मारी) कुल्हाड़ा पीठ के पीछे छिपा लो, वन रक्षक घूम रहा है। हुज़ूर! आपकी सेहत के लिए!" इतना कहकर उसने गिलास उठाया, सलीब का निशान बनाया और एक साँस में पी गया। फिर मेरे सामने झुका और ऊपर अपनी जगह चला गया।

उस समय मैं चोरों की इस बातचीत से कुछ भी समझ न पाया, मगर बाद में मैं यह भाँप गया कि बात याइक की फ़ौजों के बारे में हो रही थी, जिन्हें 1772 के विद्रोह के बाद उसी समय वश में किया गया था। सावेलिच बड़ी अप्रसन्नता दिखाते हुए सुन रहा था। वह शक की नज़रों से कभी पथ प्रदर्शक को, तो कभी सराय के मालिक को देखता। सराय, या स्थानीय भाषा में 'उमेत' स्तेपी में एक कोने में, बस्ती से काफ़ी दूर थी और वह डाकुओं के अड्डे जैसी लग रही थी। मगर कोई चारा न था। सफ़र जारी रखने के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता था। सावेलिच की बेचैनी से मुझे बड़ा मज़ा आ रहा था। इसी बीच मैंने सोने की तैयारी कर ली और बेंच पर लेट

गया। सावेलिच अलावघर के ऊपर चढ़ गया, मालिक फ़र्श पर लेट गया। जल्दी ही पूरी झोंपड़ी खर्राटे लेने लगी और मैं मुर्दे के समान सो गया।

सुबह काफ़ी देर से उठने पर मैंने देखा कि तूफ़ान थम गया है। सूरज चमक रहा था। बर्फ़ को चकाचौंध करनेवाली परतें असीम स्तेपी पर पड़ी थीं। घोड़े जोते जा चुके थे। मैंने मालिक को पैसे दिये, जिसने हमसे इतने कम पैसे लिए कि सावेलिच ने भी अपनी हमेशा की आदत के मुताबिक़ उससे झिकझिक नहीं की, और कल के सन्देह उसके दिमाग़ से पूरी तरह निकल गये। मैंने रहबर को बुलाया, उसे मदद के लिए धन्यवाद दिया और सावेलिच से कहा कि उसे वोद्का के लिए पचास कोपेक दे दे। सावेलिच ने मुँह बनाया।

"पचास कोपेक वोद्का के लिए!" उसने कहा, "यह क्या बात हुई? इसलिए कि तुम उसे अपने साथ गाड़ी में बिठाकर सराय तक लाए? तुम्हारी मर्ज़ी, मालिक : हमारे पास फ़ालतू पैसे नहीं हैं। हरेक को यूँ वोद्का के लिए देते रहोगे तो जल्दी ही ख़ुद को भूखा मरना पड़ेगा।"

मैं सावेलिच से बहस न कर सका। पैसे, मेरे वादे के मुताबिक़ पूरी तरह उसके कब्ज़े में थे। मुझे बड़ी कोफ़्त हो रही थी, कि मैं उस व्यक्ति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने में असमर्थ था जिसने मुझे यदि दुर्भाग्य से नहीं, तो कम-से-कम अत्यन्त अप्रिय परिस्थिति से बचाया था।

"अच्छा," मैंने ठंडेपन से कहा, "अगर पचास कोपेक नहीं देना चाहते, तो मेरे कपड़ों में से कुछ निकालकर दे दो। उसके कपड़ों में ज़रा भी दम नहीं है। उसे मेरा ख़रगोश की ख़ालवाला कोट दे दो।"

"सुनो, मेरे आक़ा, प्योत्र अन्द्रेइच।" सावेलिच ने कहा, "उसे तुम्हारे ख़रगोश की ख़ाल का कोट क्यों? वह, कुत्ता, उसे पहले ही शराबख़ाने में बेचकर पी जाएगा।"

"यह, बुड्ढे मियाँ, तेरा सिरदर्द नहीं है," मेरे आवारा ने कहा, "कि पी जाऊँगा या नहीं। हुज़ूर अपने कन्धों से उतारकर मुझे कोट दे रहे हैं, यह हुज़ूर की मर्ज़ी है, और तेरा, नौकर का, काम बहस करने का नहीं, बल्कि उनकी बात सुनना है।"

"भगवान से भी तू नहीं डरता, डाकू कहीं का," सावेलिच ने ग़ुस्से से कहा, "तू देख रहा है कि बच्चा अभी भला-बुरा सोच नहीं सकता, और तुझे उसे लूटने-खसोटने में बड़ी ख़ुशी हो रही है, उसकी सादगी का फ़ायदा उठा रहा है। तुझे मालिक का कोट क्यों चाहिए? अपने नासपिटे कन्धों पर तो तुम खींच-खाँचकर भी उसे डाल नहीं पाओगे।"

"अक़्लमन्दी न दिखाओ," मैंने अपने संरक्षक से कहा, "फ़ौरन कोट यहाँ ले आओ।"

"हे मेरे भगवान!" मेरा सावेलिच कराहा, "ख़रगोश की ख़ाल का कोट एकदम नया है। और दे भी किसे रहे हो, भुक्कड़ पियक्कड़ को।"

फिर भी ख़रगोश की ख़ाल का कोट प्रकट हुआ। देहाती फ़ौरन उसे पहनने लगा। वास्तव में ही कोट, जो मेरे लिए भी छोटा हो गया था, उसके लिए तंग ही था। मगर उसने दिमाग़ लड़ाते हुए, कुछ सीवन उधेड़कर उसे पहन ही लिया। टाँकों के चरमराने की आवाज़ सुनकर सावेलिच बिसूरने को हो गया। आवारा मेरे उपहार से बहुत ख़ुश हो गया।

वह मुझे गाड़ी तक छोड़ने आया और झुककर सलाम करते हुए बोला, "शुक्रिया, हुजूर। भगवान आपको इस भलाई का इनाम दे। आपकी मेहरबानी ज़िन्दगी भर नहीं भूलूँगा।" वह अपने रास्ते चला गया, और मैं आगे बढ़ चला, सावेलिच के कलपने पर बग़ैर ध्यान दिये, और जल्दी ही मैं कल के तूफ़ान, अपने पथ प्रदर्शक और ख़रगोश के कोट के बारे में भूल गया।

ओरेनबुर्ग पहुँचकर मैं सीधे जनरल के पास गया। मैंने एक ऊँचे, मगर बुढ़ापे के कारण झुक गये आदमी को देखा। उसके लम्बे बाल एकदम सफ़ेद थे। पुरानी बदरंग वर्दी आन्ना इओनोव्ना के समय के फ़ौजी की याद दिला रही थी, और उसकी बातचीत में जर्मन लहज़ा साफ झलकता था। मैंने उसे पिताजी का ख़त दिया।

उनका नाम सुनते ही उसने फ़ौरन मुझे देखा, "हे पगवान!" उसने कहा, "गुच दिन पहले ही तो अन्द्रेइ पेत्रोविच तेरी उमर का था, और अब देगो कैसा जवान पेटा है उसका। आख, फक्त, फक्त।"

उसने ख़त खोला और दबी ज़बान में पढ़ते हुए, फ़िकरे कसता रहा, "प्यारे महोदय अन्द्रेइ कार्लोविच, उम्मीद करता हूँ कि हुजूर"...यह क्या औपचारिगता? फूऽऽ शरम पी नहीं आती उसे। पेशक, अनुशासन अपनी जकह है, मकर पुराने तोस्त को क्या कोई ऐसे लिकता है?..."हुजूर पूले नहीं होंके?...हुँ...हुँ..." और...जब...स्वर्कीय, फील्टमार्शल मीन...कूच...वैसे ही...करोलीन्का को फी "...ओह, सैतान। तो उसे अफी तक यात हैं पुरानी सैतानियाँ?" अपने काम के पारे में...आपकी ओर अपने पतमास को... "हूँ..." रको इसे साही के तस्तानों में "...ये साही के तस्ताने क्या चीच है? शायत रूसी कहावत..." साही के तस्तानों में रको, "का मतलब क्या है?" उसने मेरी ओर देखते हुए दुहराया।

"इसका मतलब है," मैंने यथासम्भव मासूमियत के साथ जवाब दिया, "प्यार से रखिए, बहुत कड़ाई से नहीं, ज़्यादा आज़ादी दीजिए, साही के दस्तानों में रखिए।"

"हूँ समच रहा हूँ..." और उसे आचाती न तें "...नहीं, लकता है, साही के तस्ताने वह नहीं है..." इसके सात...उसका पासपोर्त "...कहाँ है वह? आह, ये रहा. .." सेम्योनोव रेचिमेंत पेच तेना "...अच्चा अच्चा, सप हो चाएका..." ओहते के पकैर खुले...पुराने तोस्त और साती को कले लकाने की अनुमति तो," "आ! आकिर समछ गया...वकैरह, वकैरह...तो, प्यारे—उसने ख़त पढ़कर और मेरा पासपोर्ट एक ओर रखते हुए कहा, सप कुछ हो चाएका, तुम अपसर पनकर चाओके...रेचिमेंत, और

फक्त परपात न हो, इसलिए कल ही बेलागोर्स्काया क़िले चले चाना, चहाँ तुम कप्तान मिरोनोव के अधीन काम करोके, वह पहुत फला और ईमानतार आतमी है। वहाँ तुम असली फौची चिन्तकी चिओगे, अनुसासन सीकोके। और आज मेरे खर खाना खाओ।"

"पल-पल मुसीबत वढ़ती जा रही है।" मैंने मन-ही-मन सोचा, "माँ के पेट में ही गारद का सार्जंट वनने से मुझे मिला क्या! यह मैं कहाँ आ गया?...रेज़िमेंट और किर्गीज़-कज़ाख सीमा की स्तेपी में स्थित सुनसान क़िले में..." मैंने अन्द्रेइ कार्लोविच के यहाँ खाना खाया, उसके एक पुराने सहायक अफ़सर के साथ। उसकी मेज़ पर कड़ी जर्मन मितव्ययिता झलक रही थी, और मैं सोचता हूँ कि कभी-कभी किसी फ़ालतू मेहमान को अपने खाने की मेज़ पर देखने के डर से ही मुझे फ़ौरन दुर्ग की ओर भेज दिया गया। दूसरे दिन मैंने जनरल से विदा ली और अपने नियुक्ति स्थान की ओर चल पड़ा।

3

बेलोगोर्स्काया का क़िला

छोटे से दुर्ग में रहते हैं,
रोटी खाते, पानी पीते,
और अगर जानी दुश्मन
आकर चाहे पकौड़े,
मेहमानों की करते दावत
तोप में भरके गोले।

—सैनिक गीत

पुराने लोग हैं, मेरे हुज़ूर।

—नेदोरोस्ल

बेलोगोर्स्काया का क़िला ओरेनबुर्ग से चालीस मील की दूरी पर था। रास्ता याइक के खड़े किनारे के साथ-साथ जाता था। नदी अभी जमी नहीं थी और सीसे के रंग जैसी उसकी लहरें बर्फ़ से ढके एक से किनारों के बीच उदास और स्याह नज़र आ रही थीं। उनके पीछे फैली थी किर्गीज़ स्तेपी। मैं उदासी भरे ख़यालों में डूब गया। दुर्ग की ज़िन्दगी मुझे कम दिलचस्प लग रही थी। मैंने अपने भावी अधिकारी, कप्तान मिरोनोव की कल्पना करने की कोशिश की, और उसे एक सख़्त, चिड़चिड़ा बूढ़ा व्यक्ति पाया, जो केवल फ़ौजी सेवा के अलावा और कुछ भी नहीं जानता था और मेरे

ाग से भी निठल्लेपन की वजह से मुझे जेलख़ाने में बन्द करके सिर्फ़ रोटी और पानी पर रखने का आदेश देता। इसी बीच अँधेरा होने लगा। हम काफ़ी तेज़ी से जा रहे थे।

"क्या क़िला दूर है?" मैंने अपने गाड़ीवान से पूछा।

"पास ही है," उसने जवाब दिया, "वह दिख रहा है।"

मैंने विराट बुर्ज, दुर्ग प्राचीर और मीनारें देखने की उम्मीद से चारों ओर नज़र दौड़ाई, मगर कुछ भी न देख पाया, सिर्फ़ एक गाँव को छोड़कर, जो लकड़ी की चारदीवारी से घिरा था। एक ओर को बर्फ़ से अधढँके तीन या चार फूस के बड़े-बड़े लट्ठे पड़े थे, दूसरी ओर, टेढ़ी हो रही पवनचक्की, जिसमें चटाई के बने पंखे अलसाए से लटक रहे थे।

"क़िला कहाँ है?" मैंने अचरज से पूछा।

"यह रहा।" गाड़ीवान ने जवाब दिया, गाँव की ओर इशारा करते हुए, और इसी के साथ हमने उसमें प्रवेश किया। फाटक के पास मैंने पुरानी लोहे की तोप देखी, रास्ते सँकरे और टेढ़-मेढ़े थे, झोंपड़ियाँ नीची और अधिकांश फूस से ढँकी हुई थीं। मैंने कमांडर के पास ले चलने का हुक्म दिया, और एक ही मिनट बाद गाड़ी एक लकड़ी के छोटे से घर के सामने रुकी, जो ऊँचाई पर बना था, गाँव के चर्च के पास।

किसी ने मेरा स्वागत नहीं किया। मैं ड्योढ़ी में गया और प्रवेश कक्ष का दरवाज़ा खोला। एक अपंग बूढ़ा मेज़ पर बैठा हुआ, हरे रंग की वर्दी की कोहनी पर नीला पैबन्द लगा रहा था। मैंने उसे अपने आने की सूचना देने को कहा। "चले आओ, प्यारे," अपंग ने जवाब दिया, "हमारे लोग घर पर ही हैं।" मैं साफ़-सुथरे कमरे में घुसा, जो पुराने ढंग से सजा था। कोने में चीनी बर्तनों की अलमारी थी; दीवार पर शीशे में जड़ा अफ़सर का डिप्लोमा लटक रहा था, उसके निकट चटाई पर निकाले गये 'किस्त्रीम[1] और ओचाकोवा[2] की विजय', 'दुल्हन का चुनाव' और 'बिल्ले का दफ़न' दर्शाते रंगीन चित्र थे। खिड़की के पास रुईदार जैकेट पहने और सिर पर रूमाल बाँधे वुढ़िया बैठी थी। वह धागों का गोला बना रही थी, जिन्हें अफ़सर की वर्दी पहने एक काना बूढ़ा अपने हाथों पर फैलाये बैठा था।

"तुम्हें क्या चाहिए भाई?" उसने अपना काम जारी रखते हुए पूछा। मैंने जवाब दिया कि मैं फ़ौज में नौंकरी करने आया हूँ और अपने कर्तव्य के अनुसार कप्तान महोदय की सेवा में हाज़िर हुआ हूँ, और इन शब्दों के साथ मैं काने अफ़सर की ओर, उसे ही कप्तान समझकर मुख़ातिब होने ही वाला था, मगर गृहस्वामिनी ने मेरे पहले से तैयार किये गये इस वाक्य को बीच में ही रोक दिया।

---

1. किस्त्रीम–प्रशिया का क़िला, जिसे रूसियों ने 1758 में जीता था।
2. ओचाकोवा–तुर्की का क़िला, जो 1737 में जीता गया था।

"इवान कुज़्मिच घर पर नहीं है।" उसने कहा, "वे पादरी गेरासिम के यहाँ गये हैं, मगर कोई बात नहीं, भाई, मैं उनकी पत्नी हूँ। तुमसे प्रेम और अनुग्रह की कामना करती हूँ। बैठो, भाई।" उसने नौकरानी को आवाज़ लगाई और कज़ाक सार्जंट को बुलाने का आदेश दिया। बूढ़ा अपनी इकलौती आँख से कुतूहलवश मुझे देख रहा था।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ," उसने कहा, "आप किस रेज़िमेंट में थे?"

मैंने उसकी जिज्ञासा को शान्त कर दिया।

"और क्या मैं यह पूछ सकता हूँ," उसने अपनी बात जारी रखी, "आप गारद से क़िले में क्यों आ गये?"

मैंने जवाब दिया कि ऐसी ही बड़े अफ़सरों की इच्छा थी।

"शायद, गार्डसेना के अफ़सर के लिए कोई अशोभनीय हरकत करने के लिए," मेरा ढीठ प्रश्नकर्ता कहता रहा।

"बस, बहुत हो चुकी झूठी बकवास," कप्तान की बीवी ने उससे कहा, "तुम देख रहे हो कि जवान आदमी सफ़र से थककर आया है; उसके पास तुम्हारे लिए...(हाथ सीधे रखो...) और तुम, मेरे भाई," उसने मुझसे मुख़ातिब होकर आगे कहा, "दुःखी मत होना कि तुम्हें इस वीराने में फेंक दिया गया है। ऐसा तो होता ही रहता है। यहाँ रहोगे, तो पसन्द करने लगोगे। श्वाब्रिन अलेक्सेई इवानिच को पाँच साल पहले यहाँ भेजा गया था। ख़ून करने के जुर्म में, भगवान ही जाने, उस पर कौन-सा भूत सवार था; वह, तुम देखो, अपने एक लेफ़्टिनेंट के साथ शहर से बाहर गया था, साथ में तलवारें ले गये थे, और लगे एक-दूसरे को घोंपने; और अलेक्सेई इवानिच ने उस लेफ़्टिनेंट को बींध डाला, वह भी दो गवाहों के सामने! क्या किया जाए? गुनाह किसी से भी हो सकता है।"

इसी समय सार्जंट अन्दर आया, जवान और हृष्ट पुष्ट कज़ाक। "मक्सीमिच," कप्तान की बीवी ने उससे कहा, "अफ़सर महाशय को फ़्लैट दे दो, हाँ साफ़-सथुरा देना।"

"जी, वासिलीसा इगोरोव्ना," सार्जंट ने जवाब दिया, "क्या हुजूर को इवान पलेझायेव के साथ ही रखें?"

"झूठ बोल रहे हो, मक्सीमिच," कप्तान की बीवी ने कहा, "पलेझायेव के यहाँ वैसे ही जगह कम है, वह मेरा रिश्तेदार है और याद रखता है कि हम उसके अफ़सर हैं। अफ़सर महाशय को...आपका नाम क्या है, मेरे भाई प्योत्र अन्द्रेइच?...प्योत्र अन्द्रेइच को सिम्योन कूज़ोव के यहाँ ले जाओ। वह दुष्ट है, अपने घोड़े को उसने मेरे बग़ीचे में छोड़ दिया था। तो, मक्सीमिच, सब कुछ ठीक-ठाक है?"

"भगवान की दया से सब ओर शान्ति है," कज़ाक ने जवाब दिया, "सिर्फ़ कोर्पोरल प्रोखोरोव का हम्माम में गर्म पानी के टब के लिए उस्तीन्या नेगूलिना से झगड़ा हो गया।"

"इवान इग्नातिच!" कप्तान की बीवी ने काने बूढ़े से कहा, "प्रोखोरोव और उस्तीन्या से पूछताछ करो, पता करो कौन सच है, कौन क़ुसूरवार। दोनों को ही सज़ा देना। तो, मक्सीमिच जाओ भगवान रक्षा करे। प्योत्र अन्द्रेइच, मक्सीमिच आपको आपके फ़्लैट में छोड़ आएगा।"

मैंने जाते-जाते सिर झुकाकर अभिवादन किया। सार्जंट मुझे झोंपड़ी में लाया, जो नदी के ऊँचे किनारे पर, क़िले के एकदम छोर पर थी। इस झोंपड़ी का आधा हिस्सा सिम्योन कूज़ोव के पास था, आधा मुझे दिया गया। इस घर में एक साफ़-सुथरा कमरा था, जिसे बीच में दीवार से दो हिस्सों में बाँट दिया गया था। सावेलिच वहाँ इन्तजाम करने लगा, मैं छोटी-सी खिड़की से बाहर देखने लगा। मेरे सामने उदास स्तेपी फैली थी। किनारे पर कुछ झोंपड़ियाँ थीं, सड़क पर कुछ मुर्ग़ियाँ घूम रही थीं। एक बुढ़िया दरवाज़े पर हाथ में कठौता लिये सुअरों को बुला रही थी, जो बड़े प्यार से ख़ू ख़ू करके उसे जवाब दे रहे थे। कहाँ ले आयी थी क़िस्मत मुझे भरी जवानी में! निराशा ने मुझे दबोच लिया, मैं खिड़की से हटकर बग़ैर खाए-पिए लेट गया, सावेलिच की मिन्नतों की ओर ध्यान दिये बग़ैर, जो बार-बार दुहरा रहा था, "भगवान! कुछ भी खाना नहीं चाहता। अगर बच्चा बीमार पड़ गया तो मालिक क्या कहेंगे?"

दूसरे दिन सुबह जब मैं कपड़े पहन ही रहा था कि दरवाज़ा खुला और मझोले क़द का, साँवले और सुन्दर तो नहीं, मगर ग़ज़ब के ज़िन्दादिल चेहरे का एक जवान अफ़सर अन्दर आया। "माफ़ कीजिए," उसने मुझसे फ्रांसीसी में कहा, "कि बग़ैर किसी शिष्टाचार के मैं आपसे परिचय करने चला आया। कल मुझे आपके आगमन के बारे में पता चला, और आख़िरकार एक मनुष्य का चेहरा देखने की इच्छा मुझ पर इस क़दर हावी हो गयी कि मैं रुक न सका। यह आप तब समझेंगे, जब यहाँ कुछ दिन रहेंगे।"

मैंने अन्दाज़ लगाया कि यह वही अफ़सर था, जिसे द्वन्द्व-युद्ध करने के फलस्वरूप गार्ड सेना से यहाँ भेजा गया था। हमने फ़ौरन ही पहचान कर ली। श्वाब्रिन एकदम मूर्ख नहीं था। उसकी बातचीत तीखी और मनोरंजक थी। वह बड़ी प्रसन्नता से वर्णन कर रहा था क़िले के कमांडेंट के परिवार का, उसके लोगों और इस इलाक़े का, जहाँ क़िस्मत मुझे खींच लायी थी। मैं सच्चे दिल से हँस रहा था, कि मेरे पास वही अपाहिज़ आया, जो कमांडेंट के प्रवेशकक्ष में वर्दी दुरुस्त कर रहा था, और वासीलिसा इगोरोव्ना की ओर से भोजन का आमन्त्रण दे गया। श्वाब्रिन ने भी मेरे साथ चलने की इच्छा प्रकट की।

कमांडेंट के घर की ओर जाते हुए हमने मैदान में क़रीब बीस अपाहिज़ बूढ़े देखे, जिनकी लम्बी-लम्बी चोटियाँ थी और वे तिकोनी टोपियाँ पहने हुए थे। वे एक क़तार में खड़े थे। सामने कमांडेंट खड़ा था, प्रसन्नचित्त, ऊँचे क़दवाला, बूढ़ा, नुकीली

टोपी और चीनी ढंग का गाऊन पहने। हमें देखकर वह हमारे पास आया, मुझसे कुछ स्नेहभरे शब्द कहे और फिर से निर्देश देने लगा। हम ट्रेनिंग देखने के लिए रुकनेवाले थे, मगर उसने हमें वासीलिसा इगोरोव्ना के पास जाने का अनुरोध किया यह वादा करते हुए कि वह हमारे पीछे-पीछे वहाँ पहुँच जाएगा, "और यहाँ," उसने आगे कहा, "आपके देखने के लिए कुछ नहीं है।"

वासीलिसा इगोरोव्ना ने बड़े प्रेम और सहज भाव से हमारा स्वागत किया और मुझसे यूँ व्यवहार करने लगी, जैसे मुझे सदियों से जानती हो। अपाहिज़ और पलाशा मेज़ सजा रहे थे।

"आज यह मेरा इवान कुज़्मिच पढ़ाने में इतना क्यों खो गया!" कप्तान की बीवी ने कहा, "पलाशा, मालिक को खाने के लिए बुला ला और माशा कहाँ है?"

तभी करीब अठारह वर्ष की, गोल चेहरे वाली, गुलाबी गालों वाली, लाल-लाल होते कानों के पीछे भली-भाँति सँवारे गये भूरे सुनहरे बालोंवाली लड़की ने प्रवेश किया। पहली नज़र में वह मुझे बहुत अच्छी नहीं लगी। मैं उसकी ओर पूर्वाग्रह से देख रहा था, श्वाब्रिन ने माशा का, कप्तान की बेटी का, वर्णन एक बेवक़ूफ़ लड़की के रूप में किया था। मारिया इवानोव्ना एक कोने में बैठकर सिलाई करने लगी। इसी समय बन्द गोभी का शोरवा परोसा गया। वासीलिसा इगोरोव्ना ने पति को न पाकर दुबारा उसे बुलाने के लिए पलाशा को भेजा, "मालिक से कह : मेहमान इन्तज़ार कर रहे हैं, शोरवा ठंडा हो रहा है, भगवान की दया से, पढ़ाई कहीं भाग नहीं जाएगी, बाद में चिल्ला लेना।" कप्तान काने बूढ़े के साथ शीघ्र ही आ गया।

"यह क्या, मेरे मालिक?" पत्नी ने उससे कहा, "खाना कितनी देर से परोसा जा चुका है, और तुम्हारा पता ही नहीं।"

"और तुम सुनो, वासीलिसा इगोरोव्ना-इवान" कुज़्मिच ने जवाब दिया, "मैं अपनी फ़ौजी सेवा में व्यस्त था, सिपाहियों को पढ़ा रहा था।"

"बस हो गया," कप्तान की बीवी ने प्रतिवाद किया, "बस कहते ही हो कि सिपाहियों को पढ़ा रहे हो, न तो फ़ौजी काम उनके बस का है, न ही तुम्हें इसमें कुछ मालूम है। घर बैठकर भगवान का नाम लेते; ज़्यादा अच्छा होता, प्यारे मेहमानो, कृपया मेज़ पर आइए।"

हम खाना खाने बैठे। वासीलिसा इगोरोव्ना एक मिनट के लिए भी चुप नहीं हुई और उसने मुझ पर सवालों की बौछार कर दी : मेरे माता-पिता कौन हैं, क्या वे ज़िन्दा हैं, कहाँ रहते हैं और कितनी उनकी सम्पत्ति है? यह सुनकर कि पिता के पास तीन सौ भूमिदास हैं, "क्या सचमुच!" उसने कहा, "तो दुनिया में अमीर लोग हैं! और हमारे पास, मेरे प्यारे, बस यही एक पलाशा है, मगर भगवान की कृपा से हम भली-भाँति रह लेते हैं। बस एक ही दुःख है, माशा; लड़की शादी के लायक़ है, मगर

उसे देने के लिए दहेज क्या है? कन्धी, झाड़ू, और तीन कोपेक का एक सिक्का (माफ़ करना भगवान!), जिससे हम्माम में जा सके। अगर कोई भला आदमी मिल जाए तो ठीक है, वर्ना ज़िन्दगी भर कुँआरी बैठी रहेगी।"

मैंने मारिया इवानोव्ना की ओर देखा, वह एकदम पूरी लाल हो गयी और उसकी प्लेट पर आँसू भी टपक पड़े। मुझे उस पर दया आयी और मैंने बातचीत का विषय बदलने की कोशिश की।

"मैंने सुना है," मैंने एकदम असम्बद्ध-सी बात कही, "कि आपके क़िले पर बाश्कीरी आक्रमण करनेवाले हैं।"

"यह प्यारे, तुमने किससे सुना?" इवान कुज़्मिच ने पूछा। "मुझे ओरेनबुर्ग में बताया गया," मैंने जवाब दिया।

"बकवास!" कमांडेंट ने कहा, "हमारे यहाँ बहुत दिनों से कुछ भी सुनाई नहीं दिया है। बाश्कीरी घबराए हुए हैं, और किर्गीज़ सबक़ सीख चुके हैं। वे शायद हमसे नहीं उलझेंगे, और अगर उलझ पड़े, तो मैं ऐसी सज़ा दूँगा, कि दस साल तक मुँह नहीं खोलेंगे।"

"और आपको डर नहीं लगता।" मैंने कप्तान की बीवी से मुख़ातिब होकर कहा, "ऐसे ख़तरों से घिरे दुर्ग में रहने से?"

"आदत, मेरे प्यारे," उसने जवाब दिया, "बीस साल पहले जब हमें रेज़िमेंट से यहाँ भेजा गया था, भगवान जानता है, मैं इन काफ़िरों से कितना डरती थी। जब भी वनबिलाव की उनकी टोपियाँ देखती, या उनकी सीटियाँ सुनती, यक़ीन करो, मेरे आक़ा, दिल एकदम बैठ जाता! और अब तो इतनी आदत हो गयी है कि जब हमें बताया जाता है कि दुष्ट क़िले के आसपास मंडरा रहे हैं, तो जगह से भी नहीं हिलती।"

"वासीलिसा इगोरोव्ना बड़ी साहसी महिला हैं।" श्वाब्रिन ने बड़ी शान से कहा। "इवान कुज़्मिच इसकी गवाही दे सकते हैं।"

"हाँ, सुनो।" इवान कुज़्मिच ने कहा, "यह औरत डरपोक नहीं है।"

"और मारिया इवानोव्ना?" मैंने पूछा, "क्या उतनी ही बहादुर हैं, जितनी आप?"

"माशा बहादुर है?" उसकी माँ ने जवाब दिया, "नहीं, माशा डरपोक है। आज तक बन्दूक़ की गोली की आवाज़ नहीं सुन सकती : थर थर काँपने लगती है। कोई दो साल पहले इवान कुज़्मिच ने मेरे जन्मदिन पर हमारी तोप से सलामी दी, तो वह, मेरी प्यारी, डर के मारे परलोक ही न सिधार गयी। उस दिन से हम इस नासपिटी तोप से गोले नहीं दाग़ते।"

हम मेज़ से उठे, कप्तान और उनकी पत्नी सोने चले गये, मैं श्वाब्रिन के पास गया, जिसके साथ पूरी शाम बिताई।

4

द्वन्द्व-युद्ध

खड़े रहो, मेहरबानी से, लेकर अपनी तलवार
कैसे बींधूँगा देखना तुझको आर-पार।

—कन्याझ्निन

कुछ हफ़्ते गुज़र गये और बेलागोर्स्काया के क़िले में मेरा जीवन न केवल बर्दाश्त करने लायक़ हो गया, बल्कि प्यारा भी लगने लगा। कमांडेंट के घर में मेरा एक रिश्तेदार की भाँति स्वागत होता था। पति-पत्नी दोनों ही बड़े सम्माननीय व्यक्ति थे। इवान कुज़्मिच, जो सिपाही के बच्चे से अफ़सर बना था, अनपढ़ और सीधा-सादा मगर अत्यन्त ईमानदार और दयालु था। उसकी पत्नी उस पर हुक्म चलाती, जो उसके मनमौजी स्वभाव के अनुरूप ही था। वासीलिसा इगोरोव्ना क़िले का बन्दोबस्त भी ठीक उसी तरह करती, जैसा अपने घर का किया करती। मारिया इवानोव्ना ने शीघ्र ही मुझसे घबराना बन्द कर दिया। हमने पहचान कर ली। मैंने पाया कि वह बुद्धिमान और संवेदनशील लड़की है। अनजाने ही मुझे इस भले परिवार से लगाव हो गया, यहाँ तक कि इवान इग्नातिच से और क़िले के काने सार्जंट से भी, जिसके बारे में श्वाब्रिन सोचता था कि उसके वासीलिसा इगोरोव्ना से अनुचित सम्बन्ध हैं, जिसमें रत्ती भर भी सच्चाई नहीं थी, मगर श्वाब्रिन इससे परेशान नहीं होता था।

मुझे अफ़सर वना दिया गया था। नौकरी थकानेवाली नहीं थी। भगवान भरोसे खड़े इस क़िले में न तो निरीक्षण होता था, न क़वायद और न ही पहरेदारी। कमांडेंट स्वेच्छा से कभी-कभी अपने सैनिकों को सिखाया करता, मगर अभी तक वे यह नहीं जान पाए थे कि 'दाहिना' क्या है और 'बायाँ' क्या, हालाँकि उनमें से कई तो हर बार मुड़ने से पहले, ग़लती न हो जाए, इसलिए सलीब का निशान बना लिया करते। श्वाब्रिन के पास कुछ फ्रांसीसी किताबें थीं। मैंने उन्हें पढ़ना शुरू किया और मेरे मन में साहित्य के प्रति लगाव उत्पन्न हो गया। सुबह मैं पढ़ता, अनुवाद करने की कोशिश करता, और कभी-कभी कविताएँ भी लिखा करता। खाना लगभग हमेशा कमांडेंट के यहाँ खाया करता, जहाँ शेष दिन गुज़ारता और जहाँ कभी-कभी पादरी गेरासीम अपनी पत्नी अकुलीना पाम्फिलोव्ना के साथ आ जाया करते, जो पूरे इलाक़े की हर ख़बर रखती थी। ए.ई. श्वाब्रिन से, ज़ाहिर है, मैं हर रोज़ मिला करता, मगर धीरे-धीरे उसकी बातचीत मेरे लिए अप्रिय होती गयी। कमांडेंट के परिवार के बारे में हर घड़ी के उसके मज़ाक़ मुझे ज़रा भी अच्छे नहीं लगते, ख़ासकर मारिया इवानोव्ना के बारे में उसकी ज़हरीली फ़ब्तियाँ मुझसे बर्दाश्त न होतीं। क़िले में अन्य कोई लोग न थे, मगर मुझे किसी और की ज़रूरत भी नहीं थी।

भविष्यवाणियों के विपरीत बाश्कीरों ने विद्रोह नहीं किया। हमारे क़िले के आसपास शान्ति थी। मगर अचानक आपसी झगड़े से शान्ति भंग हो गयी।

मैं पहले ही कह चुका हूँ कि मैं साहित्य में रुचि लेता था। उस समय के हिसाब से मेरे प्रयोग बहुत अच्छे थे, और कुछ वर्षों बाद अलेक्सान्द्र पेत्रोविच सुमारोकोव[1] ने उनकी काफ़ी प्रशंसा की। एक बार मैंने एक गीत लिखा, जो मुझे बहुत अच्छा लगा। सभी जानते हैं कि कभी-कभी रचनाकार, सलाह लेने की आड़ में, एक अच्छे श्रोता की तलाश करते हैं। तो अपने गीत की नकल करके मैं उसे श्वाब्रिन के पास ले गया, जो अकेला ही पूरे क़िले में कवि की रचना का मूल्यांकन कर सकता था। एक छोटी-सी भूमिका के बाद मैंने जेब से अपनी पुस्तिका निकाली और यह कविता उसे पढ़कर सुनाई :

प्रेम के मीठे ख़याल को,
कोशिश करूँ भगाने की,
और आह, बचकर माशा से
चाहूँ पाना आज़ादी।
आँखों ने पर मुझको किया क़ैद
रहती हैं सम्मुख वे हर पल
कर परेशान मेरे दिल को,
छीन लिया जीवन का चैन।
मेरी पीड़ा जानकर,
मुझ पर रहम करो, माशा, तुम,
पीड़ा की इस घड़ी में देखो
बन्दी हूँ तुम्हारा जान लो तुम।

"कैसी लगी?" मैंने अवश्यम्भावी प्रशंसा की कामना करते हुए श्वाब्रिन से पूछा। मगर, दुर्भाग्य से श्वाब्रिन ने जो आमतौर पर शिष्ट हुआ करता था, दो टूक कह दिया कि मेरा गीत अच्छा नहीं है।

"ऐसा क्यों?" मैंने अपनी निराशा छिपाते हुए पूछा, इसलिए, उसने जवाब दिया, "कि ऐसी कविताएँ मेरे शिक्षक वासीली किरीलिच त्रेदिकोव्स्की को शोभा देती हैं, और मुझे उसके प्रेम गीतों की याद दिलाती हैं।"

अब उसने मेरे हाथ से पुस्तिका छीन ली और निष्ठुरता से हर पंक्ति और हर शब्द का विश्लेषण करने लगा, बड़े चुभते हुए ढंग से मेरी खिल्ली उड़ाने लगा। मैं बर्दाश्त न कर सका, उसके हाथों से मैंने अपनी पुस्तिका छीन ली और कहा कि आगे

1. सुमारोकोव—अठारहवीं शताब्दी के एक कवि एवं नाटककार।

से कभी भी उसे अपनी रचनाएँ नहीं दिखाऊँगा। श्वाब्रिन इस धमकी पर भी हँसने लगा।

"देखेंगे," उसने कहा, "तुम अपने वचन का कितना पालन करते हो, कवियों को श्रोता चाहिए, वैसे ही जैसे इवान कुज़्मिच को भोजन से पूर्व वोद्का का जाम। और यह माशा कौन है, जिसके सामने तुम नज़ाकत भरी भावनाओं का और प्रेम के आवेग का इज़हार कर रहे थे? कहीं मारिया इवानोव्ना तो नहीं?"

"तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं," मैंने नाक-भौंह चढ़ाकर जवाब दिया, "कि यह माशा कौन है? मुझे तुम्हारी राय की और तुम्हारे अनुमान की कोई ज़रूरत नहीं।"

"ओहो! स्वाभिमानी कवि और विनयशील प्रेमी !" श्वाब्रिन कहता रहा, पल-पल मुझे गुस्सा दिलाते हुए, "मगर दोस्ताना सलाह मान लो, अगर तुम कामयाब होना चाहते हो तो गीतों का सहारा न लो।"

"इसका क्या मतलब है, जनाब? ज़रा समझाइए तो सही।"

"खुशी से इसका मतलब यह है, कि अगर तुम चाहते हो कि माशा मिरोनोवा साँझ के झुटपुटे में तुमसे मिलने आये तो प्यार भरे गीतों के बदले उसे झुमके दो।"

मेरा ख़ून उबलने लगा।

"तुम उसके बारे में ऐसा क्यों सोचते हो?" मैंने बड़ी मुश्किल से अपने गुस्से पर क़ाबू रखते हुए पूछा।

"इसलिए," उसने ज़हरीली मुस्कान के साथ कहा, "कि अपने अनुभव से मैं उसका मिज़ाज और आदतें जानता हूँ।"

"तुम झूठ बोल रहे हो कमीने!" मैं क्रोध से चीख़ा, "तुम बड़े ही निर्लज्ज ढंग से झूठ बोल रहे हो।"

श्वाब्रिन के चेहरे के भाव बदल गये।

"तुम इसे ऐसे ही नहीं जाने दे सकते," उसने मेरा हाथ भींचते हुए कहा, "आप मुझे सन्तोष प्रदान करेंगे।"

"ठीक है, जब चाहो!" मैंने ख़ुश होते हुए जवाब दिया। इस क्षण मैं उसके टुकड़े-टुकड़े करने को तैयार था।

मैं उसी समय इवान इग्नातिच के पास चल पड़ा और मैंने उसे हाथ में सुई लिये देखा, कप्तान की बीवी के आदेश पर वह सर्दियों के लिए खुमियाँ सुखाने की गरज से उन्हें पिरो रहा था।

"आह, प्योत्र अन्द्रेइच!" उसने मुझे देखकर कहा, "आइए कैसे आना हुआ? किस काम से पूछ सकता हूँ?" मैंने संक्षेप में उसे बताया कि मेरा अलेक्सेइ इवानिच से झगड़ा हो गया है। और मैं उसे, इवान इग्नातिच को मेरा मध्यस्थ[1] बनाने की

1. मध्यस्थ—द्वन्द्व-युद्ध करनेवाले दोनों पक्षों का एक-एक साथी, प्रत्यक्षदर्शी।

विनती करने आया हूँ। इवान इग्नातिच ने अपनी इकलौती आँख फाड़ते हुए ध्यान से मेरी बात सुनी।

"आप कह रहे हैं," उसने मुझसे कहा, "कि अलेक्सेई इवानिच को तलवार घोंप देना चाहते हैं, और आपकी इच्छा है कि उस समय मैं गवाह बनकर खड़ा रहूँ? यही न? क्या मैं पूछ सकता हूँ?"

"बिलकुल ठीक!"

"मेहरबानी करें, प्योत्र अन्द्रेइच। आप यह क्या कर रहे हैं? आपने अलेक्सेइ इवानिच के साथ तू-तू मैं-मैं की? दुर्भाग्यपूर्ण बात है। गाली-गलौज़ फाटक पर ही तो टँगी नहीं रहेगी। उसने आपको गाली दी, और आप उसे गालियाँ दे देते हैं; वह आपको थोबड़े पर जड़ता है, और आप उसके कान पर, दूसरे, तीसरे...और चले जाते हैं; और हम आपकी सुलह करवा देंगे। वर्ना, क्या मैं पूछ सकता हूँ : अपने निकट मित्र को तलवार से बींध देना क्या अच्छी बात है? और अच्छा ही होता अगर आप उसे तलवार घोंप देते : भगवान बचाए अलेक्सेई इवानिच को; मैं भी उसे पसन्द नहीं करता। मगर, यदि वह आपको नुक़सान पहुँचाए तो? इसका क्या नतीजा होगा? कौन बेवक़ूफ़ कहलाएगा, पूछ सकता हूँ?"

भले लेफ़्टिनेंट की दलीलों ने मुझ पर कोई असर न किया। मैं अपने इरादे पर डटा रहा।

"जैसी आपकी मर्ज़ी," इवान इग्नातिच ने कहा, "जो मन में आए, कीजिए। मगर मैं क्यों गवाह बनूँ? किस मतलब से? भगवान की दया से, मैंने स्वीड को मारा है और तुर्कों को भी, सब कुछ देख चुका हूँ।"

मैंने उसे मध्यस्थ की ज़िम्मेदारी समझाने की कोशिश की, मगर इवान इग्नातिच किसी भी तरह मुझे समझ ही न पाया।

"आपकी इच्छा," उसने कहा, अगर मुझे इस लफड़े में पड़ना ही है, तो इवान कुज़्मिच के पास जाऊँ और अपने फ़र्ज़ के अनुसार, उसे सूचित करूँ कि क़िले में एक अपराध होनेवाला है, जो सरकारी हितों के ख़िलाफ़ हैं, कमांडेंट महाशय, का इस दिशा में कोई सही क़दम उठाना अच्छा होगा..."

मैं घबरा गया और इवान इग्नातिच से विनती करने लगा कि वह कमांडेंट से कुछ न कहे, बड़ी मुश्किल से उसे मनाया, उसने वचन दिया और मैंने निश्चय किया कि उससे दूर ही रहूँगा।

शाम मैंने अपनी आदत के मुताबिक़ कमांडेंट के घर ही बिताई। मैं ख़ुश और संयत दिखने की कोशिश कर रहा था, जिससे किसी को कोई शक न हो और मैं उकतानेवाले सवालों से बच सकूँ, मगर मानता हूँ कि मुझमें वह ठंडापन नहीं था, जिसकी शेख़ी, मेरी जगह होनेवाले, अक्सर हमेशा बघारा करते हैं। इस शाम को मैं कोमल भावनाओं और भावुकता का अनुभव कर रहा था। मारिया इवानोव्ना मुझे

हमेशा से कहीं अधिक अच्छी लगी। यह ख़याल कि शायद मैं उसे अन्तिम बार देख रहा हूँ, मेरी नज़रों में उसे कुछ मर्मस्पर्शी बना रहा था। श्वाब्रिन भी वहाँ आ गया। मैंने उसे एक ओर ले जाकर इवान इग्नातिच से हुई बातचीत से अवगत कराया।

"हमें मध्यस्थ क्यों चाहिए," उसने रूखाई से कहा, "उनके बिना ही काम चला लेंगे।"

हमने क़िले के निकट स्थित भूसे की टालों के पीछे लड़ने का और वहाँ सुबह छह बजे पहुँचने का निर्णय लिया। हम ज़ाहिरी तौर पर इतने दोस्ताना ढंग से बातें कर रहे थे कि इवान इग्नातिच ख़ुशी के मारे बक गया।

"पहले ही ऐसा होना चाहिए था," उसने प्रसन्नता से मुझसे कहा, "बुरी शान्ति भले झगड़े से कहीं ज़्यादा अच्छी है, बेईमान होने से सेहतमंद होना बेहतर है।"

"क्या, क्या इवान इग्नातिच?" कप्तान की बीवी ने कहा, जो कोने में बैठी-बैठी ताश के पत्तों से भविष्य पढ़ रही थी, "मैंने सुना नहीं।"

इवान इग्नातिच मुझमें अप्रसन्नता के भाव देखकर और अपना वादा याद करके सकुचा गया और समझ नहीं पाया कि क्या जवाब दे। श्वाब्रिन उसकी मदद के लिए बढ़ा।

"इवान इग्नातिच," उसने कहा, "हमारी दोस्ती की प्रशंसा कर रहे हैं।"

"और मेरे प्यारे, तुम किसके साथ झगड़ पड़े थे?"

"मैं, शायद, प्योत्र अन्द्रेइच के साथ बड़ी ज़ोरदार बहस कर रहा था।"

"किसलिए?"

"यूँ ही बेकार की बात पर; एक गीत की ख़ातिर, वासीलिसा इगोरोव्ना।"

"ख़ूब बहाना ढूँढ़ा झगड़ा करने का! गाने के ऊपर!...यह हुआ कैसे?"

"ऐसे; प्योत्र अन्द्रेइच ने काफ़ी पहले एक गाना लिखा और आज उसे मेरे सामने गाने लगा, और मैंने अपनी पसन्द का गीत छेड़ दिया :

बेटी कप्तान की,
न जा घूमने आधी रात को...

इसी बात पर झगड़ा हो गया। प्योत्र अन्द्रेइच को गुस्सा आ गया, मगर बाद में उसने मान लिया कि हरेक को अपनी मर्ज़ी से गाने की आज़ादी है। इसी बात पर झगड़ा ख़त्म हो गया।"

श्वाब्रिन की बेहयाई ने मुझे गुस्से से पागल कर दिया, मगर मेरे अलावा कोई और उसके भौंडे इशारों को न समझ पाया, कम-से-कम किसी ने भी इस बात पर ध्यान नहीं दिया। गीतों से बातचीत मुड़ गयी कवियों पर, और कमांडेंट ने अपनी राय दी कि वे सब आवारा और पियक्कड़ होते हैं, और उसने दोस्ताना अन्दाज़ में मुझे कविताएँ करना छोड़ने की सलाह दी, क्योंकि यह काम फ़ौजी सेवा के विपरीत था और इसका परिणाम अच्छा न निकलता।

श्वाब्रिन की उपस्थिति मेरे लिए असहनीय हो गयी। मैंने शीघ्र ही कमांडेंट और उसके परिवार से विदा ली, घर आकर अपनी तलवार को परखा, उसकी नोक की जाँच की और सावेलिच को मुझे छह बजे उठाने की आज्ञा देकर सो गया।

दूसरे दिन नियत समय पर मैं फूस की टालों के पीछे अपने प्रतिद्वन्द्वी की राह देखता खड़ा था। जल्दी ही वह आ गया, "हमें देख सकते हैं," उसने मुझसे कहा, "जल्दी करनी चाहिए।"

हमने वर्दियाँ उतारीं, सिर्फ़ कम्जोल[1] में रह गये, और अपनी तलवारें निकाल लीं। इसी समय टाल के पीछे से अचानक इवान इग्नातिच पाँच अपाहिजों के साथ प्रकट हुआ। उसने हमें कमांडेंट के पास चलने को कहा। हमने गिड़गिड़ाकर माफ़ी माँगी। सिपाहियों ने हमें घेर लिया, और हम क़िले की ओर चले इवान इग्नातिच के पीछे-पीछे जो बड़ा इतराकर, अकड़ के साथ क़दम बढ़ाता, हमें ले जा रहा था।

हम कमांडेंट के घर में घुसे। इवान इग्नातिच ने बड़े समारम्भ के साथ, "ले आया!" कहते हुए द्वार खोल दिये। हमारा स्वागत किया वासीलिसा इगोरोव्ना ने।

"आह, मेरे प्यारो! इसका क्या मतलब है? कैसे? क्या? हमारे क़िले में खून-खराबा होने जा रहा है! इवान कुज़्मिच, इन्हें फ़ौरन गिरफ़्तार कर लो! प्योत्र अन्द्रेइच! अलेक्सेइ इवानिच! अपनी-अपनी तलवारें यहाँ दो, दो जल्दी दो। पलाश्का, इन तलवारों को तहख़ाने में रख दे। प्योत्र इन्द्रेइच! मुझे तुमसे यह उम्मीद नहीं थी। तुम्हें शर्म नहीं आती? अलेक्सेइ इवानिच को छोड़ो उसे तो हत्या करने के जुर्म में गारद से निकाल दिया गया है, वह भगवान में भी विश्वास नहीं करता है, मगर तुम? क्या ही करने लगे?"

इवान कुज़्मिच पत्नी से पूरी तरह सहमत थे और उन्होंने आगे जोड़ा, "और सुन रहे हो तुम, वासीलिसा इगोरोव्ना ठीक कह रही हैं। फ़ौजी क़ानून में द्वन्द्व-युद्ध पूरी तरह प्रतिबन्धित हैं।"

इस बीच पलाश्का ने हमसे हमारी तलवारें ले लीं और उन्हें तहखाने में ले गयी। मैं अपनी हँसी रोक न सका। श्वाब्रिन अपनी शान बनाए रहा। "मेरे दिल में आपके लिए इज़्ज़त होने के बावजूद," उसने बड़े ठंडेपन से कहा, "मैं यह कहे वग़ैर नहीं रह सकता कि आप हमारा फ़ैसला करके बेकार में परेशान हो रही हैं। यह इवान कुज़्मिच को करने दीजिए, यह उनका काम है।"

"आह, मेरे प्यारे।" कप्तान की बीवी ने प्रतिवाद किया, "क्या पति-पत्नी एक ही जान, एक ही तन नहीं होते? इवान कुज़्मिच! तुम क्यों उबासियाँ ले रहे हो? फ़ौरन उन्हें अलग-अलग कोनों में रोटी-पानी के राशन पर बिठा दो, जिससे उनके दिमाग़ का भूत उतर जाए; पादरी गेरासिम से भी कहो कि इन पर प्रार्थना करने का दंड लगा दें,

1. कम्जोल—अन्दर पहनने की बिना बाँहोंवाली मर्दाना फतुही।

सुबह हो चुकी थी। मैं सड़क पर मानों उड़ा जा रहा था कि किसी ने मुझ पुकारा। मैं रुक गया, "कहाँ जा रहे हैं?" इवान इग्नातिच ने मेरे बराबर आते हुए कहा, "इवान कुज़्मिच क़िले की प्राचीर पर हैं, और मुझे आपको बुलाने के लिए भेजा है। पुगाच आ गया।"

"क्या मारिया इवानोव्ना चली गयी?" मैंने धड़कते दिल से पूछा।

"नहीं जा सकीं," इवान इग्नातिच ने जवाब दिया, "ओरेनबुर्ग का रास्ता काट दिया गया है; क़िला घेर लिया गया है। बुरी हालत है, प्योत्र अन्द्रेइच!"

हम प्राचीर की ओर चले, जो प्रकृति द्वारा निर्मित एवं बागड़ द्वारा मज़बूत की गयी ऊँची जगह थी। वहाँ क़िले के सभी निवासी उपस्थित थे। गारद हथियार लिये खड़ी थी। तोप को रात को ही वहाँ लाकर रखा गया था। कमांडेंट अपनी छोटी सी टुकड़ी के सामने चहलक़दमी कर रहा था। ख़तरे की निकटता ने बूढ़े योद्धा के भीतर असाधारण जोश भर दिया था। स्तेपी में घोड़ों पर चक्कर लगाते क़रीब बीस आदमी ज़्यादा दूरी पर नहीं थे। वे लगता था, कज़ाक हैं, मगर उनके बीच बाश्कीरी भी थे, जिन्हें बनविलाव की ऊँची टोपियों और तरकशों से आसानी से पहचाना जा सकता था।

कमांडेंट ने अपनी सेना का चक्कर लगाते हुए सैनिकों से कहा, "तो, जवानो, आज माँ साम्राज्ञी के लिए डट जाएँ और पूरी दुनिया को दिखा दें कि हम बहादुर और निष्ठावान लोग हैं!" सिपाहियों ने ज़ोर से अपना उत्साह प्रकट किया।

श्वाब्रिन मेरी बग़ल में खड़ा था और एकटक दुश्मन की ओर देख रहा था। स्तेपी में घूम रहे लोग क़िले में हलचल हो रही देखकर एक झुंड बनाकर आपस में बातचीत करने लगे। कमांडेंट ने इवान इग्नातिच को तोप का मुँह उनकी ओर करने की आज्ञा दी और खुद ही पलीते को आग लगाई। गोला भुनभुनाते हुए उनके ऊपर से, बिना कोई हानि पहुँचाए, गुज़र गया। घुड़सवार, बिखर कर, फ़ौरन एड़ लगाते हुए आँखों से ओझल हो गये, और स्तेपी ख़ाली हो गयी।

इसी समय वासीलिसा इगोरोव्ना प्राचीर पर आयी, साथ में माशा भी थी, जो उससे दूर नहीं होना चाहती थी।

"तो, क्या ख़बर है?" कमांडेंट की पत्नी ने कहा, "कैसी चल रही है लड़ाई? दुश्मन कहाँ है?"

"दुश्मन दूर नहीं है," इवान कुज़्मिच ने जवाब दिया, "भगवान ने चाहा, तो सब ठीक हो जाएगा। माशा, क्या तुम्हें डर लग रहा है?"

"नहीं, पापा," मारिया इवानोव्ना ने जवाब दिया, "घर पर अकेले ज़्यादा डर लगता है।" उसने मेरी ओर देखा और प्रयत्नपूर्वक मुस्कुराई। मैंने अनचाहे ही अपनी तलवार की मूँठ ज़ोर से भींची, यह याद करके, कि कल उसके ही हाथों से, मानों अपनी प्रियतमा की रक्षा के लिए ही, मुझे वह मिली थी, मेरा दिल जल रहा था। मैंने

उसके रक्षक के रूप में अपनी कल्पना की। मैं यह सिद्ध करने के लिए बेताब था कि मैं उसके विश्वास के योग्य था, और बेचैनी से निर्णायक घड़ी का इन्तज़ार करने लगा।

इसी समय दुर्ग से आधा मील दूर स्थित ऊँचाई पर घुड़सवारों के नये दल दिखाई दिये, और जल्दी ही स्तेपी भालों और तीर कमानों से लैस अनेक लोगों से भर गयी। उनके बीच सफ़ेद घोड़े पर लाल अंगरखा पहने, नंगी तलवार लिए एक आदमी चल रहा था, यह था स्वयं पुगाचोव। वह रुका; लोगों ने उसे घेर लिया, और जैसा कि दिखाई दे रहा था, उसके आदेश पर, चार व्यक्ति निकलकर पूरी रफ़्तार से क़िले के एकदम नज़दीक आ गये। हमने देखा कि वे हमारे गद्दार थे। उनमें से एक टोपी के नीचे काग़ज़ का टुकड़ा रखे हुए था; दूसरे के भाले पर युलाय का सिर टँका था, जिसे उसने झटककर बागड़ के पार से हमारी ओर फेंका। बेचारे ग़रीब काल्मीक का सिर कमांडेंट के पैरों के पास गिरा। गद्दार चिल्लाए, "गोलियाँ मत चलाओ; सम्राट के पास आओ। सम्राट यही हैं!"

"तुझे तो!" इवान कुज़्मिच चीख़ा, "जवानो! गोली चलाओ!" हमारे सैनिकों ने गोलियों की बौछार की। वह कज़ाक जिसने ख़त पकड़ रखा था, लड़खड़ाया और घोड़े से नीचे गिर गया; अन्य घुड़सवार पीछे हट गये।

मैंने मारिया इवानोव्ना की ओर देखा। युलाय के ख़ून से लथपथ सिर को देखकर सकते में आ गयी, गोलियों की आवाज़ से बहरी-सी हो गई वह बेहोश-सी लग रही थी। कमांडेंट ने कनिष्ठ कप्तान को बुलाकर उसे मारे गये कज़ाक के हाथों से काग़ज़ लाने की आज्ञा दी। लेफ़्टिनेंट कमांडेंट बाहर मैदान में गया और मारे गये कज़ाक के घोड़े की लगाम पकड़े अन्दर आया। उसने कमांडेंट को पत्र थमा दिया। इवान कुज़्मिच ने उसे मन-ही-मन पढ़ा और फिर उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये। इसी बीच विद्रोही आक्रमण की तैयारी करते प्रतीत हुए। जल्दी ही हमारे कानों के निकट से सनसनाती हुई गोलियाँ गुज़रने लगीं, और कुछ तीर हमारे निकट धरती और प्राचीर में धँस गये।

"वासीलिसा इगोरोव्ना!" कमांडेंट ने कहा, "यहाँ औरतों का कोई काम नहीं है; माशा को ले जाओ; देख रही हो न : बच्ची अधमरी हो गयी है।"

गोलियों की बौछार के मध्य परास्त हो चुकी वासीलिसा इगोरोव्ना ने स्तेपी की ओर देखा, जहाँ काफ़ी बड़े पैमाने पर हलचल नज़र आ रही थी; फिर पति से मुख़ातिब होकर बोली, "इवान कुज़्मिच जीवन और मृत्यु ईश्वर के हाथ में है : माशा को आशीर्वाद दो। माशा, पिता के पास जाओ।"

पीली पड़ चुकी, थरथराती माशा इवान कुज़्मिच के पास गयी, घुटनों के बल खड़ी होकर धरती तक झुककर उसे प्रणाम किया। बूढ़े कमांडेंट ने उस पर तीन बार सलीब का निशान बनाया; फिर उठाया और, चूमकर एकदम बदली हुई आवाज़ में उससे कहा, "तो, माशा, सुखी रहो। ईश्वर की प्रार्थना करो, वह तुमसे मुँह न मोड़ेगा।

ताकि ये भगवान से क्षमा माँगें और लोगों के सामने प्रायश्चित्त करें।"

इवान कुज़्मिच समझ नहीं पा रहे थे कि क्या फ़ैसला करें। मारिया इवानोव्ना का चेहरा फक हो गया था। धीरे-धीरे तूफ़ान थम गया कप्तान की बीवी ने शान्त होकर हमें एक-दूसरे को चूमने पर मजबूर किया। पलाश्का ने हमारी तलवारें हमें वापस दे दीं। कप्तान के घर से हम यह दिखाते हुए निकले कि हमने सुलह कर ली है। इवान इग्नातिच हमें छोड़ने आया।

"आपको शर्म नहीं आयी," मैंने गुस्से में उससे कहा, "वचन देकर भी कमांडेंट से हमारी शिकायत कर दी?"

भगवान जानता है, मैंने इवान कुज़्मिच से नहीं कहा," उसने जवाब दिया, "वासीलिसा इगोरोव्ना ने मुझसे सब कुछ उगलवा लिया। उसी ने कमांडेंट को कुछ भी बताए बिना सब इन्तजाम कर लिया। ख़ैर, भगवान का शुक्र है कि मामला इस तरह ख़त्म हो गया।" इतना कहकर वह वापस घर चला गया, और श्वाब्रिन तथा मैं अकेले रह गये।

"हमारा मामला इससे ख़त्म नहीं हो सकता," मैंने उससे कहा।

"बेशक", उसने जवाब दिया, "आप अपनी धृष्टता का बदला अपने ख़ून से चुकाएँगे, मगर शायद हम पर नज़र रखी जाएगी। कुछ दिनों तक हमें ढोंग करना पड़ेगा। फिर मिलेंगे!" और हम यूँ विदा हुए जैसे कुछ हुआ ही न हो।

कप्तान के घर आकर, मैं अपनी आदत के मुताबिक़ मारिया इवानोव्ना के पास बैठा था। इवान कुज़्मिच घर पर नहीं थे, वासीलिसा इगोरोव्ना गृहस्थी के कामों में उलझी हुई थी। हम दबी ज़बान में बातें कर रहे थे। मारिया इवानोव्ना बड़े हौले से उस परेशानी के लिए मुझे डाँट रही थी, ज़ो श्वाब्रिन के साथ मेरे झगड़े ने सबके लिए पैदा कर दी थी।

"मेरी तो जान ही निकल गयी थी," उसने कहा, "जब हमें यह बताया गया कि आप दोनों तलवारों से लड़नेवाले हैं। कितने अजीब होते हैं मर्द! एक शब्द के लिए, जिसके बारे में वे शायद एक हफ़्ते बाद भूल भी जाएँगे, वे मरने मारने पर, न केवल अपने जीवन की बलि देने पर उतारू हो जाते हैं, बल्कि उन लोगों की आत्मा और कल्याण की भी, जो...मगर मुझे विश्वास है कि झगड़ा आपने शुरू नहीं किया होगा। ज़रूर श्वाब्रिन ही दोषी है।"

"और आप ऐसा क्यों सोचती हैं, मारिया इवानोव्ना?"

"हाँ, यूँ...कि वह हमेशा खिल्ली उड़ाया करता है। मुझे अलेक्सेई इवानिच अच्छा नहीं लगता। मुझे उससे नफ़रत है, और कितनी अजीब बात है, मैं किसी क़ीमत पर नहीं चाहूँगी, कि मैं भी उसे अच्छी न लगूँ। इससे मुझे बड़ा डर लगता!"

"और आप क्या सोचती हैं, मारिया इवानोव्ना? आप उसे अच्छी लगती हैं या नहीं?"

मारिया इवानोव्ना ने सिर झुका लिया और उसके चेहरे का रंग लाल हो गया। "मुझे लगता है," उसने कहा, "मैं सोचती हूँ, कि अच्छी लगती हूँ।"

"आपको ऐसा क्यों लगता है?"

"क्योंकि उसने मेरे सामने विवाह का प्रस्ताव रखा था।"

"विवाह का प्रस्ताव! उसने आपसे विवाह का प्रस्ताव किया? भला कब?"

"पिछले साल। आपके आने से दो महीने पहले।"

"और आपने नहीं माना?"

"जैसा कि आप देख रहे हैं। अलेक्सेई इवानिच है तो अक़्लमन्द, और अच्छे परिवार से भी है, उसके पास जागीर भी है, मगर जब सोचा कि सेहरा पहनकर सबके सामने उसे चूमना पड़ेगा...कभी नहीं! किसी भी क़ीमत पर नहीं!"

मारिया इवानोव्ना के शब्दों ने मेरी आँखें खोल दीं, और बहुत कुछ समझा दिया। मैं उन ज़हरीले शब्दों को समझ गया जो श्वाब्रिन जानबूझ कर उसके लिए कहता था। शायद उसने हमारे परस्पर झुकाव को ताड़ लिया था और हमें एक-दूसरे से दूर करना चाहता था। वे शब्द, जो हमारे झगड़े की जड़ थे, मुझे और भी ओछे लगे, जव भद्दे और बेशर्म मज़ाक़ के स्थान पर मैंने उनमें सोची समझी निन्दा पायी। वेशर्मी से कीचड़ उछालनेवाले को सज़ा देने की इच्छा मेरे मन में और भी प्रवल हो गयी, और मैं वड़ी बेताबी से उचित मौक़े की राह देखने लगा।

मुझे काफ़ी दिनों तक इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। दूसरे दिन, जव मैं शोकगीत लिखते हुए, तुक के इन्तज़ार में क़लम का सिरा कुतर रहा था, श्वाब्रिन ने मेरी खिड़की के नीचे दस्तक दी। मैंने क़लम रख दी, तलवार उठाई और उससे मिलने बाहर आया।

"देर क्यों की जाए?" श्वाब्रिन ने मुझसे कहा, "हमारी निगरानी नहीं हो रही है। नदी के किनारे पर जाएँगे। वहाँ कोई ख़लल नहीं डालेगा।"

हम चुपचाप चल पड़े। सीधी पगडंडी से उतरकर हम सीधे नदी के किनारे पर रुके और अपनी तलवारें खींच लीं। श्वाब्रिन मुझसे ज़्यादा कुशल था, मगर मैं अधिक ताक़तवर और निडर था और मिस्यो बोप्रे ने, जो कभी सिपाही रह चुका था, मुझे तलवारबाज़ी की थोड़ी सी शिक्षा दी थी, जिसका उपयोग मैं कर रहा था। श्वाब्रिन को मुझमें इतना ख़तरनाक प्रतिद्वन्द्वी पाने की उम्मीद नहीं थी। काफ़ी देर तक हम एक-दूसरे को कोई नुक़सान न पहुँचा सके, आख़िर में यह भाँपकर कि श्वाब्रिन कमज़ोर पड़ता जा रहा है, मैंने बड़े जोश से उस पर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया और उसे लगभग नदी तक पीछे धकेल दिया। अचानक मैंने ज़ोर से पुकारा गया अपना नाम सुना। मैं पीछे मुड़ा और सावेलिच को देखा, जो पहाड़ी पगडंडी से मेरी ओर भागा आ रहा था...इसी समय मुझे सीने में दाहिने कन्धे के नीचे ज़ोर की चुभन महसूस हुई, मैं गिर पड़ा और होश खो बैठा।

5

प्रेम

ओह सखी तू, सखी सुन्दरी!
सखी, ब्याह न कर तू जवानी में,
पूछ, सखी री, माँ से, पिता से,
पिता से माँ से और सब रिश्तेदारों से,
सीख, सखी तू, सूझ-बूझ की कुछ बातें,
सूझ-बूझ की, दहेज की कुछ बातें।

—लोकगीत

मुझसे बेहतर मिले कोई, तो भूल जाओगी मुझे।
बुरा जो मुझसे कोई पाया, तब बस याद करोगी मुझे।

—वही

होश आने पर, काफ़ी देर तक मुझे कुछ समझ में नहीं आया और याद भी न रहा कि मेरे साथ क्या हुआ था। मैं एक अनजान कमरे में पलंग पर पड़ा था और बड़ी कमज़ोरी महसूस कर रहा था। मेरे सामने हाथों में मोमबत्ती लिए सावेलिच खड़ा था। कोई बहुत सँभालकर पट्टियाँ खोल रहा था, जो मेरे सीने और कन्धे पर बँधी हुई थीं। धीरे-धीरे मेरे विचार स्पष्ट हो गए। मुझे अपना द्वन्द्व-युद्ध याद आ गया और मैंने अन्दाज़ लगाया कि मैं ज़ख़्मी हो गया था। इसी क्षण दरवाज़ा चरमराया।

"क्या? कैसा है?" फुसफुसाहटभरी एक आवाज़ ने पूछा, जिससे मैं सिहर गया।

"एक ही हालत में हैं।" सावेलिच ने गहरी साँस लेकर कहा, "पाँच दिन हो गये, होश ही नहीं है।"

मैंने पलटना चाहा, मगर ऐसा न कर सका। "मैं कहाँ हूँ? यहाँ कौन है?" मैंने कोशिश करके कहा।

मारिया इवानोव्ना मेरे पलंग के पास आयी और मुझ पर झुकी, "क्या? कैसी तबीयत है?" उसने पूछा।

"भगवान की दया है।" कमज़ोर आवाज़ में मैंने जवाब दिया, "मारिया इवानोव्ना, क्या यह आप हैं? मुझे बताइए..." अपनी बात जारी रखने की ताक़त मुझमें नहीं थी इसलिए मैं चुप हो गया। सावेलिच चहका। उसके चेहरे पर ख़ुशी दौड़ गयी।

"होश आ गया! होश आ गया!" उसने दुहाराया, "भगवान तेरा शुक्रिया,

मालिक! तो, प्यारे प्योत्र अन्द्रेइच। डरा दिया तुमने मुझे! क्या आसान बात है? पाँच दिन!..."

मारिया इवानोव्ना ने उसकी बात काटी, "उससे ज़्यादा बातें न करो सावेलिच," उसने कहा, "वह अभी कमज़ोर है।"

वह बाहर निकल गई और हौले से दरवाज़ा उढ़काती गयी। मेरे ख़याल बेचैन किये जा रहे थे, तो, मैं कमांडेंट के घर में था, मारिया इवानोव्ना मेरे पास आयी थी। मैंने सावेलिच से कुछ सवाल पूछने चाहे, मगर बूढ़े ने सिर हिलाते हुए अपने कानों में उंगलियाँ ठूँस लीं। मैंने निराशा से आँखें मूद लीं और जल्द ही नींद में खो गया।

जागने पर मैंने सावेलिच को पुकारा और उसके बदले मारिया इवानोव्ना को अपने सामने पाया, उसकी फ़रिश्तों जैसी आवाज़ ने मेरा स्वागत किया। इस घड़ी, जो मधुर भावना मुझ पर हावी हो गयी, उसको बयान न कर सकूँगा। मैंने उसका हाथ पकड़ लिया और ख़ुशी के आँसू बहाते हुए उसकी ओर झुका।

माशा ने हाथ नहीं छुड़ाया....और अचानक उसके होंठों ने मेरे गालों को छुआ, और मैंने महसूस किया उनका गर्म और ताज़ा चुम्बन। मेरे शरीर में बिजली दौड़ गयी।

"प्यारी, अच्छी मारिया इवानोव्ना," मैंने उससे कहा, "मेरी बीवी बन जाओ, मेरे सुख के लिए हाँ कर दो।"

वह सँभल गयी, "भगवान के लिए, शान्त हो जाइए।" उसने मेरे हाथों से अपना हाथ छुड़ाते हुए कहा, "आप अभी ख़तरे से बाहर नहीं हुए हैं, ज़ख़्म खुल सकता है। अपने आपको सँभालिए, कम-से-कम मेरे लिए।" इतना कहकर वह मुझे ख़ुशी से मदहोश बनाकर चली गयी। इस सुख ने मुझे नयी ज़िन्दगी दे दी। वह मेरी बनेगी! वह मुझसे प्यार करती है! यह विचार मेरे रोम-रोम में समा गया।

उस समय से मेरा स्वास्थ्य शीघ्रता से सुधरने लगा। मेरा इलाज फ़ौजी नाई[1] कर रहा था, क्योंकि क़िले में कोई दूसरा डॉक्टर न था, और भगवान की दया से वह मुझ पर प्रयोग भी नहीं कर रहा था। युवावस्था और प्रकृति के कारण मुझे स्वास्थ्य लाभ बड़ी शीघ्रता से हो रहा था। कमांडेंट का पूरा परिवार मेरी देखभाल में लगा था। मारिया इवानोव्ना मुझसे दूर ही नहीं हटती थी। ज़ाहिर है कि मौक़ा मिलते ही मैंने अधूरा प्रेम-निवेदन पूरा कर दिया और मारिया इवानोव्ना ने स्वीकार कर लिया कि उसके दिल में मेरे प्रति आकर्षण है और यह कहा कि उसके माता-पिता निश्चय ही उसके सुख से प्रसन्न होंगे।

"मगर अच्छी तरह सोच लो," उसने आगे कहा, "तुम्हारे माता-पिता की ओर से कोई बाधा तो नहीं आएगी?"

मैं सोच में पड़ गया। माँ की नर्मदिली पर तो मुझे कोई सन्देह नहीं था, मगर,

---

1. उस समय नाइयों को इलाज करने की आरम्भिक और आवश्यक विधियों का ज्ञान होता था।

पिता के मिज़ाज और ख़यालों को जानते हुए, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरा प्यार उनके दिल को छू नहीं पाएगा और वह इसे जवाँ आदमी की बेवक़ूफ़ी से ज़्यादा कुछ न समझेंगे। मैंने ईमानदारी से मारिया इवानोव्ना के सामने यह स्वीकार किया और निश्चय किया कि माता-पिता के आशीर्वाद की कामना करते हुए पिताजी को यथासम्भव सुन्दर-सा पत्र लिखूँगा। मैंने पत्र मारिया इवानोव्ना को दिखाया, जिसने उसे इतना प्रभावशाली और मर्मस्पर्शी पाया कि उसे सफलता में सन्देह नहीं रहा और प्रेम तथा यौवन के विश्वास के साथ उसने स्वयं को अपने हृदय के कोमल भावों के अधीन कर दिया।

अच्छा होते ही मैंने श्वाब्रिन से सुलह कर ली। इवान कुज़्मिच ने द्वन्द्व-युद्ध के लिए मेरी भर्त्सना करते हुए मुझसे कहा, "ऐ प्योत्र अन्द्रेइच। मुझे तुम्हें क़ैद कर लेना चाहिए था, मगर इसके बग़ैर ही तुम्हें सज़ा मिल चुकी है। अलेक्सेई इवानिच तो अनाज की खत्ती में पहरे पर बैठा है और उसकी तलवार वासीलिसा इगोरोव्ना के पास ताले में बन्द है। उसे सोचने और पश्चात्ताप करने दो।"

मैं इतना सुखी था कि बैर की भावना को दिल में न रख सकता था। मैंने श्वाब्रिन के लिए प्रार्थना की और भले कमांडेंट ने अपनी पत्नी की सहमति से उसे आज़ाद करने का फ़ैसला कर लिया। श्वाब्रिन मेरे पास आया, जो कुछ हमारे बीच हुआ था उसके बारे में उसने गहरा अफ़सोस जताया, उसने स्वीकार किया कि दोष उसी का था और मुझसे विनती की कि मैं विगत को भूल जाऊँ। स्वभाव से द्वेषी न होने के कारण मैंने सच्चे दिल से उसे, हमारे झगड़े को, उसके द्वारा दिये गये घाव को क्षमा कर दिया। उसके द्वारा की गई बदनामी में मैंने आहत स्वाभिमान और ठुकराए गये प्रेम के कारण उत्पन्न विषाद देखा और विशाल हृदय से मैंने अपने अभागे प्रतिद्वन्द्वी को माफ़ कर दिया।

जल्दी ही मैं स्वस्थ होकर अपने फ़्लैट में चला गया। बग़ैर किसी आशा के, उदासी भरे पूर्वानुमानों को दबाने की कोशिश करते हुए मैं बड़ी बेचैनी से अपने पत्र के उत्तर का इन्तज़ार कर रहा था। वासीलिसा इगोरोव्ना और उसके पति से मैंने अपने दिल की बात अभी तक नहीं कहीं थी, मगर मेरा प्रस्ताव उन्हें ज़रा भी आश्चर्यचकित न करता। मैं और मारिया इवानोव्ना उनसे अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश नहीं करते थे, और हमें पहले से ही उनकी सहमति पर विश्वास था।

आख़िर एक दिन सावेलिच हाथों में पत्र पकड़े, मेरे पास आया। मैंने धड़कते दिल से उसे लपक लिया। पता पिताजी के हाथ से लिखा हुआ था। इसने मुझे किसी महत्त्वपूर्ण चीज़ के लिए तैयार कर दिया, क्योंकि वैसे तो ख़त मुझे अक्सर माँ ही लिखा करती थी और वह आख़िर में कुछ पंक्तियाँ जोड़ दिया करते। काफ़ी देर तक मैंने लिफ़ाफ़े को नहीं खोला और समारोहपूर्वक लिखी गयी इबारत को पढ़ता रहा, "मेरे पुत्र प्योत्र अन्द्रेयेविच ग्रीनेव को, ओरेनबुर्ग प्रान्त में, बेलागोर्स्काया के क़िले में।"

हस्ताक्षर से मैं उस मनोदशा को भाँपने की कोशिश कर रहा था, जिसमें यह पत्र लिखा गया था, अन्त में मैंने उसे खोल लिया और आरम्भिक पंक्तियों से ही मैं समझ गया कि सब कुछ गुड़ गोबर हो गया है। पत्र का मजमून इस तरह था :

> "मेरे बेटे प्योत्र! तुम्हारा ख़त, जिसमें तुमने हमसे आशीर्वाद देने की प्रार्थना की है और मारिया इवानोव्ना, मिरोनोव की बेटी, से ब्याह करने के लिए हमारी सहमति चाही है, हमें इस महीने की पन्द्रह तारीख़ को मिला, और न तो मेरा आशीर्वाद, न ही रज़ामन्दी देने का मेरा इरादा है, बल्कि मैं ख़ुद तुम्हारे पास आ रहा हूँ तुम्हारे अफ़सर के ओहदे की ओर ध्यान न देते हुए, तुम्हें अपनी शरारतों के लिए सबक़ सिखाने, जैसे कि एक बच्चे को सिखाया जाता है। क्योंकि तुमने साबित कर दिया है, कि तुम अभी तलवार पकड़ने के लायक़ नहीं हो, जो तुम्हें पितृभूमि की रक्षा के लिए दी गयी है, न कि अपने जैसे किसी शैतान के साथ द्वन्द्व-युद्ध करने के लिए। फ़ौरन ही अन्द्रेइ कार्लोविच को लिखूँगा कि वह तुम्हें बेलागोर्स्काया के क़िले से कहीं दूर स्थानान्तरित कर दे, जहाँ तुम्हारे दिमाग़ का भूत उतर जाएगा। तुम्हारी माँ, तुम्हारे द्वन्द्व-युद्ध के बारे में, और यह जान कर कि तुम ज़ख़्मी हो गये हो, दुःख के मारे बीमार होकर पड़ गयी है। तुम्हारा क्या होगा? भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि तुम सुधर जाओ, हालाँकि उसकी महान कृपाओं की आशा करने की हिम्मत नहीं है।
>
> तुम्हारा पिता अ.ग."

पत्र पढ़कर मेरे मन में कई तरह के ख़याल आये। उन कठोर वाक्यों ने, जिनका पिताजी ने खुलकर प्रयोग किया था, मेरा अपमान किया था। जिस तुच्छता से उन्होंने मारिया इवानोव्ना का उल्लेख किया था, वह मुझे बड़ी भद्दी और अनुचित प्रतीत हुई। बेलोगोर्स्काया के क़िले से मेरे तबादले का ख़याल मुझे दहला गया, मगर सबसे ज़्यादा दुःख मुझे माँ की बीमारी की ख़बर से हुआ। मुझे सावेलिच पर गुस्सा आ रहा था, क्योंकि इसमें कोई सन्देह नहीं था कि मेरे द्वन्द्व-युद्ध की बात माता-पिता के पास उसी ने पहुँचाई है।

अपने छोटे-से कमरे में इधर-उधर घूमते हुए मैं उसके सामने रुका और उसकी ओर रौद्र दृष्टि से देखता हुआ बोला, "लगता है, तेरा अभी दिल नहीं भरा है कि तेरे कारण मैं ज़ख़्मी हुआ और मौत की कगार पर महीने भर तक झूलता रहा; तू अब मेरी माँ को भी मारना चाहता है।"

सावेलिच पर मानों बिजली गिर पड़ी। रहम करो, मालिक उसने लगभग हिचकियाँ लेते हुए कहा, "यह आप क्या कह रहे हैं? आपके ज़ख़्मी होने की वजह मैं था! भगवान जानता है, कि मैं आपकी ओर इसलिए भागकर आ रहा था कि मैं अलेक्सेई इवानिच की तलवार से आपको बचा सकूँ! कम्बख़्त वृद्धापा रुकावट बन गया। और मैंने आपकी माँ के साथ क्या कर दिया है?"

"क्या किया?" मैंने जवाब दिया, "तुमसे मेरी चुग़ली लिखने को किसने कहा था? क्या तुम मेरी जासूसी करने के लिए भेजे गये हो?"

"मैंने? तुम्हारी चुग़ली लिखी?" सावेलिच ने आँखों में आँसू भरकर कहा, "हे मेरे ख़ुदा! तो पढ़ लो कि मालिक ने मुझे क्या लिखा है; ख़ुद ही समझ जाओगे कि कैसी शिकायत की है मैंने तुम्हारी।" उसने जेब से चिट्ठी निकाली और मैंने पढ़ा :

"शर्म आनी चाहिए बूढ़े कुत्ते, कि तूने मेरी सख़्त हिदायतों की ओर ध्यान न देते हुए, मुझे अपने बेटे प्योत्र अन्द्रेयेविच की शिकायत नहीं की और पराये लोगों को मुझे उसकी शरारतों के बारे में लिखना पड़ा। इसी तरह तू अपना फ़र्ज़ और मालिक की ख़्वाहिश पूरी करता है? मैं तुझे, बूढ़े कुत्ते को, सच छिपाने और नौजवान आदमी को मनमानी करने देने के जुर्म में सुअर चराने भेज दूँगा। यह ख़त पाते ही फ़ौरन उसके स्वास्थ्य के बारे में लिखने की आज्ञा देता हूँ, जो मुझे लिखा गया है, कि सुधर गया है, और किस जगह घाव लगा है और उसका इलाज ठीक से तो किया गया या नहीं।"

ज़ाहिर है, कि सावेलिच सही था और बेकार ही मैंने उसे तानों और सन्देहों से अपमानित किया। मैंने उससे माफ़ी माँगी, मगर बूढ़ा शान्त नहीं हो रहा था। "क्या दिन देखना पड़ा है," उसने दुहराया, "कैसी मेहरबानियाँ मिली हैं मुझे अपने मालिकों से! मैं और बूढ़ा कुत्ता और सुअर चराऊँगा, और मैं ही तुम्हारे घायल होने की वजह हूँ? नहीं, प्यारे प्योत्र अन्द्रेइच! मैं नहीं, बल्कि मुआ मुस्यो इस सबका क़ुसूरवार है—उसने तुम्हें लोहे की सलाखें घोंपना और पाँव पटकना सिखाया है, जैसे घोंपने और पटकने से ही तुम अपने आपको बुरे आदमी से बचा लोगे! बड़ी ज़रूरत थी मुस्यो को नौकरी पर रखने और बेकार पैसा फेंकने की!"

मगर मेरे व्यवहार के बारे में मेरे पिता को सूचित करने की तकलीफ़ उठाई किसने? जनरल ने? मगर, वह लगता था, मेरे बारे में ज़्यादा परेशान नहीं होता था; और इवान कुज़्मिच ने मेरे द्वन्द्व-युद्ध के बारे में रिपोर्ट करना ज़रूरी नहीं समझा। मैं अनुमान लगाने लगा। मेरा शक़ श्वाब्रिन पर जाकर ठहर गया। उसके अकेले के पास ही चुगली करने की वजह थी, जिसका परिणाम यह होता कि मुझे क़िले से दूर भेज दिया जाता और कमांडेंट के परिवार में मेरा नाता टूट जाता। मैं हर चीज़ मारिया इवानोव्ना को बताने के लिए चल पड़ा। वह मुझे ड्योढ़ी में ही मिल गयी।

"आपको यह क्या हुआ है?" उसने मुझे देखकर कहा, "कितने पीले पड़ गये हैं!"

"सब कुछ ख़त्म हो गया है!" मैंने जवाब दिया और उसे पिताजी का ख़त दे दिया।

उसका मुख भी विवर्ण हो गया। पढ़ने के बाद उसने थरथराते हाथों से पत्र मुझे लौटा दिया और काँपती आवाज़ में बोली, "लगता है, मेरे भाग्य में नहीं है...आपके माता-पिता मुझे अपने परिवार में नहीं चाहते हैं। जैसी भगवान की इच्छा! भगवान

पास अच्छी तरह जानता है कि हमारी भलाई किसमें है। कुछ भी नहीं किया जा सकता प्योत्र अन्द्रेइच; कम-से-कम आप सुखी रहिए..."

"ऐसा नहीं हो सकता।" मैंने उसका हाथ पकड़कर चीख़ते हुए कहा, "तुम मुझसे प्यार करती हो; और मैं सब कुछ करने के लिए तैयार हूँ। चलो, तुम्हारे माता-पिता के पैरों पर गिरें, वे सीधे-सादे लोग है, न कि कठोर हृदय वाले घमंडी...वे हमें आशीर्वाद देंगे; हम शादी कर लेंगे...और वहाँ, समय के साथ-साथ मुझे यक़ीन है, कि हम मेरे पिता को मना लेंगे; माँ हमारी ओर रहेगी, वह मुझे माफ़ कर देगा..."

"नहीं, प्योत्र अन्द्रेइच," माशा ने जवाब दिया, "तुम्हारे माता-पिता के आशीर्वाद के बिना मैं तुमसे ब्याह न करूँगी। उनके आशीर्वाद के बिना तुम सुखी न रह पाओगे। ईश्वर की इच्छा के आगे सिर झुका लें। अगर तुम्हें क़िस्मत में लिखी बीवी मिल जाए, अगर किसी और से प्यार करने लगो—भगवान तुम्हारा भला करें; और मैं आप दोनों के लिए..." वह फूट-फूटकर रो पड़ी और मुझसे दूर चली गयी; मैं उसके पीछे कमरे में जानेवाला था, मगर यह महसूस करके कि मैं स्वयं पर क़ाबू न रख पाऊँगा, मैं घर लौट गया।

मैं गहरे सोच में डूबा बैठा था, कि सावेलिच ने मेरे विचारों को भंग किया, "यह लो, मालिक," उसने एक लिखा हुआ काग़ज़ मुझे देते हुए कहा, "देख लो कि क्या मैंने अपने मालिक की चुग़ली की है और क्या मैं बेटे के ख़िलाफ़ बाप को भड़काने की कोशिश कर रहा हूँ।"

मैंने उसके हाथों से काग़ज़ ले लिया : यह सावेलिच का जवाब था उस ख़त का, जो उसे मिला था। यह रहा वह ख़त—लफ़्ज़-दर-लफ़्ज़ :

"महानुभाव अन्द्रेइ पेत्रोविच,
हमारे प्यारे मालिक!

आपका प्यारा ख़त मुझे मिला। जिसमें आप मुझ पर, आपके गुलाम पर, गुस्सा करने की ज़हमत उठा रहे हैं, कि मालिकों के हुक्म की तामील न करने पर मुझे शर्म आनी चाहिए; और मैं, बूढ़ा कुत्ता, और आपका वफ़ादार नौकर, मालिकों की आज्ञा मानता हूँ और हमेशा तहे दिल से मैं आपकी ख़िदमत करता हुआ बुढ़ापे तक पहुँचा हूँ। मैंने प्योत्र अन्द्रेइच के ज़ख़्म के बारे में आपको इसलिए नहीं लिखा, क्योंकि बेकार ही आपको डराना नहीं चाहता था, और सुना है कि मालकिन, हमारी माँ अव्दोत्या वासील्येव्ना, वैसे भी डर से बीमार पड़ गयी हैं, और मैं उनकी सेहत के लिए भगवान से प्रार्थना करता रहूँगा। और प्योत्र अन्द्रेइच दाहिने कन्धे के नीचे सीने में ठीक हड्डी के नीचे, डेढ़ इंच गहरे ज़ख़्मी हुए थे, और वे कमांडेंट के घर में ही रहे, जहाँ हम किनारे से उठाकर लाए थे, और उनका इलाज़ यहाँ के नाई स्तेपान परामोनोव ने किया, और अब प्योत्र अन्द्रेइच भगवान की दया से

तन्दुरुस्त हैं, और उनके बारे में अच्छाई के सिवाय कुछ लिखने को ही नहीं है। कमांडर, सुना है, कि उनसे खुश हैं; और वासीलिसा इगोरोव्ना तो उन्हें अपना बेटा ही समझती हैं। और उनके साथ यह हादसा हुआ, तो *विगत जवानी के लिए शर्मसार नहीं है : घोड़ा चार पैरों पर भी ठोकर खा जाता है*। और आप फ़रमाते हैं कि मुझे सुअर चराने भेज देंगे, तो यह पूरी तरह आपकी मर्ज़ी है। इसके साथ भी गुलाम झुककर सलाम करता है।

आपका भरोसेमन्द गुलाम,
—आर्खिप सावेल्येव"

भले बूढ़े की भाषा देखकर मैं कई बार मुस्कुराये बग़ैर न रह सका। पिता को जवाब लिखने की हालत में मैं था नहीं, और माँ को तसल्ली देने के लिए, मेरे ख़याल से सावेलिच का ख़त काफ़ी था।

इस दिन से मेरी हालत बदल गयी। मारिया इवानोव्ना लगभग मुझसे बात न करती और मुझसे कतराने की कोशिश करती। कमांडेंट का घर मेरे लिए दिलचस्प न रहा। धीरे-धीरे मुझे घर में ही अकेले बैठने की आदत हो गयी। वासीलिसा इगोरोव्ना ने शुरू में तो इसके लिए मुझे झिड़की दी; मगर मेरी ज़िद देखकर, उन्होंने मुझे अपने हाल पर छोड़ दिया। इवान कुज़्मिच से मैं फ़ौजी काम से ही मिला करता। श्वाब्रिन से भी कभी-कभार और बड़ी बेदिली से मिलता, मैंने उसमें अपने लिए छिपी हुई घृणा की भावना देखी, जिसने मेरा शक पक्का कर दिया। ज़िन्दगी मेरे लिए दूभर हो गयी थी। अकेलेपन और निठल्लेपन के कारण मैं निराशाभरे ख़यालों में खो गया। मेरा प्यार अकेलेपन में दहक उठता और मुझे और ज़्यादा बोझिल लगता। पढ़ने और कविता करने में मेरी दिलचस्पी जाती रही। मेरा आत्मबल गिरता गया। मुझे डर था कि या तो मैं पागल हो जाऊँगा या भटक जाऊँगा। कुछ अप्रत्याशित घटनाओं ने, जिन्होंने मेरे पूरे जीवन पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डाला, अचानक मुझे बेहतर और ज़ोरदार झटका दिया।

6

पुगाचोवियत

सुनो तुम, जवान छोकरो,
हम बूढ़े बुड्ढे सुनाएँगे जो। —एक गीत

इससे पूर्व कि मैं उन विचित्र घटनाओं का वर्णन करूँ, जिनका मैं प्रत्यक्षदर्शी गवाह था, मुझे संक्षेप में यह बताना होगा कि ओरेनबुर्ग प्रान्त सन् 1773 के अन्त में किस हालत में था।

इस विस्तीर्ण एवं समृद्ध प्रान्त में बसे हुए थे अधजंगली लोग, जिन्होंने कुछ ही समय पूर्व रूसी सम्राटों का आधिपत्य स्वीकार किया था। उनके हर घड़ी के विद्रोह, क़ानूनों तथा नागरिक जीवन के प्रति अनभ्यस्तता, बेपरवाही और क्रूरता ने सरकार को उन पर लगातार नज़र रखने के लिए बाध्य किया, जिससे उन पर नियन्त्रण रखा जा सके। सुविधाजनक स्थानों पर क़िलों का निर्माण किया गया, उनमें बहुतायत से कज़ाकों को बसाया गया, जिनका याइक नदी के किनारों पर प्राचीन काल से अधिकार था। मगर याइक के कज़ाक जिन पर इस प्रान्त की शान्ति और सुरक्षा बनाए रखने की ज़िम्मेदारी थी, पिछले कुछ समय से खुद ही शासन के लिए असन्तुष्ट और ख़तरनाक बन गये थे। सन् 1772 में उनके प्रमुख शहर में विद्रोह हो गया। इसका कारण मेजर-जनरल त्राऊबेन बेर्ग द्वारा फ़ौजों को अनुशासन में रखने के लिए किये गये कठोर उपाय थे। इसका परिणाम हुआ त्राऊबेन बेर्ग की नृशंस हत्या, प्रशासन में मन चाहे परिवर्तन और, अन्त में विद्रोह की समाप्ति : तोप के गोलों और कठोर दंड से।

यह सब बेलागोर्स्काया के क़िले में मेरे आगमन से कुछ ही समय पूर्व हुआ था। चारों ओर शान्ति थी या कम-से-कम ऐसा प्रतीत हो रहा था; अधिकारियों ने चालाक विद्रोहियों के बनावटी पश्चात्ताप पर, बड़ी आसानी से भरोसा कर लिया, जो ख़ार खाए बैठे थे और दुबारा अराजकता फैलाने के लिए गुप्तरूप से उचित मौक़े की तलाश में थे।

अब अपनी कहानी की ओर आता हूँ।

एक शाम को (यह हुआ सन् 1773 के अक्तूबर के आरम्भ में) मैं अकेला ही घर पर बैठा था, पतझड़ की हवा का रुदन सुनते हुए और खिड़की के चाँद के क़रीब से होकर भाग रहे बादलों को देखते हुए। मुझे कमांडर ने बुला भेजा। मैं फ़ौरन चल पड़ा। कमांडेंट के पास मुझे श्वाब्रिन, इवान इग्नातिच और कज़ाक सार्जंट दिखाई दिये। कमरे में न तो वासीलिसा इगोरोव्ना थी, न ही मारिया इवानोव्ना। कमाण्डेंट ने चिन्तित मुद्रा से मेरा स्वागत किया। उसने दरवाज़े बन्द कर लिए, सबको बैठने को कहा, सिवाय सार्जंट के, जो दरवाज़े के निकट खड़ा था, जेब में से काग़ज़ निकाला और हमसे कहा, "अफ़सरो, महत्त्वपूर्ण समाचार है। सुनिए, जनरल क्या लिख रहे हैं।" अब उसने चश्मा पहन लिया और पढ़ना आरम्भ किया :

"बेलागोर्स्क दुर्ग के कमांडेंट महाशय

कप्तान मिरोनोव को

गोपनीय

एतद्द्वारा आपको सूचित करता हूँ कि कारागृह से भागे हुए दोन के कज़ाक और विध्वंसक एमेल्यान पुगाचोव ने, स्वर्गीय सम्राट प्योत्र तृतीय का नाम धारण करके अक्षम्य धृष्टता का परिचय देते हुए, दुष्टों का गिरोह बनाया है,

याइक के गाँवों में आतंक फैलाया है और कुछ दुर्गों को अपने अधीन करके तहस-नहस कर दिया है, चारों ओर लूटमार और हत्याएँ कर रहा है। इसलिए इस पत्र के प्राप्त होते ही, आप कप्तान महाशय, शीघ्र ही उचित क़दम उठाएँ उपरोक्त दुष्ट एवं स्वघोषित सम्राट का प्रतिकार करने के, और अगर वह आपकी देख-रेख में सौंपे गये दुर्ग की ओर आये तो उसे पूरी तरह नष्ट करने का हरसंभव उपाय करें।"

"उचित उपाय करें!" कमांडेंट ने चश्मा उतारकर काग़ज़ की तह करते हुए कहा, "सुनते हैं? कहना आसान है! आतंकवादी तो, ज़ाहिर है, शक्तिशाली हैं, और हमारे पास हैं केवल एक सौ तीस आदमी, कज़ाकों को छोड़कर, जिन पर विश्वास नहीं किया जा सकता, तुम्हें ताने नहीं दे रहा हूँ मक्सीमिच (सार्जंट हँस पड़ा)। मगर अफ़सरो, कोई चारा नहीं है। मुस्तैद रहें, पहरा और रात की गश्त कड़ी कर दें, आक्रमण की स्थिति में द्वार बन्द करके सैनिकों को बाहर निकालें। तुम, मक्सीमिच, अपने कज़ाकों पर कड़ी नज़र रखो। तोपख़ाना साफ़ करके सही हालत में रखा जाए। और यह सब गुप्त ही रखें, जिससे कि क़िले में समय से पूर्व किसी को इस बारे में जानकारी न हो।"

ये आदेश देकर इवान कुज़्मिच ने हमें छोड़ दिया। जो सुना था उस पर चर्चा करते हुए मैं श्वाब्रिन के साथ ही बाहर आया। "क्या सोचते हो, इसका अंजाम् क्या होगा?" मैंने उससे पूछा।

"भगवान जाने," उसने जवाब दिया, "देखेंगे, अभी तो कोई ख़ास बात दिखाई नहीं देती। अगर..." वह सोच में डूब गया और खोया-खोया सा फ्रांसीसी प्रेम गीत को सीटी पर गाने लगा।

हमारी सारी सावधानियों के वावजूद, पुगाचोव के प्रकट होने की ख़बर क़िले में फैल ही गयी। इवान कुज़्मिच, हालाँकि अपनी पत्नी का बड़ा आदर करते थे, मगर किसी क़ीमत पर भी फ़ौजी गोपनीयता को उस पर ज़ाहिर न करते। जनरल का ख़त पाकर उन्होंने बड़े अस्वाभाविक बहाने बनाकर वासीलिसा इगोरोव्ना को यह कहकर बाहर भेज दिया कि पादरी गेरासिम शायद ओरेनबुर्ग से कोई अनूठी ख़बर लाए हैं, जिसे वह गुप्त रख रहे हैं। वासीलिसा इगोरोव्ना फ़ौरन पादरी की पत्नी के पास जाने के लिए तैयार हो गयी और इवान कुज़्मिच की सलाह के मुताबिक़ माशा को भी अपने साथ ले गयी, जिससे अकेले वह उकता न जाए।

इवान कुज़्मिच ने, एकच्छत्र गृहस्वामी बनकर, हमें बुलावा भेज दिया, और पलाश्का को तहख़ाने में बन्द कर दिया, जिससे वह हमारी बातें कान लगाकर न सुन सके।

पोप की पत्नी से कुछ न पाकर वासीलिसा इगोरोव्ना घर लौट आयी और उसे

पता चला कि उसकी अनुपस्थिति में इवान कुज़्मिच के पास बैठक हुई थी, और पलाशा ताले में बन्द थी। उसने भाँप लिया कि पति ने उसे धोखा दिया है। और वह पूछताछ करने उसके पास चल पड़ी। मगर इवान कुज़्मिच इस हमले के लिए तैयार थे। वह ज़रा भी परेशान नहीं हुए और अपनी उत्सुक अर्धांगिनी को उन्होंने बड़ी निडरता से जवाब दिया, "सुनो, तुम, माँ मेरी, हमारी औरतों ने फूस से अँगीठी जलाने की सोची है, और क्योंकि इससे दुर्घटना हो सकती है, इसलिए मैंने कठोर आदेश दिया है कि आगे से औरतें फूस से अँगीठियाँ नहीं जलाएँगी, और केवल सूखी टहनियों और झाड़ झंखाड़ का ही प्रयोग करेंगी।"

"और इसके लिए तुम्हें पलाशा को बन्द करने की क्या ज़रूरत पड़ गयी?" कमांडेंट की बीवी ने पूछा, "बेचारी लड़की हमारे वापस लौटने तक तहख़ाने में क्यों बैठी रही?"

इवान कुज़्मिच इस तरह के सवालों के लिए तैयार नहीं थे, वह घबरा गये और असम्बद्ध-सा कुछ भी बड़बड़ा गये। वासीलिसा इगोरोव्ना अपने पति की मक्कारी समझ गयी, मगर यह जानते हुए कि उससे कुछ भी उगलवा न सकेंगी, उन्होंने सवाल पूछना बन्द कर दिये और नमकीन ककड़ियों का ज़िक्र छेड़ दिया, जिन्हें अकुलीना पम्फीलोवा ने एकदम विशेष विधि से बनाया था। पूरी रात वासीलिसा इगोरोव्ना सो नहीं पायी और कुछ भी अन्दाज़ न लगा पायी कि उनके पति के दिमाग़ में ऐसा क्या था, जो उसे नहीं जानना चाहिए था।

दूसरे दिन प्रार्थना से लौटते हुए उसने इवान इग्नातिच को देखा, जो तोप में से चीथड़े, कंकड़, पेड़ों की खपचियाँ, हड्डियाँ और हर तरह का कूड़ा-कर्कट निकाल रहा था, जो बच्चों ने उसमें ठूँस दिया था।

"युद्ध की इन तैयारियों का क्या मतलब हो सकता है?" कप्तान की पत्नी ने सोचा, "कहीं किर्गीज़ों के आक्रमण की आशंका तो नहीं? मगर क्या इवान कुज़्मिच मुझसे ऐसी मामूली बात छिपाएगा?" अपनी स्त्री-सुलभ उत्सुकता को परेशान कर रहे भेद के बारे में जानने के दृढ़ निश्चय से उसने इवान इग्नातिच को आवाज़ दी।

वासीलिसा इगोरोव्ना ने पहले तो घरेलू कामकाज के बारे में कुछ टिप्पणियाँ कीं, जैसे छानबीन कर रहा कोई न्यायाधीश पहले इधर-उधर के प्रश्न पूछकर उत्तर देनेवाले की एकाग्रता को भंग कर देता है। फिर, कुछ मिनट चुप रहकर, उसने गहरी साँस ली और सिर हिलाते हुए कहा, "हे मेरे भगवान! देखो तो कैसी ख़बर है। क्या होनेवाला है अब?"

"आप भी बस, अम्माँ।" इवान इग्नातिच ने जवाब दिया, "भगवान दयालु है : हमारे पास सिपाही काफ़ी हैं, बारूद की कमी नहीं है, तोप मैंने साफ़ कर ही दी है। उम्मीद है कि हम पुगाचोव को खदेड़ देंगे। भगवान दया करेगा, सुअर मुँह न मार पाएगा!"

"और यह पुगाचोव कैसा आदमी है?" कमांडेंट की पत्नी ने पूछा।

अब इवान इग्नातिच ने महसूस किया कि वह बक गया है और उसने अपनी जीभ काट ली। मगर तब तक देर हो चुकी थी। वासीलिसा इगोरोव्ना ने यह वचन देकर कि वह इस बारे में किसी से कुछ भी न कहेगी, उसे सब कुछ उगलने पर मजबूर कर दिया।

वासीलिसा इगोरोव्ना ने अपने वचन का पालन किया और किसी से एक भी शब्द नहीं कहा, सिवाय पादरी की पत्नी के, और वह भी सिर्फ़ इसलिए, क्योंकि उसकी गाय अभी भी स्तेपी में जाया करती थी, और दुश्मनों द्वारा पकड़ी जा सकती थी।

शीघ्र ही सभी पुगाचोव के बारे में बातें करने लगे। तरह-तरह के अनुमान लगाए जा रहे थे। कमांडेंट ने सार्जंट को आसपास के सभी गाँवों और दुर्गों में सब कुछ भली-भाँति देखकर आने के लिए भेजा। सार्जंट दो दिन बाद लौटा और उसने बताया कि स्तेपी में, क़िले से साठ मील दूर उसने अनेक अलाव जलते देखे और बाश्कीरियों से सुना कि एक अभूतपूर्व दलबल चला आ रहा है। मगर, वह कोई ख़ास बात न बता पाया, क्योंकि आगे जाने से डर गया था।

क़िले के कज़ाकों के बीच प्रत्यक्ष रूप से असाधारण उत्तेजना दिखाई दे रही थी; सभी रास्तों पर वे झुंडों में खड़े रहते, दबी आवाज़ में आपस में बातें करते और किसी घुड़सवार या क़िले के सैनिक को देखते ही बिखर जाते। उनके बीच जासूसों को भेजा गया। युलाय, ईसाईयत ग्रहण करनेवाले काल्मिक, ने कमांडेंट को महत्त्वपूर्ण सूचना दी। सार्जंट द्वारा दिये गये तथ्य, युलाय के अनुसार, झूठे थे—वापस लौटने पर धूर्त कज़ाक ने अपने साथियों से कहा था कि वह विद्रोहियों के पास गया था, उनके सरदार के सामने स्वयं को पेश किया, जिसने उसे अपने निकट आने दिया और बड़ी देर तक उससे बातें कीं। कमांडेंट ने फ़ौरन सार्जंट पर पहरा बैठा दिया, और उसके स्थान पर युलाय को नियुक्त कर दिया। इस ख़बर से कज़ाक प्रत्यक्ष रूप से बड़े नाराज़ हुए। उन्होंने ज़ोर-ज़ोर से अपना आवेश प्रकट किया, और इवान इग्नातिच ने, जो कमांडेंट के आदेशों का पालन कर रहा था, अपने कानों से उन्हें कहते सुना, "जल्दी ही मज़ा चखोगे, क़िले के चूहे!" कमांडेंट ने उसी दिन क़ैदी से पूछताछ करने के बारे में सोचा, मगर सार्जंट अपने हमख़यालों की मदद से क़ैद से भाग चुका था।

एक नयी परिरिस्थति ने कमांडेंट की परेशानी को और भी बढ़ा दिया। भड़काने वाले इश्तेहारों के साथ एक बाश्किरी पकड़ा गया था। इस घटना से कमांडेंट ने दुबारा अपने अफ़सरों को बुलाने के बारे में सोचा और इसलिए कोई अच्छा-सा बहाना बनाकर वासीलिसा इगोरोव्ना को बाहर भेजना चाहा। मगर, क्योंकि इवान कुज़्मिच एकदम सीधा सच्चा इन्सान था, अतः वह पिछली बार उपयोग में लाए गये बहाने के अलावा कोई और बात न सोच सका।

"सुनती हो, वासीलिसा इगोरोव्ना," उसने खाँसते हुए उससे कहा, "पादरी गेरासिम के यहाँ, सुना है कुछ आया है, शहर से...,"

"बस भी करो झूठ बोलना, इवान कुज़्मिच," कमांडेंट की पत्नी ने बीच में ही टोकते हुए कहा, "तुम, याने कि, मेरे बग़ैर मीटिंग बुलाकर एमेलियान पुगाचोव के बारे में चर्चा करना चाहते हो; मगर कर न पाओगे!" इवान कुज़्मिच आँखें फाड़े देखता रहा।

"तो, माँ मेरी," उसने कहा, "अगर तुम्हें सब कुछ मालूम ही है, तो ख़ुशी से रुक जाओ, हम तुम्हारी मौजूदगी में भी बातें कर सकते हैं।"

"यही तो...मेरे प्यारे," उसने जवाब दिया, "चालाकी करना तुम्हारे बस की बात नहीं है, अफ़सरों को बुलवा लो।"

हम फिर से एकत्रित हुए। इवान कुज़्मिच ने पत्नी की उपस्थिति में पुगाचोव का पैग़ाम पढ़ा, जो किसी अधकचरे कज़ाक ने लिखा था। डाकू ने हमारे क़िले पर जल्दी ही चढ़ आने के अपने इरादे के बारे में लिखा था, कज़ाकों और सैनिकों को अपने दल में शामिल होने की दावत दी थी, और कमांडरों को हिदायत दी थी कि विरोध न करें, वर्ना उन्हें सूली पर चढ़ा देने की धमकी दी थी। पैगाम भद्दे, मगर कठोर शब्दों में और सामान्य जनता के दिमाग़ पर ख़तरनाक असर डालनेवाला था।

"कितना बदमाश है!" कमांडेंट की बीवी चीख़ पड़ी, "क्या प्रस्ताव रखने की हिम्मत करता है! उसके स्वागत के लिए बाहर आकर उसके पैरों पर अपना झंडा रख दो! आह, कुत्ते का पिल्ला! क्या उसे मालूम नहीं कि हम चालीस साल से फ़ौज में हैं, और भगवान की दया से सब देख चुके हैं? कहीं ऐसे कमांडर तो पैदा नहीं हो गये, जो डाकू का हुक्म मानते हैं?"

"शायद नहीं होंगे।" इवान कुज़्मिच ने जवाब दिया।

"मगर सुना है कि दुश्मन ने कई क़िलों पर अधिकार कर लिया है।"

"लगता है वह सचमुच शक्तिशाली है।" श्वाब्रिन ने टिप्पणी की।

"अभी उसकी असली ताक़त का पता लगाते हैं।" कमांडेंट ने कहा, "वासीलिसा इगोरोव्ना मुझे तहख़ाने की चाबी दो। इवान इग्नातिच, उस बाश्कीर को यहाँ लाओ और युलाय से कोड़े लाने को कहो।"

"रुको, इवान कुज़्मिच," कमांडेंट की बीवी ने उठते हुए कहा, "मुझे माशा को घर से बाहर ले जाने दो, वर्ना वह चीख़ सुनकर डर जाएगी। हाँ, और मुझे भी इस तरह की पूछताछ में कोई दिलचस्पी नहीं है। अच्छा, मैं चलती हूँ।"

क़ानूनी मामलों को सुलझाने के लिए प्राचीन काल में शारीरिक यातना देने की प्रथा इतनी गहरी पैठ गयी थी, कि उसे समाप्त करने का कल्याणकारी आदेश लम्बे समय तक कार्यान्वित न हो सका। सोचते थे, कि अपराधी की आत्म स्वीकृति उसे दोषी सिद्ध करने के लिए आवश्यक है, यह सोच केवल निराधार नहीं है, अपितु वह

व्यावहारिक क़ानूनी दाँव-पेंचों के एकदम विपरीत भी है : क्योंकि यदि न्यायाधीन व्यक्ति का इनकार उसके निर्दोष होने का प्रमाण नहीं माना जाता तो उसकी स्वीकृति को तो किसी भी हालत में उसके दोषी होने का सबूत नहीं माना जाना चाहिए। आजकल भी मैं पुराने न्यायाधीशों को इस बर्बरतापूर्ण प्रथा का अन्त होने पर खेद प्रकट करते देखता हूँ। हमारे ज़माने में शारीरिक यातना देने की आवश्यकता के बारे में न तो न्यायाधीशों को और न ही अभियुक्तों को कोई सन्देह था। इसलिए कमांडेंट की आज्ञा से हममें से कोई भी न तो विस्मित हुआ और न ही उत्तेजित। इवान इग्नातिच बाश्कीरी को लाने चला गया, जो तहख़ाने में बन्द था, जिसकी चाबी कमांडेंट की पत्नी के पास थी, और कुछ ही देर में क़ैदी को ड्योढ़ी में लाया गया। कमांडेंट ने उसे अपने सामने लाने की आज्ञा दी।

बाश्कीरी बड़ी मुश्किल से दहलीज पार कर अन्दर आया (वह बेड़ियाँ पहने हुए था) और अपनी ऊँची टोपी उतारकर दरवाज़े के निकट रुक गया। उसे देखकर मैं सिहर गया। इस आदमी को मैं कभी भी भूल न पाऊँगा। उसकी उम्र सत्तर वर्ष की लगती थी। उसकी न तो नाक थी और न ही कान। सिर मुंडा हुआ था, दाढ़ी के स्थान पर कुछ सफ़ेद बाल झाँक रहे थे, वह छोटे क़द का, दुबला-पतला और झुकी हुई कमर वाला था, मगर उसको छोटी-छोटी आँखें अभी भी दहक रही थीं।

"ओह!" कमांडेंट ने उसके भयानक निशानों से यह पहचान कर कि वह 1741[1] में दंडित एक विद्रोही है, कहा, "देख रहा हूँ कि तुम पुराने भेड़िये हो, हमारे जाल में पहले भी फँस चुके हो। मतलब अगर तुम्हारा सिर इतना घुटा हुआ है, तो तुम पहली ही बार विद्रोह नहीं कर रहे हो। पास आओ, बोलो, तुम्हें किसने भेजा है?"

बूढ़ा बाश्कीरी चुप रहा और उसने कमांडेंट की ओर ख़ाली-ख़ाली नज़रों से देखा।

"चुप क्यों है?" इवान कुज़्मिच ने आगे कहा, "क्या रूसी नहीं समझता? युलाय, उससे अपनी ज़ुबान में पूछो कि उसे हमारे क़िले में किसने भेजा था?"

युलाय ने इवान कुज़्मिच का सवाल तातारी भाषा में दुहराया। मगर बाश्कीरी ने उसकी ओर भी उसी अन्दाज़ से देखा और कोई जवाब न दिया।

"कोई बात नहीं," कमांडेंट ने कहा, "तुम बोलोगे। लड़को, उसका यह बेहूदा धारीदार चोगा उतारो और उसकी पीठ उधेड़ो। देखना, युलाय—अच्छी तरह से!"

दो अपाहिज़ बाश्कीरी के कपड़े उतारने लगे। उस अभागे के चेहरे पर परेशानी झलक उठी। उसने चारों ओर देखा, मानों बच्चों द्वारा पकड़ लिया गया कोई जानवर हो। जब एक अपाहिज़ ने उसके हाथ पकड़कर अपनी गर्दन के पास रखे, बूढ़े को अपने कन्धों पर उठाया और युलाय ने कोड़ा उठाकर लहराया, तब बाश्कीरी कमज़ोर

---

1. यहाँ 1741 में हुए बाश्कीरिया के विद्रोह से अभिप्राय है, जो रूस द्वारा कुचल दिया गया था।

विनती-सी करती आवाज़ में कराहा और सिर हिलाते हुए उसने अपना मुँह खोल दिया, जिसमें जीभ के स्थान पर एक छोटा-सा टुकड़ा हिल रहा था।

जब याद करता हूँ कि यह मेरे ही समय में हुआ था और यह कि आज मैं सम्राट अलेक्सान्द्र के शान्तिपूर्ण शासन तक जिया हूँ, तो शिक्षा एवं मानव प्रेम के क़ानूनों के शीघ्र प्रसार से आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रह सकता। नौजवान, अगर तुम्हारे हाथों तक मेरे संस्मरण पहुँचे तो याद रखना कि वे ही परिवर्तन सर्वोत्तम एवं सर्वाधिक दृढ़ होते हैं जो नैतिक मूल्यों को सुधार कर लाए जाते हैं, बिना किसी हिंसाचार के।

सभी स्तम्भित रह गये। "तो," कमांडेंट ने कहा, "ज़ाहिर है कि हमें इससे कुछ भी हासिल नहीं होगा। युलाय, बाश्कीरी को तहख़ाने में वापस ले जाओ। और हम, महानुभावो, कुछ और चर्चा कर लेते हैं।"

हम अपनी स्थिति के बारे में विचार-विमर्श कर ही रहे थे कि अचानक हाँफते हुए और अत्यन्त उत्तेजित अवस्था में वासीलिसा इगोरोव्ना कमरे में घुसी।

"यह तुम्हें क्या हो गया है?" हैरानी से कमांडेंट ने पूछा।

"मेरे प्यारो, मुसीबत आ गयी।" वासीलिसा इगोरोव्ना ने जवाब दिया। आज सुबह नीझ्नेओज़ोर्नाया पर कब्ज़ा हो गया। पादरी गेरासिम का नौकर अभी-अभी वहाँ से लौटा है। उसने देखा कि कैसे उस पर अधिकार किया गया। कमांडेंट और सभी अफ़सरों को सूली पर चढ़ा दिया गया। सभी सैनिकों को बन्दी बना लिया गया है। बस, अब दुश्मन यहाँ किसी भी समय पहुँच सकता है।

इस अप्रत्याशित ख़बर ने मुझे चौंका दिया। नीझ्नेओज़ोर्नाया का कमांडेंट, ख़ामोश और विनयशील युवक, मेरा परिचित था, दो ही महीने पहले वह ओरेनबुर्ग से अपनी युवा पत्नी के साथ रवाना हुआ था और जाते हुए इवान कुज़्मिच के यहाँ रुका था। नीझ्नेओजोर्नाया का क़िला हमारे दुर्ग से लगभग पच्चीस मील दूर था। किसी भी क्षण पुगाचोव का आक्रमण हो सकता था। मारिया इवानोव्ना का भविष्य मेरी कल्पना में तैर गया, और मेरा दिल बैठ गया।

"सुनिए, इवान कुज़्मिच," मैंने कमांडेंट से कहा, "हमारा कर्तव्य है आख़िरी साँस तक क़िले की रक्षा करना; इसके बारे में कुछ कहना आवश्यक नहीं है। मगर महिलाओं की सुरक्षा के बारे में सोचना होगा। अगर रास्ता अभी तक साफ़ है तो, उन्हें ओरेनबुर्ग या फिर किसी अन्य विश्वसनीय दुर्ग में भेज दीजिए, जहाँ दुश्मन न पहुँच पाए।"

इवान कुज़्मिच ने पत्नी से कहा, "सुनती हो, माँ, वाक़ई जब तक हम दुश्मनों से निपट न लें, आप लोगों को दूर क्यों न भेज दिया जाए?"

"बकवास।" कमांडेंट की पत्नी ने कहा, "क्या कहीं ऐसा कोई क़िला भी है, जहाँ गोलियाँ न पहुँची हों? बेलोगोर्स्काया किस बात में कम है? भगवान की दया से,

बाईस साल से इसमें रह रहे हैं। बाश्कीरियों और किर्गीजों को देख चुके हैं, पुगाचोव से भी निपट ही लेंगे।"

"अच्छा माँ," इवान कुज़्मिच ने प्रतिवाद किया, "अगर तुम्हें हमारे क़िले पर इतना ही भरोसा है, तो रुक जाओ। मगर माशा का क्या करें? अच्छा है, अगर रुक कर मदद की राह देखें, मगर, यदि दुश्मनों ने क़िले पर क़ब्ज़ा कर लिया तो?"

"तो, तब..." वासीलिसा इगोरोव्ना हकलाई और परेशानी से चुप हो गयी।

"नहीं, वासीलिसा इगोरोव्ना," कमांडेंट ने यह भाँपकर कि उसके शब्दों ने, शायद जीवन में पहली बार, असर किया है, आगे कहा, "माशा का यहाँ रुकना ठीक नहीं है। उसे ओरेनबुर्ग में उसकी धर्म माता के पास भेज देते हैं, वहाँ फ़ौज भी काफ़ी है और तोपें भी, और दीवार भी पत्थर की है। मैं तो तुम्हें भी उसी के साथ वहाँ जाने की सलाह दूँगा, तुम बूढ़ी हो फिर भी देखना, अगर वे क़िले पर हमला करके उसे छीन लेगें, तो तुम्हारा क्या हश्र होगा।"

"बस," कमांडेंट की बीवी ने कहा, "ऐसा ही होगा, माशा को भेज देंगे। मगर मुझे तो सपने में भी कभी मत कहना, मैं नहीं जाऊँगी। मुझे बुढ़ापे में तुमसे अलग होकर परदेस में अपनी क़ब्र नहीं ढूँढ़नी है। साथ ही जीना है और साथ ही मरना है।"

"तो यही तय रहा," कमांडेंट ने कहा, "मगर, देर करने में कोई तुक नहीं है। जाओ, माशा के सफ़र की तैयारी करो। सुबह पौ फटते ही उसे रवाना कर देंगे, रक्षक भी साथ में दे देंगे, हालाँकि हमारे पास अतिरिक्त सैनिक नहीं हैं। लेकिन माशा है कहाँ?"

"अकुलिना पाम्फिलोव्ना के यहाँ," कमांडेंट की बीवी ने जवाब दिया, "जैसे ही उसने नीझ्नेओज़ोर्नाया पर अधिकार किये जाने की बात सुनी, उसे चक्कर आ गया, मुझे डर है कि कहीं वह बीमार न हो गयी हो। हे प्रभु, कैसे दिन देखना पड़ रहे हैं!"

वासीलिसा इगोरोव्ना बेटी के सफ़र की तैयारी करने चली गयी। कमांडेंट के पास हमारी बातचीत जारी रही, मगर मैं न तो उसमें कोई दख़ल दे रहा था और न ही कुछ सुन रहा था। रुआँसा, विवर्ण चेहरा लिए मारिया इवानोव्ना शाम के भोजन के समय आयी। हमने चुपचाप भोजन किया और हमेशा की अपेक्षा जल्दी ही मेज़ से उठ गये, पूरे परिवार से विदा लेकर हम अपने-अपने घरों की ओर चल दिये। मगर मैंने जानबूझकर अपनी तलवार वहीं छोड़ दी और उसे लेने के लिए वापस आया; मुझे लग रहा था कि मारिया इवानोव्ना को अकेला पाऊँगा। वास्तव में, वह मुझे दरवाज़े पर ही मिल गयी और उसने मुझे तलवार थमा दी।

"अलविदा, प्योत्र अन्द्रेइच!" उसने आँसू बहाते हुए कहा, "मुझे ओरेनबुर्ग भेजा जा रहा है। आप सलामत रहें और ख़ुश रहें; शायद, भगवान हमें फिर से मिला दे; अगर ऐसा न हुआ तो...।" वह बिसूरने लगी। मैंने उसे अपनी बाँहों में भर लिया।

"अलविदा, मेरे फ़रिश्ते," मैंने कहा, "विदा मेरी प्यारी, मेरी दुलारी! मेरे साथ चाहे जो भी हो, विश्वास रखना कि मेरा आख़िरी ख़याल और आख़िरी प्रार्थना बस तुम्हारे ही बारे में होगी।" मेरे सीने से लगकर माशा हिचकियाँ ले रही थी। मैंने आवेग से उसका चुम्बन लिया और फ़ौरन कमरे से बाहर चला गया।

7

आक्रमण

सिर मेरा, मेरा प्यारा सिर,
फ़ौजी सेवा वाला सिर!
सेवा की मेरे सिर ने
पूरे तैंतीस साल।
आह न जोड़ी सिर ने मेरे
धन दौलत, न कोई ख़ुशी।
सुनी नहीं कोई तारीफ़
ऊँचा ओहदा भी न पाया;
मिले सिर्फ़ मेरे सिर को
ऊँचे-ऊँचे दो खम्भे,
मैपल की शहतीर जुड़े
साथ रेशमी फन्दे के।

—एक लोकगीत

इस रात मैं न तो सोया और न ही मैंने कपड़े उतारे। मेरा इरादा पौ फटते ही क़िले के फाटक पर पहुँचने का था, जहाँ से मारिया इवानोव्ना गुज़रनेवाली थी, और वहीं उससे अन्तिम विदा लेनी थी। मैंने अपने भीतर बड़ा परिवर्तन महसूस किया : मेरी आत्मा की परेशानी उस उदासी की तुलना में कम बोझिल प्रतीत हो रही थी, जिसमें मैं कुछ समय पहले खोया रहा था। जुदाई के दुःख के साथ-साथ मेरे भीतर समा रही थी, अस्पष्ट किन्तु मधुर आशाएँ, ख़तरे के बेताबी से इन्तज़ार के साथ ही उदात्त महत्त्वाकांक्षा की भावनाएँ। रात न जाने कब बीत गयी। मैं घर से निकलने ही वाला था, कि मेरा दरवाज़ा खुल गया और मेरे सामने लेफ़्टिनेंट कमांडेंट प्रकट होकर बोला कि हमारे कज़ाक रात को अपने साथ जबर्दस्ती युलाय को लेकर क़िले से भाग गये, और क़िले के निकट अनजान लोग घूम रहे हैं। यह ख़याल, कि मारिया इवानोव्ना जा नहीं पाएगी, मुझे भयभीत कर गया; मैंने फ़ौरन कनिष्ठ कमांडेंट को कुछ हिदायतें दीं और फ़ौरन कमांडेंट के पास चल पड़ा।

अगर कोई भला आदमी मिल जाए, तो भगवान तुम्हें प्यार और सद्‌बुद्धि दे। वैसे ही रहना, जैसे मैं और वासीलिसा इगोरोव्ना रहते हैं। अच्छा, अलविदा, माशा। वासीलिसा इगोरोव्ना इसे जल्दी से यहाँ से ले जाओ।" माशा उसके कन्धे पर सिर रखकर सिसकने लगी।

"हम भी चुम्बन लें।" रोकर कमांडेंट की पत्नी ने कहा।

"मेरे इवान कुज़्मिच, अलविदा। अगर मैंने तुम्हें दुःख पहुँचाया हो तो माफ़ कर देना!"

"विदा, अलविदा, माँ।" कमांडेंट ने अपनी बुढ़िया को बाँहों में भरकर कहा, "अच्छा, बस हो गया! जाओ, घर जाओ, अगर हो सके तो माशा को सराफ़ान पहना देना।"

कमांडेंट की पत्नी बेटी के साथ चली गयी। मैं मारिया इवानोव्ना की ओर देखे जा रहा था, वह मुड़ी और उसने मेरी ओर देखकर सिर झुकाया। अब इवान कुज़्मिच हमारी ओर मुड़ा, और सारा ध्यान दुश्मन की ओर केन्द्रित हो गया। विद्रोही अपने नायक के निकट आये और अचानक घोड़ों से उतरने लगे।

"अब मज़बूती से खड़े रहो," कमांडेंट ने कहा, "हमला होनेवाला है...।" इसी क्षण भयानक चीख़-पुकार गूँजी; विद्रोही दौड़ते हुए क़िले की ओर आये। हमारी तोप में छर्रे भरे हुए थे। कमांडेंट ने उन्हें बिलकुल निकट आने दिया और अचानक तोप दाग़ दी। गोला भीड़ के बीचोंबीच गिरा। विद्रोही दोनों ओर बिखर गये और पीछे हटने लगे। उनका सरदार अकेला ही डटा रहा...वह तलवार घुमा रहा था और, शायद, बड़े जोश से उन्हें मना रहा था...चीख़-पुकार, जो एक मिनट के लिए थम गयी थी, फिर से सुनाई देने लगी।

"तो, जवानो," कमांडेंट ने कहा, "अब दरवाज़े खोल दो, नगाड़े बजाओ। जवानो! आगे बढ़ो, धावा बोलने के लिए, मेरे पीछे!"

कमांडेंट इवान इग्नातिच और मैं एक ही पल में क़िले की प्राचीर से बाहर हो गये, मगर डर गयी सेना अपनी जगह से हिली ही नहीं।

"जवानो, यह क्या, तुम खड़े क्यों हो?" इवान कुज़्मिच चीख़ा, "मरना है तो मरेंगे; फ़ौजी का कर्तव्य ही है।"

इसी क्षण विद्रोहियों ने हमला कर दिया और क़िले में घुस आये। नगाड़ा ख़ामोश हो गया; गारद ने हथियार फेंक दिये; इस भगदड़ में मैं नीचे गिर पड़ा, मगर मैं उठा और विद्रोहियों के साथ क़िले में घुसा। कमांडेंट जिसका सिर घायल हो गया था, दुश्मनों के झुंड के बीच खड़ा था, जो उससे चाबियाँ माँग रहे थे। मैं उसकी मदद के लिए लपका, कुछ हट्टे-कट्टे कज़ाकों ने मुझे पकड़कर कमरबन्दों से बाँध दिया यह कहते हुए; "अब चखना मज़ा, सम्राट की आज्ञा न माननेवालो!" हमें रास्तों पर घसीटा गया; बस्ती के लोग नमक-रोटी लिए घरों से बाहर आ गये। घंटियों की आवाज़ सुनाई

दी। अचानक भीड़ में शोर उठा, कि सम्राट चौक में क़ैदियों का और वफ़ादारी के वचन का इन्तज़ार कर रहे हैं। लोग चौक की ओर टूट पड़े, हमें भी वहीं खदेड़ा गया।

पुगाचोव कमांडेंट के घर की ड्योढ़ी में कुर्सी पर बैठा था। उसने लाल रंग का कज़ाकी कफ़्तान पहना था, जिस पर गोटा टँका था। सुनहरी कलगी वाली सेबल की ख़ाल की ऊँची टोपी उसकी चमकीली आँखों पर खिंची हुई थी। मुझे उसका चेहरा जाना-पहचाना सा लगा। कज़ाक मुखिया उसे घेरे हुए थे। काँपता हुआ पादरी गेरासिम फ़क चेहरा लिए ड्योढ़ी के पास हाथों में सलीब लिए खड़ा था, और, लगता था कि ख़ामोशी से गिड़गिड़ाकर सम्भावित सूली दिये जानेवालों के लिए उससे प्रार्थना कर रहा था। चौक पर आनन-फ़ानन में सूली बनाई गयी। जब हम नज़दीक पहुँचे, तो वाश्कीरियों ने लोगों को भगाया और हमें पुगाचोव के सामने पेश किया गया। घंटियों की आवाज़ थम गयी; गहन ख़ामोशी छा गयी।

"कमांडेंट कौन है?" स्वघोषित सम्राट ने पूछा।

हमारा सार्जंट भीड़ से निकलकर सामने आया और उसने इवान कुज़्मिच की ओर इशारा किया। पुगाचोव ने क्रोध से बूढ़े की ओर देखा और उससे कहा, "मेरा, याने अपने सम्राट का विरोध करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई?"

घाव से पस्त हुए कमांडेंट ने, अन्तिम शक्ति बटोरकर दृढ़ स्वर में कहा, "तुम मेरे सम्राट नहीं हो, तुम चोर हो और अपने आपको झूठ-मूठ ही सम्राट कहते हो, सुना तुमने!"

पुगाचोव ने दुःख से नाक-भौंह चढ़ाई और सफ़ेद रूमाल हिलाया। कुछ कज़ाकों ने बूढ़े कप्तान को पकड़ लिया और सूली की तरफ़ घसीट ले गये। उसकी ऊपरी शहतीर पर वही अपाहिज़ बाश्कीरी बैठा था, जिससे हमने एक दिन पूर्व पूछताछ की थी। उसने हाथ में रस्सी पकड़ी हुई थी, और एक मिनट बाद मैंने बेचारे इवान कुज़्मिच को हवा में लटकते हुए देखा। इसके बाद पुगाचोव के सामने इवान इग्नातिच को लाया गया।

"सम्राट प्योत्र फ़्योदोरोविच की वफ़ादारी की क़सम खाओ।" पुगाचोव ने उससे कहा।

"तू हमारा सम्राट नहीं है," अपने कप्तान के शब्द दुहराते हुए इवान इग्नातिच ने जवाब दिया, "तू तो, चाचा, चोर और नक़ली सम्राट है।" पुगाचोव ने फिर से रूमाल हिलाया, और भला लेफ़्टिनेंट अपने पुराने सरदार के निकट ही लटक गया।

अब मेरी बारी थी। मैंने निडरता से पुगाचोव की ओर देखा, और अपने महान साथियों का जवाब दुहराने की तैयारी करने लगा। तभी, एक अवर्णनीय आश्चर्य से मैंने विद्रोहियों के नेताओं के बीच श्वाब्रिन को देखा, कज़ाकों जैसे ढंग से बाल कटवाए, कज़ाकी कफ़्तान पहने। वह पुगाचोव के निकट गया और उसके कान में कुछ बोला।

"टाँग दो उसे!" पुगाचोव ने मेरी ओर देखे बग़ैर ही कह दिया। मेरी गर्दन में फन्दा डाल दिया गया। मैं मन-ही-मन प्रार्थना करने लगा, अपने सभी गुनाहों के लिए भगवान के सम्मुख सच्चे दिल से पश्चात्ताप करने लगा और मेरे सभी प्रियजनों को बचाने के लिए विनती करने लगा। मुझे सूली के नीचे घसीटकर ले गये।

"डरो मत, डरो मत।" मेरे हत्यारे बार-बार मुझसे कह रहे थे, हो सकता है, वे सचमुच ही मेरी हिम्मत बढ़ाना चाह रहे थे। अचानक मैंने एक चीख़ सुनी "रुक जाओ, बदमाशो! थोड़ा ठहरो!..."

जल्लाद रुक गये, देखता हूँ : सावेलिच पुगाचोव के पैरों के पास पड़ा है।

"मेरे बाप!" बेचारा बूढ़ा सेवक गिड़गिड़ा रहा था, "मालिक के बच्चे की मौत से तुम्हें क्या मिलेगा? उसे छोड़ दो, उसके बदले में तुम्हें दौलत मिल जाएगी; मिसाल पेश करने की और दहशत पैदा करने की ख़ातिर मुझ बूढ़े को सूली पर चढ़वा दो!" पुगाचोव ने इशारा किया और फ़ौरन मेरे बन्धन खोलकर मुझे छोड़ दिया गया।

"हमारे मालिक तुम पर दया करते हैं," मुझसे कहा गया, अब, इस क्षण कह नहीं सकता, कि मैं आज़ाद होकर ख़ुश हुआ था, यह भी नहीं कहूँगा, कि मुझे उसका दुःख हुआ था। मेरी भावनाएँ काफ़ी अस्पष्ट थीं। मुझे फिर से स्वघोषित सम्राट के पास ले जाकर घुटनों के बल खड़ा किया गया। पुगाचोव ने अपना हडीला हाथ मेरी ओर बढ़ाया।

"हाथ चूमो, हाथ चूमो!" मेरे क़रीब के लोग बोले। मगर इतना नीचे गिरने के स्थान पर मैं अत्यन्त पीड़ाजनक मृत्यु को वेहतर समझता।

"प्यारे प्योत्र अन्द्रेइच!" सोवलिच मेरे पीछे खड़ा होकर मुझे धकेलते हुए फुसफुसाया, "ज़िद न करो! तुम्हारा क्या जाता है? थूको और चूमो नी.. (छिः) चूमो उसका हाथ।" मैं टस से मस नहीं हुआ।

पुगाचोव ने हाथ नीचे कर लिया मुस्कुराते हुए यह कहकर, "महानुभाव शायद ख़ुशी से पगला गये हैं। उठाओ उसे!" मुझे उठाकर आज़ाद कर दिया गया। मैं इस भयानक प्रहसन को देखता रहा।

दुर्गवासी वफ़ादारी की कसम खाने लगे। वे एक के बाद एक आते, सलीब को चूमते और झूठे सम्राट के सामने सिर झुकाते। गारद के सैनिक भी वहीं खड़े थे। अपनी भोथरी कैंची से लैस, फ़ौज का दर्ज़ी उनकी चोटियाँ काट रहा था। वे, स्वयं को झटकते हुए पुगाचोव के हाथ के निकट जाते, जो उनके लिए माफ़ी का ऐलान करता और उन्हें अपने दल में शामिल कर लेता। यह लगभग तीन घंटे तक चलता रहा। आख़िर पुगाचोव कुर्सी से उठा और अपने प्रमुखों के साथ ड्योढ़ी से नीचे उतरा। उसके लिए मूल्यवान साज से सजा हुआ सफ़ेद घोड़ा लाया गया। दो कज़ाकों ने सहारा देकर उसे जीन पर बिठाया। उसने पादरी गेरासिम से कहा कि वह उसके यहाँ खाना खाएगा। इसी समय एक औरत की चीख़ सुनाई दी। कुछ लुटेरे बिखरे बालों

वाली और एकदम वस्त्रहीन वासीलिसा इगोरोव्ना को घसीटते हुए ड्योढ़ी पर ले आये। उनमें से एक ने तो उसका रुई वाला जैकेट भी पहन लिया था। अन्य लोग रोएंदार गद्दे, सन्दूक़ें, चाय के बर्तन, चादरें और दूसरी चीज़ें घसीट रहे थे।

"मेरे प्यारो!" बेचारी बुढ़िया चीख़ रही थी, "मुझे चैन से साँस लेने दो। मेरे बाप, मुझे इवान कुज़्मिच के पास ले चलो।" अचानक उसने सूली की ओर देखा और अपने पति को पहचान लिया।

"दुष्टो!" वह क्रोध से चीख़ उठी, "तुमने क्या किया है उसके साथ? मेरी ज़िन्दगी, मेरी आँखों की रोशनी, इवान कुज़्मिच, वीर सैनिक! तुझे न तो प्रशिया की संगीनें छू सकीं, न ही तुर्की गोलियाँ, धर्म युद्ध में तुमने ज़िन्दगी की परवाह नहीं की, मगर एक भगोड़े क़ैदी के हाथों मारे गये!"

"बूढ़ी चुड़ैल को दफ़ा करो।" पुगाचोव ने कहा, तभी एक जवान कज़ाक ने उसके सिर पर तलवार से वार किया, और वह ड्योढ़ी की सीढ़ियों पर बेजान होकर गिर पड़ी। पुगाचोव चला गया; लोग उसके पीछे-पीछे भागे।

8

बिन बुलाया मेहमान

मेहमान बिन बुलाया बद है तातार से

—कहावत

चौक ख़ाली हो गया। मैं एक ही जगह पर खड़ा-खड़ा इतने भयंकर प्रभाव के कारण धुँधलाए विचारों को कोई तरतीब न दे पा रहा था।

मारिया इवानोव्ना के भविष्य के बारे में अनभिज्ञता से मुझे सबसे ज़्यादा पीड़ा हो रही थी। कहाँ है वह? उसके साथ क्या हुआ? क्या वह छिप पायी? उसका शरण स्थल भरोसेमन्द तो है?... उत्तेजित विचारों से भरा मैं कमांडेंट के घर में घुसा...सब कुछ सूना था; कुर्सियों, मेज़ों, सन्दूकों को तोड़-फोड़ दिया गया था; चीनी के बर्तन फूट गये थे; सब कुछ इधर-उधर बिखरा था। मैं भागकर छोटी सी सीढ़ी से ऊपर चढ़ा, जो दर्शनीय भाग की ओर जाती थी और पहली बार मारिया इवानोव्ना के कमरे में घुसा। मैंने उसका बिस्तर देखा, जिसे लुटेरों ने बुरी तरह उलट-पुलट दिया था; अलमारी को तोड़ कर लूट लिया गया था; सूनी प्रतिमा के सामने अभी भी दीप जल रहा था। खिड़कियों के बीच लटक रहा आईना भी सही सलामत था...इस ख़ामोश कुँआरे कमरे की मालकिन कहाँ थी? मेरे दिमाग़ में एक ख़ौफ़नाक ख़याल कौंध गया : मैंने लुटरों के हाथों में उसकी कल्पना की...मेरे दिल में टीस उठी...मैं फूट-फूटकर रो पड़ा और

ज़ोर से अपनी प्रियतमा का नाम लेने लगा...इसी समय हल्का सा शोर सुनाई दिया, और अलमारी के पीछे से पलाशा बाहर निकली, पीला-ज़र्द चेहरा लिए, थरथराती हुई।

"आह, प्योत्र अन्द्रेइच!" उसने हाथ झटकते हुए कहा, "कैसा दिन था! कितनी भयानक घटनाएँ!"

"और मारिया इवानोव्ना?" मैंने बेसब्री से पूछा, "मारिया इवानोव्ना का क्या?"

"मालकिन ज़िन्दा है," पलाशा ने जवाब दिया, "उसे अकुलीना पाम्फीलोव्ना के यहाँ छिपाया गया है।"

"पादरिन के यहाँ!"

मैं खौफ़ से चीख़ा, "हे भगवान! वहाँ तो पुगाचोव है!"...

मैं फ़ौरन कमरे से बाहर भागा, एक पल में सड़क पर आया और तीर की तरह पादरी के घर की ओर भागा,...न कुछ देखते हुए, न महसूस करते हुए वहाँ से चीख़ें ठहाके और गाने सुनाई दे रहे थे...पुगाचोव अपने साथियों के साथ जश्न मना रहा था। पलाशा भी मेरे पीछे-पीछे भागकर वहाँ पहुँची। मैंने उसे चुपके से अकुलीना पाम्फीलोव्ना को बुलाने के लिए भेजा। एक मिनट बाद हाथों में ख़ाली बोतल लिए पादरिन ड्योढ़ी में आयी।

"भगवान के लिए! कहाँ है मारिया इवानोव्ना?" अनबूझ परेशानी से मैंने पूछा।

"सोयी है, मेरी लाडली, मेरे पलंग पर, वहाँ, ओट के पीछे।" पादरिन ने जवाब दिया, "और, प्योत्र अन्द्रेइच, मुसीबत बस आने ही वाली थी, मगर भगवान की दया से सब कुछ ठीक-ठाक हो गया: दुष्ट खाना खाने बैठा ही था, कि वह, मेरी ग़रीब बच्ची, जाग पड़ी और कराही!...मैं तो बर्फ़ हो गयी! उसने सुन लिया, 'बुढ़िया, यह तुम्हारे यहाँ कौन आहें भर रहा है?' मैंने कमर तक झुककर उस चोर से कहा, 'भतीजी है मेरी, सरकार; बीमार हो गयी थी, पड़ी है, दो हफ़्ते होने को आये।' 'और क्या तुम्हारी भतीजी जवान है?' 'जवान है, हुजूर।' 'अपनी भतीजी मुझे दिखा, बुढ़िया।' मेरा दिल ज़ोरों से धड़कने लगा, मगर कुछ किया नहीं जा सकता था। 'जैसी मर्ज़ी हुज़ूर, मगर लड़की तो उठकर आपकी कृपा दृष्टि के लिए आ नहीं सकती।' 'कोई बात नहीं बुढ़िया, मैं खुद ही जाकर देख लूँगा।' और वह बदमाश सचमुच दीवार के उस ओर चला गया; क्या सोचते हो! परदा हटाया, बाज़ जैसी नज़र से उसे देखा! और कुछ नहीं...भगवान ने सँभाल लिया। यक़ीन करोगे, कि मैं और मेरे पति यातनापूर्ण मृत्यु के लिए स्वयं को तैयार कर रहे थे। सौभाग्य से, उसने, मेरी लाडली ने, उसे पहचाना नहीं। हे भगवान, क्या दिन दिखाया है! कहने को कुछ भी नहीं है! बेचारा इवान कुज़्मिच! कौन सोच सकता था!...और वासीलिसा इगोरोव्ना! और इवान इग्नातिच! उसे किसलिए? आपको कैसे छोड़ दिया? और यह श्वाब्रिन अलेक्सेइ इवानिच, कैसा है? गोल घेरे में बाल कटवा लिए और अब हमारे यहाँ उनके साथ बैठा जश्न मना रहा है! धूर्त है! जैसे ही मैंने बीमार भतीजी के बारे में बतलाया, तो उसने,

यक़ीन करो, मेरी ओर ऐसे देखा जैसे चाकू से चीर रहा हो; मगर भेद नहीं खोला, इसके लिए उसका धन्यवाद।" इसी समय मेहमानों की शराबी चीख़ें और पादरी गेरासिम की आवाज़ सुनाई दी। मेहमान शराब की माँग कर रहे थे, मेज़बान जीवन संगिनी को बुला रहा था।

पादरिन हड़बड़ाई, "अपने घर जाओ, प्योत्र अन्द्रेइच," उसने कहा, "अभी आपसे बात न कर पाऊँगी; बदमाश पी रहे हैं। अगर शराबियों के हाथों पड़ गये तो मुसीबत हो जाएगी। अलविदा, प्योत्र अन्द्रेइच। जो होगा, सो होगा; भगवान मदद करेंगे।"

पादरिन चली गयी। कुछ शान्त होकर मैं अपने फ़्लैट की ओर चला। चौक से गुज़रते हुए मैंने कुछ बाश्किरियों को देखा, जो सूली के निकट जमा होकर मृतकों के जूते खींच रहे थे; बड़ी मुश्किल से मैंने अपनी वितृष्णा की भावना पर क़ाबू किया, मारपीट में मुझे कोई तुक न नज़र आयी। क़िले में डाकू घूम रहे थे, अफ़सरों के घरों को लूट रहे थे। चारों ओर पियक्कड़ विद्रोहियों की चीख़ें सुनाई दे रही थीं। मैं घर आया। सावेलिच मुझे देहलीज़ पर ही मिला।

"भगवान तेरी जय हो!" मुझे देखते ही वह चिल्लाया, "मैं सोच रहा था कि कहीं दुष्टों ने तुम्हें फिर से तो नहीं पकड़ लिया। आह प्योत्र इन्द्रेइच। यक़ीन करोगे? बदमाश हमारा सबकुछ लूटकर ले गये : कपड़े, चादरें, चीज़ें, बर्तन—कुछ भी नहीं छोड़ा। ख़ैर कोई बात नहीं! भगवान की दया रही, जो तुम्हें ज़िन्दा छोड़ दिया! और, मालिक, तुमने सरदार को पहचाना?"

"नहीं, नहीं पहचाना, मगर वह है कौन?"

"क्याऽऽ मालिक? तुम उस शराबी को भूल गये, जिसने तुमसे सराय में कोट झटक लिया था? ख़रगोश की ख़ाल का कोट, एकदम नया; और उस शैतान ने पहनते हुए उसे उधेड़ भी दिया था।"

मैं हैरान हो गया। सचमुच पुगाचोव का मेरे पथ प्रदर्शक से साम्य चौंकाने वाला था। मुझे यक़ीन हो गया कि पुगाचोव और वह एक ही व्यक्ति थे, और तब मुझे अपने ऊपर की गयी मेहरबानी की वजह समझ में आ गयी। परिस्थितियों के ऐसे विचित्र संयोग से मैं आश्चर्यचकित हुए बिना न रह सका : बच्चे का कोट, जो एक आवारा को उपहारस्वरूप दिया गया था, मुझे सूली से बचा गया, और वह शराबी, जो सरायों में भटका करता था, क़िलों पर क़ब्ज़ा करके सरकार को हिला गया!

"क्या कुछ खाआगे?" सावेलिच ने पूछा, जिसकी आदतें कभी नहीं बदलती थीं, "घर पर तो कुछ नहीं है; जाकर कुछ ढूँढ़ता हूँ, तुम्हारे लिए कुछ बनाऊँगा।"

अकेला रह जाने पर मैं ख़यालों में डूब गया। मुझे क्या करना चाहिए? दुश्मन के अधिकार में जा चुके क़िले में रुकना या उसके गिरोह के पीछे-पीछे जाना यह एक अफ़सर को शोभा नहीं देता था। मेरे कर्तव्य की यह माँग थी, कि मैं वहीं जाऊँ, जहाँ

वर्तमान कठिन परिस्थितियों में मेरी सेवा पितृभूमि के लिए लाभदायक सिद्ध हो...मगर प्यार मुझे मजबूर कर रहा था कि मैं मारिया इवानोव्ना के पास रुककर उसका संरक्षक एवं आश्रयदाता बनूँ। हालाँकि मुझे परिस्थितियों के शीघ्र और अवश्यम्भावी परिवर्तन का पूर्वाभास हो रहा था, मगर उसकी ख़तरनाक स्थिति की कल्पना से मैं काँप उठता था।

मेरे विचारों का ताँता एक कज़ाक के आने से टूटा, जो यह कहने के लिए भागकर आया था, कि "महान सम्राट तुझे बुलाते हैं।"

"वे कहाँ हैं?" मैंने आदेश का पालन करने के लिए पूछा।

"कमांडेंट के घर में।" कज़ाक ने जवाब दिया, "खाने के बाद सरकार हम्माम में गये थे, और अब आराम फरमा रहे हैं। मगर, हुजूर उन्हें देखकर ऐसा लगता है कि वे बड़े आदमी हैं; खाने के समय उन्होंने दो तले हुए सुअर के बच्चे खाए, और इतनी गर्म भाप से नहाते हैं, कि तारास कूरोच्किन बर्दाश्त न कर पाया, उसने झाबा फ़ोम्का बिकवायेव को थमा दिया और बड़ी मुश्किल से ठंडे पानी से होश में आया। शक की गुंजाइश ही नहीं; सभी लक्षण महत्त्वपूर्ण हैं...और हम्माम में, सुना है कि उन्होंने अपने सीने पर सम्राट के दो निशान दिखाए; एक ओर था दो सिरोंवाला उक़ाब, पाँच के सिक्के जितना बड़ा, और दूसरी ओर उनकी अपनी तस्वीर।"

कज़ाक से बहस करना मैंने ज़रूरी नहीं समझा और उसके साथ कमांडेंट के घर की ओर चल पड़ा, अपने ख़यालों में पुगाचोव के साथ होनेवाली मुलाक़ात की कल्पना करते हुए और यह अनुमान लगाने की कोशिश करते हुए कि वह कैसे समाप्त होगी। पाठक आसानी से अनुमान लगा सकता है कि मैं पूरी तरह शान्त नहीं था।

अँधेरा होने लगा था, जब मैं कमांडेंट के घर के पास पहुँचा। अपने शिकार सहित सूली ख़ौफ़नाक रूप से गहरा रही थी। बेचारी कमांडेंट की पत्नी का शव अभी भी ड्योढ़ी के नीचे पड़ा था, जिसके पास दो कज़ाक पहरा दे रहे थे। मुझे ले आनेवाला कज़ाक मेरे बारे में सूचना देने गया और फ़ौरन ही वापस लौटकर मुझे उस कमरे में ले आया, जहाँ पिछले ही दिन इतने प्यार से मैंने मारिया इवानोव्ना से विदा ली थी।

एक अजीब-सा दृश्य मुझे दिखाई दिया : मेज़पोश से ढँकी, सुराहियों और गिलासों से सजी मेज़ के पास पुगाचोव एवं क़रीब दस कज़ाक प्रमुख टोपियाँ और रंगीन क़मीज़ें पहने, शराब से धुत लाल-लाल थोबड़े और चमकदार आँखें लिये बैठे थे। उनके बीच, नये ग़द्दार श्वाब्रिन और हमारा सार्जंट नहीं थे।

"आह, हुजूर!" पुगाचोव ने मुझे देखते ही कहा, "स्वागत है; हम सम्मानित हुए, मेहरबानी से बैठिए।" बातचीत करनेवाले एक-दूसरे के पास-पास सरक गये। मैं चुपचाप मेज़ के किनारे पर बैठ गया।

मेरी बग़ल में बैठे सुन्दर, सुडौल नौजवान कज़ाक ने मुझे शराब का गिलास पेश किया, जिसे मैंने छुआ तक नहीं। मैं बड़ी उत्सुकता से इस हुजूम को देखने लगा।

पुगाचोव प्रथम स्थान पर बैठा था, मेज़ पर कोहनियाँ टिकाये और अपनी चौड़ी मुट्ठी पर काली दाढ़ी फैलाये। उसके तीखे और काफ़ी प्यारे नाक-नक़्श वहशीपन की ज़रा-सी भी झलक नहीं दे रहे थे। वह अक्सर एक पचास वर्षीय व्यक्ति से मुख़ातिब हो रहा था, कभी उसे काउंट कहता, कभी तिमोफ़ेय और कभी चचा कहकर उसे बड़प्पन दे देता। सभी दोस्तों की तरह एक-दूसरे से पेश आ रहे थे और अपने सरदार के लिए कोई विशेष सम्मान नहीं दिखा रहे थे। बातचीत सुबह के हमले, विद्रोह की सफलता और भावी योजनाओं के बारे में हो रही थी। हर कोई डींग हाँक रहा था, अपनी राय दे रहा था और खुलकर पुगाचोव से बहस कर रहा था। और इसी विचित्र युद्ध समिति में ही तो ओरेनबुर्ग पर आक्रमण करने का निर्णय लिया गया। एक दुस्साहसी अभियान का, जो दुर्भाग्यपूर्ण सफलता से मंडित होते-होते रह गया! अगले दिन सुबह कूच करने का ऐलान किया गया।

"तो भाइयो," पुगाचोव ने कहा, "मेरा प्यारा गीत सुनकर सोने जाएँ। चुमाकोव! शुरू करो।" मेरे पड़ोसी ने पतली आवाज़ में बजरे खींचनेवालों का उदासी भरा गीत शुरू किया, और सभी उसमें शामिल हो गये :

न कर शोर, जंगल हरे बलूत के,
तंग न कर इस जवान को, सोचने दे।
सुबह, इस जवान को, जाना है दरबार
डरावनी पेशी पर, ज़ार के सामने।
पूछेगा मुझसे सरकार ज़ार :
बोल बोल तू बच्चे, किसान के लड़के,
किसके यहाँ की चोरी, कहाँ डाला डाका,
साथी क्या थे बहुत तेरे साथ?
कहूँगा मैं, आस लगाए, ओ धर्मप्रिय ज़ार,
कहूँगा तुझको सारा सच, सारी सच्चाई,
साथी थे मेरे बस चार :
पहला साथी काली रात,
दूजा लोहे का यह चाकू,
तीजा था घोड़ा प्यारा
चौथा रहा कसा यह धनुष।
मेरे दूत मेरे तेज़ तीर हैं।
कहेगा क्या धर्मप्रिय ज़ार :
शाबाश, बच्चे, किसान के लड़के,
सीखे करना चोरी और सीखे बतियाना!

दूँगा तुझे मैं इसीलिए,
बीच खेत में दूँगा एक घर,
शहतीर और दो खम्भों वाला।

कहना मुश्किल है कि सूली के बारे में इस सीधे-सादे लोकगीत ने मुझ पर क्या असर डाला, जिसे उन्हीं लोगों ने गाया, जिनके नसीब में सूली ही बदी थी। उनके डरावने चेहरे, सधी हुई आवाज़ें, उदासी भरा भाव, जो इस सबके बग़ैर भी बहुत कुछ कहनेवाले शब्दों को वे दे रहे थे—सभी ने मिलकर मुझे एक काव्यात्मक भय से झकझोर दिया।

मेहमानों ने एक-एक गिलास और पिया, फिर वे मेज़ से उठे और पुगाचोव से विदा लेने लगे। मैं भी उनके पीछे-पीछे जानेवाला था, मगर पुगाचोव ने मुझसे कहा, "बैठो, मुझे तुमसे बात करनी है।" हम एक-दूसरे के सामने बैठे।

कुछ मिनट तक हम ख़ामोश रहे। पुगाचोव एकटक मुझे देखे जा रहा था, बीच-बीच में उपहास और धूर्तता के आश्चर्यजनक भाव से बायीं आँख सिकोड़ लेता था। अन्त में वह हँस पड़ा, और वह भी ऐसी सहज प्रसन्नता के भाव से, कि मैं भी, उसे देखते हुए न जाने क्यों हँसने लगा।

"तो, हुज़ूर?" उसने मुझसे कहा, "क्या तू डर गया था, मान भी ले, जब मेरे जवानों ने तेरी गर्दन में फन्दा डाल दिया था? मेरा ख़याल है कि दिन में तारे नज़र आये होंगे...तुम तो शहतीर से झूल ही जाते, अगर तुम्हारा नौकर न होता। मैं तो तभी बूढ़े खूसट को पहचान गया था। क्या तुमने कभी सोचा भी था, कि जो आदमी तुम्हें सही सलामत निकालकर सराय तक पहुँचा गया था, स्वयं महान सम्राट था?" यहाँ उसके चेहरे पर रोबीला और रहस्यमय भाव प्रकट हुआ।

"तुम मेरे सामने पूरी तरह दोषी हो।" वह आगे बोला, "मगर मैंने तुम्हारी मेहरबानी के लिए तुम्हें माफ़ कर दिया, इसलिए, कि तुमने मेरी मदद तब की थी, जब मैं अपने दुश्मनों से बचता फिर रहा था। तुम आगे भी देखते रहना! उस समय भी मैं तुम्हारा भला ही करूँगा, जब अपना साम्राज्य हासिल कर लूँगा! क्या निष्ठापूर्वक मेरी सेवा करने का वादा करते हो?"

बदमाश का सवाल और उसकी धृष्टता मुझे इतने दिलचस्प लगे कि मैं मुस्कुराए बग़ैर न रह सका।

"मुस्करा क्यों रहे हो?" उसने नाक-भौंह सिकोड़कर पूछा, "या तुम्हें यक़ीन नहीं है कि मैं महान सम्राट हूँ? साफ़-साफ़ जवाब दो।"

मैं परेशान हो गया, उस आवारा को सम्राट मानने की स्थिति में मैं नहीं था, यह कार्य मुझे अक्षम्य नीचता भरा प्रतीत हुआ। उसके सामने ही उसे धोखेबाज़ कहने का मतलब था : स्वयं को मौत के मुँह में झोंक देना; और वह, जिसके लिए सूली के नीचे, पूरी जनता के सामने, क्रोध के प्रथम आवेग में करने को मैं तत्पर था, अब वह व्यर्थ

ही शेख़ी भरा प्रतीत हो रहा था। मैं डगमगा गया। पुगाचोव अप्रसन्नता के भाव से मेरे जवाब का इन्तज़ार कर रहा था। आख़िरकार (और आज भी बड़े सन्तोष से मैं उस क्षण को याद करता हूँ) कर्तव्य का भाव मानवीय कमज़ोरी पर हावी हो गया।

मैंने पुगाचोव को जवाब दिया, "सुनो, तुमसे सब सच-सच कहूँगा। सोचो, क्या मैं तुम्हें सम्राट मान सकता हूँ? तुम समझदार आदमी हो; ख़ुद ही सोचोगे कि मैं मक्कारी कर रहा हूँ।"

"तुम्हारे ख़याल में मैं कौन हूँ?"

"भगवान ही तुम्हें जानता है, मगर तुम जो भी हो, बड़ा ख़तरनाक मज़ाक़ कर रहे हो।"

पुगाचोव ने शीघ्रता से मेरी ओर देखा, "तो तुम विश्वास नहीं करते," उसने कहा, "कि मैं सम्राट प्योत्र फ़्योदोरोविच हूँ? अच्छा, ठीक है। मगर क्या साहसी व्यक्ति को सफलता नहीं मिला करती? मेरे बारे में तुम जो चाहो सोचो, मगर मुझसे दूर न रहना। तुम्हें इससे उससे क्या लेना देना है? पोप नहीं तो बाप ही सही। सच्चाई और वफ़ादारी से मेरी सेवा करो, और मैं तुम्हें फ़ील्डमार्शल और राजकुमार भी बना दूँगा। क्या ख़याल है?"

"नहीं," मैंने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया, "मैं जन्मजात कुलीन हूँ, मैं साम्राज्ञी के प्रति वचनबद्ध हूँ, तुम्हारी सेवा न कर सकूँगा। अगर तुम सचमुच ही मेरा भला चाहते हो, तो मुझे ओरेनबुर्ग जाने दो।"

पुगाचोव सोच में डूब गया।

"अगर तुम्हें छोड़ दूँ," उसने कहा, "तो कम-से-कम मेरे ख़िलाफ़ काम न करोगे, यह वादा करते हो?"

"ऐसा वादा कैसे कर सकता हूँ।" मैंने जवाब दिया, ख़ुद ही जानते हो, यह मेरे बस में नहीं है; अगर तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ने की आज्ञा देते हैं, तो लड़ूँगा, कोई चारा ही नहीं है। अब तुम तो ख़ुद ही सरदार हो, ख़ुद ही अपने लोगों से आज्ञा पालन करने की माँग करते हो। यह कैसा लगेगा कि जब मेरी सेवा की आवश्यकता हो और मैं अपने कर्तव्य का पालन करने से इनकार कर दूँ। मेरी जान तुम्हारे हाथ में है; मुझे छोड़ दोगे, तो धन्यवाद कहूँगा; मार डालोगे तो, भगवान तुम्हारा इन्साफ़ करेगा, मगर मैंने तुम्हें सच्ची बात बता दी है।"

मेरी स्पष्टवादिता से पुगाचोव हैरान हो गया।

"ऐसा ही हो," मेरे कन्धे पर हाथ मारते हुए उसने कहा, "जान लेनी है, तो लेनी है, दया करनी है, तो दया! जाओ, कहीं भी जाओ, और जो जी में आये करो। कल मुझसे विदा लेने आना, और अब जाकर सो जाओ, मैं तो ऊँघने लगा हूँ।"

मैं पुगाचोव को छोड़कर बाहर आ गया। रात ख़ामोश और बर्फ़ीली थी। चाँद और तारे चमक रहे थे, चौक और सूली को रौशन कर रहे थे। क़िले में अँधेरा था और

ख़ामोशी थी। सिर्फ़ शराबख़ाने में रोशनी थी और देर रात तक पीनेवालों का शोर सुनाई दे रहा था। मैंने पादरी के घर की ओर देखा। दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द थीं। लगता था, वहाँ सब कुछ शान्त है।

मैं अपने फ़्लैट में आया और सावेलिच को देखा, जो मेरी अनुपस्थिति से दुःखी हो रहा था। मेरी आज़ादी की ख़बर से उसे अवर्णनीय आनन्द हुआ।

"भगवान, तेरी जय हो!" उसने सलीब का निशान बनाते हुए कहा, "जैसे ही पौ फटेगी; जहाँ सींग समाएँ, वहीं चले जाएँगे। मैंने तुम्हारे लिए कुछ बनाया है, कुछ खा लो मालिक, और सुबह तक थोड़ा सो लो, भगवान भरोसे।"

मैंने उसकी बात मान ली और बड़े चाव से खाना खाया, शारीरिक और मानसिक थकान से चूर नंगे फर्श पर सो गया।

9

जुदाई

मीठा था मिलना
मेरा, सुन्दरी, तुझसे,
दुःख से, दुःख से जुदा होना
दुःख से, जैसे रूह से।
—हेरास्कोव

सुबह-सुबह नगाड़ों की आवाज़ ने मुझे जगा दिया। मैं चौक पर पहुँचा वहाँ, सूली के निकट, पुगाचोव के लोग क़तारों में खड़े हो रहे थे, जहाँ अभी तक कल के शिकार लटक रहे थे। कज़ाक घोड़ों पर सवार थे, सैनिक थे बन्दूक़ें लिये। झंडे फहरा रहे थे। कुछ तोपें, जिनमें मैंने हमारी तोप को भी पहचान लिया, तोप गाड़ियों पर रख दी गयी थी। दुर्गवासी स्वघोषित सम्राट की राह देखते हुए वहीं खड़े थे। कमांडेंट के घर की ड्योढ़ी के पास एक कज़ाक ख़ूबसूरत सफ़ेद किर्गीज़ी घोड़े की लगाम थामे खड़ा था। मैंने आँखों से कमांडेंट की पत्नी की लाश को ढूँढ़ा। वह चटाई से ढँकी एक ओर को सरका दी गयी थी। आख़िर पुगाचोव बाहर आया। जनता ने टोपियाँ उतारीं। पुगाचोव ड्योढ़ी के पास रुका और सबका अभिवादन करने लगा। एक मुखिया ने उसे ताँबे के सिक्कों की एक थैली दी, और वह मुट्ठियाँ भर भर के सिक्के फेंकने लगा। लोग चीख़ते हुए उन्हें उठाने को लपके, और कई हाथ-पैर भी टूटने से न बचे। पुगाचोव को उसके प्रमुख ख़बरिये घेर कर खड़े हो गये। उनके बीच श्वाब्रिन भी था। हमारी नज़रें मिलीं, मेरी नज़रों में वह पढ़ सकता था, नफ़रत और उसने वास्तविक क्रोध एवं

कृत्रिम उपहास के भाव से मुँह मोड़ लिया। पुगाचोव ने, भीड़ में मुझे देखकर, सिर हिलाया और मुझे अपने पास बुलाया।

"सुनो," उसने मुझसे कहा, "फ़ौरन ओरेनबुर्ग जाओ और मेरी ओर से गवर्नर और सभी जनरलों से कहो कि एक हफ़्ते बाद अपने यहाँ मेरा इन्तज़ार करें। उन्हें सलाह दो कि निश्छल प्रेम और आज्ञाकारिता की भावना से मेरा स्वागत करें, वर्ना वे निर्मम हत्या से बच नहीं पाएँगे। शुभयात्रा, हुजूर!" फिर वह लोगों की ओर मुड़कर श्वाब्रिन की ओर इशारा करते हुए बोला, "यह रहा, बच्चो, नया कमांडर; उसकी हर बात मानना, उस पर तुम्हारी और क़िले की ज़िम्मेदारी है।" मैंने ख़ौफ़ से यह शब्द सुने, श्वाब्रिन क़िले का सरदार बन गया है; मारिया इवानोव्ना उसके क़ब्ज़े में रह गयी! हे भगवान, उस पर क्या गुज़रेगी! पुगाचोव ड्योढ़ी से उतरा। उसके सामने घोड़ा लाया गया। वह फुर्ती से उछलकर जीन पर बैठ गया, कज़ाकों की राह देखे बिना, जो उसे घोड़े पर बिठाना चाहते थे।

इसी समय क्या देखता हूँ कि, लोगों की भीड़ में से मेरा सावेलिच बाहर आया, पुगाचोव के पास गया और उसकी ओर एक काग़ज़ का टुकड़ा बढ़ा दिया। मैं सोच न सका कि यह क्या था। "यह क्या है?" पुगाचोव ने शान से पूछा, "पढ़िए, तब समझ जाएँगे," सावेलिच ने जवाब दिया, पुगाचोव ने काग़ज़ ले लिया और बड़ी देर तक गम्भीरता से उसे देखता रहा। "यह क्या गिच-पिच लिखा है?" उसने आख़िरकार कहा, "हमारी प्रखर दृष्टि कुछ समझ नहीं पा रही है। मेरा मुख्य सेक्रेटरी कहाँ है?"

एक ख़ूबसूरत नौजवान, लेफ़्टिनेंट कमांडर की वर्दी पहने, फुर्ती से भागकर पुगाचोव के पास आया।

"ज़ोर से पढ़ो।" झूठे सम्राट ने उसे काग़ज़ देते हुए कहा। मुझे बड़ी उत्सुकता हो रही थी यह जानने की, कि मेरे चचा को पुगाचोव को क्या लिखने की सूझी।

प्रमुख सेक्रेटरी ने हिज्जे कर करके पढ़ा, "दो गाऊन, मोटी दरेस और धारीदार रेशमी, छह रूबल के।"

"इसका क्या मतलब?" पुगाचोव ने नाक-भौंह चढ़ाते हुए पूछा।

"आगे पढ़ने को बोलो।" सावेल्येव ने शान्तिपूर्वक कहा।

प्रमुख सेक्रेटरी ने आगे पढ़ा, "वर्दी, पतले हरे कपड़े की, सात रूबल की; पतलून सफ़ेद कपड़े की—पाँच रूबल की। बारह क़मीज़ें, मोटी हॉलैंडी, कफ़ वाली : दस रूबल की।"

"चाय के बर्तनों वाला सन्दूक़, अढ़ाई रूबल का।"

"क्या बकवास है?" पुगाचोव ने टोका, "मुझे सन्दूक़ों, पतलूनों और कफ़ों से क्या मतलब है?"

सावेलिच ने खँखारते हुए समझाया।

"ये, मालिक, जैसा कि आप देख रहे हैं, मालिक की चीज़ों की फ़ेहरिस्त है, जो बदमाश चुरा ले गये हैं..."

"कौन-से बदमाश?" पुगाचोव ने गरजते हुए पूछा।

"माफ़ी चाहता हूँ; ज़बान फिसल गयी।" सावेलिच ने जवाब दिया, "बदमाश हों या बदमाश न हों, मगर तुम्हारे आदमी पूरी तरह घर छानकर घसीट कर ले गये। ग़ुस्सा मत हो; घोड़ा चार पैरों पर होते हुए भी लड़खड़ा जाता है। पूरा पढ़ने को बोलो।"

"पूरा पढ़ो।" पुगाचोव ने कहा।

सेक्रेटरी पढ़ने लगा, "कम्बल फूलदार, दूसरी तफ्ते की सूती रज़ाई, चार रूबल। लोमड़ी की ख़ाल का कोट, लाल कपड़ेवाला, चालीस रूबल। और ख़रगोश की ख़ाल का कोट, जो सराय में तुम्हें भेंट दिया गया था, पन्द्रह रूबल।"

"यह और क्या है!" पुगाचोव आग्नेय नेत्रों से देखते हुए चीख़ा।

मानता हूँ कि मैं अपने बेचारे चचा के लिए डर गया। वह फिर से कुछ समझाना चाहता था, मगर पुगाचोव ने उसे रोक दिया; "ऐसी फ़ालतू बातों के लिए मेरे पास आने की तेरी हिम्मत कैसे हुई?" वह सेक्रेटरी के हाथों से काग़ज़ छीनकर सावेल्येव के मुँह पर फेंकते हुए बोला, "बेवक़ूफ़ बूढ़ा! उनको लूट लिया है; कौन-सी मुसीबत आ गयी? बुड्ढे खूसट, तुझे तो ज़िन्दगी भर भगवान से मेरे और मेरे आदमियों के लिए प्रार्थना करना चाहिए, इसलिए कि तुम और तुम्हारा मालिक उन मेरी अवज्ञा करनेवालों के साथ सूली पर नहीं लटक रहे हो...ख़रगोश की ख़ाल का कोट! मैं नहीं दूँगा ख़रगोश की ख़ाल का कोट! जानते नहीं क्या कि मैं कोटों के लिए तुम्हारी ज़िन्दा ख़ाल उतरवाने की आज्ञा दे सकता हूँ?"

"जैसी तुम्हारी मर्ज़ी," सावेलिच ने जवाब दिया, "और मैं ठहरा ग़ुलाम आदमी और मालिक की भलाई के लिए जवाबदेह हूँ।"

पुगाचोव पर लगता था, दरियादिली का दौरा पड़ा था। वह मुड़कर एक भी शब्द बोले बिना चला गया। श्वाब्रिन एवं मुखिया लोग उसके पीछे गये। गिरोह क़तार बद्ध होकर क़िले से बाहर निकला। लोग पुगाचोव को विदा करने चल पड़े। चौक पर मैं सावेलिच के साथ, अकेला रह गया। मेरे चचा ने हाथ में अपनी फ़ेहरिस्त पकड़ रखी थी और बड़े दुःख से उसकी ओर देख रहा था।

पुगाचोव से मेरी बनती देखकर उसने इसका फ़ायदा उठाना चाहा, मगर यह नेक इरादा रंग न ला सका। मैं उसे इस बेमौक़े की कोशिश के लिए डाँटने ही वाला था, मगर अपनी हँसी न रोक पाया।

"हँस लो, मालिक," सावेलिच ने जवाब दिया, "हँस लो; और जब हमें पूरी गिरस्ती दुबारा जमाना पड़ेगी तो आएगा मज़ा।"

मैं मारिया इवानोव्ना से मिलने के लिए पादरी के घर की ओर भागा। पादरिन

ने बुरी ख़बर सुनाई। रात को मारिया इवानोव्ना को तेज़ बुख़ार चढ़ गया। वह बेहोशी में बड़बड़ा रही थी। पादरिन मुझे उसके कमरे में ले गयी। मैं हौले से उसके पलंग के पास आया। उसके चेहरे में हुए परिवर्तन से मैं सकते में आ गया। मरीज़ा ने मुझे नहीं पहचाना। मैं बड़ी देर तक उसके सामने खड़ा रहा, पादरी गेरासिम और उसकी सहृदय पत्नी के शब्दों को बिना सुने, जो मुझे सान्त्वना दे रहे थे। उदासी भरे ख़याल मुझे परेशान कर रहे थे। बेचारी ग़रीब, असुरक्षित, अनाथ लड़की की हालत, जो क्रूर विद्रोहियों के बीच छोड़ दी गयी थी, और मेरी अपनी लाचारी मुझे डरा गयी। श्वाब्रिन, श्वाब्रिन का ख़याल मुझे सबसे ज़्यादा पीड़ा दे रहा था। स्वघोषित सम्राट द्वारा सत्ता से मंडित, क़िले पर शासन करते हुए, जहाँ अभागी लड़की, उसकी घृणा की निर्दोष पात्र रह गयी थी, वह कुछ भी कर सकता था। मुझे क्या करना चाहिए? कैसे उसे मदद पहुँचाऊँ? कैसे अत्याचारियों के हाथों से उसे मुक्त करवाऊँ? एक ही उपाय बचा था, मैंने फ़ौरन ओरेनबुर्ग जाने का फ़ैसला कर लिया, ताकि बेलोगोर्स्काया को जल्दी से आज़ाद करवा सकूँ और यथासम्भव इस दिशा में, प्रयत्न कर सकूँ। मैंने पादरी तथा अकुलीना पाम्फीलोव्ना से विदा ली, भावावेश में उनके हाथों उसे सौंपते हुए, जिसे अपनी पत्नी मान चुका था। मैंने ग़रीब लड़की का हाथ अपने हाथों में लेकर उसे आँसुओं से भिगोते हुए चूमा।

"अलविदा," पादरिन ने मुझे रवाना करते हुए कहा, "अलविदा, प्योत्र अन्द्रेइच। भगवान ने चाहा तो अच्छे दिनों में फिर मिलेंगे। हमें भूलना मत और ख़त लिखते रहना। बेचारी मारिया इवानोव्ना का आपके सिवा अब न तो कोई सहारा है, न ही कोई उसे तसल्ली देनेवाला है।"

चौक पर आकर, मैं एक मिनट के लिए रुका, सूली की ओर देखा सिर झुकाया, क़िले से बाहर निकला और चल पड़ा ओरेनबुर्ग के रास्ते की ओर सावेलिच के साथ, जो मेरे साथ-साथ चल रहा था।

मैं अपने विचारों में डूबा चला जा रहा था, कि अचानक अपने पीछे घोड़ों की टापें सुनीं। मुड़कर देखा; देखता हूँ; क़िले से कज़ाक एड़ लगाता हुआ आ रहा है, बाश्कीरी घोड़े की लगाम पकड़े और दूर से मुझे इशारे करते हुए। मैं रुक गया और फ़ौरन अपने सार्जंट को पहचान गया।

वह नज़दीक आकर, अपने घोड़े से उतरकर दूसरे घोड़े की लगाम मेरे हाथों में देते हुए बोला, "हुज़ूर! हमारे बाप ने आपके लिए यह घोड़ा और अपना कोट भेजा है (ज़ीन से भेड़ की ख़ाल का कोट बँधा हुआ था) हाँ, और," सार्जंट हिचकिचाते हुए बोला, "आपके लिए दिए हैं...पचास कोपेक...ओह, मैंने उन्हें रास्ते में कहीं गिरा दिया; मेहरबानी करके माफ़ कीजिए।"

सावेलिच ने उसकी ओर तिरछी नज़रों से देखा और बुदबुदाया, "रास्ते में गिरा दिया! और यह तेरी भीतरी जेब में क्या खनखना रहा है? बेईमान!"

"मेरी भीतरी जेब में क्या खनक रहा है?" सार्जंट ने ज़रा भी परेशान हुए बिना प्रतिवाद किया, "भगवान तुझे सलामत रखे, बुढ़ऊ! यह लगाम खनक रही है, न कि पचास कोपेक।"

"अच्छा," मैंने बहस को रोकते हुए कहा, "मेरी ओर से उसे धन्यवाद देना, जिसने तुम्हें भेजा है; और गिरा हुआ सिक्का रास्ते में ढूँढ़ने की कोशिश करना और अपने पास रख लेना, वोद्का के लिए।"

"बहुत बहुत शुक्रिया, हुजूर," उसने अपना घोड़ा मोड़ते हुए कहा, "ज़िन्दगी भर आपके लिए दुआएँ माँगूँगा।" इतना कहकर एक हाथ से जेब को सँभाले हुए उसने घोड़े को एड़ लगाई और एक ही मिनट में आँखों से ओझल हो गया।

मैंने कोट पहन लिया और अपने पीछे सावेलिच को बिठाए घोड़े पर सवार हो गया। "देख रहे हो न मालिक," बूढ़े ने कहा, "मैंने यूँ ही उस बदमाश को अर्ज़ी नहीं दी थी : चोर को शरम तो आयी, हालाँकि यह ऊँचा, दुबला बाश्कीरी घोड़ा और भेड़ की ख़ाल का कोट उसके आधे के बराबर भी नहीं है, जो वह उचक्के हमसे लूटकर ले गये, और जो तुमने उसे भेंट में दिया था; फिर भी चलो, काम चल जाएगा, ख़ूँख़ार कुत्ते से कम-से-कम रोंए तो मिले।

10

शहर की घेराबन्दी

क़ब्ज़ा कर मैदानों और पहाड़ों पर,
ऊपर से तब देखा उसने गरुड़ दृष्टि से नगर को
तम्बू के पीछे फैलाई सारी सेना और हथियार
रात हुई तो उन्हें छिपाकर शहर में लाया।

—हेरास्कोव

आरेनबुर्ग के निकट आते हुए, हमने बेड़ियाँ पहने क़ैदियों की भीड़ देखी, जिनके सिर मुँडे हुए थे और चेहरे जल्लादों की चिमटियों द्वारा कुरूप बना दिये गये थे। वे गारद के अपाहिज़ों की देखरेख में सुरक्षा पंक्तियों के निकट काम कर रहे थे। कुछ गाड़ियों में भर-भर कर खाई में भर चुका कूड़ा करकट बाहर ला रहे थे; दूसरे फावड़ों से ज़मीन खोद रहे थे; प्राचीर पर मिस्त्री पत्थर ढो-ढोकर ला रहे थे और शहर की दीवार की मरम्मत कर रहे थे। द्वार के निकट पहरेदारों ने हमें रोका और हमारे पासपोर्ट माँगे। जैसे ही सार्जंट ने सुना कि मैं बेलागोर्स्काया दुर्ग से आ रहा हूँ, वह मुझे सीधे जनरल के घर ले गया।

मैंने उसे बग़ीचे में पाया। वह शिशिर की साँसों से नंगे हो चुके सेब के पेड़ों को देख रहा था, और बूढ़े माली की सहायता से उन्हें गर्माहट देनेवाले भूसे से ढाँप रहा था। उसके चेहरे पर शान्ति, तन्दुरुस्ती और सहृदयता झलक रही थी। मुझे देखकर वह खुश हुआ और उन भयानक घटनाओं के बारे में पूछने लगा, जिनका मैं साक्षी था। मैंने उसे सब कुछ बता दिया। बूढ़ा बड़े ध्यान से मेरी बातें सुन रहा था और इसी के साथ सूखी टहनियाँ भी काटता जा रहा था।

"बेचारा मिरोनोव!" उसने कहा, जब मैंने अपनी दुःख भरी दास्तान ख़त्म की," उसके लिए अफ़सोस है : अच्छा अफ़सर था। और मैडम मिरोनोवा भली औरत थीं और खुम्मियों का अचार बनाने में तो उनका कोई जवाब ही न था। और माशा, कप्तान की बेटी, उसका क्या हुआ?" मैंने जवाब दिया कि वह क़िले में ही पादरी के संरक्षण में है।

"हाय, हाय, हाय!" जनरल बोले, "यह बुरा हुआ, बहुत बुरा। डाकुओं के अनुशासन पर कभी भी भरोसा नहीं किया जा सकता। बेचारी ग़रीब लड़की का क्या होगा?" मैंने जवाब दिया, कि बेलागोर्स्काया का क़िला दूर नहीं है और यह कि शायद, महानुभाव उसके ग़रीब निवासियों को स्वतन्त्र करवाने के लिए फ़ौज भेजने में देर नहीं करेंगे। जनरल ने अविश्वास की भावना से सिर हिलाया।

"देखेंगे, देखेंगे," उसने कहा, "इसके बारे में हम और बात करेंगे। अब मेरे यहाँ चाय पर आने की विनती करता हूँ, आज मेरे यहाँ सैनिक समिति की बैठक है। तुम हमें उस नालायक़ पुगाचोव और उसकी फ़ौज के बारे में विश्वसनीय जानकारी दे सकते हो। अब जाओ, कुछ देर आराम कर लो।"

मैं उस फ़्लैट में पहुँचा जो मुझे दिया गया था, जहाँ सावेलिच इन्तज़ाम कर रहा था, और बेसब्री से नियत समय का इन्तज़ार करने लगा। पाठक आसानी से कल्पना कर सकता है, कि मैंने उस सभा में जाने में देरी नहीं कि, जिसका मेरे भाग्य पर गहरा असर होनेवाला था। नियत समय पर मैं जनरल के यहाँ मौजूद था।

मैंने उसके यहाँ शहर के एक अफ़सर को देखा, शायद, चुंगी का डाइरेक्टर था, मोटा और लाल-लाल गालोंवाला, किमखाब का कफ़्तान पहने हुए था। वह मुझसे इवान कुज़्मिच के हश्र के बारे में पूछने लगा, जिसे उसने अपना दोस्त कहा, बीच-बीच में वह मुझे टोकता जाता अतिरिक्त सवाल पूछते हुए तथा उपदेशात्मक टिप्पणियाँ करते हुए, जो उसके युद्ध सम्बन्धी ज्ञान पर प्रकाश तो नहीं डालती थी, मगर कम से कम उसकी समझदारी और जन्मजात बुद्धिमत्ता की ओर ज़रूर इंगित करती थीं। इसी बीच अन्य आमन्त्रित भी आ गये। उनके बीच, जनरल को छोड़कर एक भी फ़ौजी नहीं था। जब सभी बैठ गये और सबके लिए एक-एक प्याली चाय लायी गयी, तो जनरल ने बड़ी स्पष्टता एवं विस्तार से बताया कि परिस्थिति क्या है।

"अब, महानुभावो," उसने आगे कहा, "हमें यह निर्णय लेना है कि विद्रोहियों

के ख़िलाफ़ हमें कैसी चाल चलनी है—आक्रामक या रक्षात्मक? इनमें से हरेक के अपने-अपने गुण एवं दोष हैं। आक्रामक चाल दुश्मन का शीघ्र ख़ात्मा कराने की आशा बँधाती है; रक्षात्मक कार्रवाई ज़्यादा विश्वसनीय एवं सुरक्षित है...तो, नियमपूर्वक हम सभी की राय लेंगे, याने कि शुरू करेंगे पद की दृष्टि से कनिष्ठतम अधिकारी से, लेफ़्टिनेंट महाशय!" मेरी ओर देखकर उसने आगे कहा, "कृपया हमें अपनी राय बताइए।"

मैं उठा और संक्षेप में पहले पुगाचोव एवं उसके गिरोह का वर्णन करके ज़ोर देकर बोला कि स्वनामित सम्राट के पास समुचित हथियारों का मुक़ाबला करने की कोई व्यवस्था नहीं है।

मेरा विचार अफ़सरों को स्पष्टतः पसन्द नहीं आया। उन्हें उसमें जल्दबाज़ी तथा एक युवक की धृष्टता नज़र आयी। खुसर-फुसर होने लगी और मैंने स्पष्ट रूप से किसी को कहते सुना, "दूध पीता बच्चा।"

जनरल मेरी ओर देखकर मुस्कुराते हुए बोला, "लेफ़्टिनेंट महाशय! किसी भी युद्ध परिषद में प्रारम्भिक मत अक्सर आक्रामक कार्रवाई के पक्ष में दिये जाते हैं : यह नियम ही है। अब हम औरों की राय जानेंगे। श्रीमान कौंसिलर! अपनी राय दीजिए!"

किमखाब का अँगरखा पहने वृद्ध ने जल्दी से चाय की तीसरी प्याली, जिसमें काफ़ी 'रम' मिलाई गयी थी, ख़त्म की और जनरल को जवाब दिया, "मैं सोचता हूँ, हुज़ूर कि हमें न तो आक्रामक और न ही रक्षात्मक चाल चलनी चाहिए।"

"ऐसा कैसे हो सकता है, कौंसिलर साहब?" विस्मित जनरल ने विरोध किया, "अन्य कोई चाल रणनीति में है ही नहीं; कार्रवाई या तो रक्षात्मक होगी या आक्रामक..."

"हुज़ूर, ख़रीदनेवाली चाल चलिए।"

"ऐ, हे, हे...! आपका विचार बहुत अच्छा है। ख़रीदने वाली चाल की रणनीति भी अनुमति देती है, और हम आपकी सलाह मानेंगे। उस निठल्ले के सिर की क़ीमत लगानी होगी...सत्तर रूबल या फिर सौ भी... गुप्त कोष से..."

"और तव," चुंगी डाइरेक्टर ने कहा, "अगर ये चोर अपने सरदार को हाथ-पैर बाँधकर हमारे सुपुर्द न कर दें तो मुझे कौंसिलर के बदले किर्गिज़ी भेड़ कह लेना।"

"हम इस बारे में कुछ सोच विचार और चर्चा करेंगे।" जनरल ने उत्तर दिया, "मगर फिर भी हर हाल में, सैनिक उपाय तो करने ही होंगे। महाशय, नियमानुसार अपनी-अपनी राय दीजिए।"

सभी मत मेरे मत के विपरीत थे। सभी अधिकारी फ़ौजों पर भरोसा न करने की, सफलता की अविश्वसनीयता की, सावधानी इत्यादि की बात कर रहे थे। सभी का विचार था कि खुले मैदान में हथियारों को आज़माने के सुख के बजाय मज़बूत

पथरीली दीवार के पीछे तोपों की छाया में रहना कहीं अधिक उचित है।

अन्त में जनरल ने, सभी की राय सुनकर, पाइप से राख झाड़ी और कहा, "महानुभावो! मुझे कहना होगा, कि अपनी ओर से मैं लेफ़्टिनेंट महोदय की राय से पूरी तरह सहमत हूँ, क्योंकि यह राय असली रणनीति के सभी नियमों पर आधारित है, जो हमेशा आक्रामक कार्रवाई को रक्षात्मक कार्रवाई से बेहतर मानती है।"

इतना कहकर वह रुक गया और अपना पाइप भरने लगा। मेरा स्वाभिमान जीत गया था। मैंने गर्व से अफ़सरों की ओर देखा, जो परेशानी और नाख़ुशी से आपस में कानाफ़ूसी कर रहे थे।

"मगर महानुभावो," उसने गहरी साँस लेकर तम्बाकू का गहरा धुआँ छोड़ने के बाद कहा, "मगर जब बात महान साम्राज्ञी, मेरी कृपालु महारानी द्वारा मेरे हाथों में सौंपे गये प्रान्तों की सुरक्षा की हो, तब मैं अपने ऊपर इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता। इसलिए मैं बहुमत की राय से सहमति प्रकट करता हूँ, जिसने निर्णय लिया है कि सबसे अधिक अक़्लमन्दी का और सुरक्षित मार्ग यह है कि शहर के भीतर रहकर घेरे का इन्तज़ार किया जाए, और दुश्मन के आक्रमणों का जवाब गोलाबारी से और (यदि सम्भव हो तो) धावा बोलकर दिया जाए।"

अब अधिकारियों ने उपहासपूर्ण दृष्टि से मेरी ओर देखा। परिषद की बैठक समाप्त हुई। मुझे आदरणीय जनरल की दुर्बलता पर अफ़सोस हुआ, जिसने अपने विश्वास के विपरीत उन लोगों की राय मानने का निर्णय लिया, जो युद्ध के मामलों में अनुभवहीन और उनसे अनजान थे।

इस महत्त्वपूर्ण बैठक के कुछ दिनों बाद हमें पता चला कि पुगाचोव, अपने वादे के मुताबिक़, ओरेनबुर्ग के निकट आ रहा है। मैंने शहर के परकोटे की दीवार की ऊँचाई से विद्रोहियों की सेना को देखा। मुझे ऐसा लगा, कि पिछले आक्रमण के मुक़ाबले में, जिसका मैं गवाह था, उनकी संख्या दस गुना अधिक हो गयी है। उनके साथ तोपख़ाना भी था, जिसे पुगाचोव ने अपने अधीन कर लिए गये छोटे-छोटे दुर्गों से ले लिया था। परिषद के निर्णय को स्मरण करके, मैंने अनुमान लगाया कि लम्बे समय तक ओरेनबुर्ग की दीवारों के भीतर बन्द रहना होगा और मैं अवसाद से रोने-रोने को हो गया।

ओरेनबुर्ग के घेरे का वर्णन नहीं करूँगा, जो पारिवारिक संस्मरणों की नहीं, बल्कि इतिहास की धरोहर है। संक्षेप में इतना कहूँगा, कि यह घेराबन्दी स्थानीय अधिकारियों की असावधानी के कारण दुर्गवासियों के लिए, जिन्होंने भूख एवं हर सम्भव आपदा को सहा, विनाशकारी सिद्ध हुई। बड़ी आसानी से कल्पना की जा सकती है कि ओरेनबुर्ग के भीतर का जीवन असहनीय था। सभी खिन्नतापूर्वक अपने भाग्य के फ़ैसले की बाट जोह रहे थे, सभी हैरान थे महँगाई से, जो सचमुच बहुत भयानक थी। दुर्गवासियों को तोप के गोलों के आदत हो गयी थी, जो कभी भी उनके

आँगन में आकर गिरते थे, पुगाचोव के आक्रमणों के लिए भी अब आम दिलचस्पी नहीं रह गयी थी। मैं ऊब के मारे मरा जा रहा था। समय बीता जा रहा था। बेलागोर्स्काया क़िले से पत्र मुझे नहीं मिलते थे। सभी रास्ते कटे हुए थे। मारिया इवानोव्ना से जुदाई मैं बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। उस पर क्या बीती, यह न जानने की वजह से मैं बड़ा दुःखी था। मेरे दिल बहलाव का एक ही मार्ग था, घुड़सवारी। पुगाचोव की मेहरबानी से मेरे पास एक अच्छा घोड़ा था। जिसके साथ मैं अपनी ज़रा-सी खुराक बाँट लेता और जिस पर सवार होकर मैं पुगाचोव के घुड़सवारों पर गोलीबारी करने के लिए रोज़ शहर से बाहर निकल पड़ता। इस गोलीबारी में अक्सर दुश्मनों का ही पलड़ा भारी रहता, जो ख़ूब खाए, ख़ूब पिये रहते थे, जिनके घोड़े भी बढ़िया थे। शहर का मरियल घोड़ा उनका मुक़ाबला न कर सकता। कभी-कभी मैदान में हमारी भूखी पैदल सेना भी निकल पड़ती, मगर बर्फ़ की गहराई बिखरे हुए घुड़सवारों पर आक्रमण करने में बाधा डालती। तोपें क़िले की फ़सील की ऊँचाई से बेकार ही गरजा करतीं, मगर मैदान में घोड़ों की दुर्बलता के कारण धँस जातीं और आगे न बढ़ पातीं। ऐसा था नमूना हमारी फ़ौजी कार्रवाई का! और इसी को ओरेनबुर्ग के अफ़सर कहते थे बुद्धिमत्तापूर्ण और सावधानीपूर्ण!

एक बार जब हम काफ़ी बड़े झुंड को बिखेरेने और खदेड़ने में कामयाब हो गये, तो मैं एक कज़ाक पर झपटा, जो अपने साथियों से पीछे रह गया था; मैं उस पर अपनी तुर्की तलवार से वार करने ही वाला था कि उसने अपनी टोपी उतारी और चिल्लाया, "नमस्ते, प्योत्र अन्द्रेइच। खुदा की मेहरबानी तो है?"

मैंने मुड़कर देखा और हमारे सार्जंट को पहचान गया। कह नहीं पाऊँगा कि उसे देखकर मुझे कितनी ख़ुशी हुई।

"नमस्ते, मक्सीमिच," मैंने उससे कहा, "क्या काफ़ी दिन हो गये, बेलागोर्स्काया से आये?"

"हाल ही में आया हूँ, हुज़ूर प्योत्र अन्द्रेइच; कल ही वापस आया हूँ। आपके लिए ख़त है।"

"कहाँ है?" मैं उत्तेजना से चीख़ा।

"मेरे पास," कुर्ते की भीतरी जेब में हाथ डालते हुए मक्सीमिच ने जवाब दिया। मैंने पलाशा से वादा किया था कि उसे किसी तरह आप तक पहुँचा दूँगा। उसने तह किया हुआ काग़ज़ मुझे दिया और फ़ौरन घोड़े को एड़ लगा दी। मैंने उसे खोला और धड़कते दिल से पढ़ा :

> "भगवान की यही मर्ज़ी थी कि उसने अचानक मुझे माँ-बाप से महरूम कर दिया : अब इस धरती पर मेरा न तो कोई रिश्तेदार है, न ही कोई आश्रयदाता। आपके पास आयी हूँ, यह जानते हुए कि आपने हमेशा मेरा भला चाहा है, और आप हर इन्सान की मदद करने के लिए तैयार हैं। भगवान से प्रार्थना करती

हूँ कि यह ख़त किसी तरह आपके पास पहुँच जाए। मक्सीमिच ने वादा किया है कि इसे आप तक पहुँचा देगा। पलाशा ने भी मक्सीमिच से सुना है कि वह आपको अक्सर क़िले से बाहर कार्रवाई करते हुए देखता है और यह भी कि आप बिलकुल भी अपना ख़याल नहीं रखते हैं और उनके बारे में नहीं सोचते, जो आँखों में आँसू भरकर ईश्वर से आपके लिए प्रार्थना करते हैं। मैं लम्बे अर्से तक बीमार रही, और जब ठीक हुई तो अलेक्सेइ इवानोविच ने, जो यहाँ स्वर्गीय पिताजी के स्थान पर कमांडर बना है, पादरी गेरासिम को पुगाचोव का डर दिखाकर मजबूर कर दिया कि वे मुझे उसे सौंप दें। मैं अपने घर में पहरे में रहती हूँ। अलेक्सेइ इवानोविच मुझे उससे शादी करने पर मजबूर कर रहा है। वह कहता है, कि उसने मेरी ज़िन्दगी बचाई है, क्योंकि अकुलीना पाम्फिलोव्ना का झूठ छिपाया, जिसने दुष्टों से यह कहा था कि मैं उसकी भतीजी हूँ। और मुझे तो ऐसे आदमी की बीवी बनने से, जैसा अलेक्सेइ इवानोविच है, मरना ज़्यादा आसान लगता है। वह मुझसे बड़ी क्रूरता का व्यवहार करता है और धमकी देता है कि अगर मैं सब कुछ सोचकर उसकी बात पर राज़ी न हुई तो वह मुझे दुश्मन के तंबू में ले जाएगा, और मेरे साथ वही होगा जो एलिजाबेथ कार्लोवा[1] के साथ हुआ था। मैंने अलेक्सेइ इवानोविच से कहा है कि मुझे सोचने के लिए समय दे। वह और तीन दिन इन्तज़ार करने के लिए मान गया है : और अगर तीन दिनों के बाद उससे शादी न करूँगी, तो किसी भी तरह की दया वह न दिखाएगा। प्यारे प्योत्र अन्द्रेइच! आप एक ही मेरे सहारे हैं; मुझ ग़रीब की मदद कीजिए। जनरल से और सभी कमांडरों से कहिए कि जल्दी से हमारे यहाँ सेना भेजें, और आप खुद ही आ जाइए, अगर हो सके तो।

आपकी आज्ञाकारिणी ग़रीब अनाथ—मारिया मिरोनोवा।"

यह ख़त पढ़कर मैं तो पागल ही हो गया। मैं अपने बेचारे घोड़े की लगाम बड़े बेरहमी से खींचते हुए शहर की ओर लपका। रास्ते में मैं बेचारी दुखिया लड़की की मुक्ति की कई तरकीबें सोचता रहा, और किसी भी एक तरकीब को पूरी तरह न सोच सका। शहर में घुसकर मैं सीधे जनरल की ओर लपका और फ़ौरन उसके घर में घुसा।

जनरल कमरे में चहलक़दमी करते हुए अपना फेनिंग पाइप पी रहा था। मुझे देखकर वह रुक गया। शायद मेरा हुलिया उसे हैरान कर गया; उसने अपनेपन से मेरे इस तरह बेतहाशा भागकर आने की वजह पूछी।

"हुजूर," मैंने उससे कहा, "आपको अपना पिता समझकर आपके पास भागकर

---

1. नीझ़ूनेओज़ोर्नाया के मेजर कार्लोव की युवा पत्नी। पुगाचोव ने मेजर को सूली पर लटका दिया था, और उसकी पत्नी की सुन्दरता पर मोहित होकर उसे अपने पास रख लिया।

आया हूँ; भगवान के लिए मेरी प्रार्थना को न ठुकराइए : सवाल मेरी पूरी ज़िन्दगी की ख़ुशी का है।"

"क्या बात है प्यारे?" विस्मित बूढ़े ने पूछा, "मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ? बोलो।"

"महाशय, मुझे सैनिकों की एक टुकड़ी और पचास कज़ाक देकर बेलागोर्स्काया दुर्ग से दुश्मनों का सफ़ाया करने की आज्ञा दें।"

जनरल ने एकटक मेरी ओर देखा, शायद, यह समझते हुए कि मेरा दिमाग़ चल गया है (उसका अनुमान क़रीब-क़रीब सही था)।

"यह कैसे? बेलागोर्स्काया के दुर्ग की सफ़ाई?" आख़िरकार उसने कहा।

"कामयाबी का वादा करता हूँ।" मैंने उत्तेजनापूर्वक कहा, "सिर्फ़ मुझे जाने दीजिए।"

"नहीं, नौजवान," उसने सिर हिलाते हुए कहा, "इतनी दूरी पर दुश्मन के लिए युद्ध के मुख्यालय से आपका सम्बन्ध काटकर, आप पर विजय पाना बहुत आसान होगा। कटा हुआ सम्पर्क..."

उसे युद्ध विषयी तर्कों में डूबा देखकर मैं घबरा गया और फ़ौरन उसे काटते हुए बोला, "कप्तान मिरोनोव की बेटी," मैंने उससे कहा, "मुझे ख़त लिख रही है : वह मदद माँग रही है; श्वाब्रिन उसे अपने से शादी करने पर मजबूर कर रहा है।"

"सचमुच? ओह, यह श्वाब्रिन बड़ा धूर्त है और अगर वह मेरे हाथों पड़ जाए तो मैं चौबीस घंटों के भीतर उसका कोर्ट मार्शल करने की आज्ञा दूँगा, और हम क़िले की दीवार के ऊपर खड़ा करके उसे गोली मार देंगे। मगर तब तक सब्र करना होगा..."

"सब्र करना होगा।" मैं बेक़ाबू होकर चीख़ा, "और तब तक वह मारिया इवानोव्ना से शादी कर लेगा!..."

"ओ!..." जनरल ने प्रतिवाद किया, "यह तो कोई बुरी बात नहीं है—बेहतर है कि अभी वह श्वाब्रिन की बीवी बन जाए; फ़िलहाल वह उसे सुरक्षा प्रदान कर सकता है; और जब हम उसे मार डालेंगे, तब, भगवान ने चाहा तो वर भी मिल जाएँगे। प्यारी विधवाएँ अनब्याही नहीं रहतीं, मतलब, मैं यह कहना चाहता था कि कुँआरी लड़की के बजाय विधवा को जल्दी ही दूल्हा मिल जाता है।"

"मैं मर जाना पसन्द करूँगा," मैं पागलों की तरह चीख़ा, "बजाय इसके कि उसे श्वाब्रिन के लिए छोड़ दूँ!"

"बा, बा, बा, बा!" बूढ़े ने कहा, "अब समझ रहा हूँ, तुम ज़ाहिर है, मारिया इवानोव्ना से प्यार करते हो। ओऽ, तब दूसरी बात है! बेचारा नौजवान! मगर फिर भी मैं किसी भी हालत में तुम्हें सैनिकों की टुकड़ी और पचास कज़ाक नहीं दे सकता। यह अभियान पागलपन वाला होगा; मैं अपने ऊपर उसकी ज़िम्मेदारी नहीं ले सकता।"

मैंने सिर झुका लिया, घोर निराशा ने मुझे दबोच लिया। अचानक मेरे दिमाग़

में एक ख़याल कौंधा, वह क्या था, यह पाठक जानेंगे अगले अध्याय में, जैसा कि पुराने उपन्यासकार कहा करते थे।

11

विद्रोहियों का गाँव

उस समय शेर तृप्त था, हालाँकि स्वभाव से वह डरावना है।
"मेरी माँद में आने की कैसे तकलीफ़ की?"
उसने पूछा प्यार से।

—ए. सुभारोकोव

मैं जनरल को छोड़कर अपने फ़्लैट में आया। सावेलिच हमेशा की तरह मुझे नसीहत देने लगा, "तुम्हें तो शौक़ है, मालिक, पियक्कड़ लुटेरों से मिलने का! क्या यह सामन्तों का काम है? समय अच्छा नहीं है, बेकार में मारे जाओगे। इससे तो बेहतर होता कि तुर्की या श्वेदों पर हमला करते, वर्ना कहना भी गुनाह है कि किस पर चढ़े जाते हो।" मैंने उसकी बात बीच ही में यह पूछते हुए काट दी, कि उसके पास कुल कितने पैसे हैं?

"काफ़ी है," उसने ख़ुशी से कहा, "बदमाशों ने कितना ही क्यों न छान मारा, मैंने फिर भी छिपा ही लिए।" इतना कहकर उसने जेब से बुना हुआ लम्बा बटुआ निकाला, जो चाँदी के सिक्कों से भरा था।

"अच्छा सावेलिच," मैंने उससे कहा, "अभी मुझे इसमें से आधा दे दो, और बाक़ी का ख़ुद रख लो। मैं बेलागोर्स्काया के क़िले में जा रहा हूँ।"

"मालिक प्योत्र अन्द्रेइच!" मेरे भले चचा ने काँपती हुई आवाज़ में कहा, "भगवान से डरो; इस समय तुम कैसे सफ़र कर सकते हो, जब लुटरों से बचकर कहीं भी जा नहीं सकते, अगर अपनी फ़िक्र नहीं है, तो कम-से-कम अपने माता-पिता पर तो दया करो। कहाँ जाना है तुम्हें? किसलिए? थोड़ा रुक जाओ, फ़ौजें आएँगी, बदमाशों को गिरफ़्तार करेंगी, तब फिर कहीं भी चले जाना।"

मगर मेरा इरादा पक्का था।

"अब बहस करने का वक़्त नहीं रहा," मैंने बूढ़े को जवाब दिया, "मुझे जाना ही होगा, बग़ैर जाए रह नहीं सकता। दुःखी न हो, सावेलिच; ईश्वर दयालु है, शायद, हम फिर से मिलेंगे! देखो, संकोच न करना और कंजूसी भी मत करना। जो भी मर्ज़ी हो, ख़रीद लेना, चाहे कितना ही महँगा हो। ये पैसे मैं तुम्हें दे रहा हूँ। अगर तीन दिन बाद मैं वापस न लौटा..."

"क्या कह रहे हो, मालिक?" सावेलिच ने मुझे टोका, "क्या मैं तुम्हें अकेले जाने दूँगा! सपने में भी ऐसी बात न कहना। अगर तुमने जाने का फ़ैसला कर ही लिया है, तो मैं, चाहे पैदल ही क्यों न चलना पड़े, तुम्हारे पीछे-पीछे आऊँगा, तुम्हें छोड़ूँगा नहीं। तुम्हारे बग़ैर मैं पत्थर की दीवार के पीछे बैठूँगा! क्या मैं पागल हो गया हूँ? मर्ज़ी तुम्हारी, मालिक, मगर मैं तुमसे दूर न रहूँगा।"

मैं जानता था कि सावेलिच से बहस करना बेकार है और उससे सफ़र की तैयारी करने के लिए कह दिया। आधे घंटे बाद मैं अपने भले घोड़े पर बैठा था, और सावेलिच दुबले-पतले और लँगड़े घोड़े पर, जो उसे शहर के एक आदमी ने इसलिए मुफ़्त में दे दिया था, क्योंकि उसके पास उसे खिलाने के लिए कुछ नहीं था। हम शहर के द्वार तक आये; सन्तरियों ने हमें जाने दिया; हम ओरेनबुर्ग से बाहर निकले।

अँधेरा घिरने लगा था। मेरा रास्ता बेर्दा गाँव से होकर जाता था, जो पुगाचोव का अड्डा था। सीधा रास्ता बर्फ़ से ढँका हुआ था; मगर पूरी स्तेपी में हर दिन नये बननेवाले घोड़ों की टापों के निशान थे। मैं सरपट चला जा रहा था। सावेलिच बड़ी मुश्किल से दूर ही से मेरे पीछे-पीछे आ रहा था और हर पल चिल्ला रहा था; "धीरे, मालिक, भगवान के लिए धीरे। मेरा नासपीटा मरियल घोड़ा तुम्हारे लम्बी टाँगों वाले शैतान की बराबरी नहीं कर सकता। कहाँ भागे जा रहे हो? अगर जश्न मनाने जाते, तो कोई बात भी थी, मगर तुम तो मरने के लिए जा रहे हो, देखो, देखो...प्योत्र अन्द्रेइच...प्यारे प्योत्र अन्द्रेइच!...मत मारो मुझे!...हे भगवान, मालिक का बेटा मर जाएगा।"

शीघ्र ही बेर्दा की बत्तियाँ दिखाई दीं। हम खाइयों की ओर बढ़े जो गाँव की प्राकृतिक सुरक्षा पंक्तियाँ थीं। अपनी दयनीय प्रार्थनाओं को कहते-कहते सावेलिच मुझसे पिछड़ नहीं रहा था। मुझे उम्मीद थी कि गाँव को सही-सलामत पार कर लूँगा, कि अचानक साँझ के झुटपुटे में अपने सामने पाँच आदमियों को देखा, जो डंडों से लैस थे—यह पुगाचोव के अड्डे की प्रथम चौकी के सन्तरी थे। हमें आवाज़ दी गयी। संकेत शब्द न जानने के कारण मैंने चुपचाप उनके सामने से गुज़रने की ठानी, मगर उन्होंने मुझे फ़ौरन घेर लिया, और एक ने तो मेरे घोड़े की लगाम पकड़ ली। मैंने तलवार निकाली और उस आदमी के सिर पर वार किया; टोपी ने उसे बचा लिया, हालाँकि वह लड़खड़ाया और उसके हाथों से लगाम छूट गयी। बाक़ी लोग घबराकर भाग गये; मैंने इस क्षण का फ़ायदा उठाया, घोड़े की रास खींची, और एड़ लगा दी।

निकट आ रही रात का अँधेरा मुझे हर तरह की आपत्ति से बचा सकता था, कि तभी, मुड़कर देखने पर मैंने महसूस किया कि सावेलिच मेरे साथ नहीं है। बेचारा बूढ़ा, अपने लँगड़े घोड़े पर डाकुओं को चकमा न दे सका। क्या करना चाहिए? कुछ मिनट राह देखकर और यह भरोसा करके कि उसे रोक लिया गया है, मैंने घोड़े को मोड़ा और उसे छुड़ाने चल पड़ा।

खाई के निकट पहुँचते हुए मुझे दूर से शोर, चीखें और मेरे सावेलिच की आवाज़ सुनाई दी। मैं शीघ्रता से चला और जल्दी ही सन्तरियों के बीच पहुँच गया, जिन्होंने कुछ मिनट पहले मुझे रोका था। सावेलिच उनके बीच में था। वे बूढ़े को उसके घोड़े से नीचे खींचकर उसके हाथ-पैर बाँध रहे थे। मेरे पहुँचने से वे ख़ुश हो गये। वे चिल्लाते हुए मुझ पर टूट पड़े और पलभर में मुझे घोड़े से नीचे खींच लिया। उनमें से एक ने जो शायद उनका प्रमुख था, हमसे कहा कि अब हमें अपने सरकार के पास ले जाएगा, "और हमारा मालिक," उसने आगे जोड़ा, "जब मर्ज़ी हो आज्ञा देगा : तुम्हें अभी सूली पर टाँग देना है, या उजाले का इन्तज़ार करना है।" मैंने विरोध नहीं किया; सावेलिच ने मेरा अनुकरण किया, और सन्तरी समारोहपूर्वक हमें ले चले।

हमने खाई पार की और गाँव में घुसे। सभी झोंपिड़यों में बत्तियाँ जल रही थीं। चारों ओर शोर और चीख़-पुकार का वातावरण था। रास्ते में मुझे कई लोग मिले, मगर किसी ने भी अँधेरे में हमें नहीं देखा और न मुझे ओरेनबुर्ग के अफ़सर के रूप में पहचाना। हमें सीधे एक झोंपड़ी की ओर ले जाया गया, जो चौराहे के एक कोने पर थी। दरवाज़े के पास शराब के कई पीपे और दो तोपें थीं।

"यह रहा महल" उन आदमियों में से एक ने कहा, "अभी आपके बारे में बताएँगे।" वह झोंपड़ी में गया। मैंने सावेलिच की ओर देखा : बूढ़ा सलीब का निशान बना रहा था, और मन-ही-मन प्रार्थना कर रहा था। मैंने काफ़ी देर इन्तज़ार किया, आख़िरकार आदमी लौटा और मुझसे बोला, "जाओ, हमारे मालिक ने अफ़सर को अन्दर छोड़ने का हुक्म दिया है।"

मैं झोंपड़ी में घुसा, याने कि महल में, जैसा वे सन्तरी कह रहे थे। वह दो चर्बी की मोमबत्तियों से प्रकाशित थी, और दीवारों पर सुनहरा काग़ज़ चिपकाया गया था; वैसे बेंचें, मेज़, रस्सी से लटकती चिलमची, कील से टँगा तौलिया, कोने में रखा चिमटा और अलाव के सामने चौड़ी पट्टी पर रखे हुए मिट्टी के वर्तन सभी कुछ साधारण झोंपड़े जैसा ही था। पुगाचोव प्रतिमाओं के नीचे वैठा था, लाल कफ़्तान और ऊँची टोपी पहने, शान से कूल्हों पर हाथ रखे। उसके निकट उसके कुछ प्रमुख साथी खड़े थे, जो गुलामों जैसा कृत्रिम भाव ओढ़े थे। साफ़ नज़र आ रहा था कि ओरेनबुर्ग के अफ़सर के आने की ख़बर से विद्रोहियों के मन में तीव्र जिज्ञासा जाग उठी थी और वे बड़ा ठाठ-बाट दिखाते हुए मुझसे मिलना चाहते थे। पुगाचोव ने पहली ही नज़र में मुझे पहचान लिया। उसकी बनावटी शान एकदम ग़ायब हो गयी।

"आह, हुजूर!" उसने ज़िन्दादिली से मुझसे कहा, "कैसी कट रही है? यहाँ कैसे आये?" मैंने जवाब दिया कि मैं अपने काम से जा रहा था और उसके लोगों ने मुझे रोक लिया।

"किस काम से?" उसने मुझसे पूछा। मैं नहीं जानता था कि क्या जवाब दूँ। पुगाचोव ने, यह समझते हुए कि मैं औरों के सामने बताना नहीं चाहता, अपने साथियों

से बाहर जाने के लिए कहा। सभी ने आज्ञा का पालन किया, सिर्फ़ दो को छोड़कर जो अपनी जगह से टस से मस न हुए।

"उनके सामने निःसंकोच कहो," पुगाचोव ने मुझसे कहा, "इनसे मैं कुछ नहीं छिपाता।" मैंने कनखियों से स्वघोषित सम्राट के विश्वासपात्रों की ओर देखा। उनमें से एक, कमज़ोर, झुकी हुई पीठ और सफ़ेद दाढ़ी वाले बूढ़े में, कोई ख़ास बात नहीं थी, सिवाय भूरे कोट के ऊपर नीले पट्टे के, जो कन्धे से होकर जा रहा था। मगर उसके साथी को मैं कभी न भूलूँगा। वह लम्बे क़द का तगड़ा, चौड़े कन्धों वाला था, और मुझे लगभग चालीस वर्ष का प्रतीत हुआ। घनी लाल दाढ़ी, चमकीली, कंजी आँखें, नथुने रहित नाक और माथे तथा गालों पर लाल-लाल धब्बे उसके चौड़े, चेचकरु चेहरे को अजीब-सा भाव प्रदान कर रहे थे। वह लाल क़मीज़, किर्गीज़ी चोगा और कज़ाकी सलवार पहने था। पहला (जैसा कि मुझे बाद में पता चला) भगोड़ा डिप्टी कमांडेंट बेलाबोरोदोव था; दूसरा अफानासी सोकोलोव (जिसे ख़्लोपूशा कहते थे), निर्वासित अपराधी था, जो तीन बार साइबेरिया की खानों से भाग चुका था। मुझे परेशान करनेवाले विचारों के बावजूद, यह लोग, जिनके बीच मैं यूँ अचानक आ पड़ा था, मुझे काफ़ी दिलचस्प लगे। मगर पुगाचोव के प्रश्न ने मुझे झकझोर दिया, "बोलो, किस काम के लिए तुम ओरेनबुर्ग से बाहर आये थे?"

मेरे दिमाग़ में अजीब सा ख़याल आया; मुझे ऐसा लगा कि होनी ने जो मुझे दुबारा पुगाचोव के सामने ले आयी है, मुझे अपने इरादे को कारगर बनाने का मौक़ा दिया है। मैंने इसका फ़ायदा उठाने का निश्चय किया, और अपने फ़ैसले पर सोच-विचार किये बिना, पुगाचोव के सवाल का जवाब दे दिया, "मैं बेलागोर्स्काया एक अनाथ लड़की को मुक्त कराने जा रहा था, जिसे वहाँ अपमानित किया जा रहा है।" पुगाचोव की आँखों से आग बरसने लगी।

"मेरे आदमियों में से किसने यतीम लड़की का अपमान करने की हिम्मत की है?" वह चीख़ा, "चाहे वह कितना ही अक़्लमन्द क्यों न हो, मेरे इन्साफ़ से नहीं बच सकता। बोलो, कौन क़ुसूरवार है?"

"श्वाब्रिन दोषी है," मैंने जवाब दिया, "वह उस लड़की को क़ैद में डाले हुए है, जिसे तुमने बीमारी की हालत में पादरिन के यहाँ देखा था और ज़बर्दस्ती उससे शादी करना चाहता है।"

"मैं सबक़ सिखाऊँगा श्वाब्रिन को," पुगाचोव गरजा, "वह भी जान लेगा कि मनमानी करने और लोगों का अपमान करने का मेरे यहाँ क्या नतीजा होता है। मैं उसे सूली पर चढ़ा दूँगा।"

"मुझे कुछ कहने की इजाज़त दो," ख़्लोपूशा ने भर्रायी आवाज़ में कहा, "तुमने श्वाब्रिन को क़िले का कमांडेंट नियुक्त करने में जल्दबाज़ी की, और अब उसे सूली चढ़ाने में भी जल्दी कर रहे हो। तुमने पहले ही एक कुलीन को सरदार बनाकर

कज़ाकों की बेइज़्ज़ती की है, अब पहली ही शिकायत पर हत्या करके कुलीनों को तो न डराओ।"

"उनके लिए अफ़सोस करने की और उन पर दया करने की ज़रूरत नहीं है!" नीले पट्टे वाले बूढ़े ने कहा, "श्वाब्रिन को मार डालने में कोई ख़राबी नहीं है; और अफ़सर महाशय से तरीक़े से पूछताछ करने में भी कोई बुराई नहीं है; उसने तुमसे शिकायत क्यों की! अगर वह तुम्हें अपना सम्राट नहीं मानता है, तो तुमसे इन्साफ़ माँगने की कोई ज़रूरत नहीं है, और अगर मानता है तो वह आज तक तुम्हारे दुश्मनों के साथ ओरेनबुर्ग में क्यों बैठा है? उसे फ़ौजी दफ़्तर ले जाकर और वहाँ सलाख़ें गर्म करने को नहीं कहोगे? मुझे लगता है, कि इन महाशय को हमारे यहाँ ओरेनबुर्ग के कमांडरों ने भेजा है।"

बूढ़े बदमाश का तर्क मुझे बड़ा युक्ति संगत लगा। इस ख़याल से मेरे पूरे बदन पर चींटियाँ दौड़ने लगीं कि मैं किन लोगों के हाथ पड़ गया हूँ। पुगाचोव ने मेरी घबराहट भाँप ली।

"तो, हुज़ूर?" उसने मुझे आँख मारते हुए कहा, "मेरा फ़ील्ड मार्शल, शायद अक़्ल की बात कर रहा है। क्या ख़याल है?"

पुगाचोव की इस चुटकी से मेरा साहस लौट आया। मैंने शान्ति से जवाब दिया कि मैं उसके अधिकार में हूँ और वह मुझसे चाहे जैसा व्यवहार कर सकता है।

"ठीक है," पुगाचोव ने कहा, "अब यह बताओ कि तुम्हारे लोग किस हालत में हैं?"

"भगवान की दया से," मैंने जवाब दिया, "सब ठीक ठाक है।"

"ठीक ठाक है?" पुगाचोव ने दुहराया, "जबकि जनता भूख से मर रही है!"

झूठा सम्राट सच बोल रहा था; मगर वफ़ादारी की क़सम के चलते मैं उसे यक़ीन दिला रहा था, कि यह सब अफ़वाहें हैं और ओरेनबुर्ग में काफ़ी रसद है।

"तुम देख रहे हो," बूढ़े ने ज़ोर देकर कहा, "वह तुम्हारी आँखों में धूल झोंक रहा है। सभी भगोड़े एक सुर में कहते हैं कि ओरेनबुर्ग में भुखमरी और महामारी है, वहाँ जानवरों की लाशों को खा रहे हैं और उसे भी ख़ुदा की मेहरबानी समझते हैं; और हज़रत यह फ़रमा रहे हैं कि सब कुछ पर्याप्त मात्रा में है। अगर तुम श्वाब्रिन को सूली पर टाँगना ही चाहते हो तो उसी सूली पर इस नौजवान को भी टाँग दो, जिससे कि किसी को भी ईर्ष्या न हो।"

इस कमीने बूढ़े के शब्दों ने, लगता था, पुगोचोव को डाँवाडोल कर दिया। सौभाग्य से, ख्लोपूशा अपने साथी का विरोध करने लगा।

"बस बहुत हो चुका नाऊमिच," वह उससे बोला, "तुम्हें तो बस दबाने और काटने की ही पड़ी रहती है। कैसे सूरमा हो तुम? देखो, किसमें अटकी है इसकी जान!

ख़ुद तो क़ब्र में पैर लटकाए बैठे हो, और दूसरों की जान ले रहे हो। क्या तुम्हारी आत्मा पर ख़ून के धब्बे कम हैं?"

"और तुम, यह चापलूसी क्यों कर रहे हो?" बेलाबोरोदोव ने विरोध किया, "तुममें दया कहाँ से आ गयी?"

"बेशक," ख़्लोपूशा ने जवाब दिया, "मैं भी पापी हूँ और यह हाथ (उसने अपनी हडीली मुट्ठी भींच ली और, आस्तीन चढ़ाकर बालों से ढँका हुआ हाथ खोला), और यह हाथ भी ईसाइयों का ख़ून बहाने का गुनहगार है। मगर मैंने दुश्मनों को मारा है, न कि मेहमान को; खुले चौराहे पर, या फिर घने, अँधेरे जंगल में, न कि घर में, अलाव के पास बैठकर; फरसे और लट्ठ से न कि औरतों-जैसी शिकायतों से।"

बूढ़े ने मुँह फेर लिया और बुदबुदाया, "कटे नथुने।"

"तुम क्या फुसफुसा रहे हो, बूढ़े खूसट?" ख़्लोपूशा चिल्लाया, "मैं तुझे दिखाऊँगा कटे नथुने; ठहर जा, तेरा भी वक़्त आएगा; भगवान करे, तू भी जल्लाद की चिमटी सूँघे...और तब तक, देख कहीं मैं तेरी दाढ़ी न नोच लूँ।"

"जनरल महोदयो!" पुगाचोव ने बड़ी शान से कहा, "बस हो चुका झगड़ा। अगर ओरेनबुर्ग के सभी कुत्ते एक साथ ही सूली पर लटक जाएँ तो अफ़सोस की बात नहीं; मगर यदि हमारे कुत्ते एक-दूसरे को नोचने लगे तो बहुत बुरा होगा। बस, सुलह कर लो।"

ख़्लोपूशा और बेलाबोरोदोव ने एक भी शब्द नहीं कहा और एक-दूसरे की ओर ग़मज़दा नज़रों से देखते रहे। मैंने इस बातचीत को, जो मेरे लिए विनाशकारी हो सकती थी, बदलने की ज़रूरत समझी, और पुगाचोव की ओर देखकर प्रसन्नता से कहा, "आह! मैं तो तुम्हें घोड़े और कोट के लिए धन्यवाद देना ही भूल गया। तुम्हारी मदद के बग़ैर मैं शहर तक न पहुँच सकता था, रास्ते में ही जम जाता।" मेरा तीर निशाने पर बैठा। पुगाचोव ख़ुश हो गया।

"सूद चुका रहा हूँ।" उसने आँख मारते हुए और सिकोड़ते हुए कहा, "अब मुझे यह बताओ, तुम्हें उस लड़की से क्या मतलब है, जिसका श्वाब्रिन अपमान कर रहा है? कहीं जवां दिल की मेहबूबा तो नहीं? हाँ?"

"वह मेरी मंगेतर है," मैंने मौसम का ख़ुशनुमा रुख़ देखकर और सच छिपाने की ज़रूरत को न देखते हुए पुगाचोव से कहा।

"तुम्हारी मंगेतर!" पुगाचोव चीख़ा, "तुमने पहले क्यों नहीं बताया? हाँ हम तुम्हारा ब्याह करेंगे और तुम्हारी शादी में जश्न मनाएँगे!" फिर बेलोबोरोदोव की ओर मुड़कर उसने कहा, "सुनो, फ़ील्ड मार्शल! हम हुजूर के पुराने दोस्त हैं; आओ बैठो, खाना खाएँगे; शाम से सुबह भली! कल देखेंगे कि इसके साथ क्या करें।"

मैं तो इस सम्मान से इनकार करके बहुत ख़ुश होता, मगर कोई चारा नहीं था। दो कज़ाक युवतियों ने जो झोंपड़ी के मालिक की बेटियाँ थीं, मेज़ पर सफ़ेद मेज़पोश

बिछा दिया, डबल रोटी, ताज़ा मछली का शोरबा, शराब तथा बियर की कुछ सुराहियाँ ले आयीं और मैंने दूसरी बार स्वयं को पुगाचोव और उसके डरावने साथियों के दस्तरख़ान पर पाया।

यह जश्न, जिसका मैं अनिच्छा से प्रत्यक्षदर्शी था, देर रात तक चलता रहा। आख़िरकार उन पर नशा हावी होने लगा। पुगाचोव अपनी जगह पर बैठे-बैठे ऊँघने लगा; उसके साथी उठे और उन्होंने मुझे उसे अकेला छोड़ देने का इशारा किया। मैं उनके साथ ही बाहर निकला। ख़्लोपूशा के आदेश पर सन्तरी मुझे दफ़्तर वाली झोंपड़ी में ले गया, जहाँ मुझे सावेलिच भी मिल गया और मुझे उसी के साथ वहाँ बन्द कर दिया गया। चचा यह सब देखकर इतना चकित हो गया था, कि उसने मुझसे कुछ भी नहीं पूछा। वह अँधेरे में लेट गया और बड़ी देर तक गहरी साँसें लेता रहा और कराहता रहा; आख़िर में खर्राटे भरने लगा, और मैं ख़यालों में खो गया, जिन्होंने पूरी रात एक भी मिनट मुझे ऊँघने न दिया।

सुबह होते ही पुगाचोव का बुलावा आया। मैं उसके पास गया। उसके दरवाज़े पर गाड़ी खड़ी थी, जिसमें तीन तातारी घोड़े जुते हुए थे। सड़क पर लोगों की भीड़ जमा थी। ड्योढ़ी में ही मुझे पुगाचोव मिल गया; वह सफ़र की वेशभूषा में, कोट और किर्गिज़ी टोपी पहने हुए था। कल वाले साथी उसे घेरे हुए थे, चेहरों पर भय मिश्रित आदर का भाव लिए हुए, जो उस भाव से एकदम भिन्न था, जिसे मैं कल देख चुका था। पुगाचोव ने प्रसन्नता से मेरा अभिवादन किया और मुझसे अपने साथ गाड़ी में बैठने को कहा। हम बैठ गये।

"बेलागोर्स्काया क़िला!" पुगाचोव ने चौड़े कन्धों वाले तातारी से कहा, जो त्रोयका को हाँकने के लिए तैयार खड़ा था। मेरा दिल ज़ोर से धड़का। घोड़े चल पड़े, घंटी बज उठी, गाड़ी हवा से बातें करने लगी...

"रुको! रुको!" एक जानी-पहचानी आवाज़ आयी और मैंने सावेलिच को देखा, जो हमारी ओर भागकर आ रहा था। पुगाचोव ने रुकने का हुक्म दिया। "मालिक, प्योत्र अन्द्रेइच!" चचा चिल्लाया, "बुढ़ापे में मुझे छोड़कर न जाओ इन दु..."

"आह, खूसट बुड्ढे!" पुगाचोव ने उससे कहा, "भगवान ने फिर से मिला दिया। बैठो, सन्दूक़ पर।"

"शुक्रिया सरकार, शुक्रिया मेरे बाप!" सावेलिच ने बैठते हुए कहा, "भगवान तुम्हें सौ साल तक सलामत रखे, क्योंकि तुमने मुझ बूढ़े को चैन दिया और सुकून दिया। ज़िन्दगी भर ईश्वर से तुम्हारे लिए प्रार्थना करता रहूँगा, और ख़रगोश की खाल के कोट का कभी नाम भी न लूँगा।"

यह ख़रगोश की ख़ाल का कोट आख़िर पुगाचोव को ग़ुस्सा दिला सकता था। मगर सौभाग्य से या तो स्वघोषित सम्राट ने सुना नहीं या बेमौक़े का इशारा समझकर

ध्यान नहीं दिया। घोड़े सरपट दौड़ने लगे; रास्ते पर लोग रुककर कमर तक झुककर अभिवादन करते। पुगाचोव रास्ते के दोनों ओर सिर हिला देता था। एक मिनट बाद हम गाँव से निकले और समतल रास्ते पर चल पड़े।

यह कल्पना करना आसान है कि मैं इस समय क्या सोच रहा था। कुछ घंटों बाद मैं उससे मिलनेवाला था जिसे, अपने लिए खो चुका हुआ समझ रहा था। मैंने मिलन की घड़ी की कल्पना की...मैं उस आदमी के बारे में भी सोच रहा था, जिसके हाथों में मेरा भविष्य था और जो घटनाओं के विचित्र संजोग से मुझसे रहस्यमय ढंग से जुड़ा हुआ था। मैंने उसकी उतावली क्रूरता, ख़ून की प्यासी आदतों को याद किया, जो अब मेरी प्रियतमा का मुक्तिदाता बनने जा रहा था! पुगाचोव न जानता था कि वह कप्तान मिरोनोव की बेटी है; क्रुद्ध श्वाब्रिन उसे सब कुछ बता सकता था...तब मारिया इवानोव्ना के साथ क्या होगा? मेरे शरीर पर ठंडी लहर दौड़ गयी, और रोंगटे भय से खड़े हो गये...

अचानक पुगाचोव ने मेरे विचारों को भंग करते हुए मुझसे पूछा, "हुजूर क्या सोच रहे हैं?"

"कैसे न सोचूँ," मैंने उसे जवाब दिया, "मैं फ़ौजी अफ़सर और कुलीन हूँ; कल तुम्हारे ख़िलाफ़ लड़ रहा था और आज तुम्हारे साथ एक ही गाड़ी में जा रहा हूँ, और मेरे जीवन की ख़ुशी तुम पर निर्भर करती है।"

"तो?" पुगाचोव ने पूछा, "तुम्हें डर लग रहा है?"

मैंने जवाब दिया, "एक बार दया दिखाये जाने के बाद, मैं न केवल उससे रहम की, बल्कि मदद की भी आशा करता हूँ।"

"और तुम भी ठीक कह रहे हो, हे भगवान, सही हो!" नक़ली सम्राट ने कहा, "तुम देख ही चुके हो कि मेरे लोग तुम्हें शक से देख रहे थे; और बूढ़ा तो आज भी इस बात पर अड़ा हुआ था, कि तुम जासूस हो और तुमसे पूछताछ करके तुम्हें सूली पर चढ़ा देना चाहिए; मगर मैं राज़ी न हुआ," उसने आवाज़ नीची करते हुए कहा ताकि सावेलिच और तातारिन सुन न लें, "तुम्हारा ख़रगोश की ख़ाल का कोट और शराब का गिलास याद करके। तुम देखोगे कि मैं इतना भी ख़ून का प्यासा नहीं हूँ, जितना तुम्हारे भाई लोग मेरे बारे में कहते हैं।"

मुझे बेलागोर्स्काया के क़िले पर कब्ज़ा करने की घटना याद आयी, मगर मैंने उससे बहस करना ज़रूरी न समझा और एक भी शब्द नहीं कहा।

"मेरे बारे में ओरेनबुर्ग में क्या कहते हैं?" कुछ देर चुप रहने के बाद पुगाचोव ने पूछा।

"हाँ, कहते हैं कि तुमसे पार पाना काफ़ी मुश्किल है; कहने के लिए कुछ नहीं है; तुमने अपने बारे में ख़ुद ही घोषणा कर दी है।"

नक़ली सम्राट के चेहरे पर आत्माभिमान के भाव तैर गये।

"हाँ!" उसने प्रसन्नतापूर्वक कहा, "मैं कहीं भी युद्ध कर लेता हूँ। क्या ओरेनबुर्ग में यूजेयेवाया के युद्ध के बारे में जानते हैं? चालीस जनरल मारे गये, चार फ़ौजी टुकड़ियाँ बन्दी बनाई गयीं। तुम क्या सोचते हो : प्रशिया का राजा मेरे सामने टिक सकता था?"

लुटेरे की शेख़ी मुझे बड़ी दिलचस्प प्रतीत हुई।

"तुम खुद क्या सोचते हो?" मैंने उससे कहा, "क्या तुम फ्रेडरिक का मुक़ाबला कर पाते?"

"फ्योदोर फ्योदोरोविच का? क्यों नहीं? तुम्हारे जनरलों से तो मैं निपट ही लेता हूँ; और उन्होंने उसे हराया था। अब तक तो मेरे शस्त्र भाग्यशाली सिद्ध हुए हैं। कुछ वक़्त दो, तो देखोगे कि मैं कैसे मॉस्को पर चढ़ाई करता हूँ।"

"और तुम मॉस्को पर हमला करना चाहते हो?" स्वघोषित सम्राट ने कुछ देर सोच कर दबी ज़बान में कहा, "भगवान जानता है। मेरी राह तंग है; मुझे आज़ादी बहुत कम है। मेरे सिपाही होशियारी दिखाते हैं। वे चोर हैं। मुझे कान हमेशा तेज़ रखने पड़ते हैं; पहली ही असफलता की घड़ी में वे मेरे सिर से अपनी गर्दन ख़रीद लेंगे।"

"वही, वही तो!" मैंने पुगाचोव से कहा, "क्या तुम्हारे लिए यह बेहतर नहीं होगा कि खुद ही उनसे दूर हो जाओ, समय रहते, और साम्राज्ञी से क्षमा माँग लो?"

पुगाचोव कड़वाहट से मुस्कुराया।

"नहीं," उसने जवाब दिया, "पश्चात्ताप करने के लिए बहुत देर हो चुकी है। मेरे लिए दया नहीं होगी। वैसे ही करता रहूँगा, जैसे शुरुआत की थी। कौन जाने? हो सकता है, कामयाब ही हो जाऊँ। ग्रीश्का ओत्रेप्येव ने मॉस्को पर राज किया ही था।"

"और जानते हो, उसका अन्त कैसे हुआ? उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया गया, बोटी-बोटी काट दी गयी, जलाया गया, उसकी राख से तोप भरी गयी और दाग़ दी गयी।"

"सुनो," पुगाचोव ने किसी जंगली-सी उत्तेजना से कहा, "तुम्हें एक कहानी सुनाता हूँ, जिसे बचपन में मुझे काल्मीक बुढ़िया सुनाया करती थी। एक बार उक़ाब ने कौए से पूछा, 'बोलो तो कौए राजा, तुम इस दुनिया में तीन सौ साल क्यों जीते हो और मैं सिर्फ़ तैंतीस साल?' 'इसलिए, प्यारे', कौए ने जवाब दिया, 'कि तुम ताज़ा ख़ून पीते हो, और मैं जानवरों की लाशों पर गुज़ारा करता हूँ।' उक़ाब ने सोचा; चलो हम भी वहीं खाने की कोशिश करते हैं। अच्छा! उक़ाब और कौआ उड़ चले। देखा एक मरे हुए घोड़े को, नीचे उतरे और बैठ गये। कौआ चोंच मारने लगा और तारीफ़ करने लगा। उक़ाब ने एक बार चोंच मारी, दुबारा मारी, पंख फड़फड़ाए और बोला

कौए से; 'नहीं, कौए भाई; तीन सौ साल मुर्दे को खाने से बेहतर है एक बार ताज़ा ख़ून पीना, फिर जो हो, सो हो!' तो कैसी है यह काल्मीक लोककथा?"

"बड़ी सीख देती है," मैंने जवाब दिया, "मगर हत्याओं और लूटपाट करके ज़िन्दा रहने का मतलब, मेरी राय में, मुर्दे पर चोंच मारना ही है।"

पुगाचोव ने विस्मय से मेरी ओर देखा और जवाब न दिया। हम दोनों ही चुप हो गये, हरेक अपने-अपने ख़यालों में डूब गया। तातारी उदासी भरा गीत गा रहा था, सावेलिच ऊँघते हुए सन्दूक़ पर हिचकोले खा रहा था। गाड़ी समतल बर्फ़ीले रास्ते पर भागी जा रही थी...अचानक मुझे याइक के खड़े किनारे पर बसा गाँव दिखाई दिया, परकोटे और घंटाघर वाला—और पन्द्रह मिनट बाद हम बेलागोर्स्काया क़िले में प्रविष्ट हुए।

12

अनाथ

पेड़ में हमारे सेब के
न है शिखर, न ही फूटी कोपलें;
राजकुमारी के वैसे ही
न है पिता, माँ भी नहीं।
कौन सजायेगा अब उसको,
और देगा आशीष।

—विवाह गीत

गाड़ी कमांडेंट के घर की ड्योढ़ी के नज़दीक आयी। लोगों ने पुगाचोव की घंटी की आवाज़ पहचानी और भागकर हमारे पीछे आये। श्वाब्रिन ने स्वघोषित सम्राट का ड्योढ़ी में स्वागत किया। उसने कज़ाकी ढंग के कपड़े पहने थे और दाढ़ी बढ़ा ली थी। गद्दार ने पुगाचोव को गाड़ी से उतरने में सहायता की और बड़े घृणित हावभाव से अपनी प्रसन्नता और तत्परता प्रदर्शित की। मुझे देखकर वह झेंप गया; मगर जल्दी ही उसने ख़ुद को सँभाल लिया, मेरी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा, "तुम भी हमारे हो? बहुत पहले यह होना चाहिए था।" मैंने मुँह फेर लिया और कोई जवाब नहीं दिया।

मेरे दिल में हूक-सी उठी, जब हम चिर-परिचित कमरे में पहुँचे, जहाँ अतीत की क़ब्र पर लिखे शोकपूर्ण लेख की भाँति दिवंगत कमांडेंट का प्रमाण-पत्र लटक रहा था। पुगाचोव उस सोफ़े पर बैठा था, जहाँ अपनी पत्नी के वाक्बाणों की बौछार में इवान कुज़्मिच ऊँघ जाया करते थे। श्वाब्रिन ख़ुद ही उसके लिए वोद्का लाया। पुगाचोव ने जाम पिया और मेरी ओर इशारा करते हुए कहा, "हुज़ूर को भी पेश करो।"

श्वाब्रिन अपनी ट्रे लिए मेरे पास आया; मगर मैंने दुबारा उससे मुँह मोड़ लिया। वह अपने आपे में नहीं था। अपनी स्वाभाविक तीक्ष्ण बुद्धि से उसने, बेशक, अन्दाज़ लगा लिया था कि पुगाचोव उससे अप्रसन्न है। वह उसके सामने डर रहा था, और मेरी ओर अविश्वास से देख रहा था। पुगाचोव ने क़िले की हालत के बारे में पूछा, दुश्मन की फ़ौजों से सम्बन्धित अफ़वाहों और ऐसी ही कई बातें पूछीं, और अचानक अप्रत्याशित रूप से उससे पूछ लिया, "कहो तो, भाई, किस लड़की को तुमने अपने यहाँ पहरे में रख छोड़ा है? मुझे दिखाओ तो।"

श्वाब्रिन का चेहरा मुर्दे की तरह फ़क पड़ गया।

"सरकार," उसने काँपती हुई आवाज़ में कहा..., "सरकार वह पहरे में नहीं है ...वह बीमार है....वह कमरे में लेटी है।"

"मुझे उसके पास तो ले चलो।" नक़ली सम्राट ने अपनी जगह से उठते हुए कहा। इनकार करना असम्भव था। श्वाब्रिन पुगाचोव को मारिया इवानोव्ना के कमरे में ले गया। मैं भी पीछे हो लिया।

श्वाब्रिन सीढ़ियों पर रुक गया।

"सरकार!" उसने कहा, "आपको मुझसे जो चाहे माँगने का अधिकार है; मगर किसी बाहरी आदमी को मेरी बीवी के शयनकक्ष में जाने की इजाज़त न दें।"

मैं थरथराने लगा।

"तो तुम शादीशुदा हो," श्वाब्रिन के टुकड़े-टुकड़े कर देने को तत्पर होते हुए मैंने उससे पूछा।

"धीरे!" पुगाचोव ने मुझे टोका, "यह मेरा काम है। और तू", उसने श्वाब्रिन से आगे कहा, "ज़्यादा होशियारी न दिखा और न ही बनने की कोशिश कर : वह चाहे तेरी बीवी हो या न हो, मैं उसके पास जिसे चाहे ले जाऊँगा। हुज़ूर मेरे पीछे आओ।"

कमरे के दरवाज़े पर श्वाब्रिन फिर से रुका और डूबती-सी आवाज़ में बोला, "सरकार, आपको आगाह कर देता हूँ कि उसे सफ़ेद बुख़ार है और तीन दिन से लगातार प्रलाप कर रही है।"

"खोलो!" पुगाचोव ने कहा।

श्वाब्रिन अपनी जेबें टटोलने लगा और बोला कि चाभी साथ में नहीं लाया। पुगाचोव ने दरवाज़े को ठोकर मारी; ताला खुल गया; दरवाज़ा खुल गया और हम अन्दर घुसे।

मैंने देखा और मैं मानों जम गया। फ़र्श पर, फटे-पुराने किसानों के कपड़े पहने मारिया इवानोव्ना बैठी थी, विवर्ण चेहरा, कृश शरीर, बिखरे बाल लिए। उसके सामने पानी की सुराही थी, जो डबल रोटी के एक टुकड़े से ढँकी थी। मुझे देखकर वह थरथरायी और चीख़ पड़ी। मुझ पर उस समय क्या बीती—याद नहीं।

पुगाचोव ने श्वाब्रिन की ओर देखा और कड़वाहट से मुस्कुराकर बोला, "अच्छा

है तुम्हारा अस्पताल!" फिर मारिया इवानोव्ना के पास गया, "मुझे बताओ, प्यारी, तुम्हारा पति तुम्हें सज़ा क्यों दे रहा है? तुमने उसकी नज़रों में कौन-सा गुनाह किया है?"

"मेरा पति!" उसने दुहराया, "वह मेरा पति नहीं है। मैं कभी भी उसकी बीवी नहीं बनूँगी। मैंने तो मर जाना बेहतर समझा, और अगर मुझे उसके चंगुल से छुड़ाया न गया, तो मर ही जाऊँगी।"

पुगाचोव ने क्रोध से श्वाब्रिन की ओर देखा।

"और तुमने मुझे धोखा देने की हिम्मत की!" वह उससे बोला, "जानते हो निठल्ले, तुम्हारी क्या सज़ा होगी?"

श्वाब्रिन घुटनों के बल गिर गया—इस समय तिरस्कार की भावना ने मेरे भीतर की नफ़रत और क्रोध का गला घोंट दिया। अतीव घृणा से मैंने उस कुलीन की ओर देखा, जो एक भगोड़े कज़ाक के पैरों पर गिरा था। पुगाचोव कुछ नर्म पड़ा।

"इस बार तुम्हें माफ़ करता हूँ।" उसने श्वाब्रिन से कहा, "मगर याद रखना कि तुम्हारे पहले ही अपराध में यह भी जुड़ जाएगा।"

फिर वह मारिया इवानोव्ना की ओर मुड़ा और स्नेहपूर्वक बोला, "जाओ सुन्दरी; तुम्हें आज़ाद करता हूँ, मैं सम्राट हूँ।"

मारिया इवानोव्ना ने जल्दी से पुगाचोव की ओर देखा और अन्दाज़ लगाया कि उसके सामने उसके माता-पिता का हत्यारा है। उसने दोनों हाथों से चेहरा ढाँक लिया और बेहोश होकर गिर पड़ी। मैं उसकी ओर लपका; मगर इसी समय बड़ी निडरता से कमरे में मेरी पुरानी परिचित पलाशा बेधड़क घुसी और अपनी मालकिन की देखभाल करने लगी। पुगाचोव कमरे से बाहर निकला और हम तीनों मेहमानख़ाने में आये।

"तो, हुज़ूर?" पुगाचोव ने मुस्कुराते हुए कहा, "सुन्दरी को तो छुड़ा लिया है! क्या ख़याल है, पादरी को बुला लिया जाए और उसे भतीजी की शादी करवाने को कहा जाए? मैं धर्मपिता बन जाऊँगा, श्वाब्रिन बनेगा 'बेस्टमैन', छककर पिएँगे, मौज मनाएँगे और दरवाज़े बन्द कर देंगे।"

जिसका मुझे डर था, वही हुआ, श्वाब्रिन पुगाचोव का प्रस्ताव सुनकर आपे से बाहर हो गया।

"सरकार," वह आपा खाते हुए चीख़ा, "मैं गुनहगार हूँ, मैंने आपसे झूठ बोला; मगर ग्रीनेव भी आपको धोखा दे रहा है। यह लड़की यहाँ के पादरी की भतीजी नहीं; बल्कि इवान मिरोनोव की बेटी है, जिसे इस क़िले पर क़ब्ज़ा करते समय फाँसी दे दी गयी थी।"

पुगाचोव ने अपनी आग बरसाती आँखें मुझ पर टिका दीं।

"यह और क्या है?" उसने हैरानी से मुझसे पूछा।

"श्वाब्रिन ने तुमसे सच ही कहा है।" मैंने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

"तुमने मुझे यह नहीं बताया।" पुगाचोव ने टिप्पणी की, उसका चेहरा उदास हो गया था।

"तुम्हीं सोचो," मैंने उसे जवाब दिया, "क्या तुम्हारे लोगों के सामने मैं यह कह सकता था कि मिरोनोव की बेटी ज़िन्दा है। वे तो उसे नोच डालते। तब उसे कोई भी बचा न पाता।"

"यह भी सच है।" पुगाचोव ने मुस्कुराकर कहा, "मेरे पियक्कड़ लड़की को कभी न छोड़ते। पादरी की बीवी ने अच्छा ही किया कि उन्हें धोखा दे दिया।"

"सुनो," मैंने उसकी अच्छी मनोदशा देखकर कहा, "तुम्हें क्या कहकर पुकारूँ, नहीं जानता, और जानना भी नहीं चाहता...मगर भगवान जानता है कि तुमने मेरे लिए जो कुछ भी किया है, उसके बदले में मैं ख़ुशी से अपनी जान तक दे दूँगा। मुझसे सिर्फ़ वह करने के लिए न कहो, जो मेरे स्वाभिमान के और ईसाइयत की भावना के ख़िलाफ़ है। तुम मेरे उपकारकर्ता हो। जैसे आगाज़ किया था, वैसे ही अंजाम भी दो : मुझे इस बेचारी अनाथ लड़की के साथ, भगवान चाहे, वहाँ जाने दो। और हम, तुम जहाँ भी रहो, और तुम्हारे साथ जो भी हो, हर दिन ईश्वर से तुम्हारी गुनहगार रूह की सलामती की दुआएँ माँगेंगे..."

ऐसा लगा, मानों पुगाचोव की कठोर आत्मा हिल गयी।

"तुम्हारी मर्ज़ी ही सही!" उसने कहा, "मारना है तो मारना है, बचाना है तो बचाना है; ऐसी मेरी आदत है। अपनी इस सुन्दरी को जहाँ चाहे, वहाँ ले जाओ और भगवान तुम्हें प्यार और इक़रार भरी ज़िन्दगी दे।"

फिर वह श्वाब्रिन से मुख़ातिव हुआ और मुझे सभी चौकियों तथा क़िलों में, जो उसके अधिकार में थे, प्रवेश करने का अनुमति पत्र देने की आज्ञा दी। श्वाब्रिन, जो पूरी तरह ध्वस्त हो चुका था, बुत की तरह खड़ा था। पुगाचोव क़िले का निरीक्षण करने के लिए चल पड़ा। श्वाब्रिन उसके साथ हो लिया; और मैं सफ़र की तैयारी करने का बहाना बना वहीं रह गया।

मैं भागकर कमरे में गया। दरवाज़े बन्द थे। मैंने खटखटाया, "कौन है?" पलाशा ने पूछा। मैंने अपना नाम बताया।

दरवाज़े के पीछे से मारिया इवानोव्ना की मीठी आवाज़ सुनाई दी, "रुकिए, प्योत्र अन्द्रेइच, मैं कपड़े बदल रही हूँ। अकुलीना पाम्फीलोव्ना के यहाँ पहुँच जाइए। मैं अभी वहीं पहुँचती हूँ।"

मैंने माफ़ी माँगी और पादरी गेरासिम के यहाँ गया। वह और पादरिन भागते हुए मुझसे मिलने के लिए आये। सावेलिच ने उन्हें पहले ही आगाह कर दिया था।

“नमस्ते, प्योत्र अन्द्रेइच” पादरिन बोली, “भगवान ने फिर से मिला दिया। कैसे हो? हम तो आपको रोज़ ही याद करते थे और मारिया इवानोव्ना ने आपके बिना क्या-क्या नहीं सहा...मेरी प्यारी!...हाँ, यह तो बोलो, मेरे बाप, कि यह पुगाचोव के साथ आपकी पटरी कैसे बैठ गयी? उसने आपकी जान क्यों नहीं ली? चलो, बदमाश को इसीलिए धन्यवाद।”

“बस करो बुढ़िया,” पादरी गेरासिम ने टोका, “जो भी जानती हो, उसके बारे में बकवास मत करो। ज़्यादा बोलने से बात नहीं बनती। भाई, प्योत्र अन्द्रेइच! कृपया अन्दर आइए। कितने, कितने वक़्त के बाद मिले हैं।”

पादरिन ने जो भी उसके पास था, उससे मेरी आवभगत की। पूरे समय वह बिना रुके बोलती ही जा रही थी। उसने मुझे बताया कि किस तरह श्वाब्रिन ने उन्हें मारिया इवानोव्ना को उसे सौंपने पर मजबूर किया, किस तरह मारिया इवानोव्ना पलाशा के, उस बिन्दास लड़की के, जो लेफ़्टिनेंट कमांडेंट को अपनी बंसी की धुन पर नचाती है, माध्यम से उससे लगातार सम्पर्क बनाए रही, कैसे उसने मारिया इवानोव्ना को मुझे ख़त लिखने की सलाह दी, वग़ैरह वग़ैरह। मैंने भी, संक्षेप में अपनी राम कहानी सुना दी। पादरी और पादरिन ने सलीब का निशान बनाया, यह सुनकर कि पुगाचोव को उनके धोखे का पता चल गया है।

“हमारे साथ सलीब की शक्ति है!” अकुलीना पाम्फीलोव्ना ने कहा, “भगवान काले बादलों को बग़ल से भगा दो। और यह अलेक्सेइ इवानिच; कुछ न कहना ही बेहतर है : अच्छी बत्तख़ है!”

इसी क्षण दरवाज़ा खुला, और मारिया इवानोव्ना पीले चेहरे पर मुस्कान लिए भीतर आयी। उसने अपनी किसानों वाली वेशभूषा छोड़कर पहले की ही तरह सादगी भरे, प्यारे-से कपड़े पहने थे।

मैंने उसका हाथ पकड़ा और बड़ी देर तक एक भी शब्द न कह पाया। दिल भर आने के कारण हम दोनों ही ख़ामोश थे। हमारे मेज़बानों ने महसूस किया कि उनकी वहाँ कोई ज़रूरत नहीं है, इसलिए उन्होंने हमें अकेला छोड़ दिया। हम अकेले रह गये। सब कुछ भूल गये, हम बोलते ही रहे और फिर भी पूरी बात न कह सके। मारिया इवानोव्ना ने मुझे वह सब कुछ बताया, जो दुर्ग की पराजय के बाद से उसके साथ हुआ था; अपनी स्थिति की समूची भयावहता का वर्णन किया, सभी यातनाओं के बारे में जो नीच श्वाब्रिन ने उसे दी थीं, बताया, हमने पुराने सुख के दिनों को भी याद किया...हम दोनों रोते रहे...आख़िरकार मैं उसे अपनी योजना समझाने लगा। उसके लिए पुगाचोव के अधीन और श्वाब्रिन द्वारा संचालित दुर्ग में रहना असम्भव था। ओरेनबुर्ग के बारे में भी सोचा नहीं जा सकता था, जो घेरेबन्दी की दुःखद यातनाएँ सह रहा था। दुनिया में उसका कोई रिश्तेदार भी न था। मैंने प्रस्ताव रखा कि वह गाँव में मेरे माता-पिता के पास चली जाए। पहले तो वह हिचकिचाई : उसके

प्रति मेरे पिता की अप्रसन्नता, जो उसे मालूम थी, उसे डरा रही थी। मैंने उसे दिलासा दिया। मैं जानता था, कि पिता पितृभूमि के लिए खेत रहे कर्तव्यरत फ़ौजी की बेटी को पनाह देना अपना सौभाग्य मानेंगे, कर्तव्य समझेंगे।

"प्यारी मारिया इवानोव्ना!" मैंने आख़िर में कहा, "मैं तुम्हें अपनी पत्नी मानता हूँ। विचित्र परिस्थितियों ने हमें अटूट बन्धन में बाँध दिया है। दुनिया की कोई भी चीज़ हमें एक-दूसरे से जुदा नहीं कर सकती।"

मारिया इवानोव्ना बिना किसी कृत्रिम संकोच के, बिना टाल मटोल किये, सरलता से मेरी बात सुनती रही। उसे महसूस हो रहा था कि उसका भाग्य मेरे भाग्य से जुड़ गया है। मगर वह दोहराती रही, कि बिना मेरे माता-पिता की सहमति के वह मेरी पत्नी न बनेगी। मैंने भी उसका विरोध नहीं किया। हमने सच्चे दिल से एक-दूसरे का आवेगपूर्ण चुम्बन लिया, और इस तरह हमारे बीच सब कुछ तय हो गया।

एक घंटे बाद सार्जंट पुगाचोव के गिचड़-पिचड़ हस्ताक्षरों वाला अनुमति-पत्र लेकर आया और उसकी ओर से मिलने का सन्देश दिया। मैंने उसे सफ़र के लिए तैयार पाया। समझा नहीं सकता कि इस भयानक व्यक्ति से विदा लेते समय मैं क्या अनुभव कर रहा था, जो मुझ अकेले के अलावा अन्य सबके लिए ज़ालिम और शैतान था। सच क्यों न बोलूँ? इस क्षण गहरी सहानुभूति मुझे उसकी ओर खींच रही थी। मैं पूरी शिद्दत से उसे दुष्टों के घेरे से निकाल लेना चाहता था, जिनका वह नेतृत्व कर रहा था, और समय रहते उसकी जान बचाना चाहता था। श्वाब्रिन और लोग, जो हमारे चारों ओर जमा थे, वह सब कहने में बाधा डाल रहे थे, जिससे मेरा दिल भर आया था।

हम दोस्तों की तरह जुदा हुए। पुगाचोव ने भीड़ में अकुलीना पाम्फीलोव्ना को देखकर तर्जनी से उसे धमकाया और अर्थपूर्ण ढंग से आँख मारी; फिर गाड़ी में बैठा, बेर्दा की ओर चलने का हुक्म दिया, और जब घोड़े चल पड़े तो एक बार और गाड़ी से बाहर सिर निकालकर मुझसे कहा, "अलविदा, हुजूर! भगवान ने चाहा तो फिर कभी मिलेंगे।"

हम उससे मिले तो सही, मगर किन परिस्थितियों में!...मैं देर तक सफ़ेद स्तेपी की ओर देखता रहा, जिस पर उसकी त्रोयका जा रही थी। लोग चले गये। श्वाब्रिन छिप गया। मैं पादरी के घर लौटा। सफ़र की तैयारी हो चुकी थी; मैं देर करना नहीं चाहता था। हमारा सामान कमांडेंट की पुरानी गाड़ी में रखा जा चुका था। गाड़ीवान ने फ़ौरन घोड़े जोत दिये। मारिया इवानोव्ना अपने माता-पिता की क़ब्रों से बिदा लेने गयी, जिन्हें गिरजे के पीछे दफ़नाया गया था। मैं उसके साथ जाना चाहता था, मगर उसने विनती की कि उसे अकेला छोड़ दिया जाए। ख़ामोश आँसुओं से नहा चुकी, कुछ मिनटों बाद वह वापस आयी, गाड़ी सामने लायी गयी। पादरी गेरासिम और

उसकी पत्नी ड्योढ़ी में आये। हम तीनों गाड़ी में बैठे : मारिया इवानोव्ना, पलाशा और मैं। सावेलिच गाड़ीवान के निकट सन्दूक़ पर बैठ गया।

"अलविदा मारिया इवानोव्ना' मेरी प्यारी! अलविदा प्योत्र अन्द्रेइच, हमारे बहादुर नौजवान!" भली पादरिन ने कहा, "शुभ यात्रा, और ईश्वर आप दोनों को सुखी रखे!" हम चल पड़े। कमांडेंट के घर की खिड़की के पास मैंने श्वाब्रिन को खड़े देखा। उसके चेहरे पर उदास दुष्टता झलक रही थी। मैं परास्त शत्रु के सामने अपनी शान नहीं दिखाना चाहता था, इसलिए मैंने नज़रें फेर लीं। आख़िरकार हम क़िले के दरवाज़े से निकले और हमेशा के लिए बेलागोर्स्काया दुर्ग को छोड़ दिया।

13

गिरफ़्तारी

क्रोधित न हो, हुज़ूर : मेरे कर्तव्य के अनुसार
मुझे फ़ौरन आपको जेल भेजना होगा।
"शौक़ से, मैं तैयार हूँ; मगर मुझे उम्मीद है,
कि पहले आप मुझे सफ़ाई देने का मौक़ा देंगे।"

—कन्याझिनन

अपनी प्रियतमा से, जिसके बारे में सोचकर सुबह मुझे इतनी पीड़ा हो रही थी, इस तरह अप्रत्याशित रूप से मिलन होने पर, मुझे अपने आप पर विश्वास न हुआ और मैंने सोचा कि जो कुछ घटित हुआ था, बस एक सपना था। सोच में डूबी मारिया इवानोव्ना कभी मेरी ओर देखती, तो कभी रास्ते पर, और शायद अभी तक सँभल नहीं पायी थी। हम ख़ामोश थे। हमारे दिल भी काफ़ी थक चुके थे। पता ही नहीं चला और दो घंटे बाद हम निकट के ही एक क़िले में पहुँचे, जो पुगाचोव के ही अधीन था। यहाँ हमने घोड़े बदले। जिस शीघ्रता से उन्हें जोता गया एवं पुगाचोव द्वारा कमांडेंट नियुक्त किये गये दढ़ियल कज़ाक ने जिस तत्परता से हमारी सेवा की, उसे देखकर मैं समझ गया कि हमारे बातूनी गाड़ीवान की बदौलत मुझे नक़ली सम्राट का कृपा पात्र समझ लिया गया है।

हम आगे बढ़े। अँधेरा छाने लगा था। हम उस शहर के निकट पहुँचे, जहाँ दढ़ियल कज़ाक के अनुसार बड़ी भारी फ़ौज खड़ी थी, जो स्वघोषित सम्राट की सेना से मिलने जा रही थी। हमें सन्तरियों ने घेर लिया। इस सवाल के जवाब में कि "कौन जा रहा है?" गाड़ीवान ने ज़ोर से कहा, "सम्राट का यार अपनी घरवाली के साथ।" अचानक घुड़सवारों की भीड़ ने भयानक गालियाँ देते हुए हमें घेर लिया।

"निकल बाहर शैतान के यार," मुझसे मुच्छड़ अंडर ऑफ़िसर ने कहा, "अभी तुझे हम्माम में ले चलते हैं। बीवी के साथ।"

मैंने गाड़ी से बाहर आकर माँग की कि मुझे उनके सरदार के पास ले जाया जाए। अफ़सर को देखते ही सिपाहियों ने गालियाँ देना बन्द कर दिया। मुच्छड़ मुझे मेजर के पास ले गया। सावेलिच मुझसे दूर नहीं हट रहा था, वह बड़बड़ा रहा था, "और लो, सम्राट के यार! आग से गिरे भट्ठी में...हे मालिक! यह सब कैसे ख़त्म होगा?" गाड़ी धीरे-धीरे हमारे पीछे आ रही थी।

पाँच मिनट बाद हम एक घर के नज़दीक आये, जिसमें तेज़ रोशनी हो रही थी। अंडर ऑफ़िसर ने मुझे पहरेदार के पास रोका और मेरे बारे में इत्तिला देने अन्दर गया। वह फ़ौरन वापस आया यह कहते हुए, कि बड़े हुज़ूर के पास मुझसे मिलने का समय नहीं है, और उन्होंने मुझे जेल की कोठरी में तथा पत्नी को अपने पास लाने की आज्ञा दी है।

"इसका क्या मतलब है?" मैं तैश में चीख़ा, "क्या उसका दिमाग़ चल गया है?"

"कह नहीं सकता, हुजूर," अंडर ऑफ़िसर ने जवाब दिया, "सिर्फ़ मेरे बड़े हुज़ूर ने हुक्म दिया है कि हुज़ूर साहब को कोठरी में ले जाऊँ और हुज़ूर साहेबा को मेरे महानुभाव के पास ले आऊँ, हुज़ूर।"

मैं ड्योढ़ी में घुस गया। सन्तरियों ने मुझे रोका नहीं और मैं सीधे कमरे में घुसा, जहाँ छह घुड़सवार दस्ते के अफ़सर जुआ खेल रहे थे। मेजर ताश की गड्डी फेंट रहा था। मेरे अचरज का ठिकाना न रहा, जब उसकी ओर देखते ही मैंने इवान इवानोविच जूरिन को पहचान लिया जिसने कभी सिम्बिर्स्क के होटल में मुझे हराया था।

"क्या ऐसा हो सकता है?" मैं चीख़ा, "इवान इवानिच! यह तुम हो?"

"बा, बा, बा प्योत्र इन्द्रेइच! क्या चमत्कार है? कहाँ से आ रहे हो? स्वागत है, भाई। क्या ताश खेलोगे?"

"धन्यवाद। बेहतर है कि मुझे एक फ़्लैट देने का हुक्म दो।"

"कैसा फ़्लैट? मेरे पास रह जाओ।"

"नहीं रह सकता, मैं अकेला नहीं हूँ।"

"तो, अपने साथी को भी यहीं ले आओ।"

"मैं साथी के साथ नहीं हूँ; मैं...एक महिला के साथ हूँ।"

"महिला के साथ। कहाँ से तुमने उसे अपने साथ बाँध लिया? ओहो, भाई!" (यह कहकर जूरिन ने इतने अर्थपूर्ण ढंग से सीटी बजाई कि सभी ठहाका मारकर हँस पड़े, और मैं शरमा गया।)

तो, जूरिन ने आगे कहा, "ऐसा ही हो। तुझे फ़्लैट मिल जाएगा। अफ़सोस ...हम पहले जैसे खेलते...ऐ! छोटे! यहाँ पुगाचोव की यार को क्यों नहीं ला रहे हो?

या वह अड़ गयी है? उससे कहो कि डरे नहीं, मालिक तो ख़ूबसूरत हैं, किसी भी तरह की वेइज़्ज़ती नहीं करेगा, अच्छी तरह से गले से लगाएगा।"

"यह क्या कह रहे हो?" मैंने ज़ूरिन से कहा, "पुगाचोव की कौन-सी यार है? वह दिवंगत कप्तान मिरोनोव की बेटी है। मैं उसे क़ैद से छुड़ाकर लाया हूँ और अब उसे अपने पिता के गाँव ले जा रहा हूँ, जहाँ उसे छोड़ दूँगा।"

"क्या! तो अभी तुम्हारे बारे में मुझे बताया गया था? मेहरबानी करो! इसका क्या मतलब है?"

"सब कुछ बाद में बताऊँगा। और अभी, भगवान के लिए उस ग़रीब लड़की को धीरज बँधाओ।" जिसे तुम्हारे घुड़सवारों ने डरा दिया था।

ज़ूरिन फ़ौरन व्यस्त हो गया। वह स्वयं रास्ते पर गया मारिया इवानोव्ना से अनजाने में हुई ग़लतफ़हमी के लिए माफ़ी माँगने और उसने अंडर ऑफ़िसर को हिदायत दी कि उसे शहर के सबसे बढ़िया फ़्लैट में ले जाए। मैं उसके साथ रात बिताने के लिए रह गया।

हमने खाना खाया और जब दोनों अकेले रह गये, तो मैंने उसे अपने कारनामे सुनाये। ज़ूरिन बड़े ध्यान से मेरी बातें सुन रहा था। जब मैंने बोलना बन्द किया तो उसने सिर हिलाया और कहा, "यह सब, भाई, ठीक है, सिर्फ़ एक बात बुरी है, तुम्हें शैतान शादी करवाने क्यों ले जा रहा है? मैं, एक ईमानदार अफ़सर, तुम्हें धोखा देना नहीं चाहता, मुझ पर यक़ीन करो कि शादी एक वरदान है। मगर तुम कैसे बीवी के साथ रहोगे और बच्चों की देखभाल करोगे? ऐ, थूक दो। मेरी बात सुनो, कप्तान की बेटी से दूर हो जाओ। सिम्बिर्स्क का रास्ता मैंने दुश्मनों से साफ़ कर दिया है और वहाँ कोई ख़तरा नहीं है। उसे कल ही अकेले अपने माता-पिता के पास भेज दो; और खुद मेरी फ़ौज में रुक जाओ। ओरेनबुर्ग वापस जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। दुबारा विद्रोहियों के हाथों में पड़ जाओगे तो छूटना मुश्किल हो जाएगा। इस तरह प्यार का भूत भी अपने आप तुम्हारे सिर से उतर जाएगा, और सब ठीक हो जाएगा।"

हालाँकि मैं पूरी तरह उससे सहमत नहीं था; फिर भी मैंने महसूस किया कि मेरा कर्तव्य मुझसे साम्राज्ञी की सेना में उपस्थित रहने की माँग करता है। मैंने ज़ूरिन की सलाह मानने का निश्चय किया, मारिया इवानोव्ना को गाँव भेजने और खुद उसकी फ़ौज में रुक जाने का निर्णय किया।

सावेलिच मेरे कपड़े उतारने के लिए आया तो मैंने उससे कहा कि दूसरे ही दिन वह मारिया इवानोव्ना के साथ सफ़र करने के लिए तैयार रहे। वह ज़िद करने ही वाला था, "क्या कहते हो मालिक? मैं तुम्हें कैसे छोड़ दूँगा? तुम्हारी ख़िदमत कौन करेगा? तुम्हारे माँ-बाप क्या कहेंगे?" चचा का अड़ियल स्वभाव जानते हुए मैंने उसे प्यार और सच्चाई से जीतने की ठानी।

"मेरे दोस्त, सावेलिच!" मैंने उससे कहा, "मना न करना, मेरे उपकारकर्ता बनो; यहाँ मुझे किसी ख़िदमत की ज़रूरत न पड़ेगी, मगर अगर मारिया इवानोव्ना तुम्हारे बग़ैर सफ़र पर गयी, तो मैं सुकून से न रह पाऊँगा, उसकी सेवा करते हुए तुम मेरी भी ख़िदमत करोगे, क्योंकि मैंने पक्का इरादा कर लिया है कि जैसे ही परिस्थितियाँ इजाज़त देंगी, मैं उससे शादी कर लूँगा।"

सावेलिच ने अवर्णनीय आश्चर्य की भावना से हाथ नचाये।

"शादी?" उसने दुहराया, "बच्चा शादी करना चाहता है! और मालिक क्या कहेगा, और अम्मा क्या सोचेंगी?"

"राज़ी हो जाएँगे, ज़रूर राज़ी हो जाएँगे।" मैंने जवाब दिया, "जव मारिया इवानोव्ना को जान जाएँगे। मुझे तुमसे भी काफ़ी उम्मीद है। माँ और पिताजी तुम पर भरोसा करते हैं। तुम हमारी सिफ़ारिश करोगे, है न?" बूढ़ा पिघल गया।

"ओह, मालिक मेरे, प्योत्र अन्द्रेइच!" उसने जवाब दिया, "हालाँकि तुम काफ़ी जल्दी शादी के बारे में सोच रहे हो, मगर मारिया इवानोव्ना इतनी भली महिला है, कि मौक़े को छोड़ना पाप ही होगा। जो तुम चाहते हो, वही होगा। उस भगवान के फ़रिश्ते को पहुँचा दूँगा, और गुलाम की तरह तुम्हारे माता-पिता से कहूँगा कि ऐसी दुल्हन को दहेज की भी ज़रूरत नहीं।"

मैंने सावेलिच को धन्यवाद दिया और ज़ूरिन के साथ एक ही कमरे में लेट गया। जोश में और परेशान मैं बकबक करता रहा। ज़ूरिन पहले तो मुझसे शौक़ से बातें करता रहा; मगर धीरे-धीरे उसके शब्द बेतरतीब और कम होते गये; आख़िर में, मेरे किसी सवाल के जवाब में उसने खर्राटे भरे और सीटी की आवाज़ निकाली। मैं चुप हो गया और जल्दी ही उसका अनुसरण कर लिया।

दूसरे दिन सुबह मैं मारिया इवानोव्ना के पास आया। मैंने उसे अपने प्रस्ताव के बारे में बताया। उसने उन्हें तर्कसंगत पाया और फ़ौरन मुझसे सहमत हो गयी। ज़ूरिन की फ़ौज शहर से उसी दिन रवाना होनेवाली थी। देर करने में कोई तुक नहीं थी। मैंने उसी समय मारिया इवानोव्ना को सावेलिच के हाथों में सौंपकर और उसे मेरे माता-पिता के नाम एक पत्र देते हुए उससे विदा ले ली। मारिया इवानोष्ना रो पड़ी।

"अलबिदा, प्योत्र अन्द्रेइच!" उसने धीमी आवाज़ में कहा, "हम फिर शायद कभी मिलें या न मिलें, यह तो सिर्फ़ भगवान ही जानता है, मगर मैं ज़िन्दगी भर आपको न भूलूँगी, क़ब्र तक मेरे दिल में सिर्फ़ तुम्हीं रहोगे।"

मैं कोई जवाब न दे सका। लोग हमें घेरकर खड़े हो गये। मैं उनके सामने उन भावनाओं को प्रकट नहीं करना चाहता था, जो मुझे परेशान कर रही थीं। आख़िर में वह चली गयी। मैं ज़ूरिन के पास लौटा, दुःखी और ख़ामोश। उसने मेरा दिल बहलाना चाहा; मैंने अपना ध्यान कहीं और लगाना चाहा, हमने पूरा दिन हल्ला-गुल्ला करते और ऊधम मचाते हुए बिताया और शाम को कूच पर निकल पड़े।

यह हुआ फ़रवरी के अन्त में। सर्दियाँ, जो फ़ौजी गतिविधियों को मुश्किल बना रही थीं, गुज़र रही थीं, और हमारे जनरल मिले-जुले आक्रमण की तैयारी कर रहे थे। पुगाचोव अभी भी ओरेनबुर्ग के निकट ही था। इस बीच फ़ौज उसके चारों ओर संगठित हो रही थी और सभी दिशाओं से दुश्मनों के केन्द्र के निकट आ रही थी। विद्रोह करनेवाले गाँव, हमारी सेनाओं को देखते ही, समर्पण कर देते; लुटेरों के गिरोह, हर जगह, हमें देखते ही भाग खड़े होते, और यह सब एक शीघ्र एवं सफल समाप्ति का वादा कर रहा था।

शीघ्र ही राजकुमार गोलित्सीन ने तातिश्चेव के क़िले के पास पुगाचोव को पराजित कर दिया, उसके गिरोह को तहस-नहस कर दिया, ओरेनबुर्ग को आज़ाद कर लिया और, शायद विद्रोह को अन्तिम निर्णायक आघात पहुँचाया। ज़ूरिन उस समय विद्रोही बाश्कीरियों के गिरोह के विरुद्ध तैनात था, जो हमारे उन तक पहुँचने से पहले ही बिखर जाते थे। बसन्त ने हमें तातारी गाँव में घेर लिया। नदियों में बाढ़ आ गयी और रास्तों को पार करना मुश्किल हो गया। अपने निठल्लेपन में हम इस ख़याल से दिल बहला लेते कि लुटेरों और जंगलियों के साथ होनेवाली ये उकताहट भरी और छिटपुट झड़पें शीघ्र ही समाप्त हो जाएँगी।

मगर पुगाचोव पकड़ा नहीं गया था। वह साइबेरिया के कारख़ानों में प्रकट हुआ, वहाँ नये गिरोह बनाये और फिर से हमले करने लगा। उसकी सफलताओं के फिर से चर्चे होने लगे। हमने साइबेरिया के क़िलों के पराजित होने की ख़बरें सुनीं। शीघ्र ही कज़ान पर क़ब्ज़ा करने और स्वघोषित सम्राट के मॉस्को की ओर बढ़ने के समाचार ने सेनाओं के कमांडरों को सन्तप्त कर दिया, जो घृणित विद्रोही के कमज़ोर पड़ जाने की आस लगाये चैन से ऊँघ रहे थे। ज़ूरिन को आदेश मिला कि वह वोल्गा पार करे।[1]

अपने अभियान एवं युद्ध की समाप्ति का वर्णन नहीं करूँगा। संक्षेप में यही कहूँगा कि दुर्भाग्य चरम सीमा तक पहुँच गया था। हम उन गाँवों से होकर गुज़रते, जिन्हें विद्रोहियों ने बरबाद कर दिया था और अनिच्छापूर्वक ग़रीब गाँववालों से वह भी छीन लेते, जो उन्होंने बचाकर रखा था। प्रशासन सब जगह ठप्प हो गया था, ज़मींदार जंगलों में छिप गये थे। लुटेरों के गिरोह चारों ओर आक्रमण कर रहे थे; अलग-अलग टुकड़ियों के सरदार स्वयं ही लोगों को दंडित कर देते और उन्हें छोड़ भी देते; पूरे प्रान्त की हालत, जहाँ आग का तांडव हो रहा था, बड़ी भयानक थी,...भगवान कभी भी निरर्थक और निर्मम रूसी विद्रोह न दिखाये!

पुगाचोव भाग रहा था, इवान इवानोविच मिखेल्सन से बचते हुए, जो उसका

---

1. इस स्थान पर रखा गया था 'एक छूटा हुआ अध्याय', जो केवल हस्तलिखित पांडुलिपि में ही शेष बचा है। पूश्किन ने इसे प्रकाशित नहीं कराया था। देखिए, पृ. 274-284

पीछा कर रहा था। जल्दी ही हमें उसकी सम्पूर्ण पराजय का समाचार मिला। आख़िर ज़ूरिन को स्वघोषित सम्राट के पकड़े जाने का समाचार प्राप्त हुआ और साथ ही रुक जाने का आदेश भी। युद्ध समाप्त हो गया था। आख़िर मैं अपने माता-पिता के पास जा सकूँगा! उनका आलिंगन करने, मारिया इवानोव्ना को, जिसका कोई समाचार मुझे प्राप्त न हुआ था, देखने के ख़याल ने मुझमें जान डाल दी। मैं बच्चे की तरह उछल रहा था। ज़ूरिन हँस रहा था और कन्धे उचकाते हुए कह रहा था, "नहीं, तुम्हारा बुरा हाल होगा। शादी करोगे, और बेकार ही मारे जाओगे!"

मगर इसी बीच एक अजीब-सा ख़याल मेरी ख़ुशी में ज़हर घोल रहा था : ख़याल उस दुष्ट का, जो इतने निरपराध लोगों के ख़ून से सना हुआ था, और उसको बाट जोहती सूली का, मुझे अनचाहे ही उद्विग्न कर रहा था : "एमिल्या, एमिल्या!", मैंने दुःख से सोचा, "तुम संगीन का निशाना क्यों न बने, गोलियों की बौछार से धराशायी क्यों न हुए? इससे अच्छा कोई और रास्ता तुम चुन ही न सकते थे।" क्या करें? यह ख़याल मेरी मंगेतर की कमीने श्वाब्रिन के चंगुल से मुक्ति से तथा अपने जीवन के एक भयानक क्षण में मुझ पर दिखाई गई दया से अभिन्न रूप से जुड़ा था।

ज़ूरिन ने मुझे छुट्टी दे दी। कुछ ही दिनों बाद मैं अपने परिवार के बीच होऊँगा, फिर से मारिया इवानोव्ना को देख सकूँगा...अचानक अप्रत्याशित रूप से मुझ पर गाज गिरी, जिसने मुझे पस्त कर दिया।

जिस दिन मुझे जाना था, उसी दिन, ठीक उसी समय जब मैं निकलने ही वाला था, हाथों में काग़ज़ पकड़े, मुख पर गहरी चिन्ता का भाव लिए ज़ूरिन मेरे पास झोंपड़ी में आया। मेरे दिल में मानों कोई चीज़ चुभ गयी। मैं, न जाने क्यों, डर गया। उसने मेरे अर्दली को बाहर भेजा और बोला कि मुझसे कुछ काम है। क्या बात है? मैंने परेशान होकर पूछा, "छोटी-सी अप्रिय बात है।" उसने काग़ज़ मुझे देते हुए कहा, "पढ़ो, जो अभी-अभी मुझे मिला है।" मैं पढ़ने लगा, यह सभी सेनाध्यक्षों के लिए एक गुप्त आज्ञा थी, जिसमें कहा गया था कि जहाँ भी मैं मिल जाऊँ, मुझे फ़ौरन गिरफ़्तार करके, कड़े पहरे में, तुरन्त पुगाचोववाले मामले की तहक़ीकात, करने के लिए बनाई गयी जाँच कमिटी के सामने कज़ान भेज दिया जाए। काग़ज़ मेरे हाथों से गिरते-गिरते बचा।

"कोई चारा नहीं है!" ज़ूरिन ने कहा, "मेरा कर्तव्य है आज्ञा का पालन करना। शायद, पुगाचोव के साथ तुम्हारी दोस्ताना यात्राओं की ख़बर किसी तरह सरकार तक पहुँच गयी है। उम्मीद करता हूँ कि इस बात के कोई बुरे परिणाम नहीं निकलेंगे और तुम कमिटी के सामने अपनी सफ़ाई पेश कर सकोगे। घबराओ मत और रवाना हो जाओ।"

मेरा अन्तःकरण बिलकुल साफ़ था; मुकदमे से मैं नहीं डरता था, मगर मधुर मिलन की घड़ी को दूर धकेलने का ख़याल, शायद कई महीनों के लिए, मुझे डरा गया।

गाड़ी तैयार थी। ज़ूरिन ने दोस्ताना अन्दाज़ में मुझसे विदा ली। मुझे गाड़ी में बिठाया गया। मेरे साथ नंगी तलवारें लिए दो हुस्सार बैठे और मैं लम्बी यात्रा पर चल पड़ा।

14

मुक़दमा

दुनियाई अफ़वाहें—सागर की हैं लहरें
—कहावत

मुझे पूरा भरोसा था कि ओरेनबुर्ग से मेरी स्वेच्छापूर्वक अनुपस्थिति ही इस सबका मुख्य कारण थी। मैं बड़ी आसानी से सफ़ाई पेश कर सकता था; घोड़े पर सवार होकर शत्रु पर आक्रमण करने पर कभी भी प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया था, बल्कि उसे पूरी तौर से प्रोत्साहित किया जाता था। मुझ पर अत्यधिक जोशीलेपन का आरोप लगाया जा सकता था, न कि अवज्ञा का। मगर पुगाचोव के साथ मेरे स्नेह सम्बन्ध अनेक प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा सिद्ध किये जा सकते थे और अत्यन्त सन्देहास्पद प्रतीत हो सकते थे। पूरे रास्ते मैं उन सवालों पर मनन करता रहा, जो अपेक्षित थे, अपने उत्तरों के बारे में सोचता रहा और मैंने यह निर्णय किया कि जाँचकर्ता के सामने पूरा सच बता दूँगा, क्योंकि अपनी सत्यता सिद्ध करने का यही सबसे आसान और भरोसेमन्द तरीक़ा होता।

मैं सुनसान और अग्निदग्ध कज़ान पहुँचा। रास्तों पर घरों के स्थान पर कोयलों के ढेर पड़े थे और बिना छतों और खिड़कियोंवाली, धुएँ की परतों से स्याह पड़ गयीं, दीवारें झाँक रही थीं। यह थे पुगाचोव द्वारा छोड़े गये निशान! मुझे क़िले में लाया गया, जो जले हुए शहर में साबुत बच गया था। हस्सारों ने मुझे सन्तरियों के अफ़सर के हवाले कर दिया। उसने लुहार को बुलाने की आज्ञा दी। मेरे पैरों में बेड़ियाँ पहना दी गयीं और उन्हें मज़बूती से कस दिया गया। फिर मुझे जेल ले जाकर, अकेले एक तंग और अँधेरी कोठरी में रखा गया, जहाँ सिर्फ़ नंगी दीवारें, और लोहे की जाली लगी हुई छोटी-सी खिड़की थी।

ऐसी शुरुआत किसी अच्छी बात का संकेत नहीं दे रही थी। मगर फिर भी मैंने न हिम्मत हारी, न ही उम्मीद। मैंने सभी दुखियों को सान्त्वना देनेवाला काम किया और पहली बार साफ़, मगर भग्न हृदय से की गयी प्रार्थना के सुख को अनुभव किया, गहरी नींद सोया, बग़ैर इस बात की चिन्ता किये कि मेरे साथ क्या होनेवाला है।

दूसरे दिन जेल सन्तरी ने मुझे यह कहकर जगाया कि मुझे कमिटी में बुलाया जा रहा है। दो सैनिक मुझे आँगन से होते हुए कमांडेंट के घर ले गये, वे स्वागत कक्ष में रुक गये और मुझ अकेले को भीतरी कमरे में भेज दिया।

मैं काफ़ी बड़े हॉल में आया। एक मेज़ के पीछे, जो काग़ज़ों से अटी थी, दो आदमी बैठे थे : अधेड़ उम्र का जनरल, जो चेहरे से कठोर और भावनारहित प्रतीत होता था, और था गारद का नौजवान कप्तान, क़रीब अट्ठाईस वर्ष का, बड़े प्यारे व्यक्तित्व का, चुस्त और फुर्तीला और बातचीत में स्वाभाविक। खिड़की के पास एक ख़ास मेज़ के पीछे कान में क़लम दबाये, काग़ज़ पर झुका सेक्रेटरी बैठा था, जो मेरे उत्तरों को लिखने के लिए तैयार था। पूछताछ शुरू हुई। मुझे मेरे नाम और पद के बारे में पूछा गया। जनरल ने जानना चाहा कि मैं अन्द्रेइच पेत्रोविच ग्रीनेव का बेटा तो नहीं हूँ? और मेरे जवाब में उसने गम्भीरता से सिर हिलाते हुए कहा, "अफ़सोस, कि ऐसे सम्माननीय व्यक्ति का ऐसा नालायक़ बेटा है!"

मैंने शान्ति से उत्तर दिया, "मुझ पर चाहे जो भी आरोप लगे हों, मुझे विश्वास है कि ईमानदारी से, सच्चाई बयान करके मैं उन्हें ग़लत साबित कर दूँगा।" मेरा आत्मविश्वास उसे अच्छा नहीं लगा।

"तुम, भाई, बड़े तेज़ हो," उसने नाक-भौंह चढ़ाते हुए कहा, "मगर हमने इससे भी बड़े तेज़-तर्रार देखे हैं!"

तब नौजवान ने मुझसे पूछा, "किस मौक़े पर और किस समय मैंने पुगाचोव की नौकरी की और उसने मेरा उपयोग किन कामों के लिए किया?"

मैंने क्रोध में उत्तर दिया कि मैं, एक अफ़सर और कुलीन होने के नाते, न तो पुगाचोव की नौकरी कर सकता था और न ही उससे कोई आदेश ले सकता था।

"तो फिर क्यों," मुझसे पूछताछ करनेवाले ने प्रतिवाद किया, "कुलीन और अफ़सर अकेला ही स्वघोषित सम्राट द्वारा छोड़ दिया जाता है, जबकि उसके साथियों की क्रूरता से हत्या कर दी गयी थी? कैसे यही अफ़सर और कुलीन विद्रोहियों के साथ दोस्ताना अंदाज़ में जश्न मना सकता है, प्रमुख दुश्मन से उपहार, कोट, घोड़ा और पचास कोपेक ले सकता है? ऐसी विचित्र दोस्ती हो कैसे सकती थी, और अगर ग़द्दारी या कम-से-कम आपराधिक और निन्दनीय कायरता नहीं तो फिर इसका आधार क्या था?"

गारद के अफ़सर के शब्दों से मैंने गहरे अपमान का अनुभव किया और तैश में आकर अपनी सफ़ाई देने लगा। मैंने बताया कि कैसे स्तेपी में तूफ़ान के दौरान पुगाचोव से मेरा परिचय आरम्भ हुआ था, कैसे बेलागोर्स्काया क़िले पर क़ब्ज़ा करते समय उसने मुझे पहचानकर मुझ पर दया दिखाई। मैंने कहा कि नक़ली सम्राट से कोट और घोड़ा लेना बेशक मेरी अन्तरात्मा की आवाज़ के ख़िलाफ़ था, मगर कैसे मैंने दुश्मन से बेलागोर्स्काया क़िले को बचाने में अपनी पूरी ताक़त लगा दी थी। आख़िर में मैंने अपने जनरल का हवाला दिया, जो ओरेनबुर्ग के दुःखद घेरे के समय मेरे द्वारा दिखाए गये जोश का गवाह था।

कठोर बूढ़े ने मेज़ से एक खुला हुआ पत्र उठाया और उसे पढ़ने लगा,

"महामान्य, आपके द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर में, जो कनिष्ठ लेफ़्टिनेंट ग्रीनेव से सम्बन्धित है, जिस पर हाल ही के विद्रोह में, सम्भवतः, लिप्त होने का एवं दुश्मन के साथ ऐसे सम्बन्ध रखने का आरोप है, जिनकी फ़ौजी सेवा अनुमति नहीं देती तथा जो वफ़ादारी की शपथ के विरुद्ध है, निम्नलिखित विवरण प्रस्तुत करता हूँ : 'कनिष्ठ लेफ़्टिनेंट ग्रीनेव ओरेनबुर्ग की फ़ौज में पिछले अक्टूबर, 1773 के आरम्भ से इस वर्ष 24 फ़रवरी तक था, इसी दिन वह शहर से ग़ायब हो गया और तब से वह मेरी कमांड में वापस नहीं लौटा है। भागकर वापस आये लोगों से सुना है कि वह पुगाचोव के पास गाँव में था और उसी के साथ बेलागोर्स्काया क़िले में गया, जहाँ पहले वह सेवारत था; जहाँ तक उसके आचरण का सवाल है, तो मैं...।" यहाँ उसने पढ़ना रोक दिया और गम्भीरता से मुझसे कहा, "अब अपनी सफ़ाई में तुम क्या कहते हो?"

मैं वैसे ही जारी रखना चाहता था, जैसा मैंने आरम्भ किया था, और मारिया इवानोव्ना के साथ अपने सम्बन्ध को भी, और बातों के अलावा, वैसी ही ईमानदारी से समझाना चाहता था। मगर अचानक मुझे भयानक वितृष्णा का अनुभव हुआ। मेरे दिमाग़ में यह ख़याल आया कि अगर उसका नाम लूँगा, तो कमिटी उसे भी गवाही देने के लिए बुलाएगी, और बदमाशों के निकृष्ट आरोपों में उसका नाम जोड़ने और उसे उनके सामने पेश करने के भयानक विचार ने मुझ पर ऐसा प्रभाव डाला कि मैं हकलाने लगा और गड़बड़ा गया।

मेरे निर्णायक जो शायद कुछ सहानुभूति से मेरे जवाब सुनने लगे थे, मेरी घबराहट देखकर फिर से मेरे विरुद्ध हो गये। गारद के अफ़सर ने माँग की कि मुझे प्रमुख मुख़बिर के सामने लाया जाए। जनरल ने कल के बदमाश को लाये जाने का हुक्म दिया। मैं बड़ी अधीरता से दरवाज़े की ओर देखते हुए उस व्यक्ति के प्रकट होने की राह देखने लगा, जिसने मुझ पर आरोप लगाया था। कुछ मिनटों बाद बेड़ियाँ खनखनाईं, द्वार खुले, और अन्दर आया, श्वाब्रिन। उसमें हुए परिवर्तन से मैं हैरान रह गया। वह बुरी तरह दुबला हो गया था, चेहरा पीला पड़ चुका था। उसके बाल, जो कुछ ही समय पहले तक काजल की तरह काले थे, एकदम सफ़ेद हो गये थे, लम्बी दाढ़ी बिखरी हुई थी। उसने क्षीण किन्तु दृढ़ आवाज़ में अपने आरोप दुहराये। उसके अनुसार, मुझे पुगाचोव द्वारा जासूस बनाकर ओरेनबुर्ग भेजा गया था; हर रोज़ मैं दुश्मन से दो-दो हाथ करने क़िले से बाहर इसलिए जाया करता था कि शहर में हो रही घटनाओं के बारे में लिखित जानकारी दे सकूँ; अन्त में मैं खुल्लम-खुल्ला नक़ली सम्राट से मिल गया, उसके साथ एक दुर्ग से दूसरे दुर्ग जाता, अपने ग़द्दार साथियों को हर प्रकार से समाप्त करने की कोशिश में, जिससे कि उनकी जगह पा सकूँ और स्वघोषित सम्राट द्वारा दिये इनाम पा सकूँ। मैं चुपचाप उसकी बातें सुनता रहा और एक चीज़ से ख़ुश हो गया : उस कायर बदमाश ने मारिया इवानोव्ना का नाम तक नहीं लिया था, कहीं इसलिए तो नहीं कि उसका ख़याल आते ही, जिसने उसे घृणा

से दुत्कार दिया था, उसके स्वाभिमान को चोट पहुँचती थी; कहीं इसलिए तो नहीं कि उसके दिल में भी उसी दबी भावना की चिनगारी थी, जिसने मुझे भी ख़ामोश रहने पर मजबूर कर दिया था, जो भी हो, बेलागोर्स्काया के कमांडेंट की बेटी का नाम समिति के सामने नहीं लिया गया। मेरा इरादा और भी पक्का हो गया, और जब निर्णायकों ने पूछा : श्वाब्रिन के आरोपों को मैं कैसे झुठला सकता हूँ, तो मैंने जवाब दिया कि मैं अपने पहले स्पष्टीकरण पर अटल हूँ और अपनी सफ़ाई में कुछ और नहीं कह सकता। जनरल ने हम दोनों को ले जाने की आज्ञा दी। हम एक साथ बाहर निकले। मैंने शान्ति से श्वाब्रिन की ओर देखा, मगर उससे एक भी शब्द नहीं कहा। वह दुष्टता से मुस्कुराया और, अपनी बेड़ियाँ उठाकर तेज़ क़दम बढ़ाते हुए मुझसे आगे निकल गया। मुझे दुबारा जेल ले जाया गया और उसके बाद पूछताछ के लिए नहीं बुलाया गया।

मैं उस सबका गवाह नहीं हूँ, जिसके बारे में पाठक को बताना शेष है, मगर उसके बारे में मैंने इतनी कहानियाँ सुनी हैं, कि छोटे-से-छोटा विवरण भी मेरी स्मृति में दर्ज हो गया है, और मुझे ऐसा लगता है, मानों मैं वहीं अदृश्य रूप से उपस्थित था।

मारिया इवानोव्ना का मेरे माता-पिता ने उतने ही सहज प्रेम से स्वागत किया, जो प्राचीन काल के लोगों की विशेषता थी। उन्होंने इसमें भगवान की कृपा देखी कि उन्हें बेचारी अनाथ लड़की को शरण देने एवं प्यार करने का मौक़ा मिला। शीघ्र ही उन्हें सचमुच ही उससे लगाव हो गया, क्योंकि उसे जानकर उसे प्यार न करना असम्भव था। मेरा प्यार अब पिता को कोरी सनक नहीं प्रतीत हुआ; और माँ तो यही चाहती थीं कि उसका पेत्रूशा कप्तान की प्यारी बेटी से ब्याह कर ले।

मेरी गिरफ़्तारी की ख़बर से मेरे परिवार को गहरा आघात पहुँचा। मारिया इवानोव्ना ने मेरे माता-पिता को पुगाचोव से हुए मेरे विचित्र परिचय के बारे में इतनी सहजता से बताया था, कि वे न केवल इससे ज़रा भी परेशान न हुए, बल्कि दिल खोलकर हँस पड़े। पिताजी विश्वास नहीं करना चाहते थे कि मैं इस तिरस्कृत विद्रोह में शामिल था, जिसका उद्देश्य था राज सिंहासन उलट देना और कुलीन वंशों का नाश करना। उसने कड़ाई से सावेलिच से पूछताछ की। चचा ने छिपाया नहीं कि मालिक एमिल्यान पुगाचोव के यहाँ गया था और उस दुष्ट ने उन पर दया की थी, मगर उसने कसम खाई कि किसी तरह की ग़द्दारी की बात उसने नहीं सुनी। बूढ़े शान्त हो गये और बेचैनी से शुभ समाचार का इन्तज़ार करने लगे। मारिया इवानोव्ना बड़ी उत्तेजित थी, मगर ख़ामोश थी, क्योंकि वह अत्यन्त विनयशील एवं सावधान थी।

कुछ सप्ताह बीत गये...अचानक पिताजी को पीटर्सबुर्ग से हमारे रिश्तेदार राजकुमार बी XX का पत्र मिला। राजकुमार ने उन्हें मेरे बारे में लिखा था। साधारण-सी शुरुआत के बाद, उसने लिखा था, कि विद्रोहियों से मेरी साँठ-गाँठ होने का सन्देह, दुर्भाग्यवश, सही साबित हुआ है, और मुझे सूली दे ही दी जाती, मगर

साम्राज्ञी ने पिता की सेवाओं और ढलती उम्र का लिहाज़ करते हुए, अपराधी बेटे पर दया करने का निर्णय लिया और इस शर्मनाक मृत्यु से उसे बचाते हुए हमेशा के लिए दूर-दराज़ के साइबेरिया प्रान्त में निर्वासित करने की आज्ञा दी है।

इस अप्रत्याशित आघात ने तो पिताजी की जान ही ले ली होती। उन्होंने अपनी हमेशा की दृढ़ता खो दी, और उनका दुःख (अक्सर गूँगा) कटु शिकायतों में व्यक्त होने लगा।

"क्या!" उन्होंने आपे से बाहर होते हुए दुहराया, "मेरा बेटा पुगाचोव के मंसूबों में शामिल था! हे, भगवान, यह क्या देखने के लिए मैं अब तक जिया! साम्राज्ञी उसे मौत के मुँह से बचा रही हैं! क्या इससे मुझे ठंडक पहुँची है? मृत्यु, इतनी भयानक नहीं है : मेरे एक पूर्वज माथे पर गोली खाकर मरे, उसकी रक्षा करते हुए, जिसे अपनी आत्मा की पवित्रता मानते थे, मेरे पिता वोलिन्स्की और ख़ुश्चोव[1] के साथ शहीद हुए थे। मगर एक कुलीन का अपनी शपथ से विश्वासघात करना, लुटेरों के साथ, हत्यारों के साथ, भगोड़े कृषिदासों के साथ मिल जाना!...हमारे वंश के लिए शर्मनाक है; कलंक है!..." उनकी हताशा से भयभीत माँ उनके सामने रोने की हिम्मत न करती और यह कहकर उनका जोश वापस लाने की कोशिश करती कि अफ़वाहें बेबुनियाद होती हैं, और लोगों की राय भी डाँवाडोल होती रहती है। मेरे पिता को दिलासा देना असम्भव था।

सबसे ज़्यादा पीड़ा मारिया इवानोव्ना को हो रही थी। यह यक़ीन करते हुए, कि मैं जब भी चाहता, अपनी सफ़ाई पेश कर सकता था, उसने असलियत का अन्दाज़ लगा लिया और मेरे दुर्भाग्य के लिए स्वयं को ज़िम्मेदार मानने लगी। वह सबसे अपने आँसू और पीड़ा छिपाती और लगातार सोचती रहती कि किस तरीके से मुझे बचाया जा सकता है।

एक दिन शाम को पिताजी सोफ़े पर बैठे दरबारी कैलेंडर के पन्ने पलट रहे थे, मगर उनके ख़याल कहीं दूर थे, और यह पढ़ना उन्हें हमेशा की तरह प्रभावित नहीं कर रहा था। वह पुराने फ़ौजीमार्च की धुन पर सीटी बजा रहे थे। माँ चुपचाप बैठी ऊनी क़मीज़ बुन रही थी, जिस पर बीच-बीच में आँसुओं की बूँदें टपक जातीं। अचानक मारिया इवानोव्ना, जो वहीं काम कर रही थी, बोली कि किसी आवश्यक काम से उसका पीटर्सबुर्ग जाना ज़रूरी है और वह विनती करती है कि उसके जाने का इन्तज़ाम कर दिया जाए। माँ बहुत दुःखी हो गयी।

"तुझे क्यों जाना है पीटर्सबुर्ग?" उसने कहा, "मारिया इवानोव्ना कहीं तुम भी

---

1. वोलिन्स्की और ख़ुश्चोव—वोलिन्स्की साम्राज्ञी आन्ना इवानोव्ना के मन्त्री थे, जिन्होंने साम्राज्ञी के प्रिय पात्र, जर्मन बिरोन, की सत्ता को उलटने का असफल षड़यन्त्र रचा था। ख़ुश्चोव उनके साथ थे। दोनों को सन् 1740 में फाँसी दे दी गई।

तो हमें छोड़कर जाना नहीं चाहतीं?" मारिया इवानोव्ना ने जवाब दिया कि उसका भविष्य इसी यात्रा पर निर्भर करता है, और उस व्यक्ति की बेटी होने के नाते, जिसने अपनी वफ़ादारी के कारण दुःख उठाया था, वह सामर्थ्यवान लोगों से संरक्षण और मदद माँगने जा रही है।

मेरे पिता ने सिर झुका लिया : हर वह शब्द जो बेटे के सम्भावित अपराध की याद दिलाता, उन्हें तकलीफ़ पहुँचाता और चुभता हुआ व्यंग्य प्रतीत होता।

"जाओ, माँ!" उन्होंने गहरी साँस लेते हुए उनसे कहा, "हम तुम्हारे सुख के रास्ते में बाधा नहीं डालना चाहते। भगवान करे तुम्हें वर के रूप में मिले एक भला आदमी, न कि कोई कलंकित गद्दार।"

माँ के साथ अकेले रह जाने पर मारिया इवानोव्ना ने संक्षेप में उसे अपनी योजना समझाई। माँ ने आँसू बहाते हुए उसे अपनी बाँहों में भर लिया और भगवान से उसके प्रस्तावित काम को सफलतापूर्वक पूरा करने की प्रार्थना की। मारिया इवानोव्ना के सफ़र की तैयारी कर दी गयी और कुछ दिनों बाद वह चल पड़ी अपनी विश्वस्त पलाशा और वफ़ादार सावेलिच के साथ, जो मुझसे ज़बर्दस्ती जुदा कर दिये जाने पर, इसी ख़याल से सन्तुष्ट था कि मेरी नियोजित वधू की सेवा कर रहा है।

मारिया इवानोव्ना सही-सलामत सोफ़िया[1] पहुँच गयी और, डाक चौकी से यह जानकर कि दरबार इस समय त्सास्कोंये सेलो में है, उसने वहीं रुकने का निश्चय किया। उसे भीतरी दीवार के पीछे थोड़ी-सी जगह दे दी गयी। मुंशी की बीवी उससे तुरन्त बतियाने लगी, बोली कि वह महल की भट्ठियाँ गर्माने वाले की भतीजी है, और महल की ज़िन्दगी के सभी भेद उसे बताने लगी। उसने बतलाया कि साम्राज्ञी अक्सर कब उठती हैं, कॉफ़ी पीती हैं, घूमने निकलती हैं; उस समय उनके साथ कौन-कौन से महत्त्वपूर्ण व्यक्ति रहते हैं, उन्होंने कल खाने की मेज़ पर क्या बातें कीं, शाम को किससे मिलीं, संक्षेप में आन्ना व्लासेव्ना की सूचनाएँ ऐतिहासिक संस्मरणों के कई पन्ने रँगतीं और भावी पीढ़ी के लिए अमूल्य धरोहर सिद्ध होतीं। मारिया इवानोव्ना ने ध्यान से उसकी बातें सुनीं। वे बाग़ में गईं। आन्ना व्लासेव्ना ने हर वृक्ष वीथि का, हर पुलिया का इतिहास बताया और घूमने के बाद वे, एक-दूसरे से बेहद ख़ुश डाक चौकी वापस लौटीं।

दूसरे दिन सुबह मारिया इवानोव्ना बड़ी जल्दी उठ गयी, उसने कपड़े पहने और हौले से बाग़ में गयी। बड़ी ख़ुशनुमा सुबह थी, सूरज लीपा वृक्षों के शिखरों को आलोकित कर रहा था जो शिशिर की ताज़ा साँसों से पीले पड़ गये थे। झिलमिलाता लम्बा-चौड़ा तालाब निश्चल था। जाग चुके हंस बड़ी शान से किनारे पर लगी झाड़ियों के नीचे से बाहर की ओर तैर रहे थे। मारिया इवानोव्ना ख़ूबसूरत चरागाह के निकट

---

1. यहाँ त्सास्कोंये सेलो के उद्यान के पीछे बनी फ़ौजी छावनी से तात्पर्य है।

गयी, जहाँ अभी-अभी ग्राफ़ प्योत्र अलेक्सान्द्रोविच रूम्यान्त्सेव की हाल ही की विजय के सम्मान में एक स्मारक बनाया गया था। अचानक अंग्रेज़ी नस्ल का एक छोटा-सा सफ़ेद कुत्ता भौंककर उसके पास भागता हुआ आया। मारिया इवानोव्ना घबराकर रुक गयी। इसी समय एक प्यारा-सा नारी स्वर सुनाई दिया, "घबराइए नहीं, वह काटता नहीं है।"

और मारिया इवानोव्ना ने स्मारक के सामने बेंच पर बैठी एक महिला को देखा। मारिया इवानोव्ना बेंच के दूसरे सिरे पर बैठ गयी। महिला लगातार उसकी ओर देखती रही, और मारिया इवानोव्ना ने कुछ तिरछी नज़रें डालकर सिर से पैर तक उसका निरीक्षण कर लिया। वह सुबह की सफ़ेद पोशाक, रात में पहननेवाली टोपी और रुईदार जैकेट पहने थी। उसकी उम्र लगभग चालीस वर्ष की थी। उसका भरा-भरा गुलाबी चेहरा गरिमा और शान्ति प्रकट कर रहा था, और नीली आँखों तथा हल्की-सी मुस्कान में ग़ज़ब का आकर्षण था। पहले महिला ने ही ख़ामोशी तोड़ी।

"आप, शायद यहाँ की नहीं हैं?" उसने कहा।

"एकदम सही; मैं कल ही प्रान्तीय गाँव से आयी हूँ।"

"आप अपने रिश्तेदारों के साथ आयी हैं?"

"बिलकुल नहीं। मैं अकेली आयी हूँ।"

"अकेली! मगर आप तो इतनी जवान हैं!"

"मेरे न तो पिता हैं, और न ही माँ।"

"आप निश्चय ही यहाँ किसी काम से आयी हैं?"

"एकदम ठीक। मैं साम्राज्ञी को एक अर्ज़ी देने आयी थी।"

"आप अनाथ हैं, आप शायद नाइंसाफ़ी और अपमान की शिकायत करने आयी हैं?"

"जी नहीं। मैं दया की भीख माँगने आयी हूँ, न कि इंसाफ़।"

"यह पूछने की इजाज़त दीजिए कि आप हैं कौन?"

"मैं कप्तान मिरोनोव की बेटी हूँ।"

"कप्तान मिरोनोव की! उसी की जो ओरेनबुर्ग के एक क़िले का कमांडेंट था?"

"सही फ़रमाया।"

महिला, शायद, द्रवित हो उठी थी। "माफ़ कीजिए," उसने और अधिक प्यार से कहा, "अगर मैं आपके काम में दख़ल दे रही हूँ, तो : मगर मैं महल में जाती रहती हूँ, मुझे बताइए कि आपकी प्रार्थना क्या है, और, हो सकता है कि मैं आपकी कुछ मदद कर सकूँ।"

मारिया इवानोव्ना ने उठकर उसे धन्यवाद दिया। अपरिचित महिला की हर बात अनचाहे ही उसके दिल को आकर्षित कर रही थी और विश्वास जगा रही थी।

मारिया इवानोव्ना ने जेब से तह किया हुआ काग़ज़ निकाला और उसे अपना अपरिचित मेहरबान को दे दिया, जो उसे मन-ही-मन पढ़ने लगी।

पहले तो वह बड़े ध्यान से और सहानुभूति से पढ़ रही थी; मगर अचानक उसका चेहरा बदल गया, और मारिया इवानोव्ना, जो आँखों से उसके हाव-भावों पर नज़र रख रही थी, उस चेहरे के कठोर भाव देखकर डर गयी, जो एक ही मिनट पहले इतना प्यारा और शान्त था।

"आप ग्रीनेव के लिए प्रार्थना कर रही हैं?" महिला ने ठंडेपन से कहा, "साम्राज्ञी उसे क्षमा नहीं कर सकती। उसने स्वघोषित सम्राट से साँठ-गाँठ की थी, अज्ञानता और भोलेपन के कारण नहीं, अपितु एक दुराचारी और ख़तरनाक नीच व्यक्ति की तरह।"

"आह, झूठ है!" मारिया इवानोव्ना चीख़ी।

"कैसे झूठ!" महिला ने पूरी तरह तैश में आकर प्रतिवाद किया।

"बिलकुल झूठ है, हे भगवान, एकदम ग़लत है। मैं सब कुछ जानती हूँ, मैं आपको सब कुछ बताऊँगी। उसने सिर्फ़ मेरी ख़ातिर वह सब बर्दाश्त कर लिया, जो उस पर गुज़री है। और अगर उसने निर्णायकों के सामने अपनी सफ़ाई पेश नहीं की, तो वह भी सिर्फ़ इसलिए कि मुझे उसमें घसीटना नहीं चाहता था।" उसने बड़े जोश में वह सब सुनाया, जो मेरे पाठक को मालूम है। महिला ने बड़े ध्यान से उसकी बात सुनी।

"आप कहाँ रुकी हैं?" उसने फिर पूछा; और, यह सुनकर कि वह आन्ना व्लोस्येव्ना के यहाँ रुकी है मुस्कुराकर बोली, "आ! जानती हूँ। अलविदा, किसी से भी हमारी मुलाक़ात के बारे में न कहिए। मुझे उम्मीद है कि आपको अपने ख़त के जवाब का ज़्यादा देर इन्तज़ार नहीं करना पड़ेगा।"

इतना कहकर वह उठी और बन्द वृक्ष वीथी में चली गयी, और ख़ुशी की आशा से भरी मारिया इवानोव्ना आन्ना व्लास्येव्ना के पास लौट आयी।

घर की मालकिन ने उसे शिशिर की सुबह की सैर के लिए डाँटा, जो उसकी राय में, युवा लड़की के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। वह समोवार ले आयी और चाय पीते हुए महल के बारे में अपनी लगातार बड़बड़ शुरू करने ही वाली थी, कि अचानक राजमहल की गाड़ी ड्योढ़ी के सामने रुकी, और शाही हरकारे ने आकर सूचना दी कि साम्राज्ञी अपने पास मारिया मिरोनोवा को आमन्त्रित कर रही हैं। आन्ना व्लास्येव्ना भौंचक्की रह गयी और फ़ौरन दौड़ धूप करने लगी।

"आह, मेरे भगवान!" वह चिल्लायी, "साम्राज्ञी ने आपको महल में बुलाया है। उन्हें आपके बारे में मालूम कैसे हुआ? और हाँ, आप, मेरी माँ, साम्राज्ञी के सामने जाएँगी कैसे? आप, मुझे यक़ीन है, महल के तौर-तरीक़े से चल भी नहीं सकतीं...क्या

में आपको ले चलूँ? कम-से-कम कुछ समझा-बुझा ही दूँगी। और आप सफ़र की पोशाक में कैसे जाएँगी? क्या दाई माँ के यहाँ से उसकी पीली पोशाक मँगवा दूँ?"

शाही हरकारे ने ऐलान किया, कि साम्राज्ञी की यह इच्छा है कि मारिया इवानोव्ना अकेली और जिस हालत में हो, उसी में आये। कोई चारा ही न था : मारिया इवानोव्ना गाड़ी में बैठी और महल में गयी, आन्ना व्लोस्येव्ना की सलाहें और आशीर्वाद लिये।

मारिया इवानोव्ना को हमारे भाग्य के निर्णय का पूर्वाभास हो गया था; उसका दिल बड़े ज़ोर से धड़कता और रुक जाता। कुछ मिनटों के बाद गाड़ी महल के निकट रुकी। मारिया इवानोव्ना काँपती हुई सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। उसके सामने दरवाज़े खुलते जाते। उसने ख़ाली, लाजवाब कमरों की एक लम्बी क़तार पार की; शाही हरकारा रास्ता दिखा रहा था। आख़िरकार एक बन्द दरवाज़े के पास आकर, उसने कहा कि अभी उसके बारे में सूचना देगा, और उसे अकेला छोड़कर अन्दर चला गया।

साम्राज्ञी को आमने-सामने देखने के ख़याल से वह इतनी भयभीत हो गयी थी कि बड़ी मुश्किल से अपने पैरों पर खड़ी रह पा रही थी। एक मिनट बाद द्वार खुले, और वह साम्राज्ञी के शृंगार कक्ष में गयी।

साम्राज्ञी सिंगार मेज़ पर बैठी थी। महल के कुछ लोग उन्हें घेरे खड़े थे और उन्होंने सम्मानपूर्वक मारिया इवानोव्ना को आगे जाने दिया। साम्राज्ञी बड़े स्नेह से उसकी ओर मुख़ातिब हुईं, और मारिया इवानोव्ना ने देखा कि यह तो वही महिला है, जिसके साथ कुछ ही मिनट पूर्व उसने इतना खुलकर बातें की थीं।

साम्राज्ञी ने उसे अपने निकट बुलाया और मुस्कुराकर कहा, "मैं ख़ुश हूँ, कि आपको दिये गये वचन का पालन कर सकी और आपकी प्रार्थना पूरी कर पायी। आपका मामला समाप्त हुआ। मुझे आपके मंगेतर की निरपराधिता का यक़ीन हो गया है। यह रहा ख़त, जिसे ख़ुद ही अपने भावी श्वसुर को देने का कष्ट कीजिए।"

मारिया इवानोव्ना ने काँपते हाथ से पत्र लिया और रोते हुए साम्राज्ञी के पैरों पर गिर पड़ी, जिसने उसे उठाकर चूम लिया। साम्राज्ञी उससे बातचीत करने लगी, "मुझे मालूम है, कि आप धनवान नहीं हैं," उन्होंने कहा, "मगर मैं कप्तान मिरोनोव की बेटी की ऋणी हूँ। भविष्य की चिन्ता मत कीजिए। मैं आपकी ख़ुशहाली की ज़िम्मेदारी लेती हूँ।"

ग़रीब अनाथ को दुलारकर, साम्राज्ञी ने उसे बिदा किया। मारिया इवानोव्ना उसी शाही गाड़ी में वापस आयी। आन्ना व्लास्येव्ना ने, जो उसकी वापसी का बेचैनी से इन्तज़ार कर रही थी, उस पर प्रश्नों की बौछार कर दी, जिनका उत्तर मारिया इवानोव्ना ने किसी तरह दिया। हालाँकि आन्ना व्लास्येव्ना उसके भुलक्कड़पन से नाख़ुश थी, मगर उसने इसके लिए प्रान्तीय सकुचाहट को ज़िम्मेदार मानते हुए बड़े

दिल से उसे माफ़ कर दिया। मारिया इवानोव्ना पीटर्सबुर्ग को देखने की उत्सुकता न दर्शाते हुए, उसी दिन गाँव के लिए रवाना हो गयी...

यहाँ प्योत्र अन्द्रेयेविच ग्रीनेव के संस्मरण समाप्त होते हैं। पारिवारिक कागज़ातों से पता चलता है कि उसे सम्राज्ञी की आज्ञा से सन् 1774 के अन्त में जेल से रिहा कर दिया गया। यह भी पता चलता है कि वह पुगाचोव का वध किये जाने के समय उपस्थित था, जिसने भीड़ में उसे पहचानकर सिर हिलाया था, जिसे एक मिनट बाद मृत और लहूलुहान, जनता को दिखाया गया। इसके फ़ौरन बाद प्योत्र अन्द्रेइच ने मारिया इवानोव्ना से शादी कर ली। उनके वंशज सिम्बिर्स्क प्रान्त में सुख से रह रहे हैं। XX से तीस मील दूर दस ज़मींदारों का एक गाँव है। उनमें से एक हवेली के पार्श्वकक्ष में साम्राज्ञी एकातेरिना द्वितीय के हाथ का लिखा काँच की फ्रेम में जड़ा एक ख़त है। वह प्योत्र अन्द्रेयेविच के पिता को लिखा गया है, जिसमें उसके बेटे की निरपराधिता को प्रमाणित किया गया है तथा कप्तान मिरोनोव की बेटी के दिलो-दिमाग़ की तारीफ़ की गयी है। प्योत्र अन्द्रेयेविच ग्रीनेव की पांडुलिपि हमें उनके एक पोते ने दी, जिसे पता चला था कि हम उसके दादा द्वारा वर्णित समय में घटित घटनाओं पर कार्य कर रहे हैं।

रिश्तेदारों की इजाज़त से, हर अध्याय के लिए अलग-अलग ख़ूबसूरत-सी उचित पंक्तियाँ चुनकर तथा कुछ व्यक्तियों के नामों को बदलने की आज़ादी लेकर हमने उसे स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित करने का निर्णय लिया।

19 अक्टूबर 1836
(प्रकाशक)

परिशिष्ट I

एक छूटा हुआ अध्याय[1]

हम वोल्गा के तट की ओर बढ़ रहे थे; हमारी फ़ौज गाँव में घुसी और वहीं रात बिताने के लिए रुक गयी। गाँव के प्रमुख ने मुझे बताया कि उस पार के सभी गाँवों ने विद्रोह कर दिया है, पुगाचोव के दल चारों ओर घूम रहे हैं। इस समाचार ने मुझे बहुत उत्तेजित कर दिया। हम दूसरे दिन सुबह उस पार जानेवाले थे। बेचैनी मुझ पर हावी हो गयी। मेरे पिता का गाँव नदी के उस पार तीस मील की दूरी पर था। मैंने पूछा कि क्या मल्लाह मिल सकेगा। सभी किसान मछलियाँ पकड़ते थे, नावें बहुत सारी थीं। मैं ग्रीनेव के पास आया और उसे अपना इरादा कह सुनाया।

"सँभल के," उसने मुझसे कहा, "अकेले जाने में ख़तरा है। सुबह का इन्तज़ार करो। हम सबसे पहले जाएँगे और तुम्हारे माता-पिता के यहाँ हर हाल में कम-से-कम पचास हुस्सारों को मेहमान बनाकर ले जाएँगे"।

मैं अपनी बात पर अड़ा रहा। नाव तैयार थी। मैं उसमें दो मल्लाहों के साथ बैठा। उन्होंने नाव धकेली और चप्पू चलाना शुरू कर दिया।

आसमान साफ़ था। चाँद चमक रहा था। मौसम ख़ामोश था, वोल्गा ख़ामोशी से हौले-हौले बह रही थी। नाव, हल्के-हल्के हिचकोले खाते हुए, काली लहरों पर तेज़ी से फिसलती जा रही थी। मैं अपनी कल्पना में खो गया। क़रीब आधा घंटा बीता। हम नदी के बीच में पहुँच चुके थे...अचानक माँझी आपस में खुसर-फुसर करने लगे।

"क्या बात है?" मैंने सावधान होते हुए पूछा।

"मालूम नहीं, भगवान ही जाने।" मल्लाहों ने एक ओर को देखते हुए जवाब दिया।

मेरी आँखें भी उसी दिशा में हो लीं, और मैंने झुटपुटे में कोई चीज़ वोल्गा में बहाव के साथ तैरती हुई देखी। अनजान वस्तु क़रीब आयी। मैंने मल्लाहों से रुककर उसका इन्तज़ार करने को कहा। चाँद बादलों की आड़ में छिप गया था। तैरती हुई

---

1. यह अध्याय *कप्तान की बेटी* की अन्तिम आवृत्ति में शामिल नहीं किया गया था और हस्तलिखित पांडुलिपि में ही 'एक छूटा हुआ अध्याय' के नाम से रह गया। इस अध्याय में ग्रीनेव का नाम बुंलानिन है, और ज़ूरिन का ग्रीनेव।

परछाई और भी अस्पष्ट हो गयी। वह मेरे पास ही थी, और फिर भी मैं समझ नहीं पा रहा था।

"यह क्या हो सकता है," नाविक बोले, "पाल कहो तो पाल नहीं, और मस्तूल बोलो तो मस्तूल नहीं..." अचानक चाँद बादलों की ओट से निकला और उसने उस भयानक दृश्य पर प्रकाश डाला। हमारी ओर एक बेड़े से बँधी हुई सूली चली आ रही थी, शहतीर पर लटके थे तीन मुर्दे। एक बीमार-सी उत्सुकता ने मुझे धर दबोचा। मैं मृतकों के चेहरे देखना चाहता था।

मेरी आज्ञा से मल्लाहों ने बेड़े को एक ज़ंजीर से खींच लिया और मेरी नौका तैरती हुई सूली से जा टकरायी। मैं कूदकर उन भयानक खम्भों के बीच पहुँचा। चमकते चाँद ने उन अभागों के क्षत-विक्षत चेहरे प्रकाशित किये। उनमें से एक था बूढ़ा चुवाश, दूसरा रूसी किसान, मज़बूत और तन्दुरुस्त, लगभग बीस साल का नौजवान। मगर तीसरे की ओर देखकर मैं भौचक्का रह गया और दुःख भरे चीत्कार को रोक न पाया : यह था वांका, मेरा, ग़रीब वांका, जो अपनी बेवक़ूफ़ी से पुगाचोव के साथ हो लिया था। उनके ऊपर ठुकी हुई थी एक काली तख्ती, जिस पर सफ़ेद, बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, "चोर और विद्रोही"।

मल्लाह उदासीनता से देख रहे थे और ज़ंज़ीरवाले हुक से बेड़े को थामे मेरी राह देख रहे थे। मैं फिर से नाव में बैठ गया। बेड़ा नदी की धारा के साथ-साथ नीचे की ओर बहता रहा। अँधेरे में सूली की काली आकृति देर तक दिखाई देती रही। आख़िर में वह लुप्त हो गयी, और मेरी नाव ऊँचे, सीधे किनारे पर लग गयी।

मैंने मल्लाहों को दिल खोलकर पैसे दिये। उनमें से एक मुझे घाट के पास स्थित गाँव के मुखिया के पास ले गया। मैं उसके साथ झोंपड़ी में घुसा। मुखिया यह सुनकर कि मुझे घोड़े चाहिए, मुझसे काफ़ी रूखाई से पेश आने ही वाला था, कि मेरे रहबर ने उससे दबी आवाज़ में कुछ कहा और उसकी नाराज़गी फ़ौरन तत्पर चापलूसी में बदल गयी। एक ही मिनट में त्रोयका तैयार हो गयी, मैं उसमें बैठ गया और मुझे अपने गाँव ले चलने का हुक्म दिया।

मैं राजमार्ग पर चला जा रहा था, सोये हुए गाँवों की बग़ल से होकर। मुझे सिर्फ़ एक ही बात का डर था : कि मुझे रास्ते में रोक दिया जाएगा। अगर वोल्गा में मेरी रात की मुलाक़ात से विद्रोहियों की उपस्थिति सिद्ध होती थी, तो साथ ही सरकार की ज़बर्दस्त विरोधी कार्रवाई को भी प्रमाणित करती थी। हर हाल में मेरे पास पुगाचोव द्वारा दिया गया अनुमति पत्र, और कर्नल ग्रीनेव का आज्ञा पत्र भी था। मगर मुझे कोई नहीं मिला और सुबह होते-होते नदी और फर वृक्षों का झुरमुट नज़र आने लगा, जिसके पीछे हमारा गाँव था। कोचवान ने घोड़ों पर चाबुक बरसाया, और पन्द्रह मिनट बाद मैंने XX में प्रवेश किया।

ज़मींदार का घर गाँव के दूसरे छोर पर था। घोड़े पूरे वेग से दौड़े जा रहे थे। अचानक सड़क के बीचोंबीच कोचवान उन्हें रोकने लगा।

"क्या है?" मैंने बेचैनी से पूछा।

"चौकी है मालिक।" कोचवान ने बड़ी मुश्किल से तैश में आये घोड़ों को रोकते हुए कहा।

वाक़ई, मैंने डंडा लिए एक सन्तरी को और रास्ते में खड़ी की गयी रुकावट को देखा। किसान मेरे पास आया और टोपी उतारकर पासपोर्ट माँगने लगा।

"इसका क्या मतलब है?" मैंने उससे पूछा, "यहाँ यह रुकावट किसलिए है? किसके लिए पहरा दे रहे हो?"

"हाँ हम, मालिक, बग़ावत कर रहे हैं?" उसने सिर खुजाते हुए कहा।

"और तुम्हारे मालिक कहाँ हैं?" मैंने डूबते हुए दिल से पूछा...

"मालिक तो हमारे कहाँ हैं?" किसान ने दुहराया, "हमारे मालिक गेहूँ की खत्ती में बैठे हैं।"

"खत्ती में क्यों?"

"हाँ, अन्द्रूखा, गाँव कमिटीवाले, ने उन्हें बिठाया, देखो, बेड़ियाँ पहनायी, और मालिक, सम्राट के पास ले जाना चाहता है।"

"हे भगवान! निकाल, बेवक़ूफ़, यह रुकावट! मुँह फाड़े क्यों देख रहा है?"

सन्तरी ने टाल-मटोल की। मैं गाड़ी से बाहर कूदा, उसे कान पर झापड़ लगाई (माफ़ी चाहता हूँ) और खुद ही रास्ते की बाधा को हटाया। मेरा कृषिदास मेरी ओर बेवक़ूफ़ की तरह अविश्वास से देखता रहा। मैं फिर से गाड़ी में बैठ गया और ज़मींदार की हवेली ले जाने का हुक्म दिया। गेहूँ की खत्ती आँगन में थी। बन्द दरवाज़ों के पास दो किसान, वैसे ही, डंडे लिए खड़े थे। गाड़ी ठीक उनके सामने रुकी। मैं बाहर कूदा और सीधा उन पर झपट पड़ा।

"दरवाज़ा खोलो!" मैंने उनसे कहा। शायद मेरा अवतार बड़ा भयंकर था। कम-से-कम वे दोनों तो डंडे छोड़कर भाग खड़े हुए। मैंने ताला तोड़ने की और दरवाज़ा तोड़ने की कोशिश की, मगर दरवाज़े बलूत के थे, और अजस्र ताला टस-से-मस होनेवाला नहीं था। इसी समय एक तगड़ा, जवान किसान नौकरों की झोंपड़ी से बाहर आया और अकड़कर पूछने लगा कि मैं ऊधम मचाने की हिम्मत कैसे कर रहा हूँ।

"गाँव कमिटी का अन्द्रयूशा कहाँ है?" मैं उस पर चिल्लाया, "उसे मेरे पास बुलाओ।"

"मैं खुद ही अन्द्रेइ अफानास्येविच हूँ, न कि अन्द्रयूशा।" उसने घमंड से कूल्हों पर हाथ रखते हुए उत्तर दिया, "क्या चाहते हैं?"

जवाब देने के बदले मैंने उसका गिरेबान पकड़ लिया और खींचता हुआ खत्ती के दरवाज़े तक लाकर उसे खोलने का हुक्म दिया। गाँव कमिटीवाला अड़ियलपन दिखा ही रहा था, मगर दादागिरी का उस पर भी असर हुआ। उसने चाभी निकालकर खत्ती का दरवाज़ा खोल दिया। मैं दहलीज़ लाँघकर भीतर घुस गया और एक अँधेरे कोने में, जो छत में बनाये गये एक छोटे से सुराख से आती रोशनी में मुश्किल से दिखाई दे रहा था, मैंने माँ और पिताजी को देखा। उनके हाथ बँधे हुए थे, पैरों में बेड़ियाँ थीं। मैं उनका आलिंगन करने के लिए लपका और एक भी शब्द न कह सका। दोनों बड़े अचरज से मेरी ओर देख रहे थे, फ़ौजी जीवन के तीन वर्षों ने मुझे इतना बदल दिया था कि वे मुझे पहचान न पाये। माँ ने एक आह भरी और आँसुओं से नहा गयी।

अचानक मैंने एक प्यारी, परिचित आवाज़ सुनी, "प्योत्र अन्द्रेइच! आप!"

मैं मानो बुत बन गया...मुड़कर देखा तो दूसरे कोने में मारिया इवानोव्ना को पाया, वैसी ही बन्दिस्त दशा में।

पिताजी अपने आप पर विश्वास करने की हिम्मत न करते हुए, मेरी ओर ख़ामोशी से देख रहे थे। प्रसन्नता उनके चेहरे पर दमक रही थी। मैंने फुर्ती से तलवार से उनके बन्धन काट दिये।

"जीते रहो, जीते रहो पेत्रूशा," मुझे सीने से लगाते हुए पिताजी बोले, "भगवान का शुक्र है कि तुम्हें देख तो पाये..."

"पेत्रूशा, मेरे दोस्त।" माँ बोली, "भगवान ही तुझे लाया! अच्छे तो हो?"

मैं जल्दी से उन्हें क़ैद से बाहर निकालने लगा, मगर, दरवाज़े तक पहुँचकर मैंने उसे दुबारा बन्द पाया।

"अन्द्यूशा," मैं चीख़ा, "दरवाज़ा खोलो!"

"बिलकुल नहीं।" दरवाज़े के उस पार से गाँव समितिवाले ने जवाब दिया, "खुद भी यहीं बैठे रहो। अभी मज़ा चखाएँगे तुझे ऊधम मचाने और सरकारी अफ़सरों के गिरेबान पकड़कर उन्हें खींचने का।"

मैं खत्ती का निरीक्षण करने लगा, यह ढूँढ़ते हुए कि बाहर निकलने का कोई तरीका है या नहीं।

"बेकार मेहनत न करो," पिताजी ने मुझसे कहा, "मैं ऐसा मालिक नहीं हूँ कि मेरी खत्ती में कोई चोरी से आ-जा सके।"

माँ, जो एक मिनट के लिए मेरे आने से ख़ुश हो गयी थी, हताश हो गयी, यह देखकर कि मुझे भी पूरे परिवार की मृत्यु में सहभागी होना पड़ेगा। मगर जब से मैं उनके और मारिया इवानोव्ना के साथ था, मैं शान्त हो गया था। मेरे पास तलवार और दो पिस्तौल थे, और मैं इस घेराबन्दी को जारी रख सकता था। ग्रीनेव शाम तक

आकर हमें आज़ाद कर देगा। मैंने यह सब अपने माता-पिता को बतलाया और माँ को तसल्ली देने में कामयाब हो गया। वे मुलाक़ात की ख़ुशी में डूब गये।

"तो, प्योत्र," पिताजी ने कहा, "बहुत शरारतें कर लीं, और मैं तुम पर नाराज़ भी बहुत हुआ। मगर पुरानी बातों को याद करने में कोई तुक नहीं है। उम्मीद करता हूँ कि अब तुम सुधर गये हो और समझदार हो गये हो। जानता हूँ कि तुमने वैसी ही फ़ौजी सेवा की है, जैसी एक ईमानदार अफ़सर को करना चाहिए। शुक्रिया! मुझ बूढ़े को सुकून दिया है तुमने। अगर मेरी आज़ादी के लिए तुम्हारा आभारी होना पड़ा, तो ज़िन्दगी दो गुना ख़ुशनुमा हो जाएगी।

मैंने आँसुओं के साथ उनका हाथ चूम लिया और मारिया इवानोव्ना की ओर देखा, जो मेरी उपस्थिति से इतनी ख़ुश हो गयी थी कि एकदम सुखी और शान्त नज़र आ रही थी।

दोपहर के क़रीब हमने असाधारण शोर और चीख़ें सुनीं।

"इसका क्या मतलब है," पिताजी ने कहा, "कहीं तुम्हारा कर्नल तो नहीं आ पहुँचा?"

"असम्भव," मैंने जवाब दिया, "वह शाम से पहले नहीं आएगा।"

शोर बढ़ता गया। नगाड़े बजने लगे। आँगन में घुड़सवार भाग रहे थे, इसी समय एक तंग छेद से जो दीवार में बनाया गया था, सावेलिच का सफ़ेद सिर अन्दर आया, और मेरा ग़रीब चचा दुःख भरे स्वर में बोला, "अन्द्रेइ पेत्रोविच, अवदोत्या वासिल्येव्ना, मेरे प्यारे मालिक प्योत्र अन्द्रेइच, माँ मारिया इवानोव्ना, बुरी ख़बर है! दुश्मन गाँव में घुस आया है। और जानते हो, प्योत्र अन्द्रेइच उन्हें कौन लाया है? श्वाब्रिन, अलेक्सेइ इवानिच, उस पर बिजली गिरे!" वह घृणित नाम सुनकर मारिया इवानोव्ना ने हाथ नचाये और निश्चल हो गई।

"सुनो," मैंने सावेलिच से कहा, "किसी को घोड़े पर XX घाट भेजो, हुस्सारों की सेना के पास, और कर्नल को हमारी ख़तरनाक स्थिति के बारे में जानकारी देने को कहो।"

"किसे भेजूँ, मालिक! सभी छोकरे बग़ावत कर रहे हैं, और सभी घोड़े भी उन्होंने पकड़ लिए हैं। आह! छिः! वे आँगन में घुस आये हैं, खत्ती के पास आ रहे हैं।"

इसी समय दरवाज़े के उस ओर कुछ आवाज़ें सुनाई दीं। मैंने चुपचाप माँ को और मारिया इवानोव्ना को इशारा किया कि वे कोने में चली जाएँ, अपनी तलवार निकाली और दरवाज़े के पास दीवार से चिपक गया। पिताजी ने पिस्तौलें ले लीं और दोनों के घोड़े चढ़ाकर मेरी बग़ल में खड़े हो गये। ताला गरजा, दरवाज़ा खुला, और गाँव समितिवाले का सिर दिखाई दिया। मैंने उस पर तलवार से वार किया, और वह रास्ता रोकते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। उसी समय पिताजी ने दरवाज़े पर पिस्तौल

चला दी। भीड़ जो हमें घेरे खड़ी थी, गालियाँ देते हुए भाग खड़ी हुई। मैंने ज़ख़्मी को दहलीज़ से अन्दर खींचा और अन्दर से दरवाज़े की साँकल चढ़ा दी। आँगन हथियार बन्द लोगों से भरा था। उनके बीच मैंने श्वाब्रिन को पहचान लिया।

"घबराइए मत," मैंने महिलाओं से कहा, "अभी उम्मीद है। और आप, पिताजी, और गोलियाँ न चलाइए। आख़िरी गोली बचाकर रखेंगे।"

माँ मन-ही-मन भगवान की प्रार्थना कर रही थी। फरिश्तों जैसी शान्ति से हमारे भाग्य का इन्तज़ार करते हुए मारिया इवानोव्ना उसके पास खड़ी थी। दरवाज़े के पीछे से धमकियाँ, गालियाँ और बद्दुआएँ सुनाई दे रही थीं। मैं अपनी जगह पर पहले निडर व्यक्ति का सिर काटने को तैयार खड़ा था। अचानक बदमाश चुप हो गये। मैंने श्वाब्रिन की आवाज़ पहचानी, जो मुझे नाम लेकर पुकार रहा था।

"मैं यहाँ हूँ, क्या चाहते हो?"

"आत्मसमर्पण कर दो, बुलानिन, विरोध करना बेकार है। अपने बूढ़े माँ-बाप पर दया करो। ज़िद्दीपन से ख़ुद को न बचा पाओगे। मैं तुम तक पहुँच ही जाऊँगा।"

"कोशिश तो कर, गद्दार!"

"मैं ख़ुद बेकार ही भीतर नहीं घुसूँगा, न ही अपने लोगों की जान जाने दूँगा। खत्ती को जलाने का हुक्म दे दूँगा, और तब देखेंगे तुम क्या करोगे बेलागोर्स्काया के दॉन, किशोत[1]। अब भोजन का समय हो गया है। तब तक बैठो और फ़ुरसत से सोचो। अलबिदा मारिया इवानोव्ना, आपसे माफ़ी नहीं माँगूँगा : आपको, शायद, अँधेरे में अपने सूरमा के साथ बैठे-बैठे उकताहट नहीं हो रही होगी।"

श्वाब्रिन खत्ती के पास पहरेदारों को छोड़कर चला गया। हम ख़ामोश थे। औरों को अपने ख़याल बताने का साहस न करते हुए हर कोई मन-ही-मन सोच रहा था। मैं हर उस बात की कल्पना कर रहा था, जो क्रुद्ध श्वाब्रिन कर सकता था। अपने बारे में तो मुझे बिलकुल फ़िक्र न थी। क्या यह मानना पड़ेगा? मगर मेरे माता-पिता का हश्र भी मुझे उतना भयभीत नहीं कर रहा था, जितना मारिया इवानोव्ना का भाग्य। मुझे मालूम था कि माँ की किसान और नौकर-चाकर बहुत इज़्ज़त करते थे, पिताजी भी अपनी कठोरता के बावजूद उन्हें प्यारे थे, क्योंकि वह न्यायप्रिय थे और अपने अधीनस्थ लोगों की वास्तविक आवश्यकताएँ जानते थे। उनका विद्रोह एक बहकावे का, क्षणिक नशे का परिणाम था, न कि उनके असन्तोष का प्रतीक। यहाँ दया निश्चय ही दिखाई जाएगी। मगर मारिया इवानोव्ना? उस बिगड़े हुए, अमानवीय आदमी ने उसकी किस्मत के साथ कैसा खिलवाड़ करने की ठानी है? मैं भयानक विचार पर ध्यान केन्द्रित नहीं कर पा रहा था और, भगवान मुझे क्षमा करें, मैं उसे दुबारा उस क्रूर दुश्मन के हाथों में देखने के बदले उसे मार डालने के लिए तैयार था।

---

1. दॉन किख़ोत

क़रीब एक घंटा और बीता। गाँव में पियक्कड़ों के गीत गूँजने लगे। हमारे पहरेदार उनसे ईर्ष्या करने लगे, और हम पर झल्लाते हुए, हमें गालियाँ देने लगे, यातनाएँ देने और मार डालने की धमकियाँ देने लगे। हम श्वाब्रिन की धमकियों के परिणाम की राह देख रहे थे। आख़िर आँगन में काफ़ी हलचल हुई; और हमने फिर से श्वाब्रिन की आवाज़ सुनी।

"तो, सोच लिया आप लोगों ने? स्वेच्छा से मेरे सामने समर्पण करेंगे?"

किसी ने भी उसे जवाब नहीं दिया। कुछ देर इन्तज़ार करने के बाद श्वाब्रिन ने घास-फूस लाने का हुक्म दिया। कुछ मिनटों बाद आग भड़क उठी और अँधेरी खत्ती में रोशनी हो गयी और दहलीज़ के नीचेवाली झिर्रियों से धुआँ निकलने लगा।

तब मारिया इवानोव्ना मेरे पास आयी और मेरा हाथ थामकर हौले से बोली, "बस, प्योत्र अन्द्रेइच! मेरी ख़ातिर अपने आपको और माता-पिता को न मारिए। मुझे छोड़ दीजिए। श्वाब्रिन मेरी बात मान लेगा।"

"किसी हालत में नहीं।" मैं तहे दिल से चीख़ा, "जानती हैं न, कि आप पर क्या बीतेगी?"

"बेइज़्ज़ती मैं बर्दाश्त न करूँगी।" उसने शान्तिपूर्वक जवाब दिया, "मगर, हो सकता है, मैं अपने मुक्तिदाता और उसके परिवार को बचा सकूँ, जिसने इतने उदार मन से मुझ ग़रीब अनाथ को सहारा दिया। अलबिदा, अन्द्रेइ पेत्रोविच! अलबिदा अव्दोत्या वासील्येव्ना! आप मेरे लिए फ़रिश्तों से भी बढ़कर थे। मुझे आशीर्वाद दीजिए। आप भी माफ़ कर दीजिए प्योत्र अन्द्रेइच! यक़ीन कीजिए, कि...कि," अब वह फूट-फूटकर रो पड़ी और उसने दोनों हाथों से चेहरा ढाँक लिया...मैं तो पागल जैसा हो रहा था। माँ रोये जा रही थी।

"बस हो गया झूठ बोलना मारिया इवानोव्ना।" मेरे पिताजी ने कहा, "तुम अकेली को लुटेरों के पास कौन जाने देगा! चुपचाप बैठ जाओ। मरना है, तो सभी साथ मरेंगे। सुनो, वहाँ क्या बातें हो रही हैं?"

"अपने आपको मेरे हवाले करते हो या नहीं?" श्वाब्रिन चीख़ रहा था, "देख रहे हो? पाँच मिनट बाद जल जाओगे।"

"नहीं करेंगे बदमाश।" पिताजी ने दृढ़ता से उत्तर दिया।

उनका झुर्रियों से भरा चेहरा ग़ज़ब के जोश से दमक रहा था, सफ़ेद भौंहों के नीचे से आँखें आग उगल रही थीं। और, मेरी ओर मुड़कर उन्होंने कहा, "अब वक़्त आ गया है!"

उन्होंने दरवाज़ा खोल दिया। आग की लपटें अन्दर की ओर लपकीं और सूखी काई से ढँकी शहतीरों की ओर बढ़ीं। पिताजी ने पिस्तौल चलाई और "सब मेरे पीछे आओ" चिल्लाते हुए जलती हुई दहलीज़ को फाँद गये। मैंने माँ और मारिया इवानोव्ना का हाथ पकड़ा और जल्दी से उन्हें खुली हवा में ले गया। दहलीज़ के पास मेरे पिताजी

के थरथराते हाथ से घायल हुआ श्वाब्रिन पड़ा था, लुटेरों का झुंड जो हमारे अचानक बाहर आ जाने से भाग खड़ा हुआ था, फ़ौरन हिम्मत बटोरकर हमें घेरने लगा। मैंने कुछ और घूँसे जमाये, मगर सही निशाने पर फेंकी गयी ईंट सीधे मेरे सीने पर आकर लगी। मैं गिर पड़ा और एक मिनट के लिए होश खो बैठा। होश में आने पर मैंने श्वाब्रिन को ख़ून से लथपथ घास पर बैठे देखा, और उसके सामने हमारा पूरा परिवार था। मुझे हाथों का सहारा दिया गया। किसानों, कजाकों और बाश्कीरियों की भीड़ हमें घेरे हुए थी। श्वाब्रिन एकदम पीला पड़ गया था। एक हाथ से वह अपनी घायल बग़ल को दबाये था। चेहरा क्रोध एवं पीड़ा को प्रदर्शित कर रहा था।

उसने धीरे से सिर उठाया, मेरी ओर देखा और कमज़ोर तथा अस्पष्ट आवाज़ में कहा, "इसे टाँग दो...और सबको भी...सिवाय उसके..."

उसी समय दुष्टों की भीड़ ने हमें घेर लिया और चीख़ते हुए फाटक की ओर घसीटने लगी। अचानक उन्होंने हमें छोड़ दिया और इधर-उधर भागने लगे, फाटक से ग्रीनेव अन्दर आ रहा था और उसके पीछे-पीछे थी नंगी तलवारें लिए पूरी स्क्वाड्रन।

विद्रोही सभी दिशाओं में बहे जा रहे थे, हुस्सार उनका पीछा कर रहे थे, उनके टुकड़े कर रहे थे और उन्हें बन्दी बना रहे थे। ग्रीनेव घोड़े से नीचे कूदा, उसने पिताजी और माँ के सामने सिर झुकाया और तपाक से मुझसे हाथ मिलाया।

"तो मैं ठीक वक़्त पर पहुँच गया।" उसने हमसे कहा, "ओऽ! यह है तुम्हारी मंगेतर!" मारिया इवानोव्ना कानों तक लाल हो गयी। पिताजी ने उसके पास पहुँचकर शान्त किन्तु भावविह्वल स्वर में धन्यवाद दिया। माँ ने उसे बाँहों में भर लिया, उसे रक्षक फ़रिश्ता कहा।

"कृपया हमारे यहाँ चलिए।" पिताजी ने उससे कहा, और उसे घर के भीतर ले आये। श्वाब्रिन के पास से गुज़रते हुए, ग्रीनेव रुका।

"यह कौन है?" उसने ज़ख़्मी की ओर देखते हुए पूछा।

"यह है इनका मुखिया, इस दल का सरदार।" मेरे पिताजी ने बूढ़े योद्धा के योग्य शान के साथ कहा। भगवान ने मेरे काँपते हाथ की मदद की इस नौजवान बदमाश को सज़ा देने और मेरे बेटे के बहे हुए ख़ून का बदला लेने में।

"यह श्वाब्रिन है।" मैंने ग्रीनेव से कहा।

"श्वाब्रिन! बहुत अच्छे। हुस्सारो! ले चलो इसे। हाँ हमारे डॉक्टर से कहो कि इसके ज़ख़्म की मरहम पट्टी कर दें और आँख की पुतली की तरह इसकी हिफ़ाज़त करें। श्वाब्रिन को तुरन्त कज़ान की गुप्त समिति के सामने पेश करना होगा। वह एक प्रमुख अपराधी है, और उसकी गवाही महत्त्वपूर्ण होनी चाहिए।"

श्वाब्रिन ने अपनी भारी पलकें खोलीं। उसके चेहरे पर शारीरिक पीड़ा के

अलावा और कोई भाव नहीं था। हुस्सार उसे कोट पर लिटाकर ले गये।

हम कमरे में आये। अपने बचपन को याद करते हुए मैंने धड़कते दिल से चारों ओर नज़र दौड़ाई। घर में कुछ भी नहीं बदला था, सभी अपनी पुरानी जगह पर था। पतन के गर्त में भी बेकार के लालच से स्वाभाविक घृणा को सहेजे हुए, श्वाब्रिन ने कुछ भी लूटने की इजाज़त नहीं दी थी। नौकर-चाकर प्रवेश कक्ष में प्रकट हुए। उन्होंने विद्रोह में भाग नहीं लिया था और हमारी मुक्ति पर उन्हें सच्ची ख़ुशी हुई थी। सावेलिच तो मानों जश्न मना रहा था। यह जानना उचित होगा, कि लुटेरों के हमलों से उत्पन्न घबराहट के माहौल में, वह अस्तबल की ओर भागा, जहाँ श्वाब्रिन का घोड़ा खड़ा था, उसपर जीन कसी, चुपचाप उसे बाहर निकाला और चारों ओर हो रही भगदड़ की बदौलत बिना किसी के देखे घाट की ओर सरपट भागा। उसे वोल्गा के इस किनारे पर विश्राम करती सेना मिल गयी। ग्रीनेव ने उससे हम पर मँडराते ख़तरे के बारे में सुनकर, फ़ौरन घोड़ों पर सवार होने तथा कूच करने की, सरपट दौड़ते हुए कूच करने की, आज्ञा दी और, भगवान की दया से ठीक समय पर पहुँच गया।

ग्रीनेव ने इस बात का आग्रह किया कि गाँव कमिटी के मुखिया का सिर कुछ घंटों तक शराबख़ाने के पास एक डंडे पर टँगा रहे।

हुस्सार कुछ लोगों को बन्दी बनाकर ले आये। उन्हें उसी खत्ती में बन्द कर दिया गया, जहाँ हमने अविस्मरणीय घेरेबन्दी का मुक़ाबला किया था।

हम अपने-अपने कमरों में गये। बूढ़ों को आराम की ज़रूरत थी। पूरी रात न सोने के कारण मैं बिस्तर पर लेटते ही गहरी नींद सो गया। ग्रीनेव अपने इन्तज़ाम करने चला गया।

शाम को हम मेहमानख़ाने में समोवार के निकट जमा हुए और गुज़र चुके ख़तरे के बारे में प्रसन्नता से बातें करते रहे। मारिया इवानोव्ना प्यालों में चाय डाल रही थी, मैं उसके क़रीब बैठ गया और पूरी तरह उसी में खो गया। मेरे माता-पिता, ऐसा लग रहा था, कि ख़ुशी से हमारे नाज़ुक रिश्ते को देख रहे थे। आज तक वह शाम मेरे दिमाग़ पर छायी है। मैं ख़ुश था, पूरी तरह ख़ुश और...मनुष्य की बेचारगी भरी ज़िन्दगी में क्या ऐसे क्षण बार-बार आते हैं?

दूसरे दिन पिताजी को बताया गया कि किसान मालिक के अहाते में माफ़ी माँगने के लिए आये हैं। पिताजी ड्योढ़ी पर निकलकर खड़े हो गये। उनके आते ही किसान घुटनों के बल खड़े हो गये।

"तो, बेवक़ूफ़ो," उन्होंने उनसे कहा, "तुमने बग़ावत करने की बात क्यों सोची?"

"क़ुसूरवार है, तुम हमारे मालिक हो।" उन्होंने एक सुर में जवाब दिया।

"तो...तो...वह तो हो ही। शरारतें करते हो और फिर ख़ुद ही ख़ुश नहीं होते। तुम्हें इस ख़ुशी में माफ़ करता हूँ कि भगवान ने मुझे अपने बेटे प्योत्र अन्द्रेइच से

मिलवा दिया। जाओ, ठीक है : माफ़ी माँगनेवाले सिर को तलवार नहीं काटती। क़ुसूरवार! बेशक क़ुसूरवार हो। भगवान ने अच्छा सूखा मौसम दिया है, घास काटने का समय हो गया है, और तुमने, बेवक़ूफ़ों ने, पूरे तीन दिन क्या किया? मुखिया! एक-एक को घास काटने के लिए हँसिया दे दो, हाँ देखो, लाल बालोंवाले शैतान, सन्त इल्या के दिन तक सारी घास की टालें तैयार हो जाए। चलते बनो।"

किसानों ने सिर झुकाये और मालिक के काम के लिए यूँ चल पड़े, मानों कुछ हुआ ही न हो।

श्वाब्रिन का घाव ख़तरनाक नहीं था। उसे फ़ौजी पहरे में कज़ान भेज दिया गया। मैंने खिड़की से उसे गाड़ी में लिटाये जाते हुए देखा। हमारी नज़रें मिलीं, उसने सिर झुका लिया, और मैं फ़ौरन खिड़की से हट गया। मुझे डर था कि मेरे हावभाव यह न प्रदर्शित कर दें कि मैं दुश्मन के दुर्भाग्य और अपमान पर ख़ुश हो रहा हूँ।

ग्रीनेव को आगे जाना था। परिवार के बीच कुछ और दिन बिताने की इच्छा के बावजूद मैंने भी उसके पीछे-पीछे ही जाने का निश्चय किया। प्रस्थान की पूर्व सन्ध्या पर मैं माता-पिता के निकट गया और उस समय के रिवाज़ के अनुसार उनके चरणों में सिर नवाकर उन्हें मारिया इवानोव्ना के साथ विवाह करने के लिए उनसे आशीर्वाद देने का अनुरोध किया। उन्होंने मुझे उठाया और ख़ुशी के आँसू बहाते हुए अपनी सहमति प्रकट की। मैं उनके पास थरथराती, विवर्ण मुखवाली मारिया इवानोव्ना को लाया। उन्होंने हमें आशीर्वाद दिया...उस समय मैं क्या महसूस कर रहा था, वह न लिखूँगा। जो मेरी परिस्थिति में रह चुका है, वह बग़ैर इसके भी समझ जाएगा, जो नहीं रहा है, उसके लिए सिर्फ़ अफ़सोस करूँगा और सलाह दूँगा कि, समय रहते प्यार कर लो और माता-पिता से आशीर्वाद ले लो।

दूसरे दिन फ़ौज चलने को तैयार थी। ग्रीनेव ने हमारे परिवार से बिदा ली। हम सभी को विश्वास था कि फ़ौजी कार्रवाइयाँ जल्दी ही समाप्त हो जाएँगी, मुझे एक महीने बाद दूल्हा बनने की उम्मीद थी। मारिया इवानोव्ना ने मुझसे बिदा लेते हुए सबके सामने मेरा चुम्बन लिया। मैं घोड़े पर बैठा। सावेलिच फिर से मेरे पीछे आया, और रेज़िमेंट चल पड़ी।

मैं दूर से देर तक गाँव के घर को देखता रहा, जिसे मैं फिर से छोड़कर जा रहा था। उदासीभरा पूर्वाभास मुझे विचलित कर रहा था। कोई मुझसे फुसफुसाकर कह रहा था, कि अभी मेरे दुर्भाग्य का अन्त नहीं हुआ है। दिल किसी नये तूफ़ान की आशंका कर रहा था।

हमारे कूच का और पुगाचोव के साथ युद्ध के अन्त का वर्णन नहीं करूँगा। हम पुगाचोव द्वारा तबाह कर दिये गये गाँवों से गुज़रते और अनिच्छापूर्वक ग़रीब गाँववालों से वह भी छीन लेते जो लुटेरे उनके लिए छोड़ गये थे।

वे नहीं जानते थे कि किसका हुक्म मानें। शासन व्यवस्था हर जगह ठप्प हो

गयी थी। ज़मींदार जंगलों में छिप गये थे। लुटेरों के गिरोह चारों ओर तांडव कर रहे थे। अलग-अलग टुकड़ियों के अफ़सर, जिन्हें पुगाचोव का पीछा करने के लिए भेजा गया था और जो उस समय अस्त्राखान की तरफ़ भाग रहा था, अपनी मर्ज़ी से अपराधियों और निरपराधियों को भी दंड दे देते...उस प्रान्त की हालत, जहाँ यह दावानल फैला था, भयानक थी। भगवान कभी रूसी विद्रोह न दिखाए, अर्थहीन और क्रूर विद्रोह! वे, जो हमारे यहाँ असम्भव तख़्ता पलटने की कल्पना करते हैं, या तो जवान हैं और हमारी जनता को नहीं जानते, या फिर बड़े ही क्रूर हृदय व्यक्ति हैं, जिनके लिए औरों का सिर दमड़ी भर का और अपनी गर्दन कोपेक की है।

इवान इवानोविच मिख़ेल्सन से बचते हुए पुगाचोव भाग रहा था। जल्दी ही हमने उसकी सम्पूर्ण पराजय की ख़बर सुनी। अन्त में ग्रीनेव ने अपने जनरल से स्वघोषित सम्राट के पकड़े जाने की ख़बर सुनी, और साथ ही रुक जाने का आदेश भी पाया। आख़िरकार मैं घर जा सकता था। मैं उल्लसित था, मगर एक अजीब-सी भावना मेरी ख़ुशी पर ग्रहण डाल रही थी।

परिशिष्ट II

दास पीटर महान का

पूश्किन ने इस उपन्यास का आरम्भ 1827 में किया था, जब वे मिखाइलोव्स्कोये में थे। पूश्किन के मित्र अ. वुल्फ़ ने लिखा है कि जब पूश्किन यह उपन्यास लिख रहे थे, उस समय उन्होंने : ..."मुझे हाल ही में लिखे गये गद्य उपन्यास के दो अध्याय दिखाये, जहाँ प्रमुख पात्र हैं उनके परनाना गनिबाल, अबिसीनिया के अमीर के पुत्र, जिसे तुर्कों ने उठा लिया था, और कन्स्तान्तिनोपोल से रूसी राजदूत ने पीटर प्रथम को उपहार स्वरूप भेज दिया था, पीटर प्रथम ने स्वयं उसका पालन-पोषण किया और वे इस बालक को बहुत चाहते थे। उपन्यास का मुख्य विषय है, पूश्किन के अनुसार, "इस अफ्रीकी की पत्नी की बेवफ़ाई, जिसने एक गोरे बालक को जन्म दिया और इसकी सज़ा पायी। उसे मॉनेस्ट्री भेज दिया गया। यह है ऐतिहासिक पृष्ठभूमि इस उपन्यास की।"

वुल्फ़ के कथन की पूश्किन के अ. पी. गनिबाल के बारे में पारिवारिक संस्मरणों से भी पुष्टि होती है। गनिबाल पीटर प्रथम का प्रमुख सहायक था। पूश्किनों तथा गनिबालों की वंशावली के बारे में कवि कहते हैं, "पारिवारिक जीवन में मेरे परनाना गनिबाल भी उतने ही अभागे थे, जितने मेरे परदादा पूश्किन। उनकी पहली पत्नी ने, जो जन्म से ग्रीक थी, एक गोरी लड़की को जन्म दिया। उसने पत्नी से तलाक़ ले लिया और उसे केश कटवाकर तीख्वीन्सकी मॉनेस्ट्री में जाने पर मजबूर किया..."

गनिबाल की जीवन गाथा पर उपन्यास लिखने का विचार पूश्किन के मन में काफ़ी समय से था। गनिबाल ने पोल्तावा के युद्ध में काफ़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उपन्यास लिखते समय उन्होंने जर्मन भाषा में लिखी गयी अब्राहम पेत्रोविच गनिबाल की हस्तलिखित जीवनी का सहारा लिया। मगर उपन्यास यथार्थ से कुछ हट गया है। गनिबाल की शादी आन्ना ईवानोव्ना के सम्मुख, एक नाविक की बेटी, ग्रीक बाला एव्दोकिया दिओपेर से हुई थी, न कि रूसी सामन्त कन्या से, जैसा पूश्किन लिखते हैं। काउंटेस डी. के प्रति उसका प्यार, काल्पनिक घटना है।

पूश्किन ने अनेक दस्तावेज़ों का भी सहारा लिया था। सन् 1828 के वसन्त में पूश्किन ने अपने उपन्यास के कुछ अंश पढ़े। मार्च के अन्त में व्याजेम्स्की ने लिखा, "पूश्किन ने हमें अपने गद्यात्मक उपन्यास के कुछ अंश पढ़कर सुनाये। नायक है, उसके परनाना गनिबाल, अन्य अनेक पात्रों के बीच चित्रित है पीटर महान का वीरोचित व्यक्तित्व, बड़ी सजीवता एवं सच्चाई से खींची है उनकी तस्वीर।" पहले कुछ अंशों से तो यही प्रतीत होता है। पीटर्सबुर्ग के बाल नृत्य का एवं भोज का वर्णन स्वाभाविक है। ज़ाहिर है कि जो अध्याय पूश्किन ने अपने मित्रों को पढ़कर सुनाये थे वे सन् 1820 में 'लितेरातूर्नाया गजेता' में प्रकाशित किये गये थे।

उपन्यास का कथानक पीटर महान के शासनकाल के अन्तिम वर्षों से संबंधित है।

पूश्किन ने किन्हीं कारणों से उपन्यास को पूरा नहीं किया, उन्होंने इसे कोई नाम भी नहीं दिया। 'दास पीटर महान का', यह नाम कवि की मृत्यु के बाद इसके 'सव्रेमेन्निक' में इसके प्रकाशित होते समय दिया गया।

गोर्युखिनो गाँव की कहानी

पूश्किन ने इस कहानी को सन् 1830 में आरम्भ किया। पूश्किन की मृत्यु के बाद इसे 'सव्रेमेन्निक' में प्रकाशित किया गया।

किर्झाली

लगभग सन् 1834 में लिखी गयी। यह कहानी प्रकाशित भी उसी वर्ष की गयी। कहानी की विषय वस्तु तुर्की आधिपत्य के विरुद्ध सन् 1821 में हुए ग्रीक विद्रोह पर आधारित है। पूश्किन इस घटना से बहुत विचलित हो गये थे। उन्होंने ग्रीक के भूमिगत गुटों पर कविता लिखनी चाही, मगर न लिख पाये। किर्झाली के व्यक्तित्व से, जिसने इस विद्रोह में भाग लिया था, पूश्किन बड़े प्रभावित हुए थे। किर्झाली के बारे में जानकारी पूश्किन को दी जनरल इंज़ोव के कार्यालय के अफ़सर एम.ई. लेक्स ने।

सन् 1820 में पूश्किन ने किर्झाली पर कविता लिखने का निर्णय लिया, मगर उसे पूरा न किया। पीटर्सबुर्ग में सन् 1834 में दुबारा लेक्स से हुई भेंट ने पूश्किन को कथा-लेखन के लिए आवश्यक सामग्री प्रदान की।

इजिप्शियन नाइट्स

पूश्किन की कवि कल्पना को इजिप्ट की साम्राज्ञी का व्यक्तित्व अनेक बार आकर्षित कर चुका था। सन् 1824 में उन्होंने क्लियोपेट्रा के बारे में कविता भी लिखी। रचना के मूल में रोमन लेखक अव्रेली विक्टर की वह कहानी है, जिसके अनुसार क्लियोपेट्रा अपना प्यार बेचा करती थी और अनेक लोगों ने अपने जीवन की क़ीमत देकर उसे ख़रीदा भी था। पूश्किन इस विषय वस्तु की ओर मुड़े सन् 1828 में, तभी पद्यांश 'जगमग करता राजमहल...' की रचना हुई (जिसे बाद में 'इजिप्शियन नाइट्स' में शामिल किया गया)। कहानी अधूरी ही रह गयी। पहली बार सन् 1837 में, पूश्किन की मृत्यु के बाद 'सव्रेमेन्निक' में प्रकाशित हुई थी।

सफ़र अर्ज़रूम का

सन् 1829 में पूश्किन ज़ाकाफ़काज गये थे और पास्केविच की रूसी फ़ौज में रहे, जो तुर्की के ख़िलाफ़ युद्ध कर रही थी। यह युद्ध सन् 1828 में आरम्भ हुआ था।

युद्ध के दौरान रूसी सेना ने तुर्की के उत्तर पूर्वी भाग के काफ़ी बड़े भाग पर क़ब्ज़ा कर लिया, जिसमें प्राचीन आर्मेनियाई क़िला एवं शहर अर्ज़रूम भी था।

सफ़र के दौरान पूश्किन सफ़रनामा लिखते जा रहे थे, जिस पर प्रस्तुत रचना आधारित है। सन् 1830 में इसका एक अंश 'जॉर्जिया का सैनिक मार्ग' नाम से 'लितेरातूर्नाया गज़ेता' में प्रकाशित हुआ।

पूरी रचना जो सन् 1835 में समाप्त हुई, सन् 1836 के 'सव्रेमेन्निक' में प्रकाशित की गयी।

हुकुम की बेगम

यह लघु उपन्यास सन् 1833 के शिशिर में लिखा गया था। पहली बार प्रकाशित हुआ सन् 1834 में।

पूश्किन ने स्वयं अपने मित्र वी.वी. नाश्चोकिन को *हुकुम की बेगम* का कथानक पढ़कर सुनाया था, जिसने बाद में बार्तेनेव को बतलाया कि "लघु उपन्यास का मुख्य कथानक काल्पनिक नहीं है।" बूढ़ी काउंटेस—वास्तव में नताल्या पेत्रोव्ना गोलित्सिना, दिमित्री व्लादिमीरोविच—मॉस्को के गवर्नर जनरल की माँ थी, जो सचमुच में पेरिस में उसी तरह रहती थी, जैसा पूश्किन ने वर्णन किया है। उसके पोते, गोलित्सिन ने पूश्किन को बताया था कि एक बार जुए में हार जाने के बाद वह अपनी दादी के पास पैसे माँगने आया। पैसे तो उसने दिये नहीं, मगर वे तीन पत्ते बताये, जो पेरिस में उसे जेर्मन ने बतलाये थे। "कोशिश करो," दादी ने कहा था। पोते ने वे तीन पत्ते चले और जीत गया।

इसके बाद कथानक का विस्तार काल्पनिक है। बार्तेनेव के अनुसार, "नाश्चोकिन ने पूश्किन के सामने यह टिप्पणी की थी कि काउंटेस गोलित्सिना से तो नहीं मिलती, मगर वह एक अन्य वृद्धा नताल्या किरिलोव्ना ज़ाग्र्याइस्कोवा (कवि की पत्नी की बुआ) जैसी दिखाई देती है।" पूश्किन ने इस टिप्पणी से सहमत होते हुए कहा कि गोलित्सिना का चरित्र और आदतें काफ़ी जटिल थीं, इसलिए उसके बदले ज़ाग्र्याइस्कोवा को चित्रित करना उनके लिए काफ़ी आसान था।

लघु उपन्यास बहुत लोकप्रिय हुआ और जुआरी तिग्गी, सत्ता और इक्का पर ही दाँव लगाने लगे थे।

ताबूतसाज़

कहानी का प्रमुख पात्र गोंचारोव परिवार के घर से कुछ ही दूर रहनेवाले ताबूतसाज़ आद्रियान की प्रतिकृति है। गोंचारोव परिवार पूश्किन की ससुराल थी। कहानी काल्पनिक है।

निशाना

'निशाना' कहानी आधारित है पूश्किन के जुबोव नामक अफ़सर के साथ हुए द्वन्द्व युद्ध के प्रसंग पर। यह द्वन्द्व युद्ध किशिन्येव में सन् 1822 में हुआ था। पूश्किन द्वन्द्व युद्ध के स्थान पर चेरियाँ खाते हुए आया और जब तक उसकी बारी नहीं आ गयी, चेरियों का नाश्ता करता रहा। जुबोव ने पहला निशाना लगाया, जो चूक गया। पूश्किन ने अपनी बारी का इस्तेमाल नहीं किया, मगर प्रतिद्वन्द्वी से बिना समझौता किये चला गया।

हुआ क़िस्मत का फ़ैसला, मैं शादी करने चला . . .

मई 1830 में लिखा गया यह छोटा-सा लेख पूश्किन की नतालिया गोंचारोव से सगाई होने के पश्चात् की मनोदशा को प्रस्तुत करता है। इन्हीं विचारों को पूश्किन ने उस समय लिखे गये कुछ पत्रों में भी प्रकट किया था।

कप्तान की बेटी

कृषकों का विद्रोह, जिसे पूश्किन ने अपने लघु उपन्यास में छुआ भर था, *कप्तान की बेटी* की पार्श्वभूमि बना। पूश्किन किसानों के आन्दोलन से काफ़ी उत्तेजित थे। इस विषय पर मनन करते हुए वे पुगाचोव के विद्रोह तक पहुँचे और तभी उनके हृदय में पुगाचोव के विद्रोह तथा पुगाचोवी कुलीनों पर उपन्यास लिखने के विचार ने जन्म लिया। जनवरी 1833 में पूश्किन ने इस उपन्यास का प्रथम ख़ाका तैयार किया, जिसका नायक था मिखाईल अलेक्सान्द्रोविच श्वानविच। श्वानविच एक वास्तविक व्यक्ति था, जो तोप दस्ते का अफ़सर था, पुगाचोव से मिल गया था और जिसे बाद में साइबेरिया भेज दिया गया था।

जुलाई 1833 में पूश्किन ने छुट्टी के लिए आवेदन पत्र दिया, जिससे वे उन स्थानों पर जा सकें, जहाँ नियोजित उपन्यास की घटनाएँ घटित हुई थीं। साथ ही *पुगाचोव का इतिहास* भी लिखा जा रहा था।

अगस्त 1833 में वे 'पुगाचोव का इतिहास' तथा विचाराधीन उपन्यास के लिए जानकारी एकत्र करने ओरेनबुर्ग तथा यूराल प्रान्त में गये। उपन्यास के प्रथम ख़ाके में काफ़ी परिवर्तन किये गये। उपन्यास का अन्तिम रूप, जो *कप्तान की बेटी* के काफ़ी निकट था, अक्टूबर-नवम्बर 1834 में प्रकट हुआ। धीरे-धीरे पुगाचोव के विद्रोह के विषय को उपन्यास में प्रमुखता प्राप्त हुई और साथ ही एक प्रेम-कहानी ने भी जन्म लिया—उपन्यास के नायक और दुर्ग के कप्तान की बेटी की प्रेम-कहानी ने।

उपन्यास धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। वह पूरा हुआ 1836 में। उसे सेंसर को सौंपने के बाद पूश्किन ने सेंसर के सदस्य कोर्साकोव को लिखा, "मिरोनोव की बेटी का नाम काल्पनिक है। मेरा उपन्यास कभी सुनी गयी घटना पर आधारित है, जिसके अनुसार, किसी एक अफ़सर को, जिसने अपने दस्ते के साथ विश्वासघात किया और पुगाचोव के गिरोह में शामिल हो गया, साम्राज्ञी ने क्षमा कर दिया था। इस अफ़सर के पिता ने साम्राज्ञी के पैरों पर गिरकर बेटे के लिए क्षमा की याचना की थी। उपन्यास जैसा कि आप देखेंगे, वास्तविकता से दूर चला गया है।"

कप्तान की बेटी को पहली बार 'सव्रेमेन्निक' पत्रिका में सन् 1836 में प्रकाशित किया गया। सेंसर ने ग्रीनेव के गाँव में किसानों के विद्रोह सम्बन्धी अध्याय को प्रकाशित करने की अनुमति नहीं दी। इसे पूश्किन ने 'एक छूटा हुआ अध्याय' कहा। यह अध्याय सन् 1880 में ही छप सका।

पूश्किन ने इस उपन्यास पर कार्य करते हुए ऐतिहासिक और जनजीवन से जुड़ी सामग्री का तथा ओरेनबुर्ग यात्रा के समय पुगाचोव विद्रोह के प्रत्यक्षदर्शियों से बातचीत करने के बाद लिखे गये संस्मरणों का खुलकर उपयोग किया है।

अलेक्सांद्र सेर्गेयेविच पूश्किन (1799-1837) का जन्म मॉस्को में हुआ। उनके पिता सेर्गेई पूश्किन प्राचीन बोयारों के वंशज थे, जो तत्कालीन रूसी शासकों की सेना में सम्मानित पदों पर बहाल थे और निजी पुस्तकालयों में रूसी एवं फ्रांसीसी पुस्तकों की भरमार थी। पूश्किन के मन में बचपन से ही इन पुस्तकों को पढ़ने की जिज्ञासा थी, वे चोरी-छिपे इन्हें पढ़ा करते। कविता लेखन के प्रति बचपन से ही विशेष लगाव का ही परिणाम था कि मात्र बारह वर्ष की उम्र में ही उनकी कविताएँ प्रकाशित होने लगी थीं। आरंभिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद पूश्किन ने युवावस्था के रचनात्मक वर्षों और पीटर्सबर्ग में प्रवास के दौरान, विदेश विभाग की नौकरी के साथ, प्रगतिशील साहित्य परिषद् 'अर्ज़ामास' की स्थापना की और अपनी क्रांतिकारी कविताओं के लिए चर्चित हो गए। सत्ता-विरोधी रचनाओं और विद्रोही विचारों के लिए दण्डित पूश्किन ने कई छोटी-बड़ी कविताओं और उपन्यासों की रचना की। वर्ष 1826 में निर्वासन से छूटकर वे मॉस्को लौटे और कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक और इतिहास—सभी विधाओं में जमकर लेखन किया तथा अपनी साहित्यिक पत्रिका *सव्रेमेन्निक* का प्रकाशन भी सन् 1836 में आरंभ किया। अपनी क्लासिकी रचनाधर्मिता के साथ लेखकीय स्वतंत्रता और सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ से आश्चर्यजनक तालमेल रखनेवाले पूश्किन की गद्य-रचनाओं को यथार्थवादी कृतियों का बेहतरीन उदाहरण माना जाता है। पूश्किन केवल वास्तविकता का सहज चित्रण ही नहीं करते, वरन् अपने स्वभाव के अनुसार वे अपने परिवेश, समय और समाज पर पैने और सटीक व्यंग्य भी करते हैं।

अलेक्सांद्र एस. पूश्किन ने अपने जीवन और परिवेश से संबंधित अनेक रचनाओं का प्रणयन किया, जिनमें *पीटर महान का इतिहास, पुगाचोव का इतिहास, सफ़र अर्ज़रूम का, हुकुम की बेगम* विशेष उल्लेखनीय हैं। पूश्किन की नज़र सत्तापक्ष के कदाचारों, दुरभिसंधियों, आम रूसियों के जीवन तथा उनकी दैनंदिन चर्या पर बड़ी गहराई से पड़ती है। इसलिए तत्कालीन रूस के सम और विषम पक्षों पर पूश्किन की लेखनी एक समान चलती है। 'कप्तान की बेटी' रूसी समाज की, विशेषकर स्त्री-समाज की अंदरूनी सच्चाइयों का विलक्षण दस्तावेज़ है। यह संग्रह इन रचनाओं के कारण अनुपम एवं संग्रहणीय बन गया है।

प्रस्तुत कृति का मूल रूसी से हिंदी अनुवाद आकेल्ला चारुमति रामदास (जन्म :1945) ने किया है। आपने गणित में एम.एससी. एवं बी.एड.(विक्रम विश्वविद्यालय) करने के उपरांत रूसी भाषा में एम.ए. तथा रूसी साहित्य में एम.लिट्. और पी-एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। आपकी मातृभाषा मराठी है। साथ ही, हिंदी, अंग्रेज़ी और रूसी भाषाओं पर आपका अच्छा अधिकार है। रूसी भाषा से कई महत्त्वपूर्ण कृतियों का सफल हिंदी अनुवाद आपकी अनुवाद क्षमता का निदर्शन है। आपकी प्रकाशित कृतियों में तीन संग्रह, दो कविता संकलन के अलावा चिंगीज़ आइत्मातोव की चर्चित कृति *ताव्रो कसांद्रि* जो साहित्य अकादेमी द्वारा *कसांद्रा दाग़* शीर्षक से प्रकाशित है और मिख़ाइल बुल्गाकोव की अमर कृति *मास्टर* और *मार्गारीटा* सम्मिलित हैं।

www.sahitya-akademi.gov.in

₹200